प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : *harisharanverma1@gmail.com*
WWW.IJSCJOURNAL.COM
सहयोग राशि (भारत में)
(व्यक्तिगत) (आजीवन 5100 रुपये)
(संस्थागत) (आजीवन 7100 रुपये)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।
बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)121006
harisharanverma1@gmail.com 09355676460
WWW.IJSCJOURNAL.COM
2. **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ0 सलमा असलम, ओल्ड टाउन बारामुला, कश्मीर पिन – 193101, मौ0 9682162934
3. डॉ0 आरती लोकेश P.o.Box 99846,Dubai,UAE 97150-4270752
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. डॉ0 विमला देवी, सहायक प्रोफेसर (इतिहास) (उत्तराखण्ड)–262524 – 9411900411
7. डॉ0 प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी0 ए0 वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ0 9711196954
8. डॉ0 ऊषा रानी, हिन्दी – विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला – 5
9. विमला टोप्पो, एस0 आर0 इंटरप्राइसेस म्युनिसिपल काम्पलेक्स सोप न0 4, डेरी फार्म, पोर्ट बलेयर, पी0 ओ0 जंगली घाट – 744103 साउथ अंडमान
10. डॉ0 राजपाल, सहायक प्रो0 राजकिय स्नातकोत्रर महाविद्यालय, हिसार
11. डॉ0 प्रवे ा कुमारी, सहायक प्रो0 (हिन्दी – विभाग), बाबा मस्तराथ, विश्वविद्यालय, रोहतक, (हरियाणा)
12. Dr. Reena Rai, 991A, Sudama nagar, Indore, Madhyapradesh 452009, 9584231840

संरक्षक मण्डल :

1. **प्रो0 डॉ0 चक्रधार त्रिपाठी कुलपति,** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, 763004, चलभाषाः 9437568809
2. **डॉ0 दिनेश मणी त्रिपाठी**, प्रधानाचार्य एन0 पी0 के0 आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ0प्र0
3. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय. रोहतक)
4. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
5. **डॉ0 सुंधांशु कुमार शुक्ल** चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वार्सा विश्वविद्यालय, वार्सा (पोलैन्ड) मौ0 48579125129
6. **डॉ0 तपन कुमार शण्डिल्य, कुलपति,** डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची, (झारखण्ड) 9431049871
7. **डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) रांची विश्वविद्यालय, रांची – 834008
फोन : 09431595318
8. **सुदेश रावत** प्रांचार्या एस. एन. आर. जयराम महिला कॉलेज, लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र हरियाणा 36119 (सेठ नारंग राय लोहिया जय राम महिला कॉलेज)
9. Sh. Butta Singh gill, PPS, Dy Superintendent of Police. No 409 ,Street no 7 Ghuman Nagar , Sarhind Road, Patiala Punjab -147001.

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ0 विजयदत्त शर्मा, पूर्व निदेशक, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकूला(हरियाणा)**
2. **डॉ० सुधेश** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)
3. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
4. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मूरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
5. **डॉ० माया मलिक,**पूर्वप्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
6. **डॉ० ममता सिहल,** (प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर
7. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :

हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०)
2. **डॉ0 अनिता, सहायक प्रोफेसर**, (हिन्दी), श्री अरबिन्दो कालिज दिल्ली (सांध्य) मौ0 :8595718895
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ0 के0डी0 शर्मा,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणे ादत्त, सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

9. **डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल
10. **डॉ0 सुधा चौहान,** पूर्व अध्यक्षा हिन्दी विभाग, वैश्य कालिज, भिवानी
11. **डॉ० रूबी,** (सीनियर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर
12. **डॉ0 सुमन राठी,** सहायक प्रो0 हिन्दी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
13. **डॉ0 सुधा कुमारी** (हिन्दी विभाग) एन0जी0एफ0 डिग्री कालिज, उडदू, अध्ययन केन्द्र मथूरा रोड, पलवल 982719456
14. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605
15. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404
16. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
17. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी
18. **प्रो0 (डॉ0) वन्दना शर्मा, म. न. 2, प्रोफेसर लोंज, किचम सी. डी. एम.,मोदीनगर (उ.प्र.) 201204, मो0 2760411251**
19. **डॉ० जाहिदा जबीन,** (प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)
20. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** पूर्व प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)
21. **डॉ० सुभाष सैनी,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा
22. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद
23. **डॉ० कामना कौशिक,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग एम.के. स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, सिरसा 09896796006
24. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक
25. **डॉ0 कंचन पुरी, विभागध्यक्ष,** रघुनाथ गर्ल्स पी0 जी0 कालेज मेरठ
26. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 हिन्दी बाबा मस्तराथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक
27. **डॉ0 राजपाल ,** सहायक प्रो0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
28. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 टिकाराम कन्या कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा
29. **प्रो. प्रणव शास्त्री,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत – 262 001 उ. प्र. मो.98379 60530 drpranav&pbt23@rediffmail-com
30. **प्रो. राखी उपाध्याय,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग, डी. ए .वी. कॉलेज, देहरादून – 248 001 (उत्तराखंड) मो. 94111 90099 drrakhi-418@gmail-com
31. **डॉ0 सुनीता जसवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश) मो.70186 21542

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयबीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ0 जे. के. शर्मा,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक
11. **डॉ0 राजाराम,** सहायक प्रोफेसर (अंगेजी) ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल, वि ववविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** पूर्व रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
4. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय**, पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनुपुर
5. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
6. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (कश्मीर)
7. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, पं. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
8. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभाग:

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द
5. **डॉ0 रश्मि,** (अध्यक्षा) इतिहास विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द (हरियाणा) पिन – 126102

भूगोल विभाग:

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. **डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा**, एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीएसोसिएट
3. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ विहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29**, **Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
4. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
5. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
6. **डॉ० अनीता ढाका,** (प्राचार्या, आर.जी.सी.ई. कॉलेज, ग्रेटर, नोएडा।)
7. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपुर गढ़ रोड़, मेरठ)

गृह विज्ञान

1. **डॉ0 श्रीमती पंकज शर्मा,** (सहायक प्राफेसर), गृह विज्ञान (प्रसार शिक्षा) राजकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रोहतक

शारीरिक शिक्षा विभाग:

1. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
2. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
3. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education"DGC Gurugram

समाज शास्त्र विभाग:

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज,** समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभाग:

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभाग:

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
3. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी.पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
4. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)

विधि विभाग:

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)
3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभाग:

1 **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
2. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चरार गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ
3. **डॉ0 सलौनी श्रीवास्तव** सहायक प्रो0, गणित विभाग आर0 बी0 एस0 कालेज आगरा
4. **Dr. Dhrub Kumar Singh.**HOD, Department of Mathematics, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010
5. **डॉ रश्मि मिश्रा** प्रोफेसर (एप्लाइड साइंस एंड हमनीटीएस), मैथमेटिक्स गनेशी लाल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्रेटर नॉएडा

कम्प्यूटर विभाग:

1. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)
2. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)
3. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभाग:

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)
2. **डॉ० सुनीता सैनी,** एसो० प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।)
4. **डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य}** एल ० पी ० के ० इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}
5. **डॉ0 दानपति तिवारी,** प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश
6. **डॉ0 दिनेशचन्द्र शुक्ल,** सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग:

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

दृश्यकला विभाग:

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभाग:

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरूक्षेत्र)

संगीत विभाग:

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली
2. **डॉ० हुकमचन्द,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा
3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)
4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग:

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभाग:

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

कृषि विभाग

1. **डॉ0 गोविन्द प्रकाश आचार्य** सह–आचार्य (कृषि–प्रसार) श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा राजस्थान मो. 9460545836

दर्शनशास्त्र

1. Prof, Dr, Asha Devi department of Philosophy Govt P G college kotdwar pauri Garhwal Uttarakhand 246149

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.

2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)

3. **Dr. Suman**
H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)

4. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana

5. **Dr. Vimla Devi,** Associat Professor (History), Swami Vivekanand Govt. (PG) College, Lohaghat, Champawat (Uttrakhand)

6. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)

7. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P=-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur

8. **Dr. Govind Prakash Acharya** F--63, Chandra Vardai Nagar, UIT, Colony, Shaheed Bhagat Singh Marg, Opposite Ramganj Thana, Taragarh Road, Ajmer (Rajasthan) Pincode--305003.

9. **Amardeep Singh** Mcf C -21, Near Deep Vatika, Bhagat Singh Colony, Ballabgarh121004, Mob. 9873814066

An update on UGC - List Journals

The UGC List of Journals is a dynamic list which is revised periodically. Initially the list contained only journals included in Scopus, Web of Science and Indian Citation Index. The list was expanded to include recommendations from the academic community. The UGC portal wasa opended twice in 2017 to universities to upload their recommendations based on filtering criteria available at https://www.ugc.ac.in/journallist/methodology.pdf. The UGC approved list of Journals is considered for recruitment, promotion and career advancement not only in universities and colloges but also other institutions of higher education in India. As such, it is the responsibillity of UGC to curate its list of approved journals and to ensure the it contains only high-quality journals.

To this end, the Standing Committee on Notification on Journals removed many poor quality/ predatory/questionable journals from the list between 25th May 2017 and 19th Septemeber 2017. This is an ongoing process and since then the Committee has screened all the journals recommended by universities and also those listed in the ICI, which were re-evaluated and rescored on filtering criteria defined by the Standing Committee. Based on careful and analysis, 4,305 journals were removed from the current UGC-Approved list of Journals on 2nd May, 2018 because of poor quality/incorrect or insufficient information/ false claims.

The Standing Committee reiterates that removal/non-inciusion of a journal does not necessarily indicate that it is of poor quality, but it may also be due to non-availability of information such as details of editorial board, indexing information, year of its commencement, frequency and regularity of its publication schedule, etc. It may be noted that a dedicated web site for journals is once of the primary criteria for inclusion of journals. The websites should provide full postal addresses, e-mail addresses of chief editor and editors, and at least some of these addresses ought to be verifiable official addresses. Some of the established journals recommended by universities that did not have didicated websites, or websites that have not been updated, might have bee dropped from the approved list as of now. However, they may be considered for re-inclusion once they fulfil these basic criteria and are re-recommended by universities.

The UGC's Standing Committee on Notification on Journals has also decided that the recommendation portal will be opened once every year for universites to recommend journals. However, from this year onwards, every recommendation submitted by the universities will be reviewed under the supervision of Standing Committee on Notification of Journals to ascertain that only good-quality journals, with correct publication details, are included in the UGC approved list.

The UGC would also like to clarity that 4,305 journals which have been removed on 2nd May, 2018 were UGC-approved journals till that date and, as such, articles published/accepted in them prior to 2nd May 2018 by applicants for recruitment/promotion may be considered and given points accordingly by universities.

The academic community will appreciate that in its endeavour to curate its list of approved journals, UGC will enrich it with high-quality, peer-reviewed journals. Such a dynamic list is to the benefit of all.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
1.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण (Moderate Phase of the Indian National Movement)	सुमन सैनी	8–10
2.	भारतीय समाज और उपेक्षित किसान	Pavitra Devi	11–12
3.	अधिगम निर्योग्य बालक	डॉ0 (श्रीमती) राजेश गिल	13–17
4.	तुलसीदास की भक्ति भावना	डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय	18–22
5.	स्त्री मुक्ति के आयाम	कु सरिता	23–25
6.	तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर प्रभाव	डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय	26–33
7.	अशोक वाजपेयी के काव्य में बिंब योजना	कमलेश, डॉ० कृष्णा जून	34–38
8.	तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर प्रभाव	डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय	39–44
9.	प्राचीन भारतीय शिल्प कला (मिट्टी के बर्तन) : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्षयीय अध्ययन	डॉ0 सचिन वर्मा	45–53
10.	छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की काव्य मान्यताएँ एवं विवेचनात्मक दृष्टि	राज श्री	54–56
11.	'द्रोपदी (याज्ञसेनी) : आधुनिक स्त्री चेतना'	डॉ० उमेश कुमार सिंह	57–60
12.	पं॰ श्रीराम शर्मा जी के काव्य में मानवीयता	दिनेश शर्मा, डॉ॰ बाबूराम प्रोफेसर	61–63
13.	संत ब्रह्मनन्द सरस्वती की वाणी में पर्यावरण चेतना	प्रवीन कुमारी	64–66
14.	निर्गुण संत कवियों की स्त्री–विषयक चेतना	डॉ0 अनिता रानी	67–70
15.	रामायण में वर्णित जीवन मूल्यों की वर्तमान प्रासंगिकता	राजीव कुमार, डॉ प्रशांत कुमार	71–74
16.	मृच्छकटिकम् में नारी विमर्श – एक अध्ययन	डॉ0 सोनिया चौहान	75–76
17.	महिलाओं के विरूद्ध अपराधों के प्रकार एवं कानूनी धाराएंः पानीपत नगर का एक अध्ययन	हेमलता, डॉ0 प्रदीप	77–80
18.	रेवाड़ी नगर मे ठोस अपशिष्ट निष्पादन की विधियां एवम् उपाय	डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा ,सोनू	81–84
19.	उत्तर पश्चिमी भारत के वाणिज्य व्यापार पर विदेशी आक्रमणों का प्रभाव : एक अध्ययन	पुष्पा देवी, डॉ० शोभा मिश्रा	85–86
20.	नई शिक्षा नीति 2020:उपलब्धि एवम् चुनौतियां	डॉ0 रविता पाठक	87–89
21.	आहार एवं नई फूड टेक्नोलॉजी का विश्लेषण	अस्मिता के स्वर सुप्रिया	90–91
22.	डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन और आदर्श शिक्षक की कसौटी (5 सितंबर को शिक्षक दिवस पर विशेष)	डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय तारेश	95–95
23.	रामवृक्ष बेनीपुरी की साहित्य–साधना (23.12.1899–7.9.1968)	डॉ0 सुरेश साहु	96–97
24.	हिंदी साहित्य को संत रविदास का प्रदेय	डॉ0 चंद्र मणि किशोर	98–99
25.	प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से किसानों की स्थिति पर प्रभाव ;उत्तर प्रदेश के संदर्भद्ध	वर्षा त्यागी, डॉ0 सीमा मलिक	100–102
26.	मानव और प्रकृति के बीच संबंधः एक पर्यावरणीय भूगोलिक दृष्टिकोण	डॉ0 नाज़िया खान	103–104
27.	अज्ञेय का विचार और दर्शन निबंधों के संदर्भ में	डॉ0 उर्मिला कुमारी	105–107
28.	विश्व–साहित्य में वाल्मीकि रामायण	डॉ0 राम कृपाल	108–110
29.	बनासकांठा जिले के दांता तालुका की आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थितिरू स्थानीय / आंशिक और सरकारी / गैर–सरकारी दोनों स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन	Dr. Parul Patel	111–114
30.	महादेवी के काव्य में गीति तत्त्व	सुनीता देवी	115–117
31.	गुप्तजी की नारी भावना	राजश्री गुप्ता	118–121
32.	Measuring ICT Adoption and Utilization in Indian E-Business and Marketing: A Bench marking Study[1,2]	Dr. Vinod Kumar, Mr. Chandan Kumar	122–127
33.	The Role of a Public Prosecutor and Victim's Limited Right to Represent his Case	Ms. Sujata, Dr. Arti Sharma	128–132
34.	Impacts of Climate Change Over Agriculture in India	Virender	133–136
35.	Ecocriticism: Nature In Literature	Reema Kumari	137–137
36.	Cleanth Brooks and his Critical Creed By	Dr. Sunita Yadav	138–139
37.	Responsible Factors for Crime Against Women in Rewari District of Haryana	Sangita Kumari , Dr. Pardeep Kumar Sharma	140–144
38.	Teacher Preparation for 21st Century in Early Childhood Education: Policy and Challenges	Anjita Singh Dr. Seema Rani	145–148
39.	Service Trade Synergies and Divergences: India and China in the Global Market	Jyoti	149–154
40.	The National Education Policy (NEP) 2020: A Crossroad for Indian Education	Dr. Nazia Khan	155–157
41.	Study of Green Movement: Initiatives by Government and Influence on Consumers	Ms. Gargi Sharma	158–162
42.	Socio-Economic Impacts of Demography in India	Virender	163–166
43.	Spiritual Intelligence and Empathy among College Students	Anu Kumari, Dr. Shalini kumari	167–169

1

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण

(Moderate Phase of the Indian National Movement)

सुमन सैनी

प्रस्तावनाः–

कांग्रेस के इस चरण (1885–1905) को नरमदलीय चरण के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस चरण में आंदोलन का नेतृत्व मुख्यतया उदारवादी नेताओं के हाथों में रहा। इनमें दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दिनशा वाचा, डब्ल्यूसी बनर्जी, एस.एन. बनर्जी, रासबिहारी घोष, आर.सी. दत्त, बदरुद्दीन तैय्यबजी, गोपाल कृष्ण गोखले, पी.आर. नायडू, आनंद चार्लू एवं पंडित मदन मोहन मालवीय इत्यादि प्रमुख थे। इन नेताओं को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम चरण के नेताओं के नाम से भी जाना जाता है। ये नेता उदारवादी नीतियों एवं अहिंसक विरोध प्रदर्शन में विश्वास रखते थे। इनकी यह विशेषता इन्हें 20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में उभरने वाले नव–राष्ट्रवादियों, जिन्हें उग्रवादी कहते थे, से पृथक करती है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (Indian National Congres):–

ए.ओ. ह्यूम, एक सेवानिवृत्त अंग्रेज सेवक ने अखिल भारतीय चरित्र के एक संगठन को एक व्यावहारिक और निश्चित आकार दिया, जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के रूप में जाना जाने लगा। यह 1885 में दादाभाई नौरोजी और दिनशॉ वाचा के साथ ए.ओ. ह्यूम द्वारा बनाया गया संगठन था। दिसंबर 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला सत्र बॉम्बे में व्योमेश चंद्र बनर्जी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था।

तत्पश्चात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सत्र हर साल दिसंबर के महीने में दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, बदरुद्दीन तैयबजी, पी आनंद चारलू, आनंद मोहन बोस और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे महान नेताओं के नेतृत्व में आयोजित किया जाने लगा। कलकत्ता विश्वविद्यालय की पहली महिला स्नातक कादम्बिनी गांगुली ने 1890 में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया।

उदारवादी उपागमः–

उदारवादी, कानून के दायरे में रहकर अहिंसक एवं संवैधानिक प्रदर्शनों के पक्षधर थे। यद्यपि उदारवादियों की यह नीति अपेक्षाकृत धीमी थी. तथापि इससे क्रमबद्ध राजनीतिक विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। उदारवादियों का मत था कि अंग्रेज भारतीयों को शिक्षित बनाना चाहते हैं, तथा वे भारतीयों की वास्तविक समस्याओं से बेखबर नहीं हैं। अतः यदि सर्वसम्मति से सभी देशवासी प्राथना–पत्रों, याचिकाओं एवं सभाओं इत्यादि के माध्यम से सरकार से अनुरोध करें, तो सरकार धीरे–धीरे उनकी मांगें स्वीकार कर लेगी। अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उदारवादियों ने दो प्रकार की नीतियों का अनुसरण किया। पहला, भारतीयों में राष्ट्रप्रेम एवं चेतना जागृत कर राजनीतिक मुद्दों पर उन्हें शिक्षित करना एवं उनमें एकता स्थापित करना। दूसरा, ब्रिटिश जनमत एवं ब्रिटिश सरकार को भारतीय पक्ष में करके भारत में सुधारों की प्रक्रिया प्रारंभ करना। इसके लिए राष्ट्रवादियों ने 'प्रार्थना एवं याचिका' की पद्धति अपनाई, और यदि वे असफल होते, तो संवैधानिक विरोध का सहारा लेते। अपने दूसरे उद्देश्यों के लिये राष्ट्रवादियों ने 1889 में लंदन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ब्रिटिश कमेटी 'इंडिया' की स्थापना की। दादाभाई नौरोजी ने अपने जीवन का काफी समय इंग्लैंड में बिताया, तथा विदेशों में भारतीय पक्ष में जनमत तैयार करने का प्रयास किया। 1890 में नौरोजी ने दो वर्ष पश्चात (अर्थात् 1892 में) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन लंदन में आयोजित करने का निश्चय किया, किंतु 1891 में लंदन में आम चुनाव आयोजित किये जाने के कारण उन्होंने यह निर्णय स्थगित कर दिया।

उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटेन से भारत का संपर्क होना भारतीयों के हित में है, तथा अभी ब्रिटिश शासन को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती देने का यथोचित समय नहीं आया है, इसीलिए बेहतर होगा कि उपनिवेशी शासन को भारतीय शासन में परिवर्तित करने का प्रयास किया जाये।

उदारवादी चरण के तरीके (Methods of The Moderate Phase):–

नरमपंथी आश्वस्त थे कि अंग्रेजों का मूल उद्देश्य भारतीयों के प्रति न्यायपूर्ण होना था। उनका मानना था कि याचिकाओं, प्रस्तावों, प्रतिनिधिमंडलों, पर्चे और बैठकों के माध्यम से जनता की मांगों और जनता के विचारों को अंग्रेजों के सामने पेश करने से उन्हें न्याय मिलेगा। उन्होंने दो पद्धतियों को नियोजित कियाः–

एक मजबूत जनमत बनाकर राष्ट्रीय भावना को जगाना और आम राजनीतिक सवालों पर उन्हें एकजुट करना। ब्रिटिश सरकार को उनकी मांग की तर्ज पर सुधार लाने के लिए राजी करना। नरमपंथियों की विधि को 3P (Pray, Petition and Protest) प्रार्थना, याचिका और विरोध के रूप में जाना जाता है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण की मांग :–

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण के नेताओं द्वारा रखे गए उद्देश्य और मांगें इस प्रकार हैं :

संवैधानिक मांगें (Constitutional Demands):–

केंद्र और प्रांतों में विधान परिषद और विधानसभा का विस्तार किया जाये।

वायसराय की कार्यकारी परिषद में भारतीयों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो।

नरमपंथियों ने भी ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वराज की मांग की।

उच्च पदों पर अधिकांश निर्वाचित भारतीय हों। बजट पर नियंत्रण हो।

आर्थिक मांग (Economic Demands):–

नमक कर और चीनी शुल्क समाप्त किया जाए। सेना के खर्च में कमी की जाये। भू–राजस्व में कमी की जाये जिससे किसानों

का बोझ कम हो सके।

सरकारी सहायता और टैरिफ संरक्षण के माध्यम से आधुनिक उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाये।

प्रशासनिक मांगें (Administrative Demands):–

भारतीय सिविल सेवा परीक्षा इंग्लैंड और भारत में एक साथ आयोजित की जाये। स्थानीय निकायों को अधिक शक्ति दी जाए। न्यायपालिका और कार्यपालिका का पूर्ण पृथक्करण हो। प्राथमिक शिक्षा का प्रसार किया जाये।

1878 के शस्त्र और लाइसेंस अधिनियम का निरसन हो। बागान श्रमिकों के काम करने की स्थिति में सुधार हो। विदेशों में भारतीय मजदूरों का बेहतर इलाज किया जाये। कल्याण पर व्यय में वृद्धि की जाये।

नागरिक अधिकारों की मांग (Civil Rights Demands):–

संघ बनाने का अधिकार

भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

स्वतंत्र प्रेस का अधिकार।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण के नेता (Leaders of the liberal phase of the Indian national):–

दादाभाई नौरोजी :–

उन्हें भारत के ग्रैंड ओल्ड मैन और भारत के अनौपचारिक राजदूत के रूप में जाना जाता है। वह ब्रिटेन में हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य बनने वाले पहले भारतीय थे। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे और उन्होंने कांग्रेस के तीन सत्रों की अध्यक्षता की थी। उन्होंने ड्रेन थ्योरी का तथ्य प्रस्तुत किया और अपनी पुस्तक 'पॉवर्टी एंड अन–ब्रिटिश रूल इन इंडिया' में भारत के ब्रिटिश शोषण की व्याख्या की।

फिरोजशाह मेहता:–

उन्हें बॉम्बे के शेर (Lion of Bombay) के रूप में जाना जाता था। 1890 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। बॉम्बे क्रॉनिकल एक अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र था जिसे 1910 में उनके द्वारा शुरू किया गया था। कानून में उनकी सेवा के लिए उन्हें अंग्रेजों ने नाइट की उपाधि दी थी।

व्योमेश चंद्र बनर्जी :–

वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सह–संस्थापकों में से एक थे और वे एक भारतीय बैरिस्टर थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष थे।

वह ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स का चुनाव लड़ने वाले पहले भारतीय थे।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी :–

उन्हें राष्ट्रगुरु के नाम से जाना जाता है। 1876 में उन्होंने राजनीतिक सुधार लाने के लिए इंडियन नेशनल एसोसिएशन की स्थापना की। उन्होंने द बंगाली नाम से एक अखबार शुरू किया। उन्होंने 1869 और 1871 में दो बार भारतीय सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की। 1869 में उन्हें आयु विवाद के कारण प्रतिबंधित कर दिया गया और 1871 में उन्हें नस्लीय भेदभाव के कारण बर्खास्त कर दिया गया। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रस्ताव रखा था।

जी सुब्रमण्यम अय्यर:–

वे मद्रास महाजन सभा के सह–संस्थापक थे। उन्होंने दो अखबार द हिंदू (अंग्रेजी) और स्वदेश मित्रन (तमिल) शुरू किए। वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय भागीदार थे।

जस्टिस एम जी रानाडे:–

उन्हें 'राव बहादुर' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने पूना सार्वजनिक सभा, प्रार्थना समाज और अहमदनगर एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की।वह विधवा विवाह संघ के संस्थापकों में से एक थे।

गोपाल कृष्ण गोखले:–

वे भारतीय समाज के सेवकों के संस्थापक थे। उन्होंने भारतीयों द्वारा स्व–शासन के लिए अभियान चलाया।

आंदोलन के उदारवादी चरण की उपलब्धियां (Achievements Of Moderate Phase Of Movement):–

1) उन्होंने एक व्यापक राष्ट्रीय जागृति और एक राष्ट्र से संबंधित होने की भावना भी पैदा की।

2) 1892 के भारतीय परिषद अधिनियम का पारित होना।

3) उन्होंने जनता के सामने अंग्रेजों के शोषणकारी स्वभाव को उजागर किया।

4) 1886 में लोक सेवा आयोग की नियुक्ति हुई।

5) उन्होंने उदारवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रवाद के विचार को लोकप्रिय बनाया और लोगों को उसी तर्ज पर प्रशिक्षित किया।

6) भारतीय व्यय पर वेल्बी आयोग का गठन 1895 में किया गया था।

7) भारत और इंग्लैंड में एक साथ परीक्षा आयोजित करने के लिए हाउस ऑफ कॉमन्स में एक प्रस्ताव पारित किया गया था।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण की आलोचना (Moderate Phase The Indian National Movement: Criticisms):–

1) वे अपनी मांगों का दायरा बढ़ाने में विफल रहे।

2) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी चरण में जन भागीदारी का अभाव था और इसमें केवल एक संकीर्ण सामाजिक आधार शामिल था।

3) उदारवादी जन संघर्ष की शक्ति को कम आंकते हैं।

4) प्रार्थना और याचिका पद्धति का उपयोग करने के लिए उनकी आलोचना की गई।

5) इसमें शिक्षित वर्ग का प्रभुत्व था और इस प्रकार पश्चिमी राजनीतिक प्रथाओं से विचार प्राप्त हुए।

हालांकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण तत्काल लाभ लाने में विफल रहा, लेकिन उन्होंने जनता के बीच राष्ट्रवाद की भावना पैदा की और राष्ट्रीय आंदोलन के आगे बढ़ने की नींव रखी।

निष्कर्ष:–

कुछ आलोचकों के मतानुसार, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में

सुमन सैनी
पुत्री श्री रामपाल सैनी
गांव पो0 (Bhain)
P.O Gulkani
(जैन मन्दिर के पास)
जिला – जीन्द हरियाणा 126102

नर्मपंथियो का नाममात्र का योगदान था, इसीलिए वे अपने चरण में कोई ठोस उपलब्धि हासिल नहीं कर सके। इन आलोचकों का दावा है कि अपने प्रारंभिक चरण में कांग्रेस शिक्षित वर्ग अथवा भारतीय उद्योगपतियों का ही प्रतिनिधित्व करती थी। उनकी अनुनय–विनय की नीति को मध्य आंशिक सफलता ही मिली और उनकी अधिकांश मांगें सरकार ने स्वीकार नहीं कीं। किंतु, नरमपंथियों की उपलब्धियों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, यथा–उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज को नेतृत्व प्रदान किया।

साझा हित के सिद्धांतों पर आम सहमति बनाने एवं जागृति लाने में वे काफी हद तक सफल रहे। उन्होंने भारतवासियों में इस भावना की ज्योति जलाई कि सभी के एक ही शत्रु (अंग्रेज) हैं, तथा सभी भारतीय एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं।

उन्होंने लोगों को राजनीतिक कार्यों में दक्ष किया तथा आधुनिक विचारों को लोकप्रिय बनाया। उन्होंने उपनिवेशवादी शासन की आर्थिक शोषण की नीति को उजागर किया।

नरमपंथियों के राजनीतिक कार्य दृढ़ विश्वासों पर अवलंबित थे, न कि उथली भावनाओं पर। उन्होंने इस सच्चाई को सार्वजनिक किया कि भारत का शासन, भारतीयों के द्वारा उनके हित में हो। उन्होंने भारतीयों में राष्ट्रवाद एवं लोकतांत्रिक विचारों एवं प्रतिनिधि संस्थाओं के विचारों को लोकप्रिय बनाया। एक समान राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यक्रम विकसित किया, जिससे बाद में राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली।

उन्हीं के प्रयासों से विदेशों, विशेषकर इंग्लैंड, में भारतीय पक्ष को समर्थन मिल सका।

संदर्भ :–

1.) अहीर राजीव, (2021) आधुनिक भारत का इतिहास (स्पेक्ट्रम), स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. ए291 प्रथम तल जनकपुरी, नई दिल्ली

2.) अहिर राजीव (2021), आधुनिक, स्पेक्ट्रम बुक्स पब्लिकेशन न्यू दिल्ली

3.) शुक्ल रामलखन (2017), आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माभ्यं कार्यालय निदेशाल्य सरकार सुमित (2019), आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन

4.) बंदोपाध्याय शेखर (2015), प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड न्यू दिल्ली

5.) गुप्ता डॉ मोहनलाल (2014), आधुनिक भारत का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार

6.) पांडे, आधुनिक भारत, प्रयाग अकादमी

7.) कुमार जितेंद्र, आधुनिक भारत, लक्ष्मी बुक डिपो

8.) Chandra Bipan (2020), Adhunik Bharat Ka Itihas] Orient Blackswan

9.) Miglani K-L & Juneja M-M (1978) Freedom Movement In India Kapoor Publications Karnal

2

भारतीय समाज और उपेक्षित किसान

Pavitra Devi

सारांश

मूल शब्द : उपेक्षित, चकबन्दी, काश्तकारी, भूमण्डीकरण, सब्सिडी।

भारतीय किसान का जीवन उपेक्षाओं से भरा हुआ है जो पूरे संसार के लिए अन्य पैदा करता है वही समाज में नहीं देती है। किसान सरकार से कर्ज़ माफी की गुहार करती है । किसान जो इतने से फसल किसान का उत्पादन करने में तत्पर रहता है वहीं किसान मीडिया द्वारा छला जा रहा है और उन्हीं ही स्वार्थी, अनपढ़ समझा जाता है। सरकार अपनी नीतियों के आधार पर किसानों से धोखाधड़ी करता है।

वर्तमान समय में किसानों की दशा सुधारने के लिए सरकार द्वारा वेष कदम उठाने चाहिए। ग्रामीणों में कृषि पर आधारित उद्योग धन्धों की शुरूआत करनी चाहिए, जिससे न्यूनतम प्रशिक्षण से अधिक लोगों को सेमिनार मिल सके। बाजार में अनिश्चिता की स्थिति को समाप्त करने तथा एक राष्ट्रीय कृषि बाजार के निर्माण की दशा में सार्थक प्रयास करने होंगे, ताकि किसानों को बाजार में उचित मूल्रू थ्म्ल स्वै। इसी चुनौती को विवेकीराय ने 'समर शेष' उपन्यास में रामराज विद्यार्थी के माध्यम से चित्रित किया है जब रामराज विद्यार्थी स्कूल में हो रही प्रतियोगिता में कृषक उपेक्षा मुछें को उठाते हैं कि गाँवों में अभी तक पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाया है। सरकार द्वारा जो किसानों के कल्याण के लिए योजनाएँ जिससे किसानों को आए बिना चुनौती का सामना करना पड़ रहा है जो कि इस "प्रस्तावना को आगे बढ़ाते हुए पी0 टी0 टीचर बुहारथ राय ने कहा, गलती यह हुई कि समूची विकास दृष्टि नमर हो गयी और इससे देश की आत्मा मर गयी। इसमें दो सच नहीं कि गाँवों को अभूतपूर्व सम्मान मिला किन्तु वह सारा सम्मान अब सिद्ध हुआ। गांव टूट कर नगर नहीं बन सके और वे पुराने गाँव–गाँव भी नहीं रह सके। उनके भीतर का सहकर बिखरकर धीरे–धीरे एक नये प्रकार की व्यापक और गुपचुप उपेक्षा में परिणत होता चला गया। सन् 1960 के बाद तो गाँव एकदम पिंक गये। योजनाएँ ग्राममन को छू नहीं सका। उसके लिए विवेकशील लोकतन्त्र की आवश्यकता भी वह उगा नहीं। जनता–शिक्षित नहीं हुई। शिक्षा का प्रचार–प्रसार खोखला निकला। इस अवधि के शिक्षितान अशिक्षितों से अधिक निकम्मे निकले। बेकारी और नौकरी की भूख बढ़ानेवाली तथा लक्ष्यहीन शिक्षा ने समूचे वातावरण को गहरी निराशा से भर दिया। अनिश्य और शंकाशीलता हमारी उपलब्धि हो गयी है। राजनीतिक हड़कम्प में लोगों को ध्यान शिक्षा, समाज और संस्कृति से हट गया और उसमें एक गथा कामकाजी, सतहीपन आ गया। आर्थिक मोर्च पर मिली सफलता की कीमत सोचिये तो कितनी गहरी चुकानी पड़ी? प्रथम पंचवर्षीय योजना से ही और अब तक घूम–फिरकर कामोवेश कृषि की तुलना में उद्योगों पर बल पड़ गया और इस प्रकार कृषक भारत में चुनौतियाँ पड़ी रह गयी।

भारतीय किसान बच्चों की चिंता से ग्रस्त रहता है, उस पर हर रोज नई चुनौतियाँ आती रहती है। कभी सूखा पड़ने की समस्या कभी कुर्सी की समस्या। कभी बच्चों के विवाद की चिंता कि कैसा वर मिलेगा। इसी समस्या को विवेकी राय ने 'समर शेष' उपन्यास में मा0 पण्डित संतोषी के माध्यम से चित्रित की है। मा0 सन्तोषी सोचता है कि उसकी बेटी कालिंदी बहुत ही चंचल स्वभाव की है उसका विवाद कैसे कर पाएगा और दहेज की समस्या उसे सताती रहती है। जो कि इस प्रकार है –

आवास की समस्या प्रत्येक भरतीय किसान व मजदूर की समस्या होती है क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत न होने कारण किसान अपने वर्जर मकान की स्थिति सुधारने में असमर्थ होते है। उन्हें मकान बनाने के लिए कर्ज लेना पड़ता है और कर्ज न चुकाने पर जमींदार उनकी जमीनं को हड़पने लग जाते है। इसी समस्या को पंकज सुधीर ने 'अकाल में उत्सव' उपन्यास में रामाप्रसाद किसान के माध्यम से चित्रित किया है जो कि इस प्रकार है– "पिता ने जो कच्चा–पक्का घर बनाया था उसे भी समय ने कोंच–कोंच कर अब खण्डहर कर दिया था। उसी खंडहर में रामप्रसाद का परिवार का गुजारा कैसे होता था, तीन बच्चे, यह था उसका परिवार। दो एकड़ मजीन में परिवार का गुजारा कैसा होता था वह रामप्रसाद को ही पता था। उसमें आजीवन परिवार की आँखों में लहरा जाते लेकिन पता यह चलता कि फसल आती, पैसा नहीं आता। मुट्ठी में केवल पसीने की बूँद रह जाती। रामप्रसाद खुद भी दूसरों के खेतों में कुछ काम करके थोड़ा बहुत जुटा लेता। दिन–रात खटता, अपने खेत में भी और अंधबटिया से लिए गए खेतों में भी। कहने को किसान और काम से मजदूर। हर बरसात में घर की दीवारें डसती कि अभी लहराकर झुकेनी और पाँचों प्राणियों की ..... बना देनी हर बरसात में निर्णय होता था कि इस बार सोयाबीन की फसल में कम से कम एक कमरा तो ऐसे ठीक करवाना है, जिसमें परसात का समय बिना किसी डर के बिताया जा सके, बरसात

क्या लगा, हजार के इर्द–गिर्द वेतन पाने वाला उच्चं वंश का प्रतिष्ठित अध्यापक भीतर से कितना बेदर्द है। एक दो वर्ष से घर गृहस्थी का हर नया काम सका है। गर्दन पर नंगी छुरी तनी है, लड़की की शादी करनी है। नये कपड़े चारपाई, जाड़े की रजाई आदि और

यहाँ तक साबुन तेल और सहजी जैसी चीजे भी जरूरतों पर भी हाथ सिपटा रहता है। कोई भीतर से रोकता रहात है, सावधान लड़की की शाद करी है और यह तक का अमंगल है जब तक यह माँगलिक कुल सम्पन्न नहीं हो जाता। अगने वर्षे में अरे ओर कसती वाचेगी। दो साल पहले कुछ ईंट मगाँकर उत्तम और घर तो पक्की भरत वाला हो गया पर उधर वाले मॉटीं के पुराने टूट फूटं और खदर कर ढहते –ढिमलाते भाग रहे हैं। पुराने बाप–दादे की बनवायी हुई दखात्तों की पुरातन दालान? कच्ची यस? चरन पर सदा से रहने वाली गाय–बैल, ओह, सारा–सारी अपनी सोच, की दुनिया सदग्रस्त हो गयी है। पैसा आता नहीं। विवाह के लिए अपने बच्चों को अपने को कितना सिकीडना दबाना पड़ता है? बाप दादे कब थोड़े खेत परिश्रम माँगते हैं, सो कौन करे, अब ले मजदूर, हलवाहा और घर रहकर जानवरों को खिलाने–पिलाने वाला चरवाद मिलना भी कठिन। खेत तोड़ दिया शिकगी, खेतों को उठा दिया। सो डर लगता है, कहीं कोई मानून न दबा दे कि जमीन अब तुम्हारी नही उसकी है जो जोत बो रहा है।"[2]

क्योंकि नारी बडी ही संवेदनशील है अगर कोई उसकी भावनाओं से दगाबाजी करता है तो वह फिर नागिन, काली बनकर टूट पड़ती है। अगर नारी कोमल भावों से दिखाई देती है तो उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भी दिखाई देती है वह इसके लिए चंडी का रूप धारण कर लेती है अगर नारी में पूर्ण रूप से डूबती है तो उतनी ही बड़ा प्रतिशोध भी ले लेती है।

आज के परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में मनमुटाव के अनेक कारण दिखाई दे रहे है। अगर पति–पत्नी की अभिरूचियाँ, सोच नहीं मिल पा रही है तो भी उनके सम्बन्धों में मनमुटाव होने लगता है, क्योंकि अगर पुरुष स्त्री को सभी प्रकार से सन्तुष्ट नहीं कर पा रहा है तो स्त्री में कुण्ठा, दमित वासनाएँ उभरने लगती है। जिसका कारण वह अन्य पुरुष को अपनी भावनाओं का साझेदार समझने लगती है और अगर पुरुष नपुंसक प्रवृति का है तो उसकी सारी इच्छाएँ चूर–चूर होकर रह जाती है जिसका चित्रण इस नाटक में शीलवती नामक पात्र के माध्यम से दिखाया गया है जो ओक्काक जो उसका पति है वह नपुंसक है जिसके कारण उन्हें कोई संतान नहीं होती और दोनों पात्रों को समाज की बातों को मानना पड़ता है परन्तु ज्यादा पीड़ित एक स्त्री होती है, जो कि इस प्रकार है –

ओक्काक : (तीव्र स्वर में) वैवाहिक बन्धन की कुछ मर्यादा भी होती है।

शीलवती : (आवेश से) निभायी है मैने और पाँच वर्ष तक मर्यादा निभाने में उतना सन्तोष नहीं मिला।

बीत जाती और बात की जाती।"

निष्कर्ष–

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसानों का जीवन बड़ा ही दुःख भरा हुआ होता है। वह आखिकार समाज की व्यवस्था से तंग आकर फाँसी पर झूल जाता है और अपनी आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है। किसान हो तनाव ग्रस्त रहता है। सरकार सारी योजनाएँ उनके खिलाफ बनाती है जिसके कारण वह पीड़ित होता रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विवेकी राय, समा शेष है, पृ0 67
2. वही, पृ0 67
3. पंकज सुबीर, अकाल में उत्सव, पृ0 10

Pavitra Devi

Assit. Professor (Hindi)

Govt. College, Biroha

Distt. Jhajjar (Haryana)

Pin - 124106

Mob. 9728091817

3

अधिगम निर्योग्य बालक

डॉ0 (श्रीमती) राजेश गिल

सारांश

विशिष्ट बालकों में एक श्रेणी अधिगम विकलांगता ग्रस्त बच्चों की है जिन्हें सीखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। ऐसे बालकों की पहचान करना व उन्हें शिक्षित करना एक सामान्य अध्यापक के लिए थोड़ा कठिन होता है। प्रस्तुत लेख में अधिगम विकलांगता ग्रस्त बच्चों की शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है यथा ऐसे बच्चे अधिकतर कैसे व्यवहार प्रदर्शित करते हैं जिनके आधार पर इन्हें पहचाना जा सके इस प्रकार की विकलांगता के लिए कौन– से कारक जिम्मेदार होते हैं? अधिगम विकलांगता कितने प्रकार की होती है? और अधिगम विकलांगता ग्रस्त बच्चों की शिक्षा को सुगम बनाने के लिए किन–किन शिक्षण विधियों को अपनाया जा सकता है? इन सबका उल्लेख लेखक द्वारा इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

एक सामान्य कक्षा में कई तरह के विद्यार्थी होते हैं। इनमें से ज़्यादातर बालक सामान्य होते हैं तथा कुछ विशिष्ट बालकों में प्रतिभाशाली, मंदबुद्धि, पिछड़े, अधिगम निर्योग्य, सृजनात्मक तथा शारीरिक रूप से विकलांग बालक आते हैं। ऐसे बालकों को सामान्य बालकों की तरह शिक्षा देने से इनका कुछ ज्यादा भला नहीं होता है, लेकिन यदि इन बालकों पर विशेष ध्यान दिया जाए और इन्हें पर्याप्त अवसर दिया जाए तब न केवल इनका विकास किया जा सकता है, बल्कि इनमें निहित योग्यताओं का उपयोग देश के विकास में भी किया जा सकता है। अतीत में ऐसे कई लोग हुए हैं जो किसी दृष्टि से विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते थे, लेकिन समाज के विकास में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया और प्रसिद्ध हुए जैसे–थामस अल्वा एडीसन, अगाथा क्रिस्टी, पॉब्लो पिकासो, अल्बर्ट आइंस्टाइन, लिओनार्डद विन्सी डिजनी, कालीदास एवं तुलसीदास आदि।

विशिष्ट बालकों में एक प्रकार अधिगम– निर्योग्य बालक का भी है। अधिगम निर्योग्य बालक वे होते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई हो सकती है। अधिगम का अर्थ होता है श्सीखना श और निर्योग्य का अर्थ है जो योग्य नहीं है। अर्थात् ऐसे बालक जो आसानी से नहीं सीख पाते हैं, जिन्हें सिखाने के लिए विशेष कई प्रयास करने होते हैं, अधिगम निर्योग्य बालक कहलाते हैं। ऐसे विद्यार्थी जो विद्यालय में असफल हो रहे हों, कि पहचान अधिगम निर्योग्य बालक के रूप में की जाती है। इन बालकों को सुनने, लिखने, पढ़ने, बोलने, सोचने व गणितीय कार्यों जैसे गणना करना, अंक पहचानना इत्यादि में कठिनाई होती है। ये कठिनाइयाँ उन्हें आंतरिक एवं बाह्य कारकों– दोनों से ही हो सकती है। चूँकि इन बालकों की बुद्धि औसतया औसत से अधिक होती है, अतः इन्हें पहचानना एक सामान्य अध्यापक के लिए अत्यन्त मुश्किल होता है। अधिगम निर्योग्यता एक या अनेक क्षेत्रों में हो सकती है, अतरू एक अधिगम निर्योग्य बालक जो एक क्षेत्र में कठिनाई अनुभव करता है, वह अन्य क्षेत्र / क्षेत्रों में सामान्य हो सकता है। ऐसी स्थिति में इन्हें पहचानने के लिए कुशल, प्रशिक्षित व विशिष्ट शिक्षा में विशेषज्ञता रखने वाले अध्यापकों की आवश्यकता होती है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सा परिषदों एवं विद्वानों ने अध्ययन एवं विश्लेषण के आधार पर अधिगम निर्योग्य बालकों के निम्न लक्षण बताए हैं, जिनके आधार पर इनकी पहचान की जा सकती है–

1. अधिगम निर्योग्य बालक अतिक्रियाशील होते हैं। ये कुछ समय भी एक जगह नहीं बैठ पाते हैं। थोड़े–थोड़े समय में अपनी जगह बदलते रहते हैं। कभी एक स्थान पर बैठते हैं, कभी खड़े हो जाते हैं, कभी दूसरी जगह पर बैठते हैं, बैठे–बैठे हाथ–पैर हिलाते रहते हैं।
2. ये उत्तेजनात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। जैसे यदि इनसे लिखने को कहा जाए तब ये पृष्ठ फाड़ सकते हैं, पेन–पेंसिल तोड़ सकते हैं या फेंक सकते हैं।
3. अधिगम निर्योग्य बालकों में आकृति–पृष्ठभूमि में भ्रम बना रहता है, अर्थात् यदि इन्हें कोई आकृति दिखाई जाए तब उन्हें उसमें कभी एक आकृति दिखाई देती है तो कभी दूसरी।
4. ऐसे बालकों से अनुक्रिया प्राप्त करने के लिए कई प्रयास करने होते हैं, जैसे माँ अपने अधिगम निर्योग्य बालक से कहे कि बेटा ये शीशी उठाकर मुझे दो. तब वह तुरन्त शीशी उठाकर नहीं देता है। उसे कई बार बोलना होता है, तब वह शीशी उठाएगा।
5. ये बालक अधिक समय तक एक वस्तु / व्यक्ति पर ध्यान एकाग्र नहीं कर पाते हैं।
6. ये बालक सार्थक विचारों का चयन करने में कमजोर होते हैं। जैसे यदि अध्यापक एक कहानी सुनाए कि एक गरीब बालक को रुपयों की अत्यधिक आवश्यकता होने पर भी उसे रुपयों से भरा बैग मिलने पर उसने बैग को उसके मालिक तक पहुँचाया तब अधिगम निर्योग बालक कहानी से ईमानदारी की संकल्पना प्राप्त नहीं कर सकेगा, बल्कि कहेगा कि 'बेचारा कितना गरीब बालक था' 'उसको रुपयों की कितनी आवश्यकता थी' इत्यादि ।
7. अधिगम निर्योग्य बालक कार्य के सार्थक गुणों को अनदेखा करते हैं या ज़्यादा गतिविधि के साथ अनुक्रिया करते हैं। जैसे यदि अध्यापक इनसे कहे कि अपनी कक्षा में जाओ, तब ये बालक या तो खड़ा रहेगा या शीघ्रता से अपने बैग की जगह दूसरे बालक का बैग लेकर तेजी से दौड़ेगा व अपनी कक्षा की बजाए दूसरी कक्षा में चला जाएगा।
8. ये बालक अधिकाँशतया हाथों से बैचेनी प्रदर्शित करते हैं। कभी अपने हाथ बाँध कर बैठते हैं, कभी हाथ को सिर पर रखते हैं, कभी दोनों हाथ मलते हैं, कभी हाथ–पैर पर रखते हैं।
9. ये बालक किसी व्यक्ति की पूरी बात सुने बगैर उत्तर देना शुरु कर देते हैं।

10. समूह में पढ़ते समय या खेलते समय अपनी बारी का इंतजार करने में इन्हें परेशानी होती है। जैसे यदि कक्षा में पाठ का वाचन चल रहा हो तब ये अपनी बारी का इंतजार किए बिना चाहे जब पढ़ने के लिए खड़े हो जाते हैं।

11. ये अपना काम समाप्त नहीं कर पाते हैं। जैसे श्यामपट पर लिखी गयी पूर्ण विषय वस्तु को अपनी कॉपी में नहीं उतार पाते हैं।

12. ये बालक एक कार्य को पूरा किए बिना दूसरे कार्य में लग जाते हैं। जैसे सवाल करते–करते चित्र बनाने लगते हैं, फिर कविता पढ़ने लगते हैं। यहाँ तक कि लिखते समय एक वाक्य भी पूर्ण नहीं करते हैं और दूसरा वाक्य लिखना शुरु कर देते हैं।

13. प्रायः अधिगम निर्योग्य बालक बातूनी होते हैं।

14. यदि कुछ व्यक्ति समूह में बात कर रहे हों या खाना खा रहे हों तब अधिगम निर्योग्य बालक उसमें व्यवधान उत्पन्न करने की कोशिश करेगा। वह बीच में जा कर चिल्ला सकता है। खाना खाने वाले व्यक्तियों के भोजन को अस्त–व्यस्त कर सकता है।

15. अधिगम निर्योग्य बालक प्रायः जोखिम पूर्ण गतिविधियों को उनके परिणाम की चिन्ता किए बिना करने लग जाते हैं। जैसे सड़क पर वाहनों को बिना देखे एवं हार्न सुने, दौड़कर सड़क पार करने लग जाते हैं। आकाश में पतंग आती देखकर छज्जा खत्म होने पर भी बिना देखे दौड़ जाते हैं।

16. अधिगम निर्योग्य बालकों की स्मृति कमजोर होती है। इन्हें शब्दों को याद रखने में कठिनाई होती है, जैसे यदि अध्यापक कहे कि कल सभी को रंगीन वस्त्रों में प्रातः 11 बजे विद्यालय आना है। तब निअधिगम निर्योग बालक माँ से कहेगा कि कल टीचर जी ने आने को कहा था, लेकिन अन्य सूचनाएँ उसे याद नहीं रहेगीं।

17. कुछ अधिगम निर्योग्य बालकों का सामाजिक समायोजन अत्यन्त कम होता है। ये सामाजिक नियमों को जानने के पश्चात् अभी नहीं मानते हैं जैसे ये अपने अध्यापकों को नमस्ते तक नहीं करते।

18. ये बालक दूसरे बालकों / व्यक्तियों के साथ बातचीत करते समय अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। शब्दों को रुक–रुक कर बोलते हैं। जैसे मैं कल..... गृह... गृहकार्य... करूँगा।

19. इन बालकों की शैक्षणिक उपलब्धियाँ कम होती हैं। इन्हें पढ़ने, लिखने एवं गणित के क्षेत्रों में कठिनाई होती है, जिससे वे इन विषयों में कम अंक प्राप्त करते हैं।

20. अधिगम निर्योग्य बालकों में गामक विकार होता है। अर्थात्ये माँसपेशियों का नियंत्रण एवं सुचारू संचलन नहीं कर सकते हैं। ये अलग तरीके से चलते हैं तथा वे गेंद फेंकने एवं पकड़ने में कठिनाई अनुभव करते हैं। उन्हें बटन टाँकने तथा जिप लगाने में परेशानी होती है।

21. अधिगम निर्योग्य बालक विद्यालय एवं घर में आवश्यक वस्तुएँ जैसे खिलौने, पेंसिलें, किताबें, रुपए इत्यादि प्रायः खो देते हैं।

22. उपर्युक्त व्यवहारों के आधार पर अधिगम निर्योग बालकों को पहचाना जा सकता है। बालकों द्वारा इन व्यवहारों को प्रदर्शित करने के लिए कुछ कारक उत्तरदायी होते हैं। इन्हें अधिगम निर्योग्यता के कारणों के अन्तर्गत जाना जा सकता है।

अधिगम निर्योग्यता के कारण

अधिगम निर्योग्यता के लिए आनुवांशिक कारक, जैवीय कारक, पोषणिक न्यूनताएँ, परिपक्वता विलम्ब एवं पर्यावरणीय कारक उत्तरदायी हो सकते हैं।

आनुवांशिक कारक

शोध अध्ययन बताते हैं कि आनुवांशिकता अधिगम निर्योग्यता विशेषकर पठन निर्योग्यता का कारण होती है। अर्थात् दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता इत्यादि में से किसी भी व्यक्ति में अधिगम निर्योग्यता हो तब अगली पीढ़ी में उसके होने की संभावना अधिक होती है। जैव एवं जीव–विज्ञान संबंधी कारक जैव एवं जीव–विज्ञान संबंधी कारकों के कारण भी अधिगम निर्योग्यता हो सकती है। मस्तिष्क की विकृत क्रिया अधिगम दृ निर्योग्यता को जन्म देती है। यदि बालकों को जन्म से पहले, जन्म के दौरान एवं जन्म के पश्चात् चोट लग जाए या मस्तिष्क संक्रमण से ग्रस्त हो जाए तो मस्तिष्क विकृत हो सकता है।

पोषणिक न्यूनताएँ

बालक को विकास के लिए पर्याप्त व संतुलित पोषण की आवश्यकता होती है। यदि उसे पर्याप्त पोषण नहीं मिलता है तब वह कमजोर हो जाता है या कुपोषण का शिकार हो जाता है। इससे उसका विकास अवरुद्ध होता है और उसके सीखने की योग्यता में कमी आती है।

परिपक्वता विलम्ब (Maturational Delay)

कई बार मस्तिष्क की विभिन्न अवस्थाओं में विलम्ब होने से बालक में परिपक्वात्मक कमी आती है या वह देर से परिपक्व होता है, जिसके कारण वह अधिगम निर्योग्य हो सकता है।

पर्यावरणीय कारक (Environmental Factors)

पर्यावरणीय कारकों के कारण भी बालकों में अधिगम निर्योग्यता हो सकती है। गरीब परिवारों में बच्चों को भाषिक, संवेदी एवं संज्ञानात्मक गतिविधियाँ करने को नहीं मिलती है। यदि किसी बालक को विद्यालय जाने का अवसर नहीं मिलता है तब उसमें शैक्षणिक कार्य करने के कौशल विकसित नहीं होते हैं। यदि बालक विद्यालय जाते भी हैं तो कई बार परिवार से उन्हें अभिप्रेरणा नहीं मिलती है। कई अध्यापकों की अपने विषय में पारंगत्ता नहीं होती है और उन्हें विद्यालय प्रशासकों द्वारा अन्य विषय भी पढ़ाने को दे दिए जाते हैं, जिससे उनका अध्यापन कमजोर होता है। इससे बालकों में पढाई के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है और अध्यापकों द्वारा उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है, उन्हें कमजोर मानकर सिखाने की कोशिश नहीं की जाती है, तब ऐसे बालक पिछड़ते जाते हैं।

अधिगम निर्योग्यता के प्रकार अधिगम निर्योग्य बालकों की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न हो सकती है। उन्हें पढ़ने, लिखने एवं गणित के क्षेत्रों में कठिनाई होती है। उनकी शैक्षणिक कमियाँ सबसे पहले

माता–पिता को दिखाई देती है तत्पश्चात् शिक्षकों को । इन कमियों को निम्न प्रकारों के अन्तर्गत जाना जा सकता है–

पठन निर्योग्यता

ऐसे अधिगम नियोग्य बालक जिन्हें पर्याप्त बुद्धि एवं सामाजिक–सांस्कृतिक अवसर होने के पश्चात् भी पढ़ने में कठिनाई होती है, उनमें पठन निर्योग्यता विकार होता है। पठन निर्योग्यता दृश्यिक रूप में भी होती है और श्रवणीय रूप में भी। बालक देखकर या सुनकर समझने व अंतर करने की कमी के कारण पढ़ नहीं पाते हैं। सामान्यतः पठन–निर्योग्य बालकों को समझ की कठिनाइयाँ होती हैं, वे दिए गए गद्यांश को समझ नहीं पाते, उनका शब्द भण्डार भी सीमित होता है। इनमें अक्षरों में अंतर करने की क्षमता नहीं होती हैं, ये क व फ, भव म झ व इ. ध, घ, व इ क में अंतर नहीं कर पाते हैं। ऐसे बालक अपनी इच्छा से नहीं पढ़ते हैं तथा शीघ्रता से नहीं पढ़ पाते हैं। लड़कियों की तुलना में लड़कों में पठन निर्योग्यता अधिक होती है। ऐसे बालकों की लिखावट असमान, अनियमित एवं बेढंगी होती है। इन्हें बोलने में कठिनाई होती है। वे हकलाकर एवं तुतलाकर बोलते हैं। बातें करने में अकुशल होते हैं। चूँकि इन बालकों की बुद्धि औसत या औसत से अधिक होती है अतरू इन्हें पहचानना अत्यन्त कठिन होता है।

लेखन निर्योग्यता

लेखन निर्योग्य बालकों को लिखित अभिव्यक्ति करने में कठिनाई होती है। इनकी शब्दार्थ की त्रुटियाँ ज़्यादा होती है। ये वर्तनी, काल, वाक्य रचना तथा विराम चिन्हों में गलतियाँ करते हैं। वाक्यों में कुछ शब्द लिखना छोड़ देते हैं। अमूर्त संकल्पना पर अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाते हैं। ये बालक दर्पण लेखन करते हैं, यानि जिस प्रकार दर्पण में प्रतिबिम्ब उल्टा दिखाई देता है वे भी उसी प्रकार अक्षरों को उल्टा लिखते हैं।

गणितीय निर्योग्यता

बुनियादी गणित कौशलों के निष्पादन में कठिनाई होने वाले बालकों में गणितीय निर्योग्यता होती है। गणितीय निर्योग्यता वाले बालकों को जोड़–घटाव, गुणा एव भार आती हैं। वे गणितीय नियमों का उपयोग नहीं कर पाते। उन्हें प्रश्नों एवं अंकों को समझने में कठिनाई आती है। इनमें अंकों को पलटने की प्रवृत्ति होती है। जैसे वे 91 को 19 या 76 को 67 लिखते / पढ़ते हैं। वे दाएँ एवं बाएँ में अंतर नहीं कर पाते हैं। उन्हें दिशाओं को समझने में कठिनाई होती है। इकाई व दहाई के अंकों में भेद नहीं कर पाते हैं। अंकों के स्थानीय मान ज्ञान करने में उन्हें समस्याएँ होती हैं। किसी संख्या / अंक के पहले एवं बाद में आने वाली संख्या नहीं बता पाते हैं। दी गयी आकृति को पहचानने में असमर्थ होते हैं। शैक्षणिक विकारों के अलावा अधिगम निर्योग्य बालकों में अन्य निर्योग्यताएँ भी होती हैं, जो इस प्रकार हैं–

सुनने की निर्योग्यता

कई अधिगम निर्योग्यों में सुनने की निर्योग्यता होती है। वे अपने माता–पिता एवं अध्यापकों की बात ध्यान केन्द्रित करने की कमी के कारण पूरी सुन नहीं पाते हैं। ये अपने परिचित की आवाज़ पहचान नहीं पाते हैं। सुनी गई बात को याद रखने व उनका पालन करने में असमर्थ होते हैं। कोई कहानी / घटनाक्रम सुनाए जाने पर उसी क्रम में उसे प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं। बहु अर्थ वाले शब्दों एवं अलग सन्दर्भों में प्रयुक्त शब्दों की पहचान नहीं कर पाते हैं। अलंकारिक भाषा, मुहावरों को समझ नहीं पाते हैं और उपयोग भी नहीं कर पाते हैं।

बोल भाषा की निर्योग्यता

बोल भाषा की निर्योग्यता वाले विद्यार्थियों को भाषा को बोलने व उपयोग करने में कठिनाई होती है। वे लम्बे वाक्यों के स्थान पर छोटे–छोटे वाक्य बनाकर बोलते हैं। वाक्यों में सही शब्द का उपयोग नहीं करते। जैसे भाई द्वारा कहने पर कि "बहन यह स्वेटर उठा कर दे दो, तब वह कहती है कि यह शर्ट लो" (जबकि वह स्वेटर देती है)। इन्हें काल के अनुसार उच्चारण करने में समस्या आती है। जैसे पिछले साल की बात बताने के लिए वे कहते हैं कि "मैं अगले साल दिल्ली गया था।" वे टुकड़ों–टुकड़ों में अपने विचार व्यक्त करते हैं। जैसे "मैंने विद्यालय से आकर खाना खाया और पढ़ने बैठ गया।" इस वाक्य को कहेंगे "मैं विद्यालय गया। विद्यालय से आया। खाना खाया। मैं पढ़ने बैठ गया।' "वे अनुपयुक्त वाक्य का संगठन करते हैं। जैसे दृ 'क्या तुम्हारा है नाम?"

सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याएँ

अधिगम निर्योग्य बालकों को सामाजिक एवं संवेगात्मक समस्याएँ भी होती हैं। उन्हें मित्र बनाने में कठिनाई आती है। वे सामाजिक स्थितियों में उचित प्रकार से व्यवहार नहीं करते हैं। वे अतिक्रियाशील होते हैं और उद्देश्यहीन गामक गतिविधियाँ करते रहते हैं, आसानी से विचलित हो जाते हैं, बैचेनी युक्त व चिड़चिड़ा व्यवहार करते हैं। वे आसानी से निरर्थक उद्दीपकों से विचलित हो जाते हैं। अपने कार्यों के लिए दूसरों पर अधिक आश्रित रहते हैं। ये जिस कार्य को करने लगते हैं उसी को करते रहते हैं, इन्हें दूसरे कार्य पर जाने में कठिनाई होती हैं जैसे वह किसी चित्र पर रंग कर रहा हो तब एक ही भाग पर रंग करता जाता है, दूसरे भाग को रंग करे बिना छोड़ देता है। ये शीघ्रता से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। परिणामों को जाने बिना व्यवहार करते है। यदि इन्हें बहुविकल्पी प्रश्न हल करने को दिए जाएँ तब सभी विकल्पों को नहीं पढ़ते हैं, जो विकल्प सबसे पहले दिख जाए उस पर निशान लगा देते हैं।

अधिगम निर्योग्य बालकों की शिक्षा

अधिगम निर्योग्य बालकों की संकल्पना एवं लक्षण जानने के पश्चात् उनकी समस्याओं व अधिगम निर्योग्यता के प्रकार के आधार पर उनके शैक्षिक कार्यक्रम का निर्धारण किया जाना चाहिए। इन्हें निम्न विधियों व उपागम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

1. बहुसंवेदी पठन विधि– बालक की जितनी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग सीखने में किया जाता है, अधिगम उतना बेहतर होता है। इस आधार पर मनोवैज्ञानिक फर्नाड ने देखने, सुनने, गति एवं स्पर्श की संयुक्त विधि बताई है, जिसके अनुसार बालक को सबसे पहले अक्षर/शब्द दिखाए जाते हैं (देखना) तत्पश्चात् अध्यापक शब्द बोलते हैं व विद्यार्थी सुनता है (सुनना) उसके पश्चात् विद्यार्थी शब्द कहता है और फिर श्यामपट पर लिखता है (गति एवं स्पर्श) इस तरह से बालकों के पढ़ने, सुनने, लिखने, गति करने एवं स्पर्श करने की समस्या का निवारण किया जाता है।

2. ध्वनि विज्ञान उपागम– इस उपागम में अध्यापक अक्षर ध्वनि साहचर्य की सहायता से विद्यार्थी को शब्द की पहचान करवाते हैं। स्वर–व्यंजन और सम्मिश्रण सीखने के पश्चात् विद्यार्थी सही शब्द उच्चारित करना सीखता है।

3. भाषा विज्ञानी उपागम– भाषा विज्ञानी उपागम में अधिगम सामग्रियों में पूर्ण शब्द उपागम का उपयोग किया जाता है। शब्दों को शब्द परिवारों में पढ़ाया जाता है। पठन के लिए प्रारंभ में लघु स्वर एवं व्यंजन, स्वर– व्यंजन प्रकार से बनने वाले शब्दों को प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए शब्दों का चयन समान शब्दार्थ तरीकों के आधार पर किया जाता है।

4. पूर्ण भाषा उपागमदृ पूर्ण भाषा उपागम में विद्यार्थियों की पठन एवं लेखन योग्यताओं को उनकी भाषा एवं अनुभवों की सहायता से बढ़ाया जाता है। इसमें वास्तविक पठन एवं लेखन पर बल दिया जाता है।

5. व्यक्तिपरक पठन उपागमदृ प्रस्तुत उपागम में विद्यार्थी को स्वयं की पठन सामग्री का चयन करने के लिए कई पुस्तकें उपलब्ध करवाई जाती हैं, विद्यार्थी अपनी रुचि एवं योग्यता के आधार पर पठनसामग्री का चयन करता है। इसमें अध्यापक उसकी मदद करता है। विद्यार्थी अपनी गति से सामग्री पढ़ता है और स्वयं अपनी प्रगति का लेखा–जोखा रखता है।

6. प्रत्यक्षणात्मक गामक उपागमदृ प्रस्तुत उपागम में विद्यार्थियों के प्रत्यक्षणात्मक गामक कौशलों में सुधार कर उनके शैक्षणिक कौशलों में सुधार किया जाता है। इसके लिए उनसे गतिविधियाँ कराकर पठन कौशलों को सुधारा जा सकता है।

प्रतिरूपण

प्रतिरूपण में विद्यार्थी के सहपाठी को वांछित व्यवहार करने के लिए कहा जाता है और उस व्यवहार पर पुरस्कार प्रदान किया जाता है। सहपाठी को पुरस्कार मिलने पर विद्यार्थी उसे आदर्श के रूप में देखता है और उसके व्यवहार का निरीक्षण एवं अनुकरण कर वांछित व्यवहार करना सीखता है एवं अवांछित व्यवहारों, जिनके करने से दण्ड मिले, को करने से बचता है।

व्यवहार संशोधन

व्यवहार संशोधन स्किनर के सक्रिय अनुबंधन के सिद्धांत पर आधारित है। इस तकनीक की यह मान्यता है कि व्यवहार समस्याएँ पूर्व एवं वर्तमान पर्यावरणों का परिणाम होती हैं। अतः इसमें किसी व्यक्ति के पर्यावरण में सुधार हेतु अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है। इसमें स्वीकार करने योग्य व्यवहारों को पुनर्बलन प्रदान किया जाता है तथा अनुपयुक्त व्यवहारों हेतु पुनर्बलन प्रदान नहीं किया जाता है। व्यवहार संशोधन में सक्रिय अनुबंधन के विभिन्न घटकों जैसे पुनर्बलन, समाप्ति, गढ़ना एवं उद्दीपक नियंत्रण का उपयोग किया जाता है।

सहपाठी अनुशिक्षण

सहपाठी अनुशिक्षण के अन्तर्गत किसी शैक्षणिक क्षेत्र में कठिनाई होने वाले विद्यार्थी का युग्मन समर्थ विद्यार्थी द्वारा कराया जाता है। समाजमिति के उपयोग के द्वारा अधिगम–निर्योग्य विद्यार्थी के पसंद के अनुशिक्षक (सहपाठी) का चयन किया जाता है और दोनों का युग्मन कराया जाता है। अधिगम निर्योग्य विद्यार्थी अपने अनुशिक्षक के व्यवहार को देखकर उसका अनुकरण करता है। इस प्रकार अधिगम निर्योग्य बालक को अधिगम कराया जाता है। लेकिन प्रारम्भ में अध्यापक द्वारा अनुशिक्षक विद्यार्थी को अध्यापन एवं पुनर्बलन तकनीक में प्रशिक्षण देना चाहिए।

ग्लास विश्लेशण विधि (Glass AnalysiS)

जी. जी. ग्लास (1973) ने पठन अध्यापक की एक विधि दी है, जिसमें अक्षर गुच्छों (स्मजजमत ब्सनेजमते) का उपयोग विकूटन व्यूह रचना के रूप में किया जाता है। गहन श्रवण एवं दृश्यिक प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थी को विशिष्ट अक्षर गुच्छ के प्रकार के प्रत्यक्षण के लिए मार्गदर्शन दिया जाता है।

निकष संदर्भित परीक्षण (Criterion Referenced Test)

निकष संदर्भित परीक्षण में विद्यार्थी के निष्पादन का निश्चित निकष अध्यापन से पहले निर्धारित किया जाता है और अध्यापन के पश्चात् इन परीक्षणों के उपयोग से यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थी ने किन विशिष्ट उद्देश्यों में पारंगतता अर्जित कर ली है तथा विद्यार्थियों को कौन–से कौशलों को बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रक्रिया प्रशिक्षण

प्रस्तुत विधि के अनुसार बालक को जिस प्रक्रिया से संबंधित समस्या हो, उसका प्रशिक्षण उसे पूर्व में ही दे दिया जाए तो उसे सीखने में कठिनाई नहीं होगी। जैसे यदि किसी बालक को देखने के कारण पढ़ने में समस्या होती है तो उसे पूर्व में ही देखने का प्रशिक्षण दे दिया जाए तब वह ठीक से पढ़ सकता है। विद्यालय का विशेष प्रकार से निर्माण करनादृ चूँकि अधिगम निर्योग्य विद्यार्थियों को ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई होती है। अतः विद्यालय भवन का विशेष प्रकार से निर्माण कराया जाना चाहिए।

स्व–अनुदेशन विधि

स्व–अनुदेशन विधि द्वारा व्यवहार को शब्दों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इसमें सबसे पहले अध्यापक शाब्दिक दिनचर्या तय करते हैं। इसके पश्चात् बच्चों को वह कार्य करने को

कहा जाता है। विद्यार्थी समस्या–समाधान के विभिन्न कार्यो को करते समय उसके बारे में बातें करते हैं और अध्यापक उनका निकटता से निरीक्षण करते हैं। विभिन्न शोधाकर्ताओं ने शोध कर स्व अनुदेशन तकनीक द्वारा अधिगम निर्योग्य बालक के हस्तलेखन में सुधार पाया। अध्यापक द्वारा अधिगम निर्योग्य विद्यार्थी को पढ़ाते समय धैर्य व सावधानी रखना चाहिए। अधिगम निर्योग्य विद्यार्थियों को पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु में भी विविधता व रोचकता क होनी चाहिए।अध्यापक को विविध क्षेत्रों के उदाहरण देने चाहिए। इनके अध्यापक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार विषयवस्तु को दोहराना चाहिए। अध्यापन मेंअमूर्त वस्तुओं के स्थान पर मूर्त वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए। जहाँ आवश्यक हो पर्यटन, शैक्षिक भ्रमण द्वारा ज्ञान दिया जाना चाहिए।

अध्यापक द्वारा अधिगम–निर्योग्य विद्यार्थियों को पढ़ाते समय विभिन्न शिक्षण सामग्रियों एवं विधियों जैसे परियोजना, प्रदर्शन, प्रयोगशाला, निगमन विधि का प्रयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष–

अध्यापक द्वारा पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु का समय क्रम, भौगोलिक, बिन्दुक्रम, आगमन, निगमन, तुलना–वैषम्य के आधार पर संगठन करना चाहिए।

संदर्भ

1. ऐ. पी. जी. फिलिप्स, एस. और लारसन एस 1998 स्पैसिफिक रीडिंग डिसएबिलिटी इन हिस्टोरिकली फेमस परसन्स, जर्नल ऑफ लर्निंग डिसएबिलिटीज, 21 (9) 521–584.
2. अमान. जी. एम. 1984 हाइपरएक्टिविटी नेचर ऑफ दि सिन्ड्रोम एण्ड इट्स नेचुरल हिस्ट्री, जर्नल ऑफ अटिज्म एण्ड डेवलेपमेण्टल डिस ऑर्डर्स, 14, 39–53
3. बेकर, एल., एण्ड ब्राउन, ए.एल. 1984 बी. मैटा कॉग्निटिव स्किल्स एण्ड रीडिंग इन पी.डी. परसंस (एडि), हैण्ड बुक ऑफ रीडिंग रिसर्च, न्यूयॉर्क, लॉगमैन
4. बनाटयेन, ए.डी. 1971 लैंग्वेज़, रीडिंग एण्ड लर्निंग डिसएबिलिटीज़, स्प्रिंग फील्डस, आई.एलरू चार्ल्स सी थॉमन बैटमैन, बी 1964 लर्निंग डिसएबिलिटीज वस्टरडे, टुडे एण्ड दुमौरो, एक्लैप्शनल फिल्टून, –31, 139–146.
5. पाल एच.आर. और पाल आशा 2008 एजूकेशन ऑफ लर्निंग डिसएब्लड, शिप्रा पब्लिकेशन्स। शर्मा वी. के . और कुमार, आर 2003
6. आइडेन्टीफिकेशन ऑफ विजुअल परसेबुअल डिसएबिलिटीज इन चिल्ड्रन एट प्राइमरी स्टेज दि प्राइमरी टीचर, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली अंक नं. (2). पू. 63–66.

डॉ0 (श्रीमती) राजेश गिल
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
महाराजा सूरजमल संस्थान, नई दिल्ली

4

तुलसीदास की भक्ति भावना

डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय

सारांश

तुलसीदास की भक्ति भावना उनकी सभी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उनकी भक्ति का स्वरूप निस्वार्थ और समर्पित है, जिसमें भगवान राम के प्रति अटूट श्रद्धा और प्रेम का अद्वितीय मिश्रण है। तुलसीदास की भक्ति को निम्नलिखित बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है:'

1. निस्वार्थ भक्ति: तुलसीदास की भक्ति में निस्वार्थता का प्रमुख स्थान है। वे भगवान राम के प्रति बिना किसी प्रतिफल की इच्छा के भक्ति करते हैं। उनकी रचनाओं में यह भावना बार–बार प्रकट होती है कि भगवान के चरणों में समर्पण ही सबसे बड़ा सुख है।

2. समर्पण की भावना: तुलसीदास की भक्ति में पूर्ण समर्पण की भावना है। वे अपने जीवन की हर परिस्थिति में भगवान राम के प्रति समर्पित रहते हैं और उनकी कृपा को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य मानते हैं।

3. प्रेम और श्रद्धा: तुलसीदास की भक्ति में प्रेम और श्रद्धा का गहरा भाव है। भगवान राम के प्रति उनका प्रेम निरंतर और अपरिमित है, और उनकी श्रद्धा में कभी कमी नहीं आती। वे अपने काव्य में भगवान राम के सौंदर्य, गुण, और लीलाओं का गुणगान करते हुए प्रेम और श्रद्धा की अद्वितीय अभिव्यक्ति करते हैं।

तुलसीदास की भक्ति की प्रेरणाएँ

तुलसीदास की भक्ति भावना के पीछे कई प्रेरणाएँ हैं, जिन्होंने उन्हें इस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। इनमें प्रमुख हैं:

1. रामकथा की प्रभावशीलता: तुलसीदास की भक्ति की प्रमुख प्रेरणा रामकथा है। बचपन से ही उन्होंने रामकथा के माध्यम से भगवान राम के जीवन और उनके आदर्शों के बारे में सुना था। रामकथा के प्रति उनकी गहरी आस्था और प्रेम ने उन्हें भगवान राम के प्रति भक्ति मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

2. गुरु का आशीर्वाद: तुलसीदास को उनके गुरु, नरहरिदास, ने भक्ति मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। गुरु के आशीर्वाद और मार्गदर्शन ने तुलसीदास की भक्ति को एक ठोस आधार प्रदान किया और उन्हें भगवान राम के प्रति समर्पित किया।

3. जीवन के अनुभव: तुलसीदास के जीवन के अनुभवों ने भी उनकी भक्ति भावना को गहरा किया। उनके जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों ने उन्हें भगवान राम के प्रति और अधिक समर्पित किया और उनकी भक्ति को और प्रगाढ़ किया।

तुलसीदास: की भक्ति का प्रभाव

तुलसीदास की भक्ति का प्रभाव न केवल उनके जीवन पर, बल्कि समाज और साहित्य पर भी गहरा पड़ा है। उनकी भक्ति भावना ने समाज को नई दिशा दी और लोगों को भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

1. समाज पर प्रभाव: तुलसीदास की भक्ति भावना ने समाज में भक्ति और प्रेम की भावना को प्रबल किया। उनके काव्य ने लोगों को भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण का महत्व समझाया और उन्हें धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

2. साहित्य पर प्रभाव: तुलसीदास की भक्ति भावना ने भारतीय भक्ति साहित्य को समृद्ध किया। उनकी रचनाओं ने भक्ति साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और इसे भारतीय साहित्य का अभिन्न अंग बना दिया। उनके काव्य में भक्ति की गहराई और प्रेम की मधुरता ने भक्ति साहित्य को नया जीवन दिया।

3. व्यक्तिगत प्रभाव: तुलसीदास की भक्ति भावना ने उनके व्यक्तिगत जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया। उनके जीवन के हर पहलू में भक्ति और समर्पण का अद्वितीय मिश्रण है। उनकी भक्ति भावना ने उन्हें एक महान संत और कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया।

तुलसीदास की भक्ति भावना उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। उनकी भक्ति का स्वरूप निस्वार्थ, समर्पित, और प्रेमपूर्ण है। उनकी भक्ति भावना ने न केवल उनके जीवन को, बल्कि समाज और साहित्य को भी गहराई से प्रभावित किया है। तुलसीदास की भक्ति भावना ने भारतीय भक्ति साहित्य को समृद्ध किया और समाज में भक्ति और प्रेम की भावना को प्रबल किया। उनकी भक्ति का संदेश आज भी प्रासंगिक है और लोगों को धर्म और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

3.2 भक्ति और प्रेम

गीतावली में भक्ति और प्रेम का मुख्य स्थान है। तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति अपनी गहरी भक्ति और प्रेम को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनके गीतों में भक्ति की गहराई और प्रेम की मिठास झलकती है।

3.3 नैतिकता और आचार–विचार

तुलसीदास ने गीतावली में नैतिकता और आचार–विचार पर भी जोर दिया है। उन्होंने बताया है कि सत्य, ईमानदारी, और न्याय के मार्ग पर चलना ही सच्चे मनुष्य का धर्म है।

3.4 सामाजिक और धार्मिक समानता

तुलसीदास ने सामाजिक और धार्मिक समानता पर भी बल दिया है। उन्होंने जातिवाद, सामाजिक भेदभाव, और धार्मिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई है। उनका मानना था कि सभी मनुष्य एक समान हैं और सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं।

4. गीतावली के प्रमुख गीत और उनका विश्लेषण

गीतावली में कई महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध गीत शामिल हैं, जो तुलसीदास की काव्यशक्ति, भक्ति, और ज्ञान का प्रमाण हैं। निम्नलिखित कुछ प्रमुख गीत हैं जो उनकी गीतावली की महत्ता को दर्शाते हैंरू

4.1 भगवान राम की बाललीला

गीतावली में भगवान राम की बाललीला का वर्णन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने राम के बाल्यकाल की मधुर लीलाओं का सजीव चित्रण किया है। यह गीत न केवल बालक राम की मासूमियत और सरलता को दर्शाते हैं, बल्कि उनकी दिव्यता और महिमा को भी प्रकट करते हैं।

बालक क्रीड़ा राम की, देखहु जिय भुलाय।
मनुजहि की मूरति मधुर, अति रुचिर लीलाय॥

4.2 राम का वनगमन

तुलसीदास ने गीतावली में राम के वनगमन का भी सुंदर वर्णन किया है। इस प्रसंग में राम, सीता, और लक्ष्मण के वनगमन की कहानी को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह गीत उनकी त्याग, धैर्य, और आदर्शों को प्रदर्शित करते हैं।

छोड़ि अयोध्या नगर राम चलि, सिय संग सुकुमार।
लखन साथ वन गमन, करत सब के उर हार॥

4.3 राम–रावण युद्ध

गीतावली में राम–रावण युद्ध का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। तुलसीदास ने इस प्रसंग में राम की वीरता और रावण के अत्याचारों का चित्रण किया है। यह गीत न्याय, धर्म, और अधर्म की लड़ाई को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं।

राम रावण संग्राम गढ़, देखहु सब नर नारि।
राम के बाण चलत, रावण के तनु भंग॥

4.4 रामराज्य का वर्णन

तुलसीदास ने गीतावली में रामराज्य का भी वर्णन किया है। उन्होंने रामराज्य की महानता, सुख, और समृद्धि को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह गीत आदर्श राज्य व्यवस्था और न्याय की अवधारणा को दर्शाते हैं।

रामराज्य सुख साज सब, सब नर करहि बड़ाई।
तुलसीदास बसहिं जब, सब दुख दूर भगाई॥

5. गीतावली का भारतीय समाज पर प्रभाव

तुलसीदास की गीतावली ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। इसने धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक दृष्टि से समाज को मार्गदर्शन प्रदान किया है। निम्नलिखित बिंदुओं में इस प्रभाव का विश्लेषण किया गया हैः

5.1 धार्मिक जागरूकता

गीतावली ने भारतीय समाज में धार्मिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। तुलसीदास के गीतों ने भक्तों को भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण की प्रेरणा दी।

5.2 नैतिक और सामाजिक सुधार

गीतावली ने नैतिक और सामाजिक सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास के उपदेशों ने समाज में सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रोत्साहित किया।

5.3 साहित्यिक और सांस्कृतिक योगदान

गीतावली ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास की काव्यशक्ति और उनकी भाषा की सरलता ने इस रचना को लोकप्रिय बनाया और इसे भारतीय काव्य परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

6. गीतावली की आलोचना और समालोचना

तुलसीदास की गीतावली को आलोचक और समालोचक दोनों ने महत्वपूर्ण माना है। इसके गीतों की गहराई, सरलता, और प्रभावशीलता को सराहा गया है। निम्नलिखित बिंदुओं में इसकी आलोचना और समालोचना का विश्लेषण किया गया हैरू

6.1 साहित्यिक मूल्य

गीतावली का साहित्यिक मूल्य अत्यधिक है। तुलसीदास की काव्यशक्ति और उनकी भाषा की सरलता ने इसे साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बना दिया है। उनके गीतों में गहरी धार्मिक और नैतिक बातें सरल और सजीव तरीके से प्रस्तुत की गई हैं।

6.2 भक्ति और साधना का महत्व

गीतावली में भक्ति और साधना के महत्व को प्रमुखता दी गई है। तुलसीदास ने भक्तों को भगवान के प्रति समर्पण और भक्ति की प्रेरणा दी है। उनके गीत साधना के मार्गदर्शन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

6.3 सामाजिक और नैतिक उपदेश

गीतावली में सामाजिक और नैतिक उपदेशों को विशेष महत्व दिया गया है। तुलसीदास ने समाज में सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रोत्साहित किया है। उनके गीतों ने समाज को नैतिक और धार्मिक दृष्टि से समृद्ध किया है।

तुलसीदास की अन्य प्रमुख रचनाएँ

तुलसीदास ने न केवल श्रामचरितमानसश और श्विनयपत्रिकाश जैसी महान रचनाओं की रचना की, बल्कि उन्होंने कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का भी सृजन किया, जिनमें उनकी भक्ति भावना, काव्य प्रतिभा, और समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता का अद्वितीय प्रतिबिंब है। इस अध्याय में हम तुलसीदास की कुछ अन्य प्रमुख रचनाओं पर विस्तार से विचार करेंगे।

दोहावली

दोहावली तुलसीदास के दोहों का संग्रह है, जिसमें उनके जीवन के अनुभवों, धार्मिक सिद्धांतों, और समाज के प्रति उनके विचारों का संक्षिप्त और सटीक रूप में प्रस्तुतिकरण है। दोहावली में कुल 573 दोहे हैं। तुलसीदास ने इन दोहों के माध्यम से जीवन की गहरी सच्चाइयों और नैतिक मूल्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया है।

दोहों का उदाहरणः

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

कवितावली

कवितावली तुलसीदास की कविताओं का एक महत्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें उन्होंने विभिन्न छंदों और अलंकारों का प्रयोग करके अपने

काव्य कौशल का प्रदर्शन किया है। कवितावली में रामकथा के विभिन्न प्रसंगों का सुंदर चित्रण है, जिसमें भगवान राम के जीवन की महत्ता और उनकी लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है।

कवितावली में तुलसीदास ने अपने समय के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों का भी उल्लेख किया है। यह ग्रंथ न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि अपने समय का ऐतिहासिक दस्तावेज भी है।

गीतावली

गीतावली तुलसीदास द्वारा रचित एक अन्य प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें भगवान राम के जीवन की घटनाओं को गीत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गीतावली में कुल 328 पद हैं। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है, जो उनकी अन्य रचनाओं की तुलना में एक विशिष्टता है।

गीतावली का मुख्य उद्देश्य राम के जीवन और उनके आदर्शों को गेय रूप में प्रस्तुत करना था, जिससे कि लोग इन गीतों को गा सकें और भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति प्रकट कर सकें। गीतावली में राम की बाल लीलाओं से लेकर उनके राज्याभिषेक तक की घटनाओं का सुंदर और भावनात्मक वर्णन है।

हनुमान चालीसा

हनुमान चालीसा तुलसीदास की एक अत्यंत प्रसिद्ध रचना है, जो भगवान हनुमान की स्तुति में लिखी गई है। यह चालीसा 40 चौपाइयों का एक संग्रह है, जिसमें हनुमान जी के अद्वितीय बल, बुद्धि, और भक्ति का गुणगान किया गया है। हनुमान चालीसा आज भी लाखों लोगों द्वारा श्रद्धापूर्वक गाई जाती है और इसे भारतीय भक्ति साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

हनुमान चालीसा का उदाहरणः

संकट कटे मिटे सब पीरा,

जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।।

तुलसीदास की श्हनुमान चालीसा

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय भक्ति साहित्य के महान कवि और संत हैं। उनके काव्य और भक्ति रचनाओं ने भारतीय समाज और संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है। ष्रामचरितमानसष् उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, लेकिन इसके अलावा उनकी अन्य कृतियाँ जैसे दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका, गीतावली, और ष्हनुमान चालीसाष् भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास की हनुमान चालीसा एक अत्यंत लोकप्रिय और शक्तिशाली स्तोत्र है जिसमें उन्होंने भगवान हनुमान की महिमा का गान किया है। इस लेख में हम ष्हनुमान चालीसाष् का विस्तृत विश्लेषण करेंगे और इसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेंगे।

1. तुलसीदास का जीवन और रचनात्मक प्रेरणा

तुलसीदास का जीवन एक साधक, संत, और महान कवि के रूप में प्रेरणादायक है। उनका जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के राजापुर गांव में हुआ था। बचपन में ही माता–पिता के स्नेह से वंचित रहने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनकी पत्नी रत्नावली के उपदेश ने उन्हें सांसारिक जीवन से विमुख होकर भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

तुलसीदास की रचनाओं में उनके व्यक्तिगत अनुभवों, धार्मिक आस्थाओं, और भगवान राम के प्रति गहरी भक्ति की झलक मिलती है। ष्हनुमान चालीसाष् भी उनकी भक्ति की एक अभिव्यक्ति है जिसमें उन्होंने भगवान हनुमान की महिमा का गान किया है।

2. हनुमान चालीसा की संरचना और विशेषताएँ

हनुमान चालीसा तुलसीदास द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण स्तोत्र है जिसमें भगवान हनुमान की महिमा और उनके गुणों का वर्णन किया गया है। इसकी संरचना और विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः

चालीसा छंद का प्रयोगरू हनुमान चालीसा में चालीसा छंद का प्रयोग किया गया है, जिसमें 40 चौपाइयाँ होती हैं। प्रत्येक चौपाई में दो पंक्तियाँ होती हैं, जो सरल और सजीव होती हैं।

भक्ति और श्रद्धा का गानरू हनुमान चालीसा में भगवान हनुमान के प्रति भक्ति और श्रद्धा का गान किया गया है। तुलसीदास ने अपनी भक्ति को इन चौपाइयों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

सरल और प्रभावशाली भाषारू हनुमान चालीसा की भाषा सरल, सजीव, और प्रभावशाली है। तुलसीदास ने अपने विचारों और भक्ति को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए सरल भाषा का प्रयोग किया है।

3. हनुमान चालीसा के मुख्य विषय

हनुमान चालीसा में तुलसीदास ने भगवान हनुमान की महिमा, उनके गुणों, और उनकी लीलाओं पर प्रकाश डाला है। इसके मुख्य विषय निम्नलिखित हैंः

3.1 भगवान हनुमान की महिमा

तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में भगवान हनुमान की महिमा और उनके अद्वितीय गुणों का वर्णन किया है। उन्होंने हनुमान जी के बल, बुद्धि, विद्या, और भक्तिपूर्ण चरित्र की प्रशंसा की है।

महावीर विक्रम बजरंगी,

कुमति निवार सुमति के संगी॥

3.2 भक्ति और श्रद्धा

हनुमान चालीसा में भक्ति और श्रद्धा का मुख्य स्थान है। तुलसीदास ने भगवान हनुमान के प्रति अपनी गहरी भक्ति और श्रद्धा को चौपाइयों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। उनके गीतों में भक्ति की गहराई और श्रद्धा की मिठास झलकती है।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥

3.3 हनुमान जी की लीलाएँ

तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में हनुमान जी की लीलाओं का भी सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने सीता की खोज, लंका दहन, संजीवनी बूटी लाना, और अन्य प्रमुख लीलाओं का सजीव चित्रण किया है।

लाय संजीवन लखन जियाये,
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥

3.4 हनुमान जी का व्यक्तित्व और गुण

हनुमान चालीसा में हनुमान जी के व्यक्तित्व और गुणों का भी उल्लेख किया गया है। तुलसीदास ने उनके बल, बुद्धि, विद्या, और भक्तिपूर्ण चरित्र की प्रशंसा की है।

महावीर विक्रम बजरंगी,
कुमति निवार सुमति के संगी॥

4. हनुमान चालीसा के प्रमुख चौपाइयाँ और उनका विश्लेषण

हनुमान चालीसा में कई महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध चौपाइयाँ शामिल हैं, जो तुलसीदास की काव्यशक्ति, भक्ति, और ज्ञान का प्रमाण हैं। निम्नलिखित कुछ प्रमुख चौपाइयाँ हैं जो उनकी हनुमान चालीसा की महत्ता को दर्शाते हैंरू

4.1 हनुमान जी का जन्म और उनका प्रभाव

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

इस चौपाई में तुलसीदास ने गुरु की महिमा का गान करते हुए भगवान राम के गुणों की स्तुति की है। उन्होंने कहा है कि गुरु के चरणों की धूलि से मन को निर्मल करके भगवान राम के पवित्र यश का वर्णन करना चाहिए, जो चारों फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को देने वाला है।

अन्य छोटे–छोटे ग्रंथ

तुलसीदास ने कई अन्य छोटे–छोटे ग्रंथों की भी रचना की, जिनमें रामाज्ञा प्रश्न, बरवै रामायण, और पार्वती मंगलश प्रमुख हैं। इन रचनाओं में भी उनकी भक्ति भावना और काव्य प्रतिभा का स्पष्ट प्रतिबिंब मिलता है।

1. रामाज्ञा प्रश्नः यह ग्रंथ रामायण के प्रमुख प्रसंगों का प्रश्न–उत्तर रूप में संकलन है, जिसमें तुलसीदास ने रामकथा को सरल और रोचक रूप में प्रस्तुत किया है।
2. बरवै रामायणः यह रामकथा का वर्णन बरवै छंद में किया गया है। इसमें रामायण की घटनाओं का संक्षिप्त और आकर्षक चित्रण है।
3. पार्वती मंगलरू यह ग्रंथ भगवान शिव और पार्वती के विवाह का वर्णन करता है। इसमें शिव और पार्वती के विवाह की सुंदर कथा प्रस्तुत की गई है, जिससे पाठकों को धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रेरणा मिलती है।

तुलसीदास की अन्य प्रमुख रचनाएँ उनके काव्य कौशल, भक्ति भावना, और समाज के प्रति उनके गहन संवेदनशीलता का प्रमाण हैं। इन रचनाओं ने भारतीय भक्ति साहित्य को समृद्ध किया है और समाज में नैतिकता, धर्म, और भक्ति का संदेश फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तुलसीदास की इन रचनाओं ने न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी लोगों को प्रेरित किया है और उनकी भक्ति भावना को जागृत किया है।

तुलसीदास की काव्य शैली

तुलसीदास की काव्य शैली भारतीय साहित्य में अपनी विशिष्टता और उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। उनके काव्य में भक्ति, प्रेम, समाज सुधार, और नैतिकता का अद्वितीय मिश्रण है। तुलसीदास ने अपने काव्य में विभिन्न भाषाओं, छंदों, और अलंकारों का प्रयोग करके उसे समृद्ध और प्रभावशाली बनाया है। इस अध्याय में हम तुलसीदास की काव्य शैली के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेंगे।

तुलसीदास की भाषाः अवधी और ब्रज

तुलसीदास ने मुख्य रूप से दो भाषाओं का प्रयोग किया हैः अवधी और ब्रज।

अवधीः श्रामचरितमानसश और श्विनयपत्रिकाश जैसी रचनाओं में तुलसीदास ने अवधी भाषा का प्रयोग किया है। अवधी भाषा की सरलता और मिठास ने तुलसीदास की रचनाओं को व्यापक जनसमूह तक पहुँचने में मदद की। अवधी भाषा की सहजता ने उनके काव्य को प्रभावी और हृदयस्पर्शी बनाया।

ब्रजः गीतावली और हनुमान चालीसा जैसी रचनाओं में तुलसीदास ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। ब्रज भाषा की कोमलता और संगीतात्मकता ने उनके काव्य में विशेष आकर्षण और सौंदर्य का समावेश किया है।

छंद, अलंकार, और रस

तुलसीदास की काव्य शैली में छंद, अलंकार, और रस का अद्वितीय समन्वय है।

छंदः तुलसीदास ने विभिन्न छंदों का प्रयोग किया है, जैसे चौपाई, दोहा, सोरठा, कुंडलिया आदि। इन छंदों का प्रयोग उनके काव्य में विविधता और सुंदरता लाता है।

अलंकारः तुलसीदास ने अपने काव्य में अलंकारों का अत्यंत कुशलता से प्रयोग किया है। उन्होंने अनुप्रास, उपमा, रूपक, और यमक जैसे अलंकारों का प्रयोग करके अपने काव्य को अलंकृत और प्रभावशाली बनाया है।

रसः तुलसीदास के काव्य में विभिन्न रसों का अद्वितीय प्रयोग है। उनके काव्य में शृंगार, वीर, करुण, अद्भुत, शांत आदि रसों का समावेश है, जिससे उनका काव्य बहुआयामी और समृद्ध बनता है।

तुलसीदास की काव्य शैली और उसका विकास

तुलसीदास की काव्य शैली का विकास उनके जीवन और अनुभवों के साथ–साथ हुआ। उन्होंने अपने काव्य में न केवल भक्ति और प्रेम को अभिव्यक्त किया, बल्कि समाज सुधार और नैतिकता का भी संदेश दिया। उनके काव्य में भारतीय समाज की गहरी समझ और

संवेदनशीलता का अद्वितीय प्रतिबिंब मिलता है।

1. भक्ति और प्रेमरू तुलसीदास की काव्य शैली में भक्ति और प्रेम का प्रमुख स्थान है। उन्होंने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाओं में भक्ति की गहराई और प्रेम की मधुरता स्पष्ट झलकती है।

2. समाज सुधाररू तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से समाज सुधार का भी संदेश दिया है। उन्होंने जाति, वर्ग, और लिंग भेदभाव के खिलाफ अपने काव्य में आवाज उठाई और समाज में समानता, न्याय, और समरसता का संदेश फैलाया।

3. नैतिकता और धर्मरू तुलसीदास के काव्य में नैतिकता और धर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से धर्म और नैतिकता के सिद्धांतों को जन–जन तक पहुँचाया और लोगों को धर्म और सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा दी।

तुलसीदास की काव्य शैली भारतीय साहित्य में अपनी विशिष्टता और उत्कृष्टता के लिए अद्वितीय है। उनके काव्य में भाषा, छंद, अलंकार, और रस का अद्वितीय समन्वय है। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से भक्ति, प्रेम, समाज सुधार, और नैतिकता का संदेश दिया है। उनकी काव्य शैली ने न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी लोगों को प्रेरित किया है और भारतीय साहित्य को समृद्ध किया है। तुलसीदास की काव्य शैली उनकी गहन संवेदनशीलता, काव्य प्रतिभा, और समाज के प्रति उनके गहरे प्रेम का प्रमाण है।

डॉ. जितेश्वर कुमार पांडेय
सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान,
कुंडली, सोनीपत, हरियाणा
ईमेलः jiteshwarpandey1@gmail-com
मोबाइल नं.रू 9452511723

5

स्त्री मुक्ति के आयाम

कु सरिता

सारांश

वर्षों से महिलाओं ने समाज के अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। राष्ट्र निर्माण में स्त्री तथा पुरुष दोनों का समान सहयोग रहा है। स्त्री के बिना या पुरुष के बिना किसी समाज के निर्माण की परिकल्पना नहीं की जा सकती फिर भी एक बड़ा वर्ग स्त्री के अस्तित्व ,भावना और सम्मान सबको नकारता रहा है। अगर हम वैदिक काल की बात करें तो चारों वेदों में स्त्री और पुरुष से संबंधित अनेक अवधारणाएं वर्णित हैं, जो वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति के सबसे पुख्ता प्रमाण कहे जा सकते हैं। वेदों में एक ओर जहां पुरुष को द्युलोक, साम, वीणा दंड, नदी का प्रथम तट, दिवस, प्रभात, मेघ, अग्नि, आदित्य, वृक्ष, कर्म, सत्व, स्वाभिमान के रूप में वर्णित किया गया है वहीं स्त्री को पृथ्वी, ऋक, वीणा तन्त्री, नदी का दूसरा तट, रात्रि, उषा, विद्युत, ज्वाला, प्रभा, लता, पंखुड़ी, धीरता, श्रद्धा, विद्या, सेवा, क्षमा के रुप में अलंकृत किया गया है। इस तरह हम देखें तो वेदों में स्त्री व पुरुष अपने अपने संपूरक प्रतीकों के सामंजस्य से सामाजिक विकास का अविरल प्रवाह के सृजन द्वारा मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करते हैं।

हम कह सकते हैं लगभग मध्य काल से स्त्रियों की स्वतंत्रता कम होती दिखने लगी थी। संभवतरू यहीं से पुरुष सत्तात्मकता को प्रतिष्ठित करने का काम पुरुष समाज करने लगता है। स्त्री की स्वतंत्रता से पुरुष के अहम को चोट पहुंचने लगता है। स्त्री व्यक्ति न होकर वस्तु की तरह इस्तेमाल होने लगती है। हिंदी साहित्य में आदिकाल आते–आते नारी पुरुष की संपत्ति बन कर रह गई ऐसा आदिकालीन काव्य से स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्री को वर चुनने का अधिकार तो था पर जीवन पुरुष की कठपुतली ही था। नाथों ने नारी को निंदा का पात्र बनाया तो सिद्धों ने केवल वासनात्मक दृष्टि से देखा।रीतिकाल में समाज का प्रत्येक वर्ग विलासिता के रंग में रंगा हुआ था। समाज में नर और नारी दोनों का नैतिक पतन हो चुका था। तत्कालीन कवि भी झूठी प्रशंसा और धन प्राप्त करने की ओर उन्मुख थे। उन्हें सामान्य जनजीवन की समस्या से कोई संबंध नहीं था। वे तो केवल कामोत्तेजक काव्य रचकर आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने में लगे थे। नारी को केवल भोग्या रूप में देखा। सामाजिक स्तर पर धर्म के नाम पर तमाम रूढ़ी और आडम्बर के सहारे स्त्री को मध्यकालीन पुरुष ने स्वयं के ऊपर निर्भर बनाया। नारी के अवचेतन में शक्तिहीन होने का अहसास जगाया गया जिसके चलते उसे आसानी से विद्याहीन, साहसहीन कर दिया गया। उसके मूल अधिकारों पर प्रतिबंध लगाकर पुरुष को हर जगह बेहतर बताकर धार्मिक और सामाजिक स्तर पर स्त्री स्वतंत्रता की परिभाषा बुरी तरह छिन्न भिन्न हो गई। एक दौर आया जब स्त्री समाज, देश और धर्म के लिए अनुपयोगी साबित कर दी गई और अपने जीवन यापन, अस्तित्व और आत्मरक्षा के लिए पूर्णतरू पुरुष पर निर्भर बना दी गई। हिन्दु धर्म ने भी पर्दा प्रथा, बाल विवाह प्रथा और नारियों को शिक्षा से दूर रखने का चलन जैसी कुरीतियों को जन्म दे दिया। प्रेम, ममता, करुणा, सृजनात्मकता में ईश्वरत्व के सबसे निकट मानी जाने वाली स्त्रियां पुरुषों के उपभोग और मनोरंजन की वस्तु समझी जाने लगीं। इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि 11 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी के बीच भारत में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। यह समय स्त्रियों की स्वतंत्रता, सम्मान, विकास, और सशक्तिकरण के अंधकार का युग था । मुगल शासन, सामन्ती व्यवस्था, केन्द्रीय सत्ता का विनष्ट होना, विदेशी आक्रमण और शासकों की विलासितापूर्ण प्रवृत्ति ने स्त्रियों के स्वतंत्र अस्तित्व पर प्रहार करके उसे लहूलुहान कर दिया था।

मुख्य शब्द – परिकल्पना,सम्मान,अवधारणाएं, सृजनात्मकता, सामंती व्यवस्था, स्वतंत्र अस्तित्व।

साहित्यवलोकन –

1. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां, राधा कृष्ण प्रकाशन,1942.

2.https:@@www-drishtiias-com<blog

3. https:@@outlook hindi-com <story

4.अनामिका, कविता में औरत, वाणी प्रकाशन,2019

उद्देश्य

स्त्री मुक्ति की अवधारणा एक बड़ा सामाजिक संघर्ष है। इसका उद्देश्य स्त्री लिंग के आधार पर हो रहे उत्पीड़न को खत्म करना है। अनामिका जी इस पर विस्तार से बात करतीं हैं।स्त्रियों की अपनी विशिष्ट समस्याएं भी हैं, पर कुछ दुख हैंजो अमीर–गरीब,गोरी–काली, हिन्दू–मुस्लिम, दलित–गैर दलित, शहराती–देहाती–सब स्त्रियों का साझा हैं! सब तरह की स्त्रियों की देह उनके बहुविध शोषण की साइज लंबी है स्त्री देह से जुड़े अपराधों की फेहरिस्त–भावहीन, यांत्रिक संभोग और बलात्कार, भ्रूणहत्या और साफ–सुथरे प्रसव की व्यवस्था का अभाव, पोर्नोग्राफी, देशों में बच्चियों का निर्यात, मार–पीट, गाली–गलौज, दहेज–दहन, डायन–दहन, सती, वैश्यावृत्ति देह से जुड़े ये दुख और फिर एक और साझा दुख ये कि किए–दिए, लिखे–पढ़े को, उनकी घोर मेहनत के उत्पादों को लगातार खारिज किए जाना या उसको कमतर करके आंकना सिर्फ इसलिए कि इसका शिल्प अलग है और भाषा भी! जो श्मेराष या श्मेरे जैसाष नहीं, वह घृणा और हिकारत के लायक है–यह धारणा फासीवाद का चरम है!पहले स्त्रियां तन–मन से सेवा करती थीं अपने पूरे घर की, अब की स्त्रियां तन–मन–धन से घर–बाहर दोनों संवारती हैं। पितृसत्ता से भी स्त्री मुक्ति प्रजातांत्रिक संवाद ही चाहती है, कोई सिरफुडौवल नहीं चाहती! सहज मानवीय विवेक से वह यह समझती है कि प्रतिशोध् किसी भी समस्या का समाधान एक दमन चक्र का जवाब दूसरा दमनचक्र होता

रहा तब तो सभ्यता बैक गियर में चलती–चलती सीधी पाषाण–युग तक पहुंच जाएगी।(अनामिका ,स्त्री मुक्ति के नए आयाम, https: / / outlook hindi-com story

स्त्रियों के सामने तमाम चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं। भारतीय स्त्रीवाद को अपनी भारतीयता भी सिद्ध करनी पड़ती है।पश्चिमी स्त्रीवाद का पर्याय न समझ लेने की चुनौती ने उसे इतना आतंकित, डरा हुआ और तनावग्रस्त कर दिया कि भारतीय स्त्रीवाद की ऊर्जा इस बात में सर्वाधिक खर्च हुई कि उसकी भारतीयता किस प्रकार सिद्ध की जाए ।हालांकि स्त्री के प्रश्न हमेशा से अंतरराष्ट्रीय, सर्वजनीन, वैश्विक तथा समय, देशकाल, संदर्भ के अंतर के साथ कमोबेश एक जैसे थे। भारतीय स्त्रीवाद के समक्ष चुनौती थी कि वह अपने को भारतीय पक्ष और संदर्भ से प्रस्तुत करे और उस पर पश्चिम की नकल होने का टैग न लग जाए ।भारतीय स्त्रीवाद के सामने दूसरा तनाव यह था कि जिस तरह राष्ट्रीय आंदोलन की निर्मिति की जा रही थी और राष्ट्रीय आंदोलन के बड़े बैनर के तहत स्त्री और हाशिये के समाज के प्रश्नों को पीछे धकेला जा रहा था।उस तनाव व संकट से भारतीय स्त्रीवाद स्वयं को बचा कर भारतीय स्त्रियों की समस्याओं को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उभार कर लाने में कुछ हद तक सफल रहा।

प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाजसेवियों जैसे राजाराम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द विद्यासागर तथा केशवचन्द्र सेन ने अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठायी। इन्होंने तत्कालीन अंग्रेजी शासकों के समक्ष स्त्री पुरूष समानता, स्त्री शिक्षा, सती प्रथा पर रोक तथा बहु विवाह पर रोक की आवाज उठायी। इसी का परिणाम था सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829,1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, आदि इस तरह के कई अधिनियम पारित हुए। इन सभी कानूनों का समाज पर दूरगामी परिणाम हुआ । वर्षों के नारी स्थिति में आयी गिरावट में रोक लगी। आने वाले समय में स्त्री जागरूकता में वृद्धि हुई और नये नारी संगठनों का सूत्रपात हुआ।

वर्तमान (21वीं सदी) में तमाम परिवर्तन भी हुए। महिलाओं का एक वर्ग विद्रोह भी किया। बहुत सारी स्त्रियां तमाम क्षेत्रों में सफलता के परचम लहराईं। कला से लेकर विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपना हुनर दिखाया है। चांद तक पहुंच चुकीं महिलाएं। फिर भी सोच नहीं बदली समाज की। आज भी स्त्री दूसरे दर्जे में ही आती है। स्त्री की गलतियां उसे स्वतंत्रता देने का परिणाम है और पुरुष की गलतियां उसका हक है। हमेशा सत्य सत्य रटने वाला मीडिया भी जब स्त्री की बात आती है तो दोयम दर्जे का हो जाता है। एक लड़की को अभी सोशल मीडिया ने खूब उछाला और यही सोशल मीडिया इतनी तत्परता और जागरूकता से उनके खबरों को नहीं दिखाता जो पदों पर बैठें हैं और पुरुष हैं।अगर आज यही कार्य एक स्त्री करती और वो पद पर होती तो ये समाज उसे जीने नहीं देना। सारे परिवर्तन के बाद भी स्त्री के लिए समाज की सोच दोयम दर्जे की ही है। रोज होते बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्याएं , महिलाओं की साक्षरता दर, दहेज आदि अनेक कुरीतियां आज भी जीवित हैं ये चिंता का विषय है। स्त्रियों की दयनीय स्थिति पर बड़े बारीकी और बेवाक तरीके से महादेवी जी ने लिखा है। वे इस संघर्ष में स्त्री की कमजोरियों पर भी ध्यान खींचती हैं। इन पवित्र गृहों की नींव स्त्री की बुद्धि पर रखी गई है, पुरुष की शक्ति पर नहीं।... अपनी सहज बुद्धि के कारण ही स्त्री ने पुरुष के साथ अपना संघर्ष नहीं होने दिया। यदि होने दिया होता तो आज मानव जाति की कहानी ही दूसरी होती।(वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कड़ियां, राधा कृष्ण प्रकाशन,1942)

स्त्री की दयनीय स्थिति के कारण

एक स्त्री गर्भ में आते ही स्त्री हो जाती है। इतना जानते ही कि गर्भ में स्त्री है या जो बच्चा जन्म लिया वो लड़की है उसके आस पास के सभी लोगों की पूरी परवरिस की धारणा ही बदल जाती है। सिमोन द बउआ कहती हैं स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है। बचपन से ही उसे चुप रहना सिखाया जाता है क्योंकि वह लड़की है। घर में ही उसे दबकर रहना सीखा दिया जाता है और उसकी यही सीख समाज में उसकी स्थिति और दयनीय बना देती है। घर में लड़की होने के नाम पर उसे इतना डराया और दबाया जाता है कि बाहर निकलने पर समाज भी इसी डर का फायदा उठाकर उसका शोषण करता है। सिमोन द बउआ लिखती हैं यदि कानून औरत को बराबरी का अधिकार दे भी दे तो सामाजिकता, नैतिकता और लोक व्यवहार उसके आड़े आ जाते हैं (द बोउवार सिमोन, जीम`मबवदक`म• , अनुवादित , खेतान प्रभा , स्त्री उपेक्षिता , हिंदी पॉकेट बुक्स,2002)

स्त्रियों की इस दयनीय स्थिति के चार प्रमुख कारण हैं –

1. आर्थिक निर्भरता स्त्री के लिए अभिशाप है।स्त्री हमेशा से आर्थिक दृष्टि से पुरुष पर निर्भर रही है इस कारण वह कभी स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाई और उसकी स्थिति और दयनीय होती गई। आर्थिक निर्भरता के करना पुरुषों ने स्त्री को गुलाम की तरह रखा और स्त्री को उसके अधीन रहना पड़ा इससे समाज में उसकी स्थिति और दयनीय होती गई।

2. अशिक्षा भी एक बड़ा कारण है स्त्री की इस स्थिति का। अज्ञानता और अशिक्षा के कारण स्त्रियों में अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, तमाम तरह की झूठी परंपराओं का पालन, पति को परमेश्वर मान उसके हर प्रताड़ना को झेलना आदि को स्त्री ने अपनी नियति मान ली और इससे उसकी स्थिति बद से बदतर होती गई।3.बाल विवाह जो प्राचीन काल में ज्यादा प्रचलन में था । बाल विवाह से स्त्री की दशा समाज में बहुत नीची हो गई।4. हमारा समाज पुरुष प्रधान समाज है इस कारण भी स्त्री की दशा खराब रही क्योंकि पुरुष अपने को सर्वे सर्वा समझता है और स्त्री को दोयम दर्जे में रखता है।

समाधान

स्त्री की स्थिति में सुधार के लिए उनकी शिक्षा, आर्थिक आज़ादी,सुरक्षा, अपने कर्तव्यों और अधिकारों की पूरी जानकारी का होना बहुत जरुरी है। शिक्षा स्त्री को समाज में अपना स्तर बदलने का भी अवसर देती है व अंधविश्वासों, आडंबर और कुरीतियों के प्रति जागरूक भी बनाती है। शिक्षा स्त्री में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करती है। एक कहावत है यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक परिवार (राष्ट्र) को शिक्षित करते हैं।

महिलाओं के प्रति पूरे समाज की सोच बदलने की जरूरत है। इतना ही नहीं एक स्त्री को भी अपने प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने की जरूरत है। खुद को अबला,पुरुष की परछाईं,पति परमेश्वर आदि धारणाएं बदलनी होगी तभी स्त्री अपना सम्पूर्ण विकास कर पाएगी। वी के सिंह लिखते हैं कि बिना स्त्री पुरुष समानता के मानवता का अस्तित्व और अस्मिता नहीं बचाया जा सकता। जहां औरत की रचनाशीलता, उसकी क्षमता, उसके अधिकार, उसके सपने, उसके श्रम का मोल आदमी के साथ बिना शर्त सर्व – सम्पूर्ण बराबरी की सहभागिता के साथ हो। इसके सिवा सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखने का कोई और रास्ता भी तो नहीं है ।(सिंह बी के, आधुनिक भारत में औरत के सपने और संघर्ष, प्रलेक प्रकाशन, महाराष्ट्र,2022)

निष्कर्ष

मुझे लगता है कि सबसे पहले तो समाज को ये स्वीकार करना होगा कि स्त्री भी देश की नागरिक है। अगर देखने की दृष्टि बदल ली जाए तो तो बहुत सारे प्रवाद, बहुत सारी प्रवंचनाएं अपने आप छंट जाती हैं और स्त्री पितृसत्ता के फ्रेमवर्क से भी बाहर आती है।स्त्री को जब खाली पारिवारिक संबंधों (मां, बहन, पत्नी, प्रेमिका या अन्य किसी रूप) में कैद करके देखते हैं, तो इस तरह के संबंध अंततः उसे पितृसत्ता के फ्रेमवर्क के भीतर धकेल देते हैं। पितृसत्ता का जो फ्रेमवर्क है उसको तोड़कर बाहर आने का एक ही संगत और वैज्ञानिक तरीका है की स्त्री को नागरिक के रूप में देखा जाए।

जबतक स्त्री को एक सामान्य मानव के रूप में नहीं स्वीकार किया जायेगा तबतक उनके साथ बहुत सारे अन्याय होते रहेंगे।वर्षों से महिलाओं ने समाज के अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। लेकिन आज बदलते समय के साथ उन्होंने अपनी एक पहचान बना ली है, उन्होंने लैंगिक रूढ़ियों की बेड़ियों को तोड़ दिया है और अपने सपनों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये मजबूती से खड़ी हैं। बावजूद इसके अभी समाज ने स्वीकार नहीं किया है कि स्त्री भी एक नागरिक है। जबतक समाज का दृष्टिकोण नहीं बदलेगा तबतक स्त्री का संघर्ष और उसके साथ होने वाले अन्याय होते रहेंगे और समाज के तथाकथित नेता वर्ग और सभ्य वर्ग आंसू बहाता और कोसता रहेगा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. खेतान प्रभा, उपनिवेश में स्त्री, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन,2014, पृष्ठ 127,143,170
2. बेनीवाल अनुराधा, आज़ादी मेरा ब्रांड, राजकमल प्रकाशन का उपक्रम, नई दिल्ली,2016
3. सिंह वी. के., आधुनिक भारत में औरत के सपने और संघर्ष, प्रलेक प्रकाशन, महाराष्ट्र,2022, पृष्ठ 20,45,100,651
4. खेतान प्रभा, स्त्री उपेक्षिता, हिंदी पॉकेट बुक्स,2004, पृष्ठ 25,45,50,55
5. अनामिका, स्त्री मुक्ति की सामाजिकी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,2023

कु सरिता

शोध छात्रा, हिंदी विभाग,

महात्मा गांधी

काशी विद्यापीठ, वाराणसी

6

तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर प्रभाव

डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय

सारांश

तुलसीदास, भारतीय भक्ति साहित्य के प्रमुख कवि और संत, का जन्म 1532 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के राजापुर (आज के संतकबीर नगर जिले में) में हुआ। उनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था, और उनके पिता का नाम गुलाबो और माता का नाम हलकु था। तुलसीदास का जीवन और कार्य उनके समय की सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में सहायक हैं। बचपन में ही माता–पिता के निधन के बाद, तुलसीदास का पालन–पोषण उनके गुरु नरहरिदास ने किया। बचपन में ही तुलसीदास के अंदर आध्यात्मिकता और भक्ति की भावना जागृत हो गई थी।

तुलसीदास का प्रारंभिक जीवन बहुत कठिन था। उन्होंने अपने बचपन में ही शिक्षा और संस्कार की कमी महसूस की, और युवा अवस्था में ही वे समाज के अन्याय और पाखंड से परेशान हो गए थे। उन्होंने विशेष रूप से वेदों, पुराणों, और शास्त्रों का अध्ययन किया और धार्मिक और नैतिक जीवन की गहराई को समझा। उनकी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना था। तुलसीदास ने वेद, पुराण, और संस्कृत साहित्य का गहन अध्ययन किया, जो उनके काव्य और भक्ति की गहराई को दर्शाता है। तुलसीदास ने वाराणसी में अध्ययन किया, जहाँ उन्होंने संस्कृत और वेदों का ज्ञान प्राप्त किया। उनकी शिक्षा और आध्यात्मिकता का गहरा प्रभाव उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने अपनी भक्ति और ज्ञान को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया, जो भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

तुलसीदास का विवाह एक युवा कन्या से हुआ, लेकिन उनके पारिवारिक जीवन में बहुत जल्द संकट आया। उनकी पत्नी की मृत्यु ने उन्हें गहरे दुख और आत्ममंथन की स्थिति में डाल दिया। इस दुखद घटना ने उनकी भक्ति और आत्मा की गहराई को और भी गहरा किया। इस दुखद घटना के बाद, तुलसीदास ने गृहस्थ जीवन का परित्याग कर दिया और पूर्णकालिक भक्ति और साधना की ओर अग्रसर हो गए। उन्होंने एक सन्यासी के रूप में जीवन बिताने का निर्णय लिया, जिससे उनके भक्ति साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा।

गोस्वामी तुलसीदास का नाम भारतीय संत साहित्य में एक उज्ज्वल नक्षत्र की भांति है। उनकी अमर कृति ष्रामचरितमानसष ने न केवल उन्हें अद्वितीय काव्यशक्ति का प्रतीक बनाया, बल्कि भक्ति आंदोलन में भी उनकी अहम भूमिका रही। तुलसीदास के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ उनकी पत्नी रत्नावली के साथ उनके संबंध और उनके संत बनने के पीछे की कहानी से जुड़ा है। यह कहानी न केवल रोमांचक है, बल्कि प्रेरणादायक भी है, जो आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता की ओर उनकी यात्रा को दर्शाती है।

तुलसीदास का जन्म 1532 में उत्तर प्रदेश के राजापुर गाँव में हुआ था। उनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उनका बचपन कष्टमय रहा। जन्म के तुरंत बाद ही उनकी माता का निधन हो गया और पिता ने भी उन्हें त्याग दिया। तुलसीदास का पालन–पोषण उनकी दाई हुलसी ने किया। प्रारंभिक जीवन के ये कष्ट और संघर्ष ने उनकी संवेदनशीलता और जीवन दृष्टि को गहराई से प्रभावित किया।

तुलसीदास का विवाह रत्नावली नामक एक सुंदर और विदुषी कन्या से हुआ था। रत्नावली का सौंदर्य और उनकी विद्वत्ता तुलसीदास को मोहित कर देती थी। तुलसीदास अपने जीवन में रत्नावली के प्रति अत्यधिक आसक्त थे और उनके प्रेम में पूर्णतः डूबे हुए थे। यह प्रेम अत्यधिक और व्यक्तिगत था, जो उनके जीवन का केंद्र बन गया था।

तुलसीदास की अपनी पत्नी के प्रति अत्यधिक आसक्ति और प्रेम के कई किस्से हैं। सबसे प्रसिद्ध कथा के अनुसार, एक बार जब रत्नावली अपने मायके गईं, तो तुलसीदास उनसे मिलने की व्याकुलता में सारी रात बारिश में भीगते हुए उनके मायके पहुँच गए। इस प्रेम और आसक्ति को देखकर रत्नावली ने तुलसीदास को एक गहरा और आध्यात्मिक उपदेश दिया। उन्होंने कहारू

–अस्थि चर्म मय देह मम, तामें ऐसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम में, होत न तो भवभीत।–

अर्थात, मेरे इस अस्थि और चर्म से बने शरीर में तुम इतनी प्रीति करते हो, अगर यही प्रीति तुम श्रीराम में करोगे, तो तुम्हें भवसागर से मुक्ति मिल जाएगी।

रत्नावली के इस उपदेश ने तुलसीदास के जीवन को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने अपनी पत्नी के शब्दों में गहरा सत्य देखा और आत्मज्ञान की ओर अग्रसर होने का निर्णय लिया। इस उपदेश ने उन्हें सांसारिक मोह–माया से ऊपर उठकर भगवान राम की भक्ति की ओर प्रेरित किया। यह तुलसीदास के जीवन का वह मोड़ था, जिसने उन्हें एक महान संत और कवि बना दिया।

रत्नावली के उपदेश के बाद, तुलसीदास ने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया और भगवान राम की भक्ति में लीन हो गए। उन्होंने तीर्थयात्रा की और संतों और साधुओं के संगत में रहकर आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। उनके संत बनने की यात्रा में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ और अनुभव शामिल हैं, जिन्होंने उनकी भक्ति को और गहरा किया।

तुलसीदास ने विभिन्न तीर्थ स्थलों की यात्रा की और वहां के संतों और साधुओं के संगत में रहकर आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की। इन यात्राओं ने उन्हें आत्मज्ञान की गहराईयों तक पहुँचाया और उनके भक्ति मार्ग को और प्रबल किया।

तुलसीदास के संत बनने की यात्रा में उनके कई आध्यात्मिक अनुभव महत्वपूर्ण रहे। भगवान राम के प्रति उनकी भक्ति और समर्पण ने उन्हें आत्मज्ञान की उच्च अवस्था तक पहुँचाया। इन अनुभवों ने उनके भक्ति साहित्य को भी गहरा और प्रभावशाली बनाया।

तुलसीदास ने कई महत्वपूर्ण भक्ति साहित्य रचनाएँ कीं, जिनमें ष्रामचरितमानसष् सबसे प्रमुख है। उनकी रचनाओं ने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी और उन्हें एक महान संत और कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया।

रामचरितमानस तुलसीदास की सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध रचना है। यह ग्रंथ भगवान राम की जीवनकथा को सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। इसमें भगवान राम के चरित्र, उनकी लीलाओं, और उनके आदर्शों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

तुलसीदास की अन्य प्रमुख रचनाओं में कवितावली, गीतावली, और विनय पत्रिका शामिल हैं। इन रचनाओं में भी भगवान राम के प्रति उनकी गहरी भक्ति और प्रेम को प्रकट किया गया है। तुलसीदास की रचनाएँ केवल काव्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे भक्ति और आध्यात्मिकता के मार्गदर्शन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

तुलसीदास की भक्ति और उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी और समाज में धार्मिक और सामाजिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

तुलसीदास की रचनाओं ने भक्ति आंदोलन को प्रोत्साहित किया और इसे व्यापक पहचान दिलाई। उनकी भक्ति ने लोगों को भगवान राम के प्रति प्रेम और समर्पण की प्रेरणा दी। उनके भजन और कीर्तन आज भी भक्ति संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

तुलसीदास ने धार्मिक सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने धार्मिक अनुष्ठानों को सरल और सुलभ बनाया और जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई। उनके उपदेशों ने समाज में धार्मिक समानता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया।

तुलसीदास ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाओं ने भारतीय काव्य परंपरा को समृद्ध किया और सांस्कृतिक जीवन को एक नई दिशा दी।

तुलसीदास और उनकी पत्नी रत्नावली का संबंध केवल एक प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता की एक प्रेरणादायक कथा है। रत्नावली के उपदेश ने तुलसीदास के जीवन को बदल दिया और उन्हें एक महान संत और कवि बना दिया। उनके संत बनने की यात्रा, उनकी रचनाएँ, और उनका समाज पर प्रभाव भारतीय भक्ति साहित्य और संस्कृति में अमूल्य योगदान है।

तुलसीदास की कथा हमें यह सिखाती है कि प्रेम और भक्ति की शक्ति जीवन को बदल सकती है और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित कर सकती है। उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज को धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध किया है और वे हमेशा एक प्रेरणास्त्रोत बने रहेंगे।

तुलसीदास की धार्मिक यात्रा ने उन्हें कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों पर यात्रा करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने वाराणसी, प्रयाग, और हरिद्वार जैसे प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा की। इन स्थलों पर उन्होंने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति को और गहरा किया और धार्मिक अनुभवों को समृद्ध किया। इस अवधि के दौरान, तुलसीदास ने संत और विद्वानों से मुलाकात की, जिन्होंने उनके धार्मिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया। उनकी भक्ति और ध्यान की साधना ने उन्हें भगवान राम के प्रति अटूट प्रेम और श्रद्धा प्रदान की, जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से झलकती है।

तुलसीदास की साहित्यिक यात्रा ने उन्हें भारतीय भक्ति साहित्य के महान कवि के रूप में स्थापित किया। उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में कई प्रमुख ग्रंथों की रचना की, जिनमें श्रामचरितमानसश, श्विनयपत्रिकाश, श्दोहावलीश, और श्कवितावलीश शामिल हैं। इन रचनाओं में भगवान राम की भक्ति, धार्मिक और नैतिक विचारों, और समाज सुधार के संदेशों को प्रस्तुत किया गया है। उनकी साहित्यिक यात्रा में श्रामचरितमानसश सबसे प्रमुख ग्रंथ है, जिसे उन्होंने अवधी भाषा में लिखा। यह ग्रंथ भगवान राम के जीवन की कथा को सरल और प्रचलित भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे यह जन–साधारण के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुआ।

तुलसीदास ने अपने अंतिम वर्षों में भगवान राम की भक्ति और ध्यान की साधना में ही बिताए। उनका जीवन भक्ति, साधना, और काव्य की गहराई से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में अपनी रचनाओं को पूर्ण किया और समाज को भक्ति और नैतिकता का महत्वपूर्ण संदेश दिया। तुलसीदास का निधन 1623 ईस्वी में हुआ। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी रचनाएँ और भक्ति भावना आज भी भारतीय समाज और साहित्य में जीवित हैं। तुलसीदास का जीवन और कार्य भारतीय भक्ति साहित्य का अमूल्य हिस्सा हैं और उनके साहित्यिक योगदान ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को समृद्ध किया है।

तुलसीदास का जीवन और काल उनके भक्ति साहित्य की गहराई और समृद्धि को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनका जीवन कठिनाइयों और संघर्षों से भरा हुआ था, लेकिन उनकी भक्ति और साधना ने उन्हें भारतीय साहित्य के महान कवि के रूप में स्थापित किया। उनकी रचनाएँ और भक्ति भावना आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं और भारतीय साहित्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

15वीं और 16वीं शताब्दी में, भारत में भक्ति आंदोलन का प्रादुर्भाव हुआ जिसने भारतीय समाज और धार्मिक चेतना को एक नया आयाम दिया। भक्ति आंदोलन ने लोगों को व्यक्तिगत भक्ति और भगवान के प्रति प्रेम के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

इस आंदोलन का एक प्रमुख उद्देश्य जाति और धर्म के भेदभाव को मिटाकर समाज में एकता और समता का संदेश फैलाना था। तुलसीदास इस आंदोलन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। उनका काव्य और उनका भक्ति भाव उस समय की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाने में सहायक सिद्ध हुआ। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से भक्ति आंदोलन के सिद्धांतों को जन–जन तक पहुंचाया और लोगों को रामभक्ति की ओर प्रेरित किया।

तुलसीदास को उनकी भक्ति साधना में कई महापुरुषों और संतों से प्रेरणा मिली। उनके जीवन पर रामानंद, कबीर, सूरदास और अन्य भक्ति संतों का गहरा प्रभाव था। ये सभी संत अपने–अपने तरीके से समाज में भक्ति और प्रेम का प्रचार कर रहे थे और तुलसीदास ने उनके मार्गदर्शन में अपने काव्य की दिशा तय की। तुलसीदास का प्रमुख प्रेरणा स्रोत भगवान राम थे।

रामचरितमानस की रचना के पीछे उनका उद्देश्य राम के आदर्श चरित्र और उनके जीवन की महानता को समाज के सामने प्रस्तुत करना था। उन्होंने राम को आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित किया, जिससे लोग उनकी शिक्षाओं का पालन कर सकें और अपने जीवन को धर्म और नैतिकता के पथ पर अग्रसर कर सकें।

तुलसीदास की रचनाओं में श्रामचरितमानसश सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस महाकाव्य की रचना उन्होंने अवधी भाषा में की, जो उस समय की आम भाषा थी और जिसे जन–जन आसानी से समझ सकता था। रामचरितमानस की रचना करते समय तुलसीदास ने वाल्मीकि रामायण का अनुसरण किया, लेकिन उन्होंने अपने विचारों और भक्ति भावनाओं को भी इसमें समाहित किया।

रामचरितमानस की रचना की प्रक्रिया बहुत ही विशिष्ट और प्रेरणादायक थी। तुलसीदास ने काशी के विभिन्न मंदिरों और तीर्थस्थलों पर जाकर इसकी रचना की। कहा जाता है कि उन्होंने हनुमान जी की प्रेरणा से इस महाकाव्य की रचना की। उनकी रचनाओं में गहन भक्ति, काव्य कला, और समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है।

रामचरितमानस के अलावा, तुलसीदास ने कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। इनमें प्रमुख हैंः

विनयपत्रिकाः यह ग्रंथ भगवान राम के प्रति विनम्र प्रार्थनाओं और भजनों का संग्रह है। इसमें तुलसीदास ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और भक्ति भावनाओं को व्यक्त किया है।

दोहावलीः इस ग्रंथ में तुलसीदास के दोहे संग्रहित हैं, जो संक्षिप्त और सटीक रूप में जीवन की गहरी सच्चाइयों और धार्मिक सिद्धांतों को प्रस्तुत करते हैं।

कवितावलीः यह एक काव्य संग्रह है जिसमें तुलसीदास की विभिन्न कविताएँ संकलित हैं। इसमें समाज, धर्म, और नैतिकता पर तुलसीदास के विचार व्यक्त किए गए हैं।

गीतावलीः यह ग्रंथ भगवान राम के जीवन के विभिन्न प्रसंगों को गीत रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें राम के चरित्र, उनके आदर्श, और उनके जीवन की घटनाओं का सुंदर चित्रण है।

तुलसीदास की साहित्यिक यात्रा एक प्रेरणादायक यात्रा है जिसने भारतीय साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनके काव्य में भक्ति, प्रेम, और समाज सुधार की भावना का अद्वितीय समावेश है। उनके साहित्यिक योगदान ने न केवल भक्ति आंदोलन को सशक्त किया, बल्कि भारतीय समाज को नैतिकता और धर्म के पथ पर चलने की प्रेरणा भी दी।

गोस्वामी तुलसीदास, जिनका नाम भारतीय भक्ति साहित्य में स्वर्णाक्षरों में अंकित है, अपने उत्कृष्ट काव्य और भक्ति रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी महान रचनाओं में ष्रामचरितमानस,ष कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका, और दोहावली विशेष महत्व रखती हैं। तुलसीदास की दोहावली एक अद्भुत रचना है जिसमें उन्होंने दोहों के माध्यम से धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक उपदेशों को सरल और सटीक भाषा में प्रस्तुत किया है।

दोहावली तुलसीदास द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है जिसमें दोहा छंद का प्रयोग किया गया है। दोहा हिंदी काव्य का एक महत्वपूर्ण छंद है, जिसमें प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं और चार चरण होते हैं। तुलसीदास ने इस छंद के माध्यम से अपने गहन विचारों, अनुभवों, और धार्मिक उपदेशों को सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है।

तुलसीदास का जीवन एक साधक, संत, और महान कवि के रूप में प्रेरणादायक है। उनका जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के राजापुर गांव में हुआ था। बचपन में ही माता–पिता के स्नेह से वंचित रहने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

तुलसीदास की रचनाओं में उनके व्यक्तिगत अनुभवों और धार्मिक आस्थाओं की गहरी छाप है। उनकी प्रेरणा के स्रोत भगवान राम और उनकी पत्नी रत्नावली थीं, जिनके उपदेश ने उन्हें सांसारिक जीवन से विमुख होकर भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

दोहावली में तुलसीदास ने दोहा छंद का प्रयोग किया है, जो हिंदी काव्य में विशेष महत्व रखता है। दोहा छंद की संरचना और विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः

दोहा छंद की संरचनारू दोहा छंद में प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं। दो पंक्तियों में चार चरण होते हैं, जिनमें प्रत्येक चरण में 13 और 11 मात्राएँ होती हैं। इसका स्वरूप कुछ इस प्रकार होता हैः

अर्धः लघु लघु गुरु लघु, गुरु लघु लघु गुरु लघु।
अर्धः लघु लघु गुरु लघु, गुरु लघु लघु गुरु लघु॥

सरल और प्रभावशाली भाषारू दोहावली की भाषा सरल, सटीक,

और प्रभावशाली है। तुलसीदास ने अपने विचारों और उपदेशों को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए सरल भाषा का प्रयोग किया है। धार्मिक और नैतिक उपदेशः दोहावली में तुलसीदास ने धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक उपदेशों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने भगवान राम की महिमा, भक्तों के कर्तव्यों, और जीवन के आदर्शों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।

दोहावली में तुलसीदास ने विभिन्न धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक विषयों पर प्रकाश डाला है। इसके मुख्य विषय निम्नलिखित हैंः

तुलसीदास ने दोहावली में भगवान राम की महिमा और उनके आदर्शों को प्रमुखता दी है। उन्होंने भगवान राम के चरित्र, उनके गुणों, और उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। उदाहरण के लिएः

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजियार॥

दोहावली में भक्ति और साधना के महत्व को भी स्पष्ट किया गया है। तुलसीदास ने भक्तों को भगवान के प्रति समर्पण, भक्ति, और साधना की प्रेरणा दी है। उन्होंने बताया है कि सच्ची भक्ति ही मनुष्य को जीवन के बंधनों से मुक्त कर सकती हैरू

तुलसी इस संसार में भांति भांति के लोग।
सबसे हियो न लागिए जो लोगन से सनेह॥

तुलसीदास ने दोहावली में नैतिकता और आचार–विचार पर भी जोर दिया है। उन्होंने बताया है कि सत्य, ईमानदारी, और न्याय के मार्ग पर चलना ही सच्चे मनुष्य का धर्म है। उदाहरण के लिएरू

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप॥

तुलसीदास ने सामाजिक और धार्मिक समानता पर भी बल दिया है। उन्होंने जातिवाद, सामाजिक भेदभाव, और धार्मिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई है। उनका मानना था कि सभी मनुष्य एक समान हैं और सभी को समान अधिकार प्राप्त हैंरू

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिनु साबुन पानी बिना, निर्मल करे सुभाय॥

तुलसीदास की दोहावली में कई महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध दोहे शामिल हैं, जो उनकी काव्यशक्ति, भक्ति, और ज्ञान का प्रमाण हैं। निम्नलिखित कुछ प्रमुख दोहे हैं जो उनकी दोहावली की महत्ता को दर्शाते हैंः

तुलसी इस संसार में भांति भांति के लोग।
सबसे हियो न लागिए जो लोगन से सनेह॥

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप॥

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिनु साबुन पानी बिना, निर्मल करे सुभाय॥

तुलसीदास की दोहावली ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। इसने धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक दृष्टि से समाज को मार्गदर्शन प्रदान किया है। निम्नलिखित बिंदुओं में इस प्रभाव का विश्लेषण किया गया हैः

दोहावली ने भारतीय समाज में धार्मिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। तुलसीदास के दोहों ने भक्तों को भगवान राम के प्रति भक्ति और समर्पण की प्रेरणा दी।

दोहावली ने नैतिक और सामाजिक सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास के उपदेशों ने समाज में सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रोत्साहित किया।

दोहावली ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास की काव्यशक्ति और उनकी भाषा की सरलता ने इस रचना को लोकप्रिय बनाया और इसे भारतीय काव्य परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

तुलसीदास की दोहावली को आलोचक और समालोचक दोनों ने महत्वपूर्ण माना है। इसके दोहों की गहराई, सरलता, और प्रभावशीलता को सराहा गया है। निम्नलिखित बिंदुओं में इसकी आलोचना और समालोचना का विश्लेषण किया गया हैः

दोहावली का साहित्यिक मूल्य अत्यधिक है। तुलसीदास की काव्यशक्ति और उनकी भाषा की सरलता ने इसे साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बना दिया है। उनके दोहों में गहरी धार्मिक और नैतिक बातें सरल और सजीव तरीके से प्रस्तुत की गई हैं।

दोहावली में भक्ति और साधना के महत्व को प्रमुखता दी गई है। तुलसीदास ने भक्तों को भगवान के प्रति समर्पण और भक्ति की प्रेरणा दी है। उनके दोहे साधना के मार्गदर्शन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

दोहावली में सामाजिक और नैतिक उपदेशों को विशेष महत्व दिया गया है। तुलसीदास ने समाज में सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रोत्साहित किया है। उनके दोहों ने समाज को नैतिक और धार्मिक दृष्टि से समृद्ध किया है।

विनयपत्रिका तुलसीदास की एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है, जो भगवान राम के प्रति विनम्र प्रार्थनाओं और भजनों का संग्रह है। यह ग्रंथ तुलसीदास की भक्ति भावना और उनकी आस्था का

प्रतीक है। विनयपत्रिका में कुल 279 पद्य हैं, जिन्हें तुलसीदास ने भगवान राम के चरणों में समर्पित किया है। इस ग्रंथ में तुलसीदास की आत्मसमर्पण की भावना और भगवान राम के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का अद्वितीय चित्रण है।

विनयपत्रिका की विषयवस्तु मुख्य रूप से भगवान राम के प्रति भक्त की विनम्र प्रार्थनाओं और उनकी महिमा का गुणगान है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में भगवान राम से अपनी विनती, प्रार्थना, और उनकी कृपा की कामना व्यक्त की है।

विनयपत्रिका की भाषा सरल और सहज है, जो सीधे हृदय तक पहुँचती है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में अवधी भाषा का प्रयोग किया है, जो उस समय की लोकभाषा थी। इस भाषा की सरलता और मिठास ने विनयपत्रिका को व्यापक जनसमूह तक पहुँचने में मदद की।

विनयपत्रिका की विशेषताएँ

1. भक्ति और आत्मसमर्पणरू विनयपत्रिका में तुलसीदास ने अपनी भक्ति और आत्मसमर्पण की भावना को प्रमुखता से व्यक्त किया है। प्रत्येक पद्य में भगवान राम के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा और भक्ति झलकती है।

2. भावनात्मक गहराईरू विनयपत्रिका में तुलसीदास की भावनात्मक गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं और विनतियों में अपनी गहन भावनाओं को उकेरा है, जो पाठकों के हृदय को छूती है।

3. सादगी और सरलतारू विनयपत्रिका की भाषा और शैली सादगी और सरलता से परिपूर्ण है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में सरल शब्दों और सहज भाषा का प्रयोग किया है, जिससे यह आसानी से समझ में आता है।

4. प्रेम और भक्ति का समन्वयरू विनयपत्रिका में प्रेम और भक्ति का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है। तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति अपनी प्रेमभावना को भक्ति के माध्यम से व्यक्त किया है, जिससे यह ग्रंथ अत्यंत प्रेरणादायक बन गया है।

तुलसीदास की भक्ति भावना का प्रतिबिंब

विनयपत्रिका में तुलसीदास की भक्ति भावना का गहरा प्रतिबिंब देखने को मिलता है। उन्होंने इस ग्रंथ में अपने हृदय की गहराइयों से भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति और प्रेम को व्यक्त किया है। तुलसीदास की भक्ति भावना का यह अनूठा पहलू विनयपत्रिका को भारतीय भक्ति साहित्य में एक विशिष्ट स्थान दिलाता है।

तुलसीदास की भक्ति भावना का एक महत्वपूर्ण पहलू उनका आत्मसमर्पण है। विनयपत्रिका में उन्होंने भगवान राम के चरणों में पूर्ण आत्मसमर्पण की भावना को प्रमुखता से व्यक्त किया है। उनकी भक्ति में निस्वार्थता, प्रेम, और समर्पण का अद्वितीय मिश्रण है, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है।

विनयपत्रिका का भारतीय समाज पर प्रभाव

विनयपत्रिका ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। इस ग्रंथ ने लोगों को भक्ति और प्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। तुलसीदास की भक्ति भावना और उनकी आत्मसमर्पण की भावना ने भक्तों को भगवान राम के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी।

1. धार्मिक प्रभावः विनयपत्रिका ने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी। इस ग्रंथ ने भगवान राम के प्रति भक्ति की भावना को जन–जन तक पहुँचाया और लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

2. सामाजिक प्रभावः विनयपत्रिका ने समाज में भक्ति और प्रेम की भावना को प्रबल किया। इस ग्रंथ ने लोगों को प्रेम, निस्वार्थता, और आत्मसमर्पण का महत्व समझाया।

3. सांस्कृतिक प्रभावः विनयपत्रिका ने भारतीय संस्कृति में भक्ति साहित्य को समृद्ध किया। तुलसीदास की इस रचना ने भक्ति साहित्य को एक नई ऊँचाई प्रदान की और इसे भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बना दिया।

विनयपत्रिकाः तुलसीदास का अनुपम ग्रंथ

विनयपत्रिका तुलसीदास का एक प्रमुख ग्रंथ है, जो उनकी भक्ति और भक्ति भावना का गहरा प्रतिबिंब है। यह ग्रंथ भगवान राम के प्रति तुलसीदास की विनम्रता और समर्पण को प्रकट करता है। विनयपत्रिका में तुलसीदास ने भगवान राम की महिमा, उनकी कृपा, और उनके प्रति अपनी अटूट भक्ति को व्यक्त किया है। इस लेख में हम विनयपत्रिका के महत्व, संरचना, विषयवस्तु, और उसके समाज पर प्रभाव की गहराई से समीक्षा करेंगे।

1. विनयपत्रिका का महत्व

विनयपत्रिका एक भक्ति ग्रंथ है जिसमें तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति अपनी विनम्रता और भक्ति को व्यक्त किया है। यह ग्रंथ तुलसीदास के जीवन और भक्ति की गहराई को दर्शाता है।

भक्ति का गहरा प्रमाणः विनयपत्रिका तुलसीदास की भक्ति और भगवान राम के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा का प्रमाण है। इस ग्रंथ में भगवान राम के प्रति विनम्रता, प्रेम, और भक्ति की गहरी भावना व्यक्त की गई है।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्वः विनयपत्रिका भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें भगवान राम की महिमा और उनके प्रति भक्ति के आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।

भाषाई और साहित्यिक मूल्यः इस ग्रंथ की काव्य शैली, भाषा, और छंद साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास ने इसे सरल और सुंदर भाषा में लिखा, जिससे यह आम जनता तक आसानी से पहुँचा।

2. विनयपत्रिका की संरचना

विनयपत्रिका की संरचना तुलसीदास की भक्ति भावना और भगवान राम के प्रति उनकी श्रद्धा को प्रदर्शित करती है। यह ग्रंथ विभिन्न

काव्य शैलियों और छंदों का प्रयोग करके लिखा गया है।

भक्ति भावः विनयपत्रिका का मुख्य केंद्र बिंदु भगवान राम के प्रति भक्ति भाव है। इसमें भगवान राम की महिमा, उनकी कृपा, और उनके प्रति भक्तों की श्रद्धा का गहरा चित्रण है।

काव्य शैलियाँः तुलसीदास ने विनयपत्रिका में विभिन्न काव्य शैलियों और छंदों का प्रयोग किया है। इसमें प्रमुख रूप से दोहे, चौपाई, और सोरठा का प्रयोग किया गया है। इन छंदों के माध्यम से तुलसीदास ने अपनी भावनाओं और विचारों को सुंदर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

संरचना और रूपः विनयपत्रिका एक संगीतमय और लयात्मक ग्रंथ है। इसकी काव्य शैली में साधारणता और सुगमता है, जिससे यह आम जनता के बीच लोकप्रिय हुआ।

3. विनयपत्रिका की विषयवस्तु

विनयपत्रिका की विषयवस्तु भगवान राम के प्रति तुलसीदास की भक्ति, श्रद्धा, और विनम्रता को प्रदर्शित करती है।

भक्ति और प्रेमः विनयपत्रिका में भगवान राम के प्रति अटूट भक्ति और प्रेम की भावना व्यक्त की गई है। तुलसीदास ने भगवान राम की महिमा और उनके गुणों का गुणगान किया है।

साधना और समर्पणरू इस ग्रंथ में भक्ति साधना और भगवान राम के प्रति समर्पण का भी विस्तृत वर्णन है। तुलसीदास ने अपनी साधना और भक्ति की कठिनाइयों और चुनौतियों को भी प्रस्तुत किया है, जिससे भक्तों को प्रेरणा मिलती है।

कृपा और अनुग्रहरू विनयपत्रिका में भगवान राम की कृपा और अनुग्रह का भी महत्व बताया गया है। तुलसीदास ने भगवान राम के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए विनम्रता और श्रद्धा का महत्व बताया है।

धार्मिक शिक्षाः विनयपत्रिका धार्मिक शिक्षा और आचार–व्यवहार के आदर्शों को भी प्रस्तुत करता है। इसमें धर्म, नैतिकता, और सामाजिक आदर्शों के बारे में भी महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है।

4. विनयपत्रिका की काव्य शैली

विनयपत्रिका की काव्य शैली तुलसीदास की साहित्यिक प्रतिभा को दर्शाती है। इसमें सरलता, सुंदरता, और भावनाओं का अद्वितीय मिश्रण है।

भाषा और छंदः तुलसीदास ने विनयपत्रिका में अवधी भाषा का प्रयोग किया, जो उस समय की प्रचलित भाषा थी। उन्होंने दोहा, चौपाई, और सोरठा जैसे छंदों का प्रयोग किया, जो काव्य को संगीतमय और प्रभावशाली बनाते हैं।

अलंकार और रसः तुलसीदास ने विनयपत्रिका में अनुप्रास, उपमा, और रूपक जैसे अलंकारों का कुशलता से प्रयोग किया है। उनके काव्य में शृंगार, करुण, और भक्ति रसों का सुंदर मिश्रण है।

साहित्यिक गुणरू विनयपत्रिका की काव्य शैली में सरलता, सुगमता, और प्रभावशाली भावनाओं का अद्वितीय मिश्रण है। तुलसीदास ने भावनाओं को सुंदर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

5. विनयपत्रिका का समाज पर प्रभाव

विनयपत्रिका का भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस ग्रंथ ने धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भक्ति आंदोलन पर प्रभावरू विनयपत्रिका ने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी। तुलसीदास की भक्ति और विनम्रता ने भक्ति आंदोलन को सशक्त और प्रेरणादायक बनाया।

धार्मिक और सांस्कृतिक पहचानरू विनयपत्रिका ने भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूती प्रदान की। इसमें भगवान राम के प्रति भक्ति और श्रद्धा के आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक सुधारः विनयपत्रिका ने समाज में नैतिकता, धर्म, और भक्ति के आदर्शों को फैलाया। तुलसीदास ने समाज की बुराइयों और कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और समाज को सुधारने की कोशिश की।

शिक्षा और साहित्य पर प्रभावरू विनयपत्रिका ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अध्ययन और पाठन ने साहित्यिक और धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया।

विनयपत्रिका तुलसीदास की भक्ति और भक्ति भावना का एक अनुपम ग्रंथ है। इसमें भगवान राम के प्रति विनम्रता, प्रेम, और भक्ति की गहराई को व्यक्त किया गया है। तुलसीदास की काव्य शैली, भाषा, और छंद साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं और उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है।

विनयपत्रिका की संरचना, विषयवस्तु, काव्य शैली, और समाज पर प्रभाव की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ भारतीय भक्ति साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। इसके माध्यम से तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति अपनी भक्ति और विनम्रता को प्रकट किया, जो आज भी लोगों को प्रेरित करता है और भारतीय साहित्य को समृद्ध करता है।

विनयपत्रिका ने भक्ति साहित्य, धर्म, और समाज के आदर्शों को प्रस्तुत करते हुए भारतीय साहित्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इसके अध्ययन और पाठन से हमें भक्ति, धर्म, और नैतिकता के अद्वितीय दृष्टिकोण को समझने का अवसर मिलता है, जो आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं।

विनयपत्रिका तुलसीदास की एक अद्वितीय कृति है जिसने भारतीय भक्ति साहित्य को समृद्ध किया है। इस ग्रंथ में तुलसीदास की भक्ति भावना, प्रेम, और आत्मसमर्पण की भावना का अद्वितीय चित्रण है। विनयपत्रिका ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है और इसे भक्ति आंदोलन का एक महत्वपूर्ण

ग्रंथ बना दिया है। तुलसीदास की इस रचना ने लोगों को भगवान राम के प्रति भक्ति और प्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है और इसे आज भी भारतीय भक्ति साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय भक्ति साहित्य के महान कवि और संत हैं। उनके काव्य और भक्ति रचनाओं ने भारतीय समाज और संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है। ष्रामचरितमानसष उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है, लेकिन इसके अलावा उनकी अन्य कृतियाँ जैसे ष्दोहावली,ष ष्कवितावली,ष षविनयपत्रिका,ष और ष्गीतावलीष भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास की ष्गीतावलीष एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है जिसमें उन्होंने भगवान राम की महिमा और उनकी लीलाओं का गान किया है।

1. तुलसीदास का जीवन और रचनात्मक प्रेरणा

तुलसीदास का जीवन एक साधक, संत, और महान कवि के रूप में प्रेरणादायक है। उनका जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के राजापुर गांव में हुआ था। बचपन में ही माता–पिता के स्नेह से वंचित रहने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनकी पत्नी रत्नावली के उपदेश ने उन्हें सांसारिक जीवन से विमुख होकर भक्ति मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

तुलसीदास की रचनाओं में उनके व्यक्तिगत अनुभवों, धार्मिक आस्थाओं, और भगवान राम के प्रति गहरी भक्ति की झलक मिलती है। ष्गीतावलीष भी उनकी भक्ति की एक अभिव्यक्ति है जिसमें उन्होंने भगवान राम की महिमा का गान किया है।

2. गीतावली की संरचना और विशेषताएँ

गीतावली तुलसीदास द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण काव्य रचना है जिसमें भगवान राम की महिमा और उनकी लीलाओं का वर्णन किया गया है। इसकी संरचना और विशेषताएँ निम्नलिखित हैंरू

गीत छंद का प्रयोगरू गीतावली में तुलसीदास ने गीत छंद का प्रयोग किया है। इस छंद का स्वरूप सरल और सजीव है, जिसमें गायन की प्रवृत्ति होती है।

भक्ति और प्रेम का गानः गीतावली में भगवान राम के प्रति भक्ति और प्रेम का गान किया गया है। तुलसीदास ने अपनी भक्ति को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

सरल और प्रभावशाली भाषारू गीतावली की भाषा सरल, सजीव, और प्रभावशाली है। तुलसीदास ने अपने विचारों और भक्ति को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए सरल भाषा का प्रयोग किया है।

3. गीतावली के मुख्य विषय

गीतावली में तुलसीदास ने विभिन्न धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक विषयों पर प्रकाश डाला है। इसके मुख्य विषय निम्नलिखित हैंरू

3.1 भगवान राम की महिमा

तुलसीदास ने गीतावली में भगवान राम की महिमा और उनके आदर्शों को प्रमुखता दी है। उन्होंने भगवान राम के चरित्र, उनके गुणों, और उनकी लीलाओं का वर्णन किया है।

तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर प्रभाव

समाज में तुलसीदास का योगदान

तुलसीदास की रचनाओं ने भारतीय समाज पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला है। उनकी काव्य रचनाएँ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक सुधार और नैतिकता के दृष्टिकोण से भी अत्यंत प्रभावशाली हैं। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को नैतिकता, धर्म, और सदाचार का संदेश दिया और लोगों को धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

जाति और वर्ग भेदभाव के खिलाफ आवाज

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में जाति और वर्ग भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। उनके समय में समाज में जाति प्रथा और वर्ग भेदभाव बहुत प्रचलित थे, और तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इन बुराइयों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने अपने काव्य में यह संदेश दिया कि भगवान के सामने सभी समान हैं और भक्ति के मार्ग पर जाति और वर्ग का कोई महत्व नहीं है। उनके काव्य में यह स्पष्ट रूप से झलकता हैः

सियाराम मय सब जग जानी।
करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी।।

धार्मिक एकता और समन्वय

तुलसीदास की रचनाओं ने धार्मिक एकता और समन्वय का संदेश भी फैलाया। उन्होंने विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के बीच समन्वय और सहयोग का आह्वान किया। उनके काव्य में विभिन्न धार्मिक प्रतीकों और सिद्धांतों का समावेश है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे सभी धर्मों के प्रति सम्मान और प्रेम रखते थे।

नैतिकता और सदाचार का संदेश

तुलसीदास की रचनाओं का एक प्रमुख उद्देश्य नैतिकता और सदाचार का संदेश देना था। उन्होंने अपने काव्य में नैतिक मूल्यों और धर्म के सिद्धांतों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया। उनके काव्य में यह संदेश बार–बार आता है कि जीवन में नैतिकता और धर्म का पालन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदाहरणस्वरूप, श्रामचरितमानसश में भगवान राम का चरित्र नैतिकता और सदाचार का प्रतीक है। उनके जीवन और कार्यों के माध्यम से तुलसीदास ने यह संदेश दिया कि नैतिकता और सदाचार ही सच्चे धर्म की पहचान हैं।

भक्ति आंदोलन पर प्रभाव

तुलसीदास की रचनाओं का भक्ति आंदोलन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भक्ति को सरल और सुलभ बना दिया, जिससे आम लोग भी भक्ति मार्ग पर चल सके। तुलसीदास की रचनाओं में भक्ति की गहराई और सरलता का अद्वितीय मिश्रण है, जिसने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा और गति दी। उनके काव्य ने लोगों को भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति का महत्व समझाया और उन्हें भक्ति

मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षा और साहित्य पर प्रभाव

तुलसीदास की रचनाओं का शिक्षा और साहित्य पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उनकी रचनाएँ भारतीय साहित्य का अभिन्न अंग बन गई हैं और उनकी काव्य शैली ने कई कवियों और लेखकों को प्रेरित किया है। श्रामचरितमानसश, श्विनयपत्रिकाश, श्दोहावलीश आदि ग्रंथों का अध्ययन आज भी साहित्यिक और धार्मिक शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनकी रचनाओं ने न केवल भारतीय साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी योगदान दिया।

सामाजिक सुधार में भूमिका

तुलसीदास की रचनाओं ने समाज सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज की बुराइयों और कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनके काव्य में समाज सुधार का संदेश स्पष्ट रूप से झलकता है, जिसमें उन्होंने जाति प्रथा, अंधविश्वास, और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष किया।

तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर गहरा और स्थायी प्रभाव है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को नैतिकता, धर्म, और सदाचार का संदेश दिया और लोगों को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनकी रचनाओं ने भक्ति आंदोलन, शिक्षा, साहित्य, और समाज सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसीदास की काव्य रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और समाज में नैतिकता, धर्म, और भक्ति का संदेश फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनकी रचनाओं का प्रभाव भारतीय समाज और साहित्य पर हमेशा बना रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय
सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान,
कुंडली, सोनीपत, हरियाणा
ईमेलः jiteshwarpandey1@gmail-com
मोबाइल नं.रू 9452511723

7

अशोक वाजपेयी के काव्य में बिंब योजना

कमलेश, डॉ० कृष्णा जून

सारांश

काव्यभाषा के सौंदर्य को बढ़ाने व सम्प्रेषणीयता को सुगम बनाने में सबसे महत्वपूर्ण, प्रधान व केंद्रीय उपकरण के रूप में बिंब कार्य करता है। कवि अपने मनोभावों को आकार देने के लिए बिंब का सहारा लेता है जिसका आर्विभाव कल्पना से होता है, जिन्हें काव्य में शब्दों के द्वारा चित्रित किया जाता है। इस प्रकार कवि जब अपनी इंद्रियों से गृहीत भावों एवं विचारों को अपनी मानसिक प्रक्रिया के सहारे शब्दों द्वारा मूर्त रूप देकर अपनी काव्यभाषा में प्रस्तुत करता है तो 'बिंब' का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत कवि मानव जीवन की सभी क्रियाओं व उससे संबंधित सभी वस्तुओं को समाहित करता है।

बिंब किसी वस्तु या पदार्थ का यथार्थ न होकर उसकी प्रतिछाया होता है, उसका पुनर्निर्माण होता है। बिंब का मूल विषय मूर्त या अमूर्त हो सकता है लेकिन उसका बिंब हमेशा मूर्त ही होता है।

बिंब अंग्रेजी के 'इमेज' (Image) का हिंदी रूपांतरण है, जिसका अर्थ है– प्रतिच्छवि, प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब। इस प्रकार बिंब के माध्यम से कवि अपने भावों एवं कल्पनाओं का मूर्तन करके श्रोताओं के मानस पर वह चित्र अंकित करने में सक्षम होता है जो उसके अंतस में उभरता है।

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार – ''काव्य– बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।''[1]

इसी संबंध में डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा ने बिंब को परिभाषित करते हुए कहा है– ''संदर्भ के सहारे संवेदना को गोचर एवं मूर्त रूप में प्रस्तुत करना ही बिम्ब विधान है।''[2]

केदारनाथ सिंह ने चित्रात्मकता एवं एंद्रियता को काव्य बिम्ब का प्रमुख गुण माना है–

''बिम्ब वह शब्द–चित्र है जो कल्पना के द्वारा एन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।''[3]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिम्ब एक ऐसा शब्द चित्र है जो कल्पना को मूर्त रूप देता है तथा जिसका संबंध भाव से होता है। बिम्ब अमूर्त व नीरस भावों को मूर्त, ग्राह्य व सरस बना देता है।

अशोक वाजपेयी समकालीन हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कवि, आलोचक, अनुवादक, सम्पादक हैं। इसके इलावा उनकी संगीत व चित्रकला के क्षेत्र में भी रुचि रही है। अपनी सृजनशीलता, मुखरता, विचारोतेजना व सक्रियता के कारण हिंदी साहित्य में उन्होंने अपनी एक विलक्षण पहचान बनाई है। कम उम्र से ही लेखन कार्य आरंभ कर देना तथा बचपन के अकेलेपन को दूर करने के लिए शब्दों के साथ खिलवाड़ करने की आदत ने इन्हें एक संवेदनशील कवि बनाने में महती भूमिका निभाई है।

शब्दों के माध्यम से अपने काव्य में इन्होंने ऐसे शब्द चित्र खींचे जो न केवल संप्रेषणीयता को बढ़ाते हैं अपितु उसे पाठक के सामने सजीव कर देते हैं। चाहे मनुष्य हो या प्रकृति उनके काव्य में शब्द बोलते हुए प्रतीत होते हैं।

अशोक वाजपेयी की कविताएँ बिंब के माध्यम से मानव मन की अनुभुतियों का प्रकाशन करती हैं। इनकी कविताओं में एन्द्रिय एवं वस्तुपरक बिंबों का अप्रतिम सौंदर्य झलकता है। इन्होंने दृश्य, श्रव्य, घ्राण, आस्वाद्य, स्प र्ा, प्राकृतिक, यौन, पौराणिक, सामाजिक, एतिहासिक व सांस्कृति बिंबों के अनायास प्रयोग से अपने काल को सम्प्रेषणीय व ग्राह्य बनाने में महारत हासिल की है।

दृश्य बिंब

पाठक जब किसी काव्य को पढ़कर अपने मानस पटल पर ऐसा चित्र बना पाता है, जिसे वह पहले देखे हुए दृश्य से एकात्मक कर लेता है, वह दृश्य बिंब कहलाता है। अशोक वाजपेयी की कविताओं में ऐसे अनेकों बिम्बों की बहुलता है। इनकी कविताओं में रोजमर्रा की जिंदगी, आम आदमी से संबंधी, पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, सामाजिक ऐसे अनेक बिंब काव्य सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं। 'हरियाली–सी दीप्त' कविता में प्रेम संबंधों को प्रकृति के माध्यम से दृष्टव्य करते हुए–

''उसको देह
अपने श्यामल वैभव में
झिझकती है
कामना
खिड़की के बाद दीखती
हरियाली–सी दीप्त है।''[4]

अशोक वाजपेयी की कविता 'केलि' में धरती, आकाश, सूर्य, चंद्रमा तथा घास के लिए प्रकृति का जीवंत रूप चित्रित हुआ है–

मैं बिछाता हूँ धरती का हरा बिछौना
मैं खींचता हूँ आकाश की नीली चादर
मैं सूर्य और चन्द्रमा के दो तकिए सम्हलता हूँ
मैं घास के कपड़े हटाता हूँ।''[5]

इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के माध्यम से अपना प्रणय निवेदन प्रस्तुत किया है। 'विनयगीत' कविता में भी इसी प्रकार प्रकृति का सजीव चित्रण हुआ है–

''सूर्य से मैंने कहा
थोड़ा सा अपना उदय और अस्त दो
××××××××××××××××××
मैंने आकाश से प्रार्थना की
थोड़ी सी अपनी नीलिमा,

अपनी असीमता मुझे दे दो

××××××××××××××

मैंने हवा से कहा

वहाँ तक बहकर जाओ जहाँ मेरा प्यार रहता है।"[6]

'पृथ्वी' कविता में नटखट व आकाश को कवि ने राजा के रूप में प्रस्तुत कर प्रकृति के उपादानों की छटा को अक्षुण्ण बनाने के लिए दृष्टव्य बिम्ब प्रस्तुत किया है–

''न जाने किस बरगद

किस पीपल किस इमली के

नीचे

खेलकर आयी है

यह नटखट पृथ्वी!

××××××××××

अपने सलमों–सितारों के साथ

राजा बेटा की तरह

खड़ा आका□ा देखता है

पता नहीं किस धातु की

बनी है यह पृथ्वी?''[7]

अशोक वाजपेयी की बेखबर की कविता में साधारण जन की दीन–हीन अवस्था का भी चित्रण किया है। एक साधारण व्यक्ति की विवशता का सजीव चित्रण देखिए–

''वह

बेखबर

जैसे सारे इतिहास को

गुड़ी मुड़ी पुराने काग़ज़–सा

अपनी जेब में रखकर

रोज़ काम पर जाता है।''[8]

इसी प्रकार उस जन साधारण का चित्र भी कवि ने अंकित किया है जो मानवीय मूल्यों को बचाकर रखते हैं उनकी स्तुति का चित्रांकन दृष्टव्य है। 'स्तुति' कविता में श्रव्य बिंब –

''मैं स्तुति करना चाहता हूँ

उसको जो दीवारें पोतता है

और कड़ी धूप में इमारतों में लगाने के लिए ईंटें सिर पर ढोता है;

उसकी जो दो रात गए सब्जियों की दूकान मोमबत्ती जलाकर खुली रखता है

और उसकी जो कहीं और जगह न पाकर फुटपाथ पर अखबार बिछाकर

थककर सो जाता है;

××××××××××

और उसकी जो क्यारियाँ गोड़ते–गोड़ते अलसाकर

चिड़ियों की चहचहाट के बीच किसी पेड़ की छाया में सो जाता है;

उसकी जो बगल की झुग्गी में से जरूरतमंद बच्चे को

लाकर देता है स्लेट और पैंसिल।''[9]

इन पंक्तियों में श्रमजीवी, आमजन द्वारा मानवीय संवेदनाओं को बचाए रखने का चित्रण बड़ा ही मार्मिक एवं सजीव हो उठता है।

श्रव्य बिंब – इसे नाद बिंब भी कहा जाता है। इस बिंब का चित्र सुनकर मानस पटल पर अंकित होता है। अशोक वाजपेयी के काव्य पक्षियों का कलख, बादलों की गर्जन, पत्तों की खड़खड़ाहट, नदियों का कल–कल बहता जल, हवा का शोर, विभिन्न पशुओं व जीवों की आवाजें, संगीत, मानवीय ध्वनियाँ सभी के माध्यम से श्रव्य बिंब का चित्रण किया है। 'विदा' कविता में कवि ने विदाई की बेला का श्रव्य बिंब के माध्यम से चित्रण किया है–

''तुम–चले जाओगे

××××××××××

जैसे रह जाती है

पहली बारिश के बाद

××××××××××××

खण्डर हो रहे मंदिर में

अनसुनी प्राचीन नूपुरों की झंकार

××××××××××××××××

छंद की तरह गूंजता

तुम्हारे पास होने का अहसास''[10]

इसी प्रकार **'शताब्दी से बेखबर बूढ़ा'** कविता में आधुनिकता से अनजान एक बूढ़े व्यक्ति की स्थिति का श्रव्य बिंब द्वारा चित्रांकन –

सूखी पक्तियाँ गिरती हैं

×××××××××××××

मुहल्ले की एक नटखट बच्ची आती है

अचरज और चाव से देखती है, हैरान होती है

दो बूढ़े खिलौनों को

और ताली बजाते हुए भाग जाती है

फिर आती है रोजमर्रा की आवाजें

झंझट और आपाधापी की

खोने–पाने की, रोने हँसने की।''[11]

इसी प्रकार 'अब सब कुछ को', दुनिया कुछ ठीक सी, यह जो हमें पुकारता है, नर्तकी धरती को हुआ, प्रार्थना–5, मैंने प्रार्थना की, डगमग, किसी को खबर न हुई, फिर नाम आदि कविताओं में भी कवि ने श्रव्य बिम्ब दृष्टव्य है।

'दुनिया कुछ ठीक सी' कविता में कवि ने सकारात्मकता के साथ श्रव्य बिंब प्रस्तुत किया है–

''सुबह उठो तो हरियाली में चहकती चिड़िया

××××××××××××××××××××××××

×

सुबह–सुबह रेडियो पर आती है भजनावली
या कि गुर्जरी तोड़ी सा अहीर भैरव की सुरलहरियाँ।''[12]

आस्वाद्य बिम्ब – जिस बिम्ब के माध्यम से स्वाद की अनुभूति हो, उसे आस्वाद्य बिम्ब कहा जाता है। अशोक वाजपेयी की कविताओं मैं खट्टा, मीठा, कड़वा, नमकीन, कसैला इत्यादि स्वादों को चित्रित करने वाले आस्वाद्य बिम्बों का बखूबी चित्रण हुआ है। हालाँकि अन्य बिंबों की तुलना में आस्वाद्य बिंब की योजना का चित्रण थोड़ा जटिल है लेकिन कवि ने इसका चित्रण भी काव्य में उचित ढंग से किया है।

'उस दिन' कविता में सांभर–बड़ा के स्वाद का चित्रण–

''कॉफी हाउस में कुछ कम नमकीन
सांभर–बड़ा खाने के वक्त।''[13]

रोटी व नमक के स्वाद का **'धरती को छुआ'** नामक कविता के माध्यम से चित्रण–

''कहाँ है उसका नमक
उसकी रोटियाँ कहाँ पकती हैं
कहाँ इकट्ठा होता है उसके लिए शब्द।''[14]

'स्तुति' कविता के माधाम से कवि ने दाल, सब्जी, रोटी, तेल, राई, हरी मिर्च, चटपटा अचार व समोसे के स्वाद का चित्रण किया है–

''मैं स्तुति करना चाहता हूँ × × × × × × × × × × × × × ×
उसकी जो नहा–धोकर रसोई में दाल–सब्जी पकाएगा
और खाने के वक्त फुर्ती से गर्म रोटियाँ परोसेगा
उसकी जो हरी मिर्च काटकर उसमें तेल राई मिलाकर रखेगी
और उसकी जो खोंचे के लिए सोंधा समोसा बनाएगा।''[15]

घ्राण बिंब – इसे गंध बिंब भी कहा जाता है। इनका संबंध नासिका (नाक) से होता है। जब काव्य में किसी पदार्थ या वस्तु की गंध का अहसास हो, वहाँ घ्राण बिंब होता है। गंध के अंतर्गत खुशबू अर्थात् सुगंध, दुर्गंध दोनों ही समाहित होते हैं। अशोक वाजपेयी की कविताओं में घ्राण बिंब की भी योजना है।

'विदा' कविता कवि ने प्रेयसी के चले जाने के बाद उसके अहसास को महसूस करने की स्थिति को चित्रित करते हुए घ्राण बिंब की योजना की है–

''तुम चले जाओगे
पर थोड़ा–सा यहाँ भी रह जाओगे
जैसे रह जाती है
पहली बारिश के बाद
हवा में धरती की सोंधी–सी गंध।''[16]

इसी प्रकार **उम्मीद चुनती है 'शायद',** सुख का प्रस्ताव, स्तुति, अब सब कुछ को, यह जो हमें पुकारता है, भर गई सुगंध, शब्द क्या सिर्फ छूते हैं तुम्हें, वापसी आदि कविताओं में भी घ्राण बिंब का अनायास प्रयोग देखने को मिलता है। **'वापसी'** कविता में प्रकृति के सुंदर चित्रण के लिए काव्य में घ्राण बिंब योजना–

'वह आ गई है
हवा में बसी फूलों – वनस्पतियों की सुगंध।''[17]

'खजुराहो में रात' कविता में घ्राण बिंब–

''महुए का वृक्ष अपनी गंध में डूबा हुआ
न जानता है उन तोतों को।''[18]

'भर गई सुगंध' कविता में कवि द्वारा प्रेयसी के सौंदर्य का चित्रण करने के लिए घ्राण बिंब योजना–

''उसके शरीर में भर गई सुगंध
जैसे आकाश में नीलिमा
और दूब में हरीतिमा।''[19]

यौन बिंब को चित्रित करती कविता **'शब्द क्या सिर्फ छूते हैं तुम्हें?'–**

अपनी आभा
अपनी गंध के साथ
शब्द क्या पुष्पित नहीं होते
उस वृक्ष पर
जो तुम हो?''[20]

'यह जो हमें पुकारता है' कविता के माध्यम से कवि वर्तमान कालचक्र में फंसे मानव को उम्मीद की एक पुकार सुनाना चाहते हैं, उन्हें अतीत की याद दिलाकर मानवीय संवेदनाओं के प्रति जागरूक करते हुए घ्राण बिंब का चित्रण किया है–

''यह जो हमें पुकारता है किसी प्राचीन ग्रंथ की सहमी हुई गंध से,
× × × × × × बरसात में न सूखे कपड़ों की गंध से।''[21]

स्पर्श बिम्ब– जिन बिंबो के माध्यम से स्पर्श भाव का बोध होता है, स्पर्श बिंब कहलाता है। इसके अंतर्गत कठोरता, कोमलता, गर्म, ठंडा, चुंबन, आलिंगन, खुरदरा को अनुभूत किया जा सकता है।

'जल ने कहा' कविता में स्पर्श बिंब–

''तुम मुझसे डरते हो
क्योंकि मैं तुम्हें भिगा, बहा, डूबा सकता हूँ।''[22]

'वहाँ कौन जा रहा है?' कविता में स्पर्श बिंब का चित्रण–

''वहाँ जहाँ आकाश झुककर धरती को चुपके से चूम रहा है,
वहाँ जहाँ वृक्ष झुककर हरी घास को छू रहे हैं।''[23]

'सद्यः स्नाता' कविता में स्पर्श व यौन बिंब का उदाहरण–

''पानी छूता है उसे

उसकी त्वचा के उजास को
उसके अंगों को प्रभा को
××××××××××××××
पानी
उसे घेरता है
चूमता है।''[24]

'वहीं है वसन्त' कविता में स्पर्श बिंब का अन्य उदाहरण–

''वहीं है वसन्त
जहाँ चूमकर टाँक गयी वह
पुष्प एक अनन्त।''[25]

संश्लिष्ट बिंब – काव्य में जहाँ एक से अधिक बिंबों की अनुभूति हो, संश्लिष्ट बिंब कहलाते हैं। अशोक वाजपेयी के काव्य में संश्लिष्ट बिंबों का बहुतायत चित्रण देखने को मिलता है–

'वहाँ कौन जा रहा है?' कविता में कवि प्रकृति, जीव–जन्तु, पक्षी व मनुष्य के भावों व क्रियाओं को संश्लिष्ट बिंब के माध्यम से व्यक्त किया है–

''वहाँ जहाँ आकाश झुककर धरती को चुपके से चूम रहा है,
वहाँ जहाँ वृक्ष झुककर हरी घास को छू रहे हैं,
वहाँ जहाँ एक नीली चिड़िया पीले फूल को कुतर रही है,
वहाँ जहाँ एक बिल्ली कबूतर को अपने मुंह में दबोच कर भाग रही है,
वहाँ जहाँ एक लड़की अपना प्रेम–पत्र लिखने को कोने में छुपी बैठी है
वहाँ जहाँ एक सैनिक अपनी बंदूक से एक बच्चे को बेवजह दाग रहा है,
××××××××××××××××××××××××
××××××××××××××××
वहाँ जहाँ मौन के कगार पर लड़खड़ा रही है भाब्द।''[26]

प्रस्तुत पंक्तियों में दृश्य, श्रव्य, स्पर्श बिंबों का सफल चित्रण प्रस्तुत होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कवि अशोक वाजपेयी ने अपने काव्य में बिंबों की कलात्मक योजना की है जिससे उनकी काव्य सम्प्रेषणीयता सुबोध व ग्राह्य बन पड़ी है। स्थान–स्थान पर कलात्मकता व सौंदर्य की दृष्टि से एंद्रिय व वस्तुपरक बिंब उनके काव्य में बिखरे पड़े हैं। बिंबों की सहायता से पाठक कविता की संवेदना तक पहुंचकर उसे आत्मसात कर पाता है। अपनी कविताओं में कवि ने प्राकृतिक, पौराणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, स्मृति, दृश्य, श्रव्य, घ्राण, आस्वाद्य, स्पर्श बिंबों का सफल चित्रण किया है जो जीव–जन्तु, प ाु–पक्षी, प्रकृति व मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नगेन्द्र, काव्य बिम्ब, पृ०–5, नेशनल पब्लि िंग हाउस दिल्ली, 1967
2. बलजीत मलिक, डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा : व्यक्तित्व और चिन्तन, पृ०–193, हिंदी साहित्य संस्थान रोहतक, प्रथम सं० 1995
3. केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान, प्र०–23, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (2016)
4. संपादक अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता 'हरियाली सी दीप्त'–184 प्रथम संस्करण – 2020
5. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'केलि', पृ०–169
6. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'विनयगीत', पृ०–425
7. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'पृथ्वी', पृ०–160,
8. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'बेखबर', पृ०–275
9. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'स्तुति', पृ०–350
10. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'विदा', पृ०–282
11. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – ' ाताब्दी से बेखबर बूढ़ा', पृ०–382
12. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'दुनिया कुछ ठीक सी', पृ०–43
13. वही, खण्ड़–1, उस दिन, पृ०–401
14. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'धरती को छुआ', पृ०–144
15. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'स्तुति', पृ०–349
16. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'विदा', पृ०–282
17. वही, कविता 'वापसी', पृ०–205
18. वही, कविता 'खजुराहो' में रात, पृ०–194
19. वही, कविता 'भर गयी सुगन्ध', पृ०–176
20. वही, कविता– ाब्द क्या सिर्फ हेतू हैं तुम्हें?, पृ०–208
21. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'यह जो हमें पुकारता है', पृ०–421
22. वही, कविता–जल ने कहा, पृ०–227

23. वही, कविता–वहाँ कौन जा रहा है?, पृ०–423
24. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'सद्य : स्नाता', पृ०–248
25. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–1) कविता – 'वहीं है वसंत', पृ०–179
26. सं० अमिताभ राय, सेतु समग्र : कविता अशोक वाजपेयी (खण्ड–2) कविता – 'वहाँ कौन जा रहा है?', पृ०–423

कमलेश
शोधार्थी, हिंदी विभाग
डॉ० कृष्णा जून
शोधार्थी, हिंदी विभाग
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

8

तुलसीदास की रचनाओं का समाज पर प्रभाव

डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय

सारांश

रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा रचित एक महाकाव्य है, जो भगवान राम के जीवन, उनके आदर्शों और उनकी लीलाओं का विस्तृत वर्णन करता है। इस महाकाव्य को अवधी भाषा में लिखा गया है, जिससे इसे आम जनमानस तक पहुंचाने में आसानी हुई। श्रामचरितमानसश को भारतीय साहित्य का एक अमूल्य रत्न माना जाता है और इसे विश्व की महानतम धार्मिक और साहित्यिक कृतियों में शामिल किया जाता है।

रामचरितमानस की भाषा अवधी है, जो उस समय की लोकभाषा थी। तुलसीदास ने इस भाषा का चयन इसलिए किया ताकि उनके काव्य का संदेश व्यापक जनसमूह तक पहुंच सके। अवधी भाषा की सरलता और मिठास ने श्रामचरितमानसश को जन–जन में लोकप्रिय बना दिया।

शैली की दृष्टि से रामचरितमानस में विविधता है। इसमें छंद, दोहे, चौपाई, सोरठा आदि का प्रयोग किया गया है, जो इसे काव्यात्मक दृष्टि से समृद्ध बनाता है। तुलसीदास ने भाषा के साथ–साथ शैली में भी उत्कृष्टता दिखाई है। उन्होंने विभिन्न छंदों का प्रयोग करके कथा को रोचक और आकर्षक बनाया है।

रामचरितमानस के प्रमुख पात्र और उनकी विशेषताएँ

1. रामः भगवान राम इस महाकाव्य के नायक हैं। वे मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्श पुरुष के रूप में चित्रित किए गए हैं। उनका जीवन नैतिकता, धर्म और सत्य के आदर्शों का प्रतीक है।

2. सीताः सीता राम की पत्नी और उनकी अनुगामिनी हैं। वे पवित्रता, त्याग और सच्चे प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। सीता का चरित्र भारतीय नारी के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है।

3. हनुमानः हनुमान राम के परम भक्त और सेवक हैं। वे भक्ति, शक्ति और सेवा भावना के प्रतीक हैं। हनुमान का चरित्र अत्यंत प्रेरणादायक है और भक्ति आंदोलन में उनका विशेष स्थान है।

4. लक्ष्मणः लक्ष्मण राम के अनुज और उनके परम भक्त हैं। वे समर्पण, निष्ठा और भाईचारे के आदर्श का प्रतीक हैं।

5. रावणः रावण इस महाकाव्य के प्रमुख खलनायक हैं। वे अहंकार, अधर्म और अधिनायकवाद का प्रतीक हैं। उनके चरित्र के माध्यम से तुलसीदास ने अधर्म और अहंकार के परिणामों को स्पष्ट किया है।

रामचरितमानस का भारतीय समाज पर प्रभाव

रामचरितमानस का भारतीय समाज पर गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस महाकाव्य ने न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी भारतीय समाज को प्रभावित किया है।

1. धार्मिक प्रभावः श्रामचरितमानसश ने राम भक्ति को जन–जन तक पहुंचाया। राम और उनके आदर्शों को भारतीय समाज में गहराई से स्थापित किया। रामलीला और रामायण पाठ जैसी परंपराएं रामचरितमानस के माध्यम से ही व्यापक रूप से प्रचलित हुईं।

2. सामाजिक प्रभावरू तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से जाति, वर्ग और लिंग भेदभाव के खिलाफ संदेश दिया। उन्होंने राम के चरित्र के माध्यम से सामाजिक समरसता, नैतिकता और न्याय का संदेश दिया।

3. सांस्कृतिक प्रभावरू रामचरितमानस ने भारतीय संस्कृति में रामकथा को एक अभिन्न अंग बना दिया। रामायण कथा पर आधारित विभिन्न लोकनाट्य, नृत्य, गीत और नाटकों ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया।

4. भाषा और साहित्य पर प्रभावः रामचरितमानस ने अवधी भाषा को एक नई पहचान दी। तुलसीदास की रचनाएँ हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और उनके काव्य ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।

रामचरितमानस तुलसीदास की सर्वप्रमुख काव्य रचना है, जो भारतीय भक्ति साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है। यह ग्रंथ भगवान राम के जीवन की कथा को सरल और प्रचलित भाषा अवधी में प्रस्तुत करता है, जिससे यह जन–साधारण के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। इस ग्रंथ ने भारतीय भक्ति साहित्य, धर्म, और समाज पर गहरा प्रभाव डाला है। इस लेख में हम 'रामचरितमानस' के महत्व, संरचना, विषयवस्तु, और उसके समाज पर प्रभाव की गहराई से समीक्षा करेंगे।

1. रामचरितमानस का महत्व

रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा रचित एक महाकाव्य है, जो भगवान राम के जीवन, उनकी लीलाओं और उनके आदर्शों का विस्तृत वर्णन करता है। यह ग्रंथ संस्कृत के श्रामायणश का हिंदी में अनुवाद और पुनर्निर्माण है, जिसमें तुलसीदास ने अपनी भक्ति, ज्ञान, और साहित्यिक प्रतिभा का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत किया है।

भक्ति का प्रमुख ग्रंथरू रामचरितमानस भक्ति साहित्य का एक प्रमुख ग्रंथ है। इसमें भगवान राम की भक्ति, प्रेम, और श्रद्धा का गहरा भाव है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ के माध्यम से भगवान राम के जीवन और उनके गुणों को आम जनता तक पहुँचाया, जिससे भक्ति की भावना व्यापक हुई।

साहित्यिक मूल्यः इस ग्रंथ की काव्य शैली, छंद, और अलंकार साहित्यिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास ने विभिन्न छंदों का प्रयोग करके और सुंदर अलंकारों से सजाकर इसे एक अद्वितीय काव्य बनाया।

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावः रामचरितमानस ने न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव डाला। इस ग्रंथ ने लोगों को धर्म,

नैतिकता, और सामाजिक आदर्शों की ओर प्रेरित किया।

2. रामचरितमानस की संरचना

रामचरितमानस की संरचना सात कांडों में विभाजित है, जो भगवान राम के जीवन की प्रमुख घटनाओं को वर्णित करते हैं। ये कांड हैंरू

1. बालकांडः यह कांड भगवान राम के जन्म, उनकी बाल्यावस्था, और उनकी शिक्षा का वर्णन करता है। इसमें भगवान राम की माता–पिता के साथ संबंध और उनके बचपन की लीलाएँ शामिल हैं।

2. अयोध्याकांडः इसमें भगवान राम की अयोध्या में निवास, उनके विवाह, और राजा दशरथ द्वारा उन्हें वनवास देने की कथा है। इस कांड में सीता के विवाह और उनके साथ वनवास की कहानी का भी विवरण है।

3. अरण्यकांडः इस कांड में भगवान राम, सीता, और लक्ष्मण का वनवास और उनके वन में विभिन्न घटनाएँ शामिल हैं। रावण द्वारा सीता का अपहरण और सुग्रीव और हनुमान से मिलन की कहानी भी इसी कांड में है।

4. किष्किंधाकांडः इसमें भगवान राम और सुग्रीव की मित्रता, रावण के विरुद्ध युद्ध की तैयारी, और सागर पर पुल बनाने की योजना का विवरण है। हनुमान का लंका जाकर सीता की खोज करने की घटना भी यहाँ वर्णित है।

5. सुंदरकांडः यह कांड हनुमान के लंका जाने, सीता से मिलने, और रावण के दरबार में उथल–पुथल मचाने की कथा है। इसमें हनुमान की वीरता और भक्ति का अद्वितीय चित्रण है।

6. युद्धकांडः इसमें राम और रावण के बीच युद्ध की पूरी कथा का वर्णन है। रावण की मृत्यु, सीता की अग्निपरीक्षा, और भगवान राम का अयोध्या लौटने की घटना इस कांड में है।

7. उत्तरकांडः इस कांड में भगवान राम की अयोध्या वापसी, सीता की निर्वासन, और उनके दो पुत्रों, लव और कुश की कथा है। इसमें राम की अंतिम यात्रा और उनकी मृत्यु का भी वर्णन है।

3. रामचरितमानस का विषयवस्तु

रामचरितमानस की विषयवस्तु भगवान राम के जीवन की पूर्ण कथा है। इसमें धार्मिक, नैतिक, और दार्शनिक पहलुओं का संगम है।

भक्ति और प्रेमः ग्रंथ में भगवान राम के प्रति अटूट भक्ति और प्रेम की भावना का गहरा चित्रण है। तुलसीदास ने भगवान राम के गुण, उनकी लीलाएँ, और उनके प्रति भक्तों की भावनाओं को सुंदर तरीके से व्यक्त किया है।

धार्मिक आदर्शः रामचरितमानस में धर्म, नैतिकता, और सदाचार के आदर्शों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। भगवान राम को आदर्श व्यक्ति और राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जिनकी जीवन यात्रा में धर्म और सत्य की महत्वपूर्ण भूमिका है।

सामाजिक सुधारः तुलसीदास ने समाज की बुराइयों, जातिवाद, और अंधविश्वास के खिलाफ अपने काव्य में आवाज उठाई। उन्होंने समाज को नैतिकता, समानता, और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

शक्ति और वीरतारू भगवान राम की शक्ति और वीरता का भी विस्तृत वर्णन है। रावण के खिलाफ उनके युद्ध, उनके सामर्थ्य, और उनकी वीरता का चित्रण इस ग्रंथ में प्रमुख है।

4. रामचरितमानस की काव्य शैली

रामचरितमानस की काव्य शैली साहित्यिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने इसे सुंदर और सरल भाषा में लिखा, जिससे यह आम जनता तक आसानी से पहुँचा।

भाषा और छंदः तुलसीदास ने मुख्यतः अवधी भाषा का प्रयोग किया, जो उस समय की प्रचलित भाषा थी। उन्होंने चौपाई, दोहा, सोरठा, और कुंडलिया जैसे विभिन्न छंदों का प्रयोग करके काव्य को संगीतमय और प्रभावशाली बनाया।

अलंकार और रसः तुलसीदास ने अनुप्रास, उपमा, रूपक, और यमक जैसे अलंकारों का कुशलता से प्रयोग किया। उनके काव्य में शृंगार, वीर, करुण, अद्भुत, और शांत रसों का सुंदर मिश्रण है।

साहित्यिक गुणः तुलसीदास की काव्य शैली में उपमाएँ, रूपक, और अन्य साहित्यिक तत्वों का कुशल प्रयोग है। उनका काव्य सरल होते हुए भी गहन भावनाओं और विचारों से भरपूर है।

5. रामचरितमानस का समाज पर प्रभाव

रामचरितमानस का भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस ग्रंथ ने समाज को धर्म, भक्ति, और नैतिकता का महत्वपूर्ण संदेश दिया।

भक्ति आंदोलन पर प्रभावः तुलसीदास की रचनाओं ने भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा दी। उन्होंने भक्ति को सरल और सुलभ बनाकर आम लोगों तक पहुँचाया और भक्ति की भावना को व्यापक रूप से फैलाया।

भक्ति आंदोलन भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसने 7वीं से 17वीं सदी तक भारत के विभिन्न हिस्सों में गहरा प्रभाव डाला। यह आंदोलन विशेष रूप से भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति पर केंद्रित था और इसका उद्देश्य धार्मिक और सामाजिक सुधार के माध्यम से मानवता की भलाई करना था। इस लेख में, हम भक्ति आंदोलन के प्रभाव को गहराई से समझेंगे, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण शामिल होगा।

1. भक्ति आंदोलन का ऐतिहासिक संदर्भ

भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति भारतीय उपमहाद्वीप में 7वीं शताब्दी के आसपास हुई, लेकिन इसका प्रभाव 12वीं से 17वीं सदी तक अधिक स्पष्ट रूप से देखा गया। यह आंदोलन दक्षिण भारत में आलवारों और नायनारों द्वारा शुरू किया गया था, जो भगवान विष्णु और शिव के प्रति अपनी भक्ति को व्यक्त करते थे। इसके बाद, यह आंदोलन उत्तर भारत में संतों और कवियों के माध्यम से फैल गया, जिन्होंने भक्ति और प्रेम की भावना को जन–साधारण तक पहुँचाया।

दक्षिण भारत का प्रभावरू दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

की शुरुआत पेरियार और आदी शंकराचार्य जैसे प्रमुख संतों ने की। उन्होंने भगवान विष्णु और शिव की भक्ति को प्रमुखता दी और इस समय के सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर जोर दिया।

उत्तर भारत में प्रसाररू उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का प्रसार संत कबीर, तुलसीदास, मीरा बाई, और सूरदास जैसे कवियों और संतों द्वारा हुआ। इन संतों ने अपनी काव्य रचनाओं और भक्ति गीतों के माध्यम से भक्ति आंदोलन को जन–साधारण तक पहुँचाया।

2. भक्ति आंदोलन का धार्मिक प्रभाव

भक्ति आंदोलन ने भारतीय धर्म और धार्मिक प्रथाओं पर गहरा प्रभाव डाला। इस आंदोलन ने धार्मिक समता, तात्त्विकता, और व्यक्तिगत भक्ति के महत्व को प्रमुखता दी।

धर्म की सरलता और समतारू भक्ति आंदोलन ने धार्मिक प्रथाओं को सरल और सुलभ बनाने की कोशिश की। संतों ने धार्मिक अनुष्ठानों और जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई, जिससे धर्म को सामान्य लोगों के लिए अधिक सुलभ और समान बनाया गया।

व्यक्तिगत भक्ति का महत्वरू भक्ति आंदोलन ने व्यक्तिगत भक्ति और ईश्वर के प्रति सीधे संबंध को महत्वपूर्ण माना। संतों ने यह सिखाया कि भगवान के प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम से आत्मिक उद्धार संभव है, न कि केवल पूजा–पाठ और अनुष्ठानों के माध्यम से।

धार्मिक समानताः भक्ति आंदोलन ने जातिवाद और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया। संतों ने सभी मानव जाति की समानता की बात की और धार्मिक आडंबरों को नकारा। इसने समाज में धार्मिक समानता को बढ़ावा दिया और जातिवाद के खिलाफ एक मजबूत आंदोलन शुरू किया।

3. भक्ति आंदोलन का सामाजिक प्रभाव

भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक बदलाव किए। इस आंदोलन ने सामाजिक सुधार, जातिवाद के खिलाफ संघर्ष, और सामाजिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

जातिवाद का विरोधः भक्ति आंदोलन ने जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ संघर्ष किया। संतों ने जातिवाद को नकारा और सभी जातियों और वर्गों के लोगों को धार्मिक समानता का संदेश दिया। इससे समाज में जातिवाद की मानसिकता को चुनौती मिली और सामाजिक सुधार की दिशा में कदम बढ़े।

महिला सशक्तिकरणः भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की भूमिका और अधिकारों पर भी ध्यान केंद्रित किया। संतों ने महिलाओं को धार्मिक और सामाजिक जीवन में समान अधिकार देने की बात की। मीरा बाई जैसे संतों ने महिलाओं के अधिकार और उनकी भक्ति को प्रमुखता दी, जिससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ।

सामाजिक सुधारः भक्ति आंदोलन ने समाज के विभिन्न बुराइयों और कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। संतों ने सामाजिक सुधार की दिशा में काम किया और लोगों को नैतिकता, सत्य, और धर्म के प्रति जागरूक किया। इसने समाज में कई महत्वपूर्ण सुधार किए और सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया।

4. भक्ति आंदोलन का सांस्कृतिक प्रभाव

भक्ति आंदोलन ने भारतीय संस्कृति पर भी गहरा प्रभाव डाला। इस आंदोलन ने कला, साहित्य, और संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

साहित्यिक योगदानः भक्ति आंदोलन ने साहित्य को एक नई दिशा दी। संतों की कविताएँ, भजन, और गीत भक्ति और प्रेम की भावना को व्यक्त करते हैं। तुलसीदास, सूरदास, और कबीर जैसे संतों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और भक्ति की भावना को जन–साधारण तक पहुँचाया।

संगीत और कलाः भक्ति आंदोलन ने संगीत और कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। भक्ति संगीत और भजन धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए। इसने भारतीय संगीत और कला को एक नई दिशा दी और धार्मिक अनुभव को सुसंगत और आनंदमय बनाया।

भक्ति परंपराओं का प्रसारः भक्ति आंदोलन ने भारतीय संस्कृति में भक्ति परंपराओं का प्रसार किया। विभिन्न भक्ति परंपराएँ, जैसे की रामकृष्ण परंपरा, शंकराचार्य परंपरा, और संत परंपरा, भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गईं।

5. भक्ति आंदोलन का राजनीतिक प्रभाव

भक्ति आंदोलन का भारतीय राजनीति पर भी कुछ हद तक प्रभाव पड़ा। इसने सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया और समाज में एकता और सुधार की दिशा में काम किया।

सामाजिक एकतारू भक्ति आंदोलन ने समाज में एकता और समानता की भावना को बढ़ावा दिया। यह आंदोलन जातिवाद और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करता था, जिससे समाज में एकता और सामंजस्य को बढ़ावा मिला।

धार्मिक पुनरुद्धारः भक्ति आंदोलन ने धार्मिक पुनरुद्धार की दिशा में काम किया। संतों ने धार्मिक आडंबरों और कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और धर्म को सरल और सुलभ बनाने की कोशिश की। इसने धार्मिक जागरूकता और सुधार को बढ़ावा दिया।

राष्ट्रीय चेतनाः भक्ति आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना को भी प्रभावित किया। संतों की रचनाओं और भक्ति गीतों ने भारतीयों को अपनी संस्कृति और धार्मिकता पर गर्व महसूस कराया और राष्ट्रीय पहचान को मजबूत किया।

6. भक्ति आंदोलन का वैश्विक प्रभाव

भक्ति आंदोलन का प्रभाव केवल भारत तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसका वैश्विक प्रभाव भी रहा। भारतीय भक्ति परंपराओं और संतों की रचनाओं ने वैश्विक स्तर पर ध्यान आकर्षित किया।

वैश्विक भक्ति परंपराएँरू भक्ति आंदोलन की परंपराएँ और

दर्शन वैश्विक स्तर पर फैल गए। भारतीय भक्ति परंपराओं ने विश्वभर के धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलनों को प्रभावित किया और भक्ति की भावना को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया।

सांस्कृतिक आदान–प्रदानः भक्ति आंदोलन के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ वैश्विक स्तर पर फैलीं। भारतीय भक्ति संगीत, साहित्य, और कला ने वैश्विक सांस्कृतिक आदान–प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धार्मिक संवादः भक्ति आंदोलन ने विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा दिया। इसने धार्मिक विविधता और सहिष्णुता को प्रोत्साहित किया और वैश्विक धार्मिक संवाद को समृद्ध किया।

भक्ति आंदोलन भारतीय धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी शक्ति थी। इसने धार्मिक समता, जातिवाद के खिलाफ संघर्ष, और सामाजिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भक्ति आंदोलन ने भारतीय साहित्य, कला, और संगीत को समृद्ध किया और वैश्विक स्तर पर भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रसार किया।

इस आंदोलन ने न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि समाज में एकता, समानता, और सुधार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए। भक्ति आंदोलन के प्रभाव का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यह केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति की गहराई से प्रभावित करने वाला एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन था।

धार्मिक और सांस्कृतिक पहचानः रामचरितमानस ने भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूती प्रदान की। भगवान राम की कथा और उनकी भक्ति ने भारतीय संस्कृति और समाज को एक नया दृष्टिकोण और प्रेरणा दी।

सामाजिक सुधारः ग्रंथ ने जातिवाद, अंधविश्वास, और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से समाज को सुधारने की कोशिश की और नैतिकता और धर्म के सिद्धांतों को प्रोत्साहित किया।

शिक्षा और साहित्य पर प्रभावः रामचरितमानस ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अध्ययन और पाठन ने साहित्यिक और धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया।

रामचरितमानस तुलसीदास की काव्य प्रतिभा और भक्ति भावना का अद्वितीय उदाहरण है। यह ग्रंथ भगवान राम के जीवन, उनके आदर्शों, और भक्ति की भावना को प्रस्तुत करता है। तुलसीदास की रचनाएँ साहित्यिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं और उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है।

रामचरितमानस की संरचना, विषयवस्तु, काव्य शैली, और समाज पर प्रभाव की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि यह ग्रंथ भारतीय भक्ति साहित्य का एक अमूल्य रत्न है। इसके माध्यम से तुलसीदास ने भक्ति, धर्म, और नैतिकता का एक अद्वितीय संदेश प्रस्तुत किया, जो आज भी लोगों को प्रेरित करता है और भारतीय साहित्य को समृद्ध करता है।

रामचरितमानस तुलसीदास की एक अद्वितीय कृति है जिसने भारतीय समाज और साहित्य पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। इस महाकाव्य में भगवान राम के जीवन और आदर्शों का सुंदर और प्रभावी चित्रण किया गया है। इसकी भाषा, शैली और पात्रों की विशेषताएँ इसे एक उत्कृष्ट महाकाव्य बनाती हैं। श्रामचरितमानसश आज भी भारतीय समाज में आदर और श्रद्धा से पढ़ा और गाया जाता है और इसका संदेश आज भी प्रासंगिक है।

रामचरितमानस की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान

रामचरितमानस, तुलसीदास द्वारा रचित एक महान धार्मिक ग्रंथ है, जो भारतीय भक्ति साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह ग्रंथ भगवान राम की जीवनकथा को सरल और सजीव तरीके से प्रस्तुत करता है, और भारतीय संस्कृति एवं धर्म में गहरी छाप छोड़ता है। रामचरितमानस की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को समझने के लिए हमें इसके धार्मिक महत्व, सांस्कृतिक प्रभाव, और समाज पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करना होगा।

1. रामचरितमानस का धार्मिक महत्व

रामचरितमानस भारतीय हिंदू धर्म का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसका धार्मिक महत्व कई पहलुओं में बंटा हुआ हैः

1.1 भक्ति का आदर्श ग्रंथ

रामचरितमानस भक्ति साहित्य का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें भगवान राम के प्रति भक्ति और प्रेम को प्रमुखता दी गई है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में भगवान राम की जीवनकथा को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि यह भक्ति की भावना को गहराई से प्रकट करता है।

भक्ति की अवधारणाः रामचरितमानस में भक्ति की अवधारणा को विशेष महत्व दिया गया है। तुलसीदास ने भगवान राम के प्रति पूर्ण समर्पण और भक्ति की आवश्यकता को बताया है। यह ग्रंथ भक्ति का आदर्श उदाहरण है, जो भक्तों को भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा और प्रेम की प्रेरणा देता है।

सच्ची भक्ति का मार्गरू इस ग्रंथ में भक्ति के मार्ग को सरल और सुलभ तरीके से प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास ने भक्ति को केवल पूजा–पाठ तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे जीवन के हर पहलू में अपनाने की सलाह दी है।

1.2 धार्मिक उपदेश और नैतिक शिक्षा

रामचरितमानस केवल भगवान राम की कहानी नहीं है, बल्कि इसमें धार्मिक उपदेश और नैतिक शिक्षा भी शामिल है। इस ग्रंथ में धर्म, सत्य, और नैतिकता की महत्वपूर्ण बातें बताई गई हैं, जो

जीवन के मार्गदर्शन के लिए आवश्यक हैं।

धर्म की व्याख्याः तुलसीदास ने रामचरितमानस में धर्म की गहराई से व्याख्या की है। उन्होंने धर्म के सिद्धांतों और आदर्शों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है, जिससे भक्तों को जीवन में धर्म के महत्व को समझने में मदद मिली है।

नैतिकता और आचार–विचाररू इस ग्रंथ में नैतिकता और आचार–विचार पर भी जोर दिया गया है। तुलसीदास ने भगवान राम के चरित्र के माध्यम से सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रस्तुत किया है, जो समाज के लिए मार्गदर्शक हैं।

1.3 धार्मिक एकता और सहिष्णुता

रामचरितमानस ने धार्मिक एकता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया है। इस ग्रंथ में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को सम्मान देने की बात की गई है।

धार्मिक सहिष्णुताः रामचरितमानस में धार्मिक सहिष्णुता का महत्व बताया गया है। तुलसीदास ने सभी धर्मों और जातियों को समान मानते हुए भगवान राम की कथा को प्रस्तुत किया है, जिससे धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहित किया गया।

सभी वर्गों के लिए सुलभतारू इस ग्रंथ को सरल भाषा में लिखा गया है, जिससे यह सभी वर्गों और जातियों के लोगों के लिए सुलभ हो गया। यह धार्मिक समानता और एकता को बढ़ावा देता है।

2. रामचरितमानस का सांस्कृतिक प्रभाव

रामचरितमानस का सांस्कृतिक प्रभाव भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा और व्यापक रहा है। इस ग्रंथ ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक प्रथाओं को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित किया है।

2.1 साहित्यिक और काव्यात्मक योगदान

रामचरितमानस ने भारतीय साहित्य और काव्य को महत्वपूर्ण योगदान दिया है। तुलसीदास की काव्यशक्ति और भाषा की सुंदरता ने इस ग्रंथ को एक साहित्यिक रत्न बना दिया है।

काव्यशास्त्र और शैलीः रामचरितमानस को अवधी भाषा में लिखा गया है, जो उस समय की प्रचलित भाषा थी। इस ग्रंथ में तुलसीदास ने दोहे, चौपाई, और सोरठा जैसे छंदों का प्रयोग किया है, जो काव्य को संगीतमय और प्रभावशाली बनाते हैं।

साहित्यिक मूल्यरू तुलसीदास की काव्यशक्ति और उनकी सरल भाषा ने रामचरितमानस को भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। इस ग्रंथ की साहित्यिक शैली ने भारतीय काव्य परंपरा को समृद्ध किया है और इसे व्यापक पहचान दिलाई है।

2.2 सांस्कृतिक परंपराओं का प्रसार

रामचरितमानस ने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस ग्रंथ की कथा और विचारधारा ने भारतीय सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया है।

भक्ति परंपराओं का प्रसाररू रामचरितमानस ने भक्ति परंपराओं को बढ़ावा दिया और भारतीय समाज में भक्ति की भावना को प्रोत्साहित किया। इसके माध्यम से भक्ति संगीत, भजन, और धार्मिक अनुष्ठान को लोकप्रिय बनाया गया।

सांस्कृतिक समारोहों का हिस्साः रामचरितमानस भारतीय सांस्कृतिक समारोहों और त्योहारों का अभिन्न हिस्सा बन गया है। रामलीला, रघुकुल की कथा, और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ इस ग्रंथ के आधार पर आयोजित की जाती हैं, जो भारतीय सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करती हैं।

2.3 धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान

रामचरितमानस के आधार पर विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। इस ग्रंथ ने धार्मिक अनुष्ठानों को एक नई दिशा दी है और समाज में धार्मिक चेतना को बढ़ावा दिया है।

रामलीला और धार्मिक अनुष्ठानः रामचरितमानस के आधार पर रामलीला का आयोजन किया जाता है, जो भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस धार्मिक नाटिका के माध्यम से भगवान राम की कथा को रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाता है, जो भक्तों को धार्मिक अनुभव प्रदान करता है।

सांस्कृतिक उत्सव और पर्वः रामचरितमानस के आधार पर विभिन्न सांस्कृतिक उत्सव और पर्व भी आयोजित किए जाते हैं। दीपावली, रामनवमी, और अन्य त्योहारों के दौरान इस ग्रंथ की कथा का आयोजन किया जाता है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक आनंद प्रदान करता है।

3. रामचरितमानस का सामाजिक प्रभाव

रामचरितमानस ने भारतीय समाज पर भी गहरा प्रभाव डाला है। इस ग्रंथ ने सामाजिक सुधार, समानता, और शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

3.1 सामाजिक सुधार और समानता

रामचरितमानस ने सामाजिक सुधार और समानता के लिए आवाज उठाई है। इस ग्रंथ ने समाज में जातिवाद और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया है।

जातिवाद का विरोधः रामचरितमानस में जातिवाद और सामाजिक असमानता के खिलाफ स्पष्ट संदेश दिया गया है। तुलसीदास ने सभी जातियों और वर्गों के लोगों को समान मानते हुए समाज में जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई है।

सामाजिक समरसताः इस ग्रंथ ने समाज में समरसता और एकता को बढ़ावा दिया है। भगवान राम के चरित्र के माध्यम से तुलसीदास ने समाज में धार्मिक और सामाजिक समानता का संदेश दिया है।

3.2 शिक्षा और जागरूकता

रामचरितमानस ने भारतीय समाज में शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा दिया है। इस ग्रंथ के अध्ययन और पाठन से लोगों को धार्मिक, नैतिक, और सामाजिक ज्ञान प्राप्त होता है।

धार्मिक शिक्षाः रामचरितमानस ने धार्मिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसके अध्ययन से भक्तों को धर्म, नैतिकता, और जीवन के आदर्शों के बारे में जानकारी मिलती है, जो जीवन को सही दिशा प्रदान करती है।

नैतिक शिक्षाः इस ग्रंथ ने नैतिक शिक्षा पर भी जोर दिया है। भगवान राम के चरित्र और उनकी कृतियों के माध्यम से तुलसीदास ने सत्य, ईमानदारी, और न्याय के आदर्शों को प्रस्तुत किया है, जो समाज में नैतिकता को बढ़ावा देते हैं।

3.3 आध्यात्मिक विकास और प्रेरणा

रामचरितमानस ने लोगों के आध्यात्मिक विकास और प्रेरणा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस ग्रंथ के माध्यम से भक्तों को आत्मिक उन्नति और आध्यात्मिक साक्षात्कार की प्रेरणा मिलती है।

आध्यात्मिक अनुभवः रामचरितमानस ने भक्तों को भगवान राम के माध्यम से आध्यात्मिक अनुभव की प्राप्ति की प्रेरणा दी है

डॉ0 जितेश्वर कुमार पांडेय
सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता और प्रबंधन संस्थान,
कुंडली, सोनीपत, हरियाणा
ईमेलः jiteshwarpandey1@gmail-com
मोबाइल नं.रू 9452511723

9

प्राचीन भारतीय शिल्प कला (मिट्टी के बर्तन) : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्षयीय अध्ययन

डॉ0 सचिन वर्मा

सारांश

यह जानने की किस को इच्छा न होगी कि हमारे पूर्वज किस प्रकार के बरतन में अपना धान्य एकत्रित करते थे, किन में वे भोजन बनाते थे,किन में वे भोजन करते थे तथा किन में वे पेय द्रव्य पीते थे। धातु के बने विविध बरतनों के अतिरिक्त हमें प्राचीन स्थानों की खोदाई में विविध भाँति के मिट्टी के बरतन प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं। इनमें हण्डियाँ, कसोरा, पराई, कुंडे, तश्तरी, भिक्षापात्र सहित अनेक पात्र जो नित्य प्रति साधारण जनता के व्यवहार में आते थे। ये सब एक ही आकार–प्रकार के नहीं हैं। भिन्न स्तरों से प्राप्त हुए ये मिट्टी के बरतनों के टुकड़े अलग–अलग काल के अलग–अलग ढंग के हैं। किसी–पर–किसी प्रकार की चित्रकारी है तो किसी–पर–किसी प्रकार की। किसी की श्रीवा पतली है तो किसी की फैली हुई इत्यादि–इत्यादि । इनके बनाने में, इनकी मिट्टी मांडने में, सुखाने में, पकाने में, आकार–प्रकार में, रंगाई तथा चित्रकारी इत्यादि में जो उत्तरोत्तर विकास तथा परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं जिनमें मनुष्य के जीवन का इतिहास छिपा हुआ है क्योंकि मनुष्य बहुत प्राचीन काल से मिट्टी के बरतनों का व्यवहार करता आ रहा है और अब भी भारत में तो करता ही है। साधारण जनता तो इसी को अपने काम में आज भी लाती है। ऐसे महापुरुषों की संख्या अभी कम है जो चीनी के बरतनों में भोजन करते हैं। यही कारण है कि आज के इतिहासज्ञ अपनी सामग्री के अध्ययन में इन मिट्टी के टुकड़ों को विशेष महत्व प्रदान कर रहे हैं और यही कारण है कि हमारे संग्रहालयों में इनको एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। आज इनके आधार पर प्रत्येक काल के मनुष्य जीवन की परिस्थितियों का पता लगाया जा रहा है।

आज जो अध्ययन मनुष्य के जीवन के विकास का हो रहा है उससे ऐसा पता लगता है कि प्राथमिक युग में मनुष्य को किसी प्रकार के बरतनों की आवश्यकता न थी। वह तो अपना जीवन कच्चा मांस तथा कच्चे फल खाकर व्यतीत कर लेता था। उस युग में उसे पत्थर के हथियार ही सर्व– उपयोगी होते थे । अति प्राचीनकाल में मनुष्य पत्थरों को दूसरे पत्थरों से एक ओर तोड़कर नुकीला बना लेता था और उनसे काम लेता था। फिर उसने उन पत्थरों को दो–तीन ओर से तोड़कर हथियार बनाना प्रारम्भ किया। इस युग में मनुष्य रहने के हेतु अपनी झोपड़ियाँ नहीं बनाता था । वृक्ष ही वर्षा, ग्रीष्म तथा हिम से उसकी रक्षा करते थे। कन्द्राओं में वह निवास करता था, शिलाखण्ड ही उसकी शय्या थी, जलप्रपात तथा नदियाँ उसके जल संग्रहालय थे, तथा मारे हुए जानवरों के चमड़े उसके तन ढाँकने के काम आते थे। यह युग कब तक चला यह कहना कठिन है। तीसरा युग बरतनों के व्यवहार की दृष्टि से वह था जब मनुष्य मिट्टी की झोपड़ियों में तो रहने लगा था परन्तु मिट्टी के बरतनों का व्यवहार वह नहीं करता था। वह आखेट करके अपना भोजन प्राप्त कर लेता था। ऐसे जीवन का एक स्तर क्वेटा से ४ मील दूर पर कील गुल मोहम्मद में प्राप्त हुआ है। इसे पात्ररहित युग की संज्ञा दी जा सकती है।

बीजशब्द : श्रीवा शिलाखंड चित्रकारी झोंपड़ियां कंदराओं चमड़ा संग्राहलय आखेट इत्यादि।

परिचय

प्रस्तर युग में मिट्टी के बर्तन

इस युग के पश्चात् का काल वह था जब मनुष्य हाथ से मिट्टी के बरतन बनाने लग गया था। ये बरतन प्रायः सादे रहते थे। भारत में कई स्थानों से इस प्रकार के मिट्टी के बरतन प्राप्त हुए हैं। जैसे ब्रह्मगिरि क्वेटा राना घुण्डई इत्यादि । इन बरतनों की बनावट से यह पता चलता है कि मनुष्य ने इस युग में पेड़ की टहनियों से दौरी बनाना प्रारम्भ कर दिया था और मिट्टी को भली भाँति सानकर उसकी लोई बनाकर हाथ से बेल कर मिट्टी की लम्बी–लम्बी डोरी बना लेता था। उसी को गोलिया कर बरतन का आकार बनाता था, पुनः उसे हाथ से चिकना करके दबाकर स्थान–स्थान से उसको स्वरूप प्रदान करता था। इन बरतनों का आकार–प्रकार प्रायः पत्थर अथवा चमड़े के बरतनों की भाँति होता था। मिट्टी को सानने के पूर्व भली भाँति पत्थरों से उसे उस युग का मनुष्य कुँचता था। इस प्रकार बरतन बनाकर उसे सूर्य की रश्मियों में सुखा लेता था। इन बरतनों के टूटे हुए कोर को देखने से उनके बनाने की विधि स्पष्ट हो जाती है।

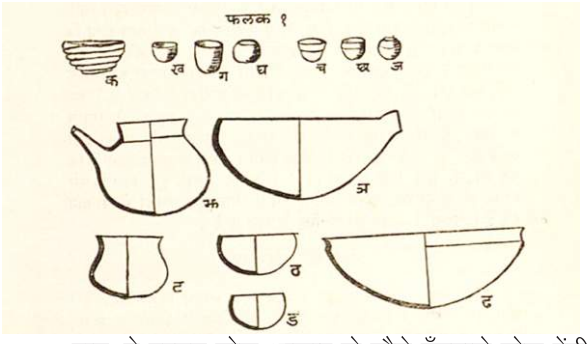

प्रायः ये बरतन गोल आकार के चौड़े मुँहवाले गोल पेंदी के बनते थे। कुछ बरतन जो ब्रह्मगिरि से प्राप्त हुए हैं उनके भी नमूने हैं। इन बरतनों को बनाने के लिए मिट्टी छिछले जलाशयों से कदाचित् लायी जाती थी। ऐसे स्थान की मिट्टी पानी में रहने से सड़ जाती थी। इस मिट्टी को अपने यहाँ लाकर पुनः लोंदा बना–बनाकर पृथ्वी पर वे लोग फेंकते थे जिसमें बुलबुले निकल जायँ । कील गुल मोहम्मद से जो बरतन मिले हैं उन पर साधारण चटाई के चिह्न हैं। इस छाप से ऐसा ज्ञात होता है कि बरतन सूखने के पूर्व ये चटाई से दबाकर बराबर किये जाते थे। ब्रह्मगिरि में भी हाथ के बने मिट्टी के बरतनों में जो पूर्वकालीन हैं उनमें कुछ के ऊपर रेखाएँ चित्रित हैं जो पकाने के पश्चात् उन पर गेरू से बनायी गयी थीं। इन रेखाओं का रंग भूरा

बैगनी–सा ज्ञात होता हैश। इनका काल २००० वर्ष ईसा से पूर्व निर्धारित किया गया है। गुजरात में हरिपुर और लंघनाज से जो बरतन प्राप्त हुए हैं वे भूरे पीले रंग के हाथ के बने और सूर्य की किरणों में सुखाये हुए हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि इस युग के पूर्व ही कुछ खेती आरम्भ हो गयी थी तथा लोग पत्थर और हड्डी के अस्त्र व्यवहार में लाने लग गये थे। धूप में सुखाये हुए ये बरतन जल्दी टूट जाते रहे होंगे और इनके बनाने में समय भी अधिक लगता रहा होगा जिससे मनुष्य को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता रहा होगा। ऐसा ज्ञात होता है कि किसी ने संयोगवश किसी बरतन को आग के पास छोड़ दिया होगा जिससे यह पता लगा होगा कि आग के पास यदि ये बरतन रख दिये जाँय तो ये पक जाते हैं। इस आविष्कार के पश्चात् कदाचित् पकाने के हेतु लकड़ी जलाकर बरतनों के चारों ओर रख देते रहे होंगे जैसा आज भी अफ्रीका में करते हैं। यह अनुमान करना अनुचित न होगा कि इस आविष्कार ने उस युग के मनुष्य के जीवन में एक क्रांति उत्पन्न कर दी होगी और आगे चलकर इसी आविष्कार ने आँवों को जन्म दिया होगा। ऐसा अनुमान होता है कि यह युग भी कुछ दिन चलता रहा। आँच में पकाये हुए हाथ के बने बरतन हलके भूरे रंग के और सिलेटी रंग के नागार्जुन कोण्डा से भी प्राप्त हुए हैं। परन्तु ये प्रस्तर युग के पीछे के काल के हैं।

चाक का आविष्कार

इस के पश्चात् हमें कुम्हार की चाक पर बने बरतन मिलने लगते हैं। श्री गार्डन की राय है कि यह चाक भारत में पश्चिम से आयी परन्तु यह विचार सर्वमान्य नहीं हो सकता। पाश्चात्य विद्वानों के इस निश्चय ने कि जो भी आविष्कार हुए वे सब पश्चिम में हुए और पश्चिमवालों ने हमको सभ्यता के सब चिन्ह प्रदान किये हमारे मन को बड़ा सन्दिग्ध कर रखा है। ईरान तथा मेसोपोटामियाँ की सभ्यता को भारत की सिन्धुघाटी की सभ्यता से प्राथमिकता देना उसी मनोवृत्ति का फल है। हम यह क्यों नहीं सोच सकते कि सिन्धुघाटी में चाक का प्रथम आविष्कार हुआ तथा सूर्य ने पूर्व से पश्चिम को प्रयाण किया, पश्चिम से पूर्व को नहीं या यों कहा जाय तो कदाचित् अनुचित न होगा कि प्रत्येक सभ्यता ने अलग–अलग जन्म लिया, अलग–अलग फली–फूली और अलग–अलग समय में आवश्यकतानुसार उसके आविष्कार हुए। हमारे यहाँ तो ऐसी किंवदन्ती है कि असुरों ने चाक का सबसे पहिले आविष्कार किया तथा इसी कारण मिट्टी के बने बरतनों का प्रेतकर्म में व्यवहार निषिद्ध है। सिन्धुघाटी की सभ्यता में नीचे के स्तरों से भी चाक के बने बरतन प्राप्त हुए हैं जिनको पिग्गट ने ईरान से प्राप्त बरतनों का समकालीन कहा है। इससे भी यह सिद्ध होता है कि भारत में भी उसी काल में चाक का व्यवहार होने लगा था जब ईरान में हो रहा था।

इस चाक ने पूर्वकाल के मनुष्य के जीवन में जो परिवर्तन कर दिया होगा उसका हम अनुमान नहीं लगा सकते। इस अविष्कार को करनेवाला असुर कौन था यह हमें पता नहीं, न हम यही कह सकते हैं कि इसका आविष्कार प्रथम कहाँ हुआ। ऐसा विचार उठता है कि किसी मेधावी बालक ने मिट्टी का एक लोंदा खेल में बनाया होगा और उसे गोल करने के लिए उस पत्थर को जिस पर वह बना था घुमा दिया होगा। हाथ में पकड़े हुए मिट्टी के उस लोंदे को गोल होते देखकर वह बालक उछल पड़ा होगा और वृद्धजनों ने इस नयी खोज से लाभ उठाकर मिट्टी का लोंदा पत्थर पर रखकर और उसे घुमाकर बरतन बनाना प्रारम्भ किया होगा क्योंकि लोंदे के आकार में आज भी मिट्टी चाक पर रखी जाती है, परन्तु उस घूमती हुई चाक से बरतन को अलग करना बहुत कठिन रहा होगा और उसे पत्थर की छुरिका से ही काटकर निकालते रहे होंगे। धागे से काटकर बरतन को अलग करना तो बहुत पीछे का आविष्कार ज्ञात होता है।

इस चाक को हमारे पीछे के जीवन में इतना महत्त्व दिया गया कि विवाह इत्यादि शुभ कर्मों में (उत्तरी भारत में) तो इसका पूजन भी प्रचलित हो गया तथा प्रत्येक विवाह इत्यादि कर्म इन नये बनाये हुए मिट्टी के बरतनों से प्रारम्भ होने लगे। यह प्रथा प्राचीन समय से चली आयी हुई ज्ञात होती है जब चाक का हमारे सामाजिक जीवन में एक विशेष महत्त्व रहा होगा। वैदिक इण्डेक्स के अनुसार शतपथ में इसे कुलालचक्र की संज्ञा दी गयी है (शत० ११।८।१।१ वैदिक इण्डेक्स १।१७१)। मिट्टी के बरतनों के आकार प्रकार तो आवश्यकता ने हमें बनाना सिखाया क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। घूमती हुई चाक पर कुम्हार अपनी अंगुलियों से सीधे खड़े बरतन जिस फुर्ती से बना देता है उसको देखकर हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं, परन्तु उसके पीछे कितनी शताब्दियों का मनुष्य की असफलताओं का इतिहास है यह कभी हमारे ध्यान में नहीं आता, परन्तु इस आविष्कार के पश्चात् भी सभी बरतन चाक से नहीं बनने लगे थे। कुछ हाथ से भी बनते थे जिसके उदाहरण हमें मोहनजोदड़ो और हडप्पा में प्राप्त होते हैंश तथा क्वेटा में भी मिलते हैं। इस प्रकार के बरतन इन नगरों में नीचे के स्तरों से प्राप्त हुए हैं। इनके आकार–प्रकार चाक के बरतनों के सदृश हैं। परन्तु ये उतने सुघर नहीं हैं। इससे ऐसा समझना युक्तिसंगत ज्ञात होता है कि चाक के बने बरतन उस काल में बनने प्रारम्भ ही हुए होंगे और महँगे होने के कारण हाथ के बने बरतन भी चलते रहे होंगे प्रस्तर युग को तीन भागों में विद्वानों ने विभक्त किया है। एक तो वह जिसमें मनुष्य पत्थर को एक ओर से कुछ दूसरे पत्थर के सहारे तोड़कर चोखा कर लेता था। दूसरा वह काल जब इसी प्रकार कई स्थानों से पत्थर को चोखा करता था और उससे कुल्हाड़ी भी बनाता था तथा चोखा करने की इस क्रिया में जो पत्थर के टुकड़े निकलते थे उनको पुनः चोखा कर लेता था और उनसे तीर इत्यादि बनाता था। तीसरा युग वह था जिसमें इन छोटे टुकड़ों को भी वह व्यवहार में लाता था और पत्थर की कुल्हाड़ी को चिकना करने के लिये पत्थर पर रगड़ कर साफ करता था। भारत में प्रस्तर युग के बीचवाले काल के प्रस्तर–आयुधों के साथ कई स्थानों से मिट्टी के बरतनों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के बरतन सबसे पूर्व ब्रूसफुट को पटपाड तथा कुरनूल से दुधिया (अगेट) तथा

लहसुनिया के उपरत्न (चाल्सेडोनी) के बने हथियारों के साथ प्राप्त हुए थे। ये बरतन पीले भूरे रंग के हैं। प्रस्तर युग के बीच के काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है एक पहिले का काल और दूसरा पीछे का। लंघनाज से प्राप्त बरतन पहिलै काल के हैं। दूसरे के गोदावरी की तलहटी में नासिक, जोरवे तथा बहाल (जो पूर्वी खान देश में है) से काली मिट्टी में पाषाण आयुधों के साथ प्राप्त काले रंग से चित्रित बरतन हैं। इनके साथ ताँबे की कुल्हाड़ी तथा आभूषण भी मिले हैं।श बहाल की खोदाई में श्री देशपाण्डेजी को इसी प्रकार की काली मिट्टी के ऊपर एक अलग सतह प्राप्त हुई है जिसमें उत्तरी काली चमकवाले बरतनों के टुकड़े मिले हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि काले रंग से चित्रित बरतन प्रायः ईसा पूर्व १००० से ७०० वर्ष के हैं। श्री देशपाण्डेजी को इसी प्रकार के चित्रित बरतन काली मिट्टी में पाषाण आयुधों के साथ नासिक जिले के भोजपुर नेवासा स्थान से भी प्राप्त हुए हैं जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि इस प्रकार के बरतन इन हथियारों के युग में बनने लगे थे।

मध्यभारत के माहेश्वर से श्रीसांकलिया को भी इसी प्रकार के बरतन काली मिट्टी में पाषाण आयुधों के साथ–साथ प्राप्त हुए हैं। के बरतनों का विवरण दक्षिण भारत के मिट्टी के बरतनों के इस प्रकार परिच्छेद में कुछ विशेष रूप से दिया गया है। तीसरा प्रस्तर युग के उस काल में जिसमें चिकनी की हुई कुल्हाड़ी प्राप्त होती है तथा ताँबे की बनी कुल्हाड़ी और आभूषण भी प्राप्त होते हैं। मिट्टी के बरतन बहुतायत से मिलते हैं। इसी प्रकार का एक स्तर हरिद्वार के बटादराबाद में प्राप्त हुआ है जहाँ से पत्थर के हथियारों के साथ साथ ताँबे की कुल्हाड़ी इत्यादि भी मिली हैं। इस स्थान के बरतन पीले लाल रंग के हैं। मैसूर के ब्रह्मगिरि, हैदराबाद के कुलूर तथा महाराष्ट्र के नासिक और जोरवे में भी इसी प्रकार के स्तर मिले हैं। यहाँ के मिट्टी के बरतनों पर काली चित्रकारी है। ऐसे ही एक बरतन से जोरवे में चिपटी ताँबे की कुल्हाड़ी तथा हाथ के कड़े मिले हैं। इस युग के बरतनों को देखने से ज्ञात होता है कि मनुष्य किस प्रकार कष्ट सहता हुआ प्रकृति से लड़ता हुआ आगे बढ़ा है और छोटे से छोटे आविष्कार के हेतु उसको कितना समय लगाना पड़ा है।

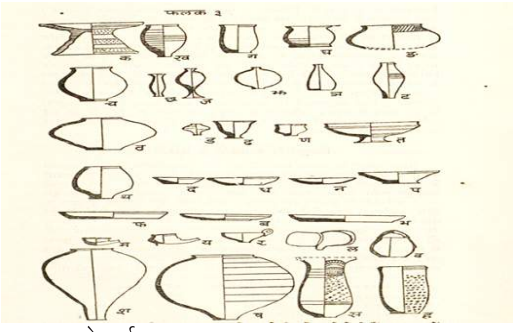

सिन्धु सभ्यता के बर्तन

प्रस्तर युग के पश्चात् जो मिट्टी के बरतन भारत में प्राप्त हुए हैं उनमें सबसे प्राचीन बरतन तो क्वेटा के कील मोहम्मद, देह मोरासी, डम्ब सादात, केचीवेग इत्यादि स्थानों के हैंश। इनमें नीचे के स्तरों से तो हाथ के बने मिट्टी के पात्र मिले हैं। इन हाथ से बने मिट्टी के पात्रों की मिट्टी बहुत अच्छी तरह माड़ी नहीं गयी है और योंही लकड़ी का ढेर लगाकर पकाये हुए ज्ञात होते हैं। इस प्रकार के कुछ सादे बरतन हैं और कुछ चटाई से दबाए हुये प्रतीत होते हैं। ठीक इसके ऊपर चाक के बने हुए बरतन प्राप्त हुए हैं। ये सिन्धुघाटी के अमरी के नीचे के प्राचीन स्तरों से प्राप्त बरतनों से बहुत मिलते हैं। क्वेटा के इन बरतनों पर एक प्रकार का मखनियाँ रंग का लेप है और उन पर केवल काले रंग से चित्रकारी की गयी है। अमरी से प्राप्त बरतन की मिट्टी का रंग हल्के लाल रंग का है। इन पर हल्के लाल रंग या मखनियाँ रंग का लेप है। इस लेप को चिकना करने का कोई प्रयन नहीं किया गया है। इन पर काले रंग से चित्रकारी की गयी है परन्तु कहीं–कहीं लाल रंग का भी व्यवहार हुआ है। चित्रकारी के विषय श्इंट का आकारश एक चतुष्कोण दूसरे के भीतर, चोटी का आकार, सीढ़ी का आकार इत्यादि है। ये ही आकार क्वेटा के बरतनों पर भी मिलते हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि यह चित्रकारी काले रंग के लिए काजल और लाल रंग के लिए गेरू में गोंद मिलाकर की गयी है। सफेद लेप खड़िया का है तथा लाल गेरू का । इन बरतनों के आकार पीछे के मोहनजोदड़ो के आकारों से भिन्न प्रतीत होते हैं। पुरवे तथा कसोरों में किसी की कोर नहीं बनायी गयी है। या तो ये बरतन सीधे खड़े आकार के हैं या गोल शरीर के फैले हुए। मुँह इनके खिले हुए हैं। आकार में भी अमरी के बरतन क्वेटा के बरतनों से बहुत कुछ मिलते हुए हैं।

कला की दृष्टि से नुन्दारा के प्राथमिक बरतन अमरी के समान ही चित्रित होते हुए भी आकार–प्रकार में इनसे कुछ निखरे हुए प्रतीत होते हैं। नुन्दारा के बरतनों पर लाल लेप है तथा काली लकीरों से चित्रण किया गया है। नल से प्राप्त बरतनों पर मखनिया रंग का लेप है तथा काली रेखाओं से चित्रण किया गया है, परन्तु लाल, पीले तथा नीले रंगों का भी चित्रण करने में प्रयोग किया गया है।श कलात के पास से प्राप्त टेगाऊ के बरतन भी नुन्दारा के बरतनों की भाँति चित्रित हैं।

झोबकी तलहटी से जो बरतन प्राप्त हुए हैं अमरी के बरतनों से मिलते हुए ही हैं। कुल्ली मेही से प्राप्त बरतन की चित्रकारी झोब की तलहटी से प्राप्त बरतनों से तथा हड़प्पा के बरतनों की चित्रकारी से मिलती हुई है। यहाँ के बरतनों को देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि ये दो स्तर के हैं। पूर्व– कालीन बरतन झोब बरतनों से मिलते हैं और दूसरे स्तर के हड़प्पा से। जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है इन पर बने पीपल के पेड़ तथा पशुओं के चित्र हड़प्पा से मिले बरतनों के चित्रों से बहुत मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही कुल के चित्रकारों ने दोनों स्थानों के बरतनों पर चित्रकारी की है।

मोहनजोदड़ो इत्यादि से प्राप्त बरतन

उपर्युक्त सभी स्थानों से जो बरतन मिले हैं वे इतने टूटे हुए हैं कि उनके आकार–प्रकार का भली भाँति अध्ययन बहुत सम्भव नहीं है। पूर्ण तथा अच्छी दशा में तो बरतन हड़प्पा, कोट डीजी, मोहनजोदड़ो

और रंगपुर, लोथल स्थानों से ही प्राप्त हुए हैं जिनका कला की दृष्टि से पूर्ण अध्ययन हो सकता है। मिस्र में प्रायः इसी युग में (३०००–१००० ई० पू०) जिस प्रकार मिट्टी के बरतन बनते थे वे वहाँ की कत्रों की दीवार पर बने प्राप्त हुए हैं।[६] हड़प्पा इत्यादि स्थानों से प्राप्त बरतनों की मिट्टी तीन प्रकार की है। कुछ बरतनों की मिट्टी सिलेटी रंग की है। इसी प्रकार के बरतन कुछ केटा की ओर भी बाये गये हैं[३]। यह रंग पकी हुई मिट्टी का नहीं है अपितु मिट्टी के बतरन को बन्द भट्ठी में लकड़ी, गोही, ऊँट की लेंड़ी के साथ धूएँ में पकाने के कारण हो गया है। उद्धन के अभाव में मिट्टी का रंग ऐसा रह जाता है । बरतनों में कहीं कम और कहीं अधिक आँच लगने से, स्थान स्थान पर भेद भी होता है। इसी कारण आँवें में से सभी बरतन एक रंग के नहीं उतरते । इसी नियम के अनुसार यहाँ के कुछ बरतनों का रंग हल्का सिलेटी है तो कुछ का गहरा सिलेटी । इस प्रकार के बरतन मोहनजोदड़ो में नीचे के स्तरों से अधिक पाये गये हैं। इन बरतनों पर ऊपर की ओर इनको चमकाने के हेतु कदाचित् किसी प्रकार का तेल लगाकर तथा बरतन को कपड़े से रगड़कर आँवे में पकाया गया है। यह रंग आवें में आज भी ऊँट की लेंड़, बर्रे, गोबर की चिपड़ी इत्यादि से धूआँ करके भट्टी में उत्पन्न किया जाता है। इसी प्रकार के बरतन अनाउ, निनवे तथा सुमेर में[६] भी प्राप्त हुए हैं।

दूसरे प्रकार के बरतन वे हैं जिनकी मिट्टी पकाने पर गुलाबी रंग की हो गयी है। इन बरतनों की मिट्टी को पकाने के पूर्व भलीभाँति न सानने के कारण ये पकते समय स्थान–स्थान से चिटक गये हैं। फिर भी इस मिट्टी से बड़े सुन्दर आकार के पात्र बनाये गए हैं। हाथ के बने मिट्टी के इन पात्रों पर सादी चित्रकारी भी बड़ी मोहक है। कुछ इस प्रकार के बरतन केटा क्षेत्र से भी पाये गए हैं।

तीसरे प्रकार के बरतन वे हैं जिनकी मिट्टी पकने पर श्वेत गुलाबी रंग की हो गयी है। कदाचित् यह रंग मिट्टी में चूना मिलाने के कारण आ गया है। वह मिट्टी खूब सनी और ऐसा ज्ञात होता है कि खूब सड़ायी तथा माड़ी गयी है। यह मिट्टी बहुत सुन्दर–सुन्दर बरतनों के बनाने में व्यवहार में आयी है और ऊपर के स्तरों में इस मिट्टी के बरतनों के प्राप्त होने के कारण यह धारणा होती है कि पीछे कला के उत्तरोत्तर विकास के फलस्वरूप इस प्रकार की मिट्टी बरतन बनाने के लिए व्यवहार में आने लगी होगी ।

मिट्टी में मेल

ऐसा अनुमान होता है कि इस मिट्टी में चूना तथा अबरक मिली बालू मिलायी जाती थी। चूने के टुकड़े तो कुछ बरतनों में से स्पष्ट रूप से प्राप्त हुए हैं[३]। इसी कारण ऐसी धारणा होती है। अबरक मिट्टी में चमक रही है और बालू के कण भी मिट्टी में दिखायी देते हैं। अबरक तो सिन्धु नदी के तट की बालू में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। इसमें थोड़ी भी बालू मिट्टी में माड़ने के समय मिला देने से वह दिखाई देता रहेगा। इस प्रकार की बालू को मिलाने से दो लाभ होते हैं। एक तो बरतन बनाते समय मिट्टी शीघ्र सूखती नहीं तथा दूसरा इस मिट्टी के बरतन को सुखाते समय ये चिटकते नहीं।

मिट्टी में चूना भारत में ही इस काल में नहीं मिलाया गया है अपितु और देशों में भी जैसे सुमेर में अल उबाइड तथा जमदेत नस्त्र समय में तथा प्राचीन प्री डाइनिस्टिक मिस्त्र में। चूने से बरतन थोड़ी आँच में भी अच्छा पकता है। आज भी शीशे के बरतन बनाने के लिए चूने का प्रयोग बालू के साथ किया जाता है जिससे थोड़ी ही आँच में काम चल जाय।

सिन्धु–घाटी का चाक

सिन्धुघाटी के बरतन कुछ को छोड़कर चाक पर बने हुए हैं। यह चाक कदाचित् उतनी शीघ्रता से नहीं घूमती थी जैसी आज की घूमती हैं, परन्तु थी वह इसी प्रकार की, अर्थात् ऊपर एक गोल पत्थर जिसमें नीचे की ओर एक गड्ढा तथा नीचे एक छोटा गोल पत्थर जिसमें लकड़ी की एक खूँटी। ऊपर का पत्थर नीचे के पत्थर की खूँटी पर घूमता था। ऊपर के पत्थर का गड्ढा कदाचित् बहुत सफाई से न बनने के कारण उतनी शीघ्रता से नहीं घूम पाता रहा होगा। चाक पत्थरों की भाँति के दो पत्थर मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए हैं। ऊपर के भाग के पत्थर को घुमाने के हेतु नीचे का पत्थर पैर से घुमाया जाता रहा होगा। हो सकता है इस कारण भी चाक वेग से न घूमता रहा हो। आज भी पंजाब में कुछ स्थानों पर इसी प्रकार चाक को घुमाते हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि घूमते हुए चाक पर की मिट्टी को अँगूठे और अँगुलियों में पानी लगा दबा कर बरतन बनाए जाते थे।

बरतनों का छीलना

यहाँ के बरतनों को चाक पर उतारने के पूर्व उनको छुरी से छीला भी गया है जैसा कि आज भी बड़े बरतनों के आकार बनाने के हेतु किया जाता है। यह छिलाई ऊपर से नीचे की ओर की गयी है, आज की भाँति गोलाई में नहीं। अनुमानतः इस कार्य के हेतु पत्थर की चौड़ी छुरी व्यवहार में लायी गयी है। बरतन पर इसी प्रकार की छिलाई मिस्स्रश और क्रीट में भी हुई है। यह कार्य बरतन के आकार को शुद्ध करने के हेतु किया जाता था ।

भट्ठी

सिन्धुघाटी से प्राप्त बरतनों को देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि बरतन नियन्त्रित आँच में पकाए गए हैं क्योंकि मिट्टी का रंग बरतन में सब स्थान पर एक–सा है। ऐसा तभी सम्भव होता है जब आँच पर कुम्हार का पूर्ण अधिकार हो अर्थात् वह जब चाहे जितनी आँच दे सके। कुछ बरतन जो अधिक पके मिले हैं, वे नगण्य हैं। उनका रंग हरा हो गया है जो कदाचित् लोहे तथा चूने के मिश्रण के फलस्वरूप प्रकट हुआ है।

बरतनों को पकाने के हेतु जो भट्टी बनायी जाती थी उसके नमूने भी हमें मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा में प्राप्त हुए हैं। यह प्रायः गोल आकार की है तथा दो खण्ड में बनी हुई है, एक नीचे का भाग तथा दूसरा ऊपर का । नीचे का भाग लकड़ी की आग देने के काम में आता होगा और ऊपर का भाग बरतन रखने के । नीचे और ऊपर के बीच में गोल–गोल छिद्र बने हुए हैं जिनमें आँच ऊपर लग सके।

नीचे का हिस्सा जिसमें लकड़ी जलायी जाती थी,९ ईंटों से गोल आकार का बना हुआ है जिसमें आग की गरमी सीधे ऊपर जाय। ऊपर का भाग गोल मिट्टी का बना है तथा उसमें भी ऊपर की ओर छिद्र है जिससे आँच ऊपर खिंच सके। इसी प्रकार की भट्टी सुमेर के जमदेत नस्त्र में प्राप्त हुई है। कीश में जो भट्टियाँ मिली हैं वे चतुष्कोण हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि इस प्रकार की भट्टी प्रायः ईसा से ३००० वर्ष पूर्व भी मिट्टी के बरतन बनाने के काम में आती थीं। हड़प्पा से प्राप्त भट्टियाँ तो और भी सुन्दर हैं। इनमें कुछ तो नाशपाती के आकार की हैं, परन्तु ये कदाचित् मिट्टी के बरतन पकाने के हेतु नहीं व्यवहार की जाती थीं क्योंकि ये बहुत छोटी हैं।

इस प्रकार भट्टी में बरतन पकाने में आँच का नियन्त्रण पूर्णरूप से हो सकता है, बरतन एक सा पकता है और ईंधन की भी बचत होती है। यदि बरतन को सिलेटी रंग का करना हो तो हवा के छिद्रों को बन्द किया जा सकता हैश। आज भी इसी प्रकार की भट्टी चुनार के बरतनों पर ऊपर की चमक देने में लायी जाती है। आगे चलकर हम देखेंगे कि इस प्रकार की भट्टी प्रा मौर्य तथा मौर्यकाल के बरतनों के बनाने में कितनी सहायक सिद्ध हुई। मांके का मत है कि आजकल सिंध में जो खुले आँवें बनते हैं उनमें भी कुम्हार वैसे ही बरतन बना लेते हैं जैसे प्राचीन समय में बन्द भट्टियों में बनते थे। परन्तु बात ऐसी नहीं है। आज के कितने ही बरतनों पर काले धब्बे पड़ जाते हैं और आँच बराबर न लगने के कारण वे शीघ्रता से टूट भी जाते हैं। भट्टी के छिद्रों को ढकने के हेतु बरतन के टुकड़े व्यवहार में आते थे। ऐसे टुकड़े भट्टियों के पास ही प्राप्त हुए हैं। कदाचित् इनको छिद्रों पर रखकर मिट्टी और राखी से लस देते थे जिससे धुँआं बाहर न जाय । परन्तु यह तभी किया जाता होगा जब सिलेटी रंग का बरतन निकालना होता होगा। ऊपर से भट्टी के मुँह को पत्थर से ढँककर मिट्टी से बन्द करके और उस पर राखी डाल देते होंगे जिसमें भीतर की आग भीतर ही रह जाये ।

रंगाई

ऐसा अनुमान होता है कि सिन्धुघाटी में बरतनों की सुन्दरता बढ़ाने तथा उनके दोष को छिपाने के हेतु उन पर रंग का लेप चढ़ाया गया होगा। यह लेप प्रायः गोंद मिलाकर बरतन पकाने के पश्चात् लगाया हुआ प्रतीत होता है। कुछ बरतनों पर हल्का मखनिया रंग का लेप लगाया गया है, लेकिन अधिक बरतनों पर तो गेरू का रंग गोंद मिलाकर लगाया गया है। मखनियाँ रंग कदाचित् खड़िया का है। बहुत थोड़े बरतनों पर बैगनी रंग का भी लेप दिखायी देता है। यह रंग कैसे बनता था यह ज्ञात नहीं होता। कुछ बरतनों पर दो रंग के लेप दिये गये हैं, कुछ दूर पर लाल और फिरश मखनियाँश बड़े बरतनों की पेंदी की ओर का भाग सादा है जैसे आज– कल के कुण्डों के अधोभाग का रहता है। कदाचित् ये बरतन पृथ्वी में गाड़कर रखे जाते थे, इस कारण इनके नीचे का भाग सादा छोड़ दिया गया है। इन बरतनों को पृथ्वी पर रखकर रंगते थे जैसा इनके रंग के फैलाव से ज्ञात होता है। मांके का यह कहना है कि इनको चाक पर ही रंगते थे कुछ उपयुक्त नहीं ज्ञात होता क्योंकि ऐसा करने की आवश्यकता ही नहीं थी। कुछ बरतनों के लेप से ऐसा अनुमान होता है कि सिंधुघाटी के कुम्हार इस बात का भी प्रयत्र कर रहे थे कि बरतन पानी न सोखे परन्तु इस कार्य में वे सफल न हो सके। मोटा पलस्तर देने पर भी बरतन पानी सोखते ही रहे। ऐसा अनुमान होता है कि कुछ बरतनों पर आम की छाल को कापिस (एक प्रकार की मिट्टी जिसमें लोहे का अंश रहता है) में मिलाकर इसी ध्येय से पकाने के पहिले लगाया गया है। कुछ को पकाने के पश्चात् शीशे के चूरे के घोल में डालकर पुनः पकाया गया है जिससे उन पर चमकीला लेप चुनार के बरतनों की भाँति चढ़ गया है। ऐसे टुकड़े बहुत कम हैं जिनसे अनुमान होता है कि बरतन मोटे होने के कारण इस क्रिया में अधिक टूटते होंगे इस कारण इस पद्धति को अधिक प्रोत्साहन नहीं मिला होगा।

पात्रों पर चित्रकारी

यहाँ के बरतनों पर की चित्रकारी प्रायः काजल से की हुई प्रतीत होती है। इसे पानी में गोंद के साथ मिलाकर बरतनों पर लगाते थे। ऐसा ज्ञातः होता है कि कभी–कभी सिंदूर और दूसरे रंगों के हेतु विविध धातुओं का भी व्यवहार करते थे । रंग पतला होने के कारण यह बरतन की मिट्टी तक ऊपर के लेप को पार करके पहुँच गया है। इसे लगाने के लिए पतली कूँची व्यवहार में लाई गई है। ऐसा ज्ञात होता है कि महीन लकीरें कदाचित् सरकण्डे की कलम से बनायी हुई हैं। सरकण्डे की कलम का व्यवहार कीट में इसी काल या इसके कुछ ही पीछे के काल में मिलता है। एक पात्र पर सरकण्डे की लेखनी से लिखा हुआ एक लेख भी प्राप्त हुआ है। हड़प्पा में भी कई पात्रों पर सिंधुघाटी की सभ्यता के अक्षरों के लेख प्राप्त होते हैं। वे किसी लेखनी द्वारा लिखे ज्ञात होते हैं। इनमें कुछ तो ऐसे हैं जो बिना फाड़ी हुई लेखनी से लिखे गए हैं और कुछ ऐसे हैं जो भोक फाड़कर बनायी हुई लेखनी से लिखे गये प्रतीत होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि दोनों प्रकार की लेखनियों का व्यवहार सिन्धु सभ्यता में भी होता था। बरतनों के नीचे के भाग सादे हैं और श्रीवा से लेकर बरतन के मध्य भाग तक ही चित्रकारी सीमित रखी गई है। जो आकार बनाये गये हैं एक परिधि के भीतर। परिधि की चौड़ी रेखाएँ एक भाग को दूसरे से अलग करती हैं। प्रायः ग्रीवा से नीचे का भाग दो हिस्सों में बँटा हुआ मिलता है। इनमें अलग–अलग आकार बनाये गये हैं।

चित्रकारी का विषय ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से ऐसा अनुमान होता हैं कि कुम्हार मनुष्य की आकृति बहुत कम चित्रित करते थे। यों सिंधुघाटी की सभ्यता में मनुष्य की आकृति की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं और एक पात्र के टुकड़े पर मनुष्य की आकृति किसी पतली लेखनी से बनी हुई भी प्राप्त हुई है परन्तु चित्रकारी में इसका प्रायः अभाव ही रहा। केवल किसी–किसी पात्र के टुकड़े पर आँख के सदृश चिह्न बने प्राप्त होते हैं। पशुओं की भी आकृति अपेक्षाकृत कम ही बनी। इनमें मुख्य तो आइवेक्स की है। बारहसिंघे, मछली, वृषभ, बत्तक इत्यादि की आकृतियाँ भी प्राप्त होती हैं। वृक्षों

में पीपल के पेड़, केले के पेड़, पीपल के पत्ते आदि हैं, विशेष रूप से केले के पेड़ पीछे राजपूत कला की चित्रकारी में भी ऐसे ही दिखाये गये हैं, जैसे मोहनजोदड़ों में मिलते हैं।

मृत्पात्रों पर चित्रकारी सर्वत्र ही रेखांकनों द्वारा की गयी है। आड़ी–बेड़ी रेखाओं द्वारा अनेक प्रकार के सुन्दर–सुन्दर नमूने यहाँ बने हुए हैं। कहीं–कहीं इन्हीं रेखाओं द्वारा नदियाँ भी चित्रित की गयी हैं। चित्रकारी जो भी सिंधुघाटी की सभ्यता से प्राप्त होती है वह ऐसे रंगों से की गयी है कि रेखाएँ पात्रों में से अलग प्रस्फुटित होती दिखाई देती हैं तथा पात्रों के आकार को ध्यान में रखते हुए की गयी हैं। जितना स्थान मिला है।चित्रकारी भी की गयी है जिससे वे पात्र का एक अंग प्रतीत होती हैं। ऐसा अनुमान है कि प्राचीनतम बरतन पर की चटाई की रेखाओं की नकल करने की प्रवृत्ति ने पीछे की पात्र पर की चित्रकारी को जन्म दिया। मृत्पात्रों पर की इन रेखाओं में एक विचित्र स्पन्दन है, एक अद्‌भुत गति है जो हृदय को अविलम्ब प्रभावित करती है। सिंधुघाटी में लोग प्रायः वास्तविक सांसारिक वस्तुओं के अंकन से सांकेतिक आकृतियों को अधिक महत्त्व देते थे। एक दूसरे को काटते हुए वृत्त के आकार कई बर्तनों पर चित्रित किये गये हैं। इन वृत्तों को कम्पास से बनाते थे ऐसा ज्ञात होता है क्योंकि कम्पास का निशान कतिपय बर्तनों पर दिखाई देता है। इस प्रकार की कारीगरी में गेहूँ के दाने की भाँति के आकार बीच–बीच में बन जाते हैं। ऐसा अनुमान है कि कम्पास का व्यवहार केवल भारतीय सभ्यता में उस काल में हुआ। घड़ियाल के चमड़े के ऊपर की दिउली भी कुछ बर्तनों पर अंकित की गई है। कुछ बर्तनों पर खोदाई करके भी आकार बनाने का प्रयत्न किया गया है।

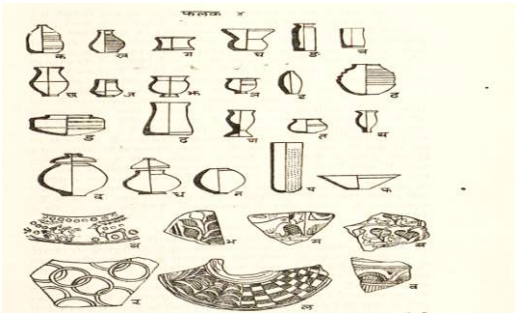

सिन्धुघाटी के बर्तनों के आकार

प्रायः बर्तनों के आकार–प्रकार मिट्टी की मुलायमियत पर तथा मनुष्यों की रुचि और आवश्यकता पर निर्धारित रहते हैं। सिन्धु घाटी के बर्तनों के आकार–प्रकार को देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि प्रायः लोग गोलाई लिए हुए बर्तन पसन्द करते थे। एकदम सीधे अथवा कोने निकले हुए बर्तन यहाँ नहीं के बराबर प्राप्त हुए हैं। कन्धे और पेट के बीच के भाग में कोने निकले हुए बर्तन जैसे कीश, सूसा या मूसियन में प्राप्त हुए हैं यहाँ नहीं मिले हैं। बर्तनों की पेंदी चिपटी भी बनती थी तथा गोल भी । बर्तनों को रखने के हेतु नीचे की गेंडुरी भी मिली है। कुछ बर्तनों की छोटी पेंदी को देखकर ऐसा अनुमान होता है कि बड़े कुण्डे की भाँति ये बर्तन पृथ्वी में गाड़कर रखे जाते होंगे जैसे अनाज के कुण्डे आज भी गाड़कर रखे जाते हैं। छोटे मुँह के बर्तन कम मिले हैं परन्तु इनका नितान्त अभाव नहीं है९। मूठदार बर्तन भी प्राप्त हुए हैं जो आज–कल के प्याले की भाँति ज्ञात होते हैं। मिट्टी के बने दीवट की भाँति की फल रखने की चौकियाँ भी प्राप्त हुई हैं जो बीच में सँकरी तथा नीचे और ऊपर फैली हुई हैं। कदाचित् इन चौकियों पर देवताओं को नैवेद्य अर्पित किया जाता होगा। ये चौकियाँ प्रायः दो भागों में बनाई गयी हैं, ऊपर का भाग अलग और नीचे का पावा अलग। इनको बड़ा पक्का जोड़ा गया है। जो टूटी हुई चौकियाँ प्राप्त हुई हैं वे भी उस स्थान से नहीं टूटी हैं जहाँ से जोड़ी गयी होंगी। लम्बी सुराही की भाँति के बर्तन अधिक मात्रा में प्राप्त हुए हैं। इनकी पेंदी छोटी है, बीच में से फैले हुए हैं तथा मुँह सँकरा हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि ये पात्र पानी रखने के काम में आते रहे होंगे।

दूसरे आकार के बर्तन जो प्राप्त हुए हैं वे आज के ग्लास के ढंग के हैं। इनका मुँह फैला हुआ है, बीच का भाग प्रायः सीधा है तथा गोलाई बहुत कम है और नीचे की पेंदी चौड़ी है। कदाचित् इस प्रकार के छोटे ग्लासों से पानी अथवा मद्य पिया जाता रहा होगा।

छोटे बर्तनों के बीच का व्यास २ इंच और ऊँचाई ५ इंच है। इनसे बड़े बर्तनों की ऊँचाई ६ इंच, बीच का व्यास २।। इंच और मुँह का व्यास २ इंच है। इनके सुन्दर आकार को देखकर मिस्र के प्राचीन बर्तनों का स्मरण हो आता है। इनके आकार में एक अपना लोच है। कुछ ऐसी हंडिया प्राप्त हुई हैं जो नीचे से चौड़ी तथा ऊपर आकर संकरी हो गई हैं। इनका आकार भारी भरकम है। कुछ की पेंदी इनमें चिपटी है तथा कुछ की पेंदी अलग से बनाकर जोड़ी हुई ज्ञात होती हैं।

प्रायः ८ इंच या ६ इंच ऊँचे ऐसे बर्तन भी प्राप्त हुए हैं जो सम्भवतः मसाले रखने के काम में आते रहे होंगे। ये बर्तन नीचे से पतले और ऊपर से चौड़े हैं। इनकी श्रीवा बनाने के हेतु ऊपर से तनिक भीतर की ओर दबा दिया गया है। इनके आकार बिलकुल ही आधुनिक से प्रतीत होते हैं।

गोल पेंदी की छोटी और बड़ी हंड़िया भी प्राप्त हुई है। नीचे से फैली हुई ये हँड़ियाँ आजकल की हँड़ियों से भिन्न नहीं हैं और कदाचित् आज की भाँति भोजन पकाने के ही काम में आती होंगी

पेंदीदार घड़े भी यहाँ प्राप्त हुए हैं। इनकी पेंदी और मुँह के वृत्त के बराबर होने से ये देखने में बड़े सुन्दर प्रतीत होते हैं। बीच का गोल आकार पूर्ण वृत्ताकार है।

कुछ छोटे लम्बे पात्र भी ऐसे प्राप्त हुए हैं जो कदाचित् मद्यपान के काम में आते थे। इनका आकार यूनान के बने पात्रों से बहुत कुछ मिलता हुआ है। छोटे मुँह के कई प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं जो कदाचित् कोई विशेष महत्त्व के तरल पदार्थ रखने के काम आते थे। मुँह छोटे इस कारण बनाये जाते थे कि एक समय में बहुत अधिक पदार्थ उलटने पर न निकले। ग्रीवा रहित हँड़िया बीच से फूली हुई भी यहाँ से प्राप्त हुई है। इसका आकार नितान्त भिन्न

है। इस प्रकार की छोटी–बड़ी कई हँड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। छोटी हँड़ियों में लम्बी पेंदी हैं।

प्याले भी कई प्रकार के यहाँ प्राप्त हुए हैं। कसोरे भी कई प्रकार के मिले हैं। प्रायः ये चौड़े मुँह के बनते थे, पेंदी भी चौड़ी रहती थी। किसी–किसी की पेंदी एकदम गोल बनती थी।

भोजन की थालियाँ जो मिट्टी की बनी हुई प्राप्त हुई हैं, वे प्रायः गहरी नहीं हैं। किसी–किसी में पेंदी भी बनी है। इनमें मोहनजोदड़ो के लोग भोजन करते होंगे ।

कुछ विशेष प्रकार के बरतनों में छोटे बच्चों को दूध पिलाने की सितुही की भी गणना की जा सकती है। ये भी कई आकार की है। मुँठ लगे प्याले जो कदाचित् दीपक के काम में आते थे वे भी प्राप्त हुए हैं। दो खाने के बर्तन जिनका कदाचित् चौघड़े की भाँति व्यवहार होता था तथा कमण्डलु जिनमें पानी रखा जाता थाः वे भी यहाँ से प्राप्त हुए हैं। यहाँ के धान्य रखने के कुण्डे भी कई प्रकार के हैं। कुछ छेददार बने बरतन ऐसे प्राप्त हुए हैं जो सम्भवतः पेय पदार्थ को छानने के हेतु व्यवहार में आते थे। एक बरतन ऐसा भी प्राप्त हुआ है जो एक मेढ़े के आकार का है। भीतर से यह खोखला है।

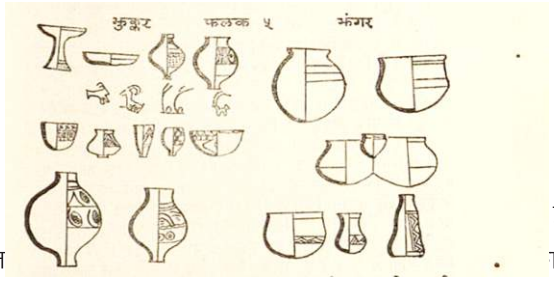

प्रायः मोहन ार में भिन्न भी हैं। इनके ऊपर प्रायः लाल रंग का लेप है। इन पर की चित्रकारी बहुत कुछ मोहनजोदड़ो से मिलती–जुलती है। सुराही के दो नमूने जो मोहनजोदड़ो में नहीं मिले हैं वे यहाँ से प्राप्त हुए हैं। ये सुराहियाँ गरारीदार हैं। कुछ ऐसे बरतन मिले हैं जिन्हें वत्स ने अनाज नापने के नपुये बताया है।श परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ये बरतन वास्तव में अंगीठी के काम में आते थे। इस आकार की अंगीठी आज भी बनती हैं। दो लम्बी बोतलें भी मिली हैं। ऐसी बोतलें मोहनजोदड़ो में नहीं दिखाई देतीं । कदाचित् ये अंचार रखने के कार्य में प्रयुक्त होती होंगी। ऊपर की सतहों में प्राप्त होने के कारण ऐसा अनुमान होता है कि इनके आकार बाहर के देशों से आये । पानी पीने के ग्लास भी जो यहाँ मिले हैं वे बिलकुल ही आधुनिक आकार के एक दम खड़े बने हैं, पेंदी भी चिपटी है। एक बरतन अनार के आकार का भी प्राप्त हुआ हैश जिससे ऐसा ज्ञात होता है कि अनार अथवा उसी आकार का कोई फल उस समय लोग खाते थे। सिन्धु घाटी के पास आज भी पहाड़ों पर जंगली अनार होते हैं इस कारण यहाँ के लोगों का इस आकार से परिचित होना कोई आश्चर्य नहीं है। सिन्धुघाटी से प्राप्त बरतनों में कुछ छोटे–छोटे बरतन भी हैं। इनके आकार–प्रकार बड़े बरतनों से मिलते हुए हैं। कदाचित् इन्हें बच्चों के खेलने के हेतु बनाया जाता था, जिससे उन्हें प्रारम्भ से ही रूप का ज्ञान हो जाय और उन बरतनों के नाम भी स्मरण हो जाये। आज भी इसी प्रकार के पीतल तथा मिट्टी के बरतन लड़कों के खेलने के हेतु भारत में बनते हैं जो प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली चीजों के नाम और रूप का बोध कराने में सहायक होते हैं। कुल्ली मेही की सभ्यता के बरतनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है; एक तो हड़प्पा के समकालीन हैं और उसी आकार–प्रकार के हैं और दूसरे हड़प्पा के यौवन काल के पूर्व के हैं। इस प्राचीन सभ्यता की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई प्रगति के फलस्वरूप बर्तनों के बनाने, उसपर लेप चढ़ाने तथा चित्रकारी करने का क्रम प्रायः १५०० वर्ष तक चलता रहा। उत्तरी बलुचिस्तान के रानाघुण्डई की खोदाई से जो प्रमाण प्राप्त हुए हैं उनसे ऐसा ज्ञात होता है कि प्रायः तीसरे काल के अन्त में इस सभ्यता को ध्वस्त करके नये आमियों ने इस क्षेत्र में पुनः अपनी सभ्यता जमायी। इस सतह पर जो राख मिली है उससे ऐसा ज्ञात होता है कि कोई बहुत बड़े ध्वंसकारी जत्थे ने आक्रमण करके इस सभ्यता को नष्ट कर दिया। कुछ इसी प्रकार के प्रमाण बलुचिस्तान के नल के सोहर डम्ब से तथा हाल की हुई खोदाई से प्राप्त कोटडीजी के सतहों से मिलते हैं। उसी क्षेत्र के डाबरकोट में ऊपर के स्तरों की राख के ढेरों से भी ऐसा ही पता लगता है। चान्हुदारों की खोदाई से भी इसी बात की पुष्टि होती है।श इस काल के बरतन हल्के पीले रंग के हैं तथा इन पर चित्रकारी लाल और काले रंग से की गयी है। चित्रकारी के विषय या तो रेखांकित वृत्त, त्रिकोण, चतुष्कोण इत्यादि हैं या काल्पनिक वृक्षों तथा पशुओं के आकार के है। इस युग के बरतनों में नीची पेंदीवाले बोतल, मटके, रकाबी और दीवट हैं। पतली पेंदी के कुण्डे और कुल्हिया मुख्य हैं। इनको देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि हड़प्पा, कुल्ली इत्यादि कई स्थानों के बरतनों के आकार–प्रकार के प्रभाव इन पर विद्यमान हैं। काल्पनिक चित्रकारी में पशुओं की आकृतियाँ हैं। उनमें भी एक विचित्र प्रवृत्ति दिखाई देती है। किसी की सींग लम्बी कर दी गयी है जो पीठ को भी पार कर जाती है तो किसी का धड़ ही बड़ा लम्बा कर दिया गया है। ऐसा अनुमान होता है कि अच्छे कुम्हारों के मरने पर कुछ उन्हीं के घर के बचे–खुचे लोगों ने इन बरतनों को बनाया है। इन बरतनों को देखकर ऐसा ज्ञात होता है कि इस काल में एक मिश्रित कला का प्रादुर्भाव हुआ जैसा मुगलराज्य के अन्तिम दिनों में हुआ था। इनके पीछे भी और एक बड़ा जत्था पश्चिम से आया जिसने इन्हें पूर्व की ओर खदेड़ दिया। इस जत्थे को सिलेटी रंग के बरतन कदाचित् पसन्द थे और उस काल में वैसे ही बरतन बने । इन पर कोई चित्रकारी नहीं है, केवल कच्चे बरतनों पर खोदाई करके कुछ श्रृंगार कर दिया गया है। रंगे हुए प्राचीन बरतनों से ये बिल्कुल भिन्न हैं। इनका सिलेटी रंग पश्चिम से प्राप्त बरतनों पर कुछ मिलता है। ये उत्तरी काली चमकवाले बरतनों के रंग से भिन्न हैं तथा पिग्गट का यह विचारश कि ये सुंगकाल के बरतनों से मिलते हुए रंग के हैं, भ्रामक है। दोनों के रंगों में अन्तर है। इन सिलेटी रंग के बरतनों पर

मौर्यकाल की चमक है ही नहीं। ये हाथ के बने हैं तथा इन पर का सिलेटी रंग कलछौंट लिए हुए है। इस रंग के बने हुए कई पात्र प्राप्त हुए हैं जिनमें तीन जुड़ी हुई हंड़ियाँ, गगरे, छोटी नांद, लोटे इत्यादि मुख्य हैं। इनके स्वरूप निखरे हुए हैं तथा प्रारम्भिक युग की कला के द्योतक नहीं हैं। यह काल प्रायः १४०० वर्ष ईसा से पूर्व का होना चाहिए। यह वही काल था जब पश्चिम से जत्थों ने पूर्व की ओर प्रस्थान किया क्योंकि इसी समय के लगभग पाये जाने वाले बरतनों की चित्रकारी जो सियाल्क (ईरान) में पायी जाती है वही बलुचिस्तान के लोडो में और वही जिनावरी आदि में। कुछ लोगों का मत है कि ये आर्यों के ही जत्थे थे पर यह विवादग्रस्त विषय है और प्रस्तुत प्रसङ्ग में उसकी समीक्षा समीचीन प्रतीत नहीं होती ।

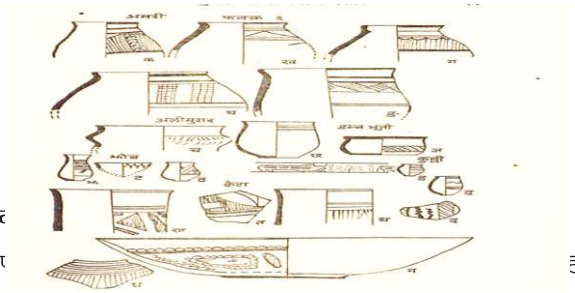

निष्

संक्षे ... ह्रास है। इस काल की कला के इस उत्थान पतन में प्रायः १५०० वर्ष का समय लगा ! इस दीर्घकाल में दूसरी बाहरी सभ्यताओं का, समय–समय पर बरतनों के बनाने तथा चित्रकारी करने में जो प्रभाव पड़ा वह एक विशेष अध्ययन का विषय है जिस पर कुछ कार्य हो चुका है और अब भी हो रहा है।

सन्दर्भ सूची

बी० डी० कृष्ण स्वामी स्टोन एज इन इण्डिया एनशष्ट इंडिया नं० ३ **(११४७) १० १२**

फ़ेयर सर्विस–अमेरिकन म्युज़ियम नेवियत्स नं0 1687 सितंबर 1952 पृ0 अठारह तथा डी0 एच0 गार्डेन – एनशष्ट इण्डिया नं0 10, 11 (1954–55)पचास 167

कृष्णस्वामी – अनिशांत भारत नं0 3 (1947) 50 39

कोल गुलमुहम्मद का द्वितीय स्तर गार्डन–उपर्युक्त ५० १६७

रास–ए चाल कोलोयिक साइट इन नारदने बलूचिस्तान जर्नल आफ नीयर ईस्टर्न स्टडीज – खण्ड ५ (१६४६) पृ० २८६ तथा आगे

एस० ग्राहम ब्रेड वर्क्स–टीच योर सेल्फ अर्कैआलोजी पृ० ७३

डीलर–ब्रह्मगिरि एण्ड चन्द्रावली – एनशण्ट इण्डिया नं० ४ ५० २२६ फिग० १६ ।3 फेयर सर्विस – उपर्युक्त पृ० १७, १८

उदय – गिरि ब्रह्म एण्ड चन्द्रावली – एनशांत इण्डिया नं0 4 पृ0 222

सांखलिया– इनवेस्टिगेशन इन हिंस्टारिक आर्कआलोजी आरु गुजरात (१६४६) 1013

गार्डन – दी स्टोन इण्डस्ट्रीज आफ दी हालो सेन, एनशण्ट इण्डिया नं० ६ (१६५०) १० ७३

गार्डन–दी पादरी इण्डस्ट्रीज आफ दी इण्डो इरानियन वार्डर एनशष्ट इन्डिया नं० १०, ११, १० १५६

ग्लिन, ई, डेनियल – ए हंड्रेड इआर्स ऑफ आर्केआलजी – पी0 208

श्री माधव अनंत फडके असुरों का उत्कर्षाकर्षक पृ0 3

पिग्गड–ए न्यू प्री हिस्टारिक सिरामिक फ्राम वलूचिस्तान–एनशण्ट इण्डिया नं0 350 136, 142

पत्थर की छुरिका के चिह्न मोहनजोदड़ो के एक बरतन पर विद्यमान हैं– माके एक्सकवेशन एट मोहनजोदड़ो १० १७६, प्लेट ५७– नं० १५,

बैट्स एक्सकवेशन एट हडप्पा–पृ0 275

पिग्गट–ए न्यु हिस्टारिक सिरामिक फ्राम बलूचिस्तान–एनशन्ट इण्डिया नं० ३, पृ0 136 .

वी० डी० कृष्ण स्वामी प्रभेत इन प्रीहिष्ट्री एनशण्ट इण्डिया न० ६ पृ० ६७

वि0 दे0 कृष्ण स्वामी–उपर्युक्त प्लेट 11

श्री एच० डी० सांकलिया, बी सुब्बाराओ, एस० बी० देव–एक्सकवेशन्स इन दी नर्मदावाली–जरनल महाराजा सियाजी राव युनिवर्सिटी आफ बरोदा खण्ड २ न0 2 (1953)

वी0 डी0 कृष्ण स्वामी–प्राग्रेस इन श्री हिस्त्री, एनशष्ट भारत न0 9 1071

बी0 डी0 कृष्णा स्वामी–उपर्युक्त प्लेट 31, भा 0 मि0

फेयर सरविस – अमेरिकन म्युजियम नोविटेट्स (सितम्बर १६५२) न० १५८७ पृ० ३ तथा आगे

गार्डन – दी पाटरी इण्डस्ट्रीज आफ दी इण्डो इरानियन व रडर–एनशण्ट इण्डिया, न० १०–११ ५० १६०

एन० जी० मजूमदार– एक्सप्लोरेशन्स इन सिन्ध, आर्केआलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया मेमायर्स नं० ४८, पृ० २७

हीलर – हड़प्पा (१६४६) एनशण्ट इण्डिया नं० ३, पृ० १०१

पिग्गट–दी क्रानालाजी आफ प्री– हिस्टारिक नार्थ वेस्ट इण्डिया, एनशण्ट इण्डिया नं०, १५० ११

गार्डन–उपर्युक्त पृ० १६२

सैयद हसनत अहमद–ए प्री– हडप्पन सिबिलिजेशन दी लीडर १२ मई १६५८ वीकली पृ० १

ई0रोज़ेनथल–पत्री सेरेमिक्स–पृ0 14

पिग्गट–दी कनालाजी ऑफ प्री– हिस्टारिक इंडिया– एनशांत इंडिया नं0 1 प्र0 11

माके–फरदर एक्सकवेशन्स एट मोहनजोदड़ो–पृ० १७५ ३ गार्डन

चाइल्डे – एण्टिक्क्वेरी– सितम्बर १६३२, पृ० ३८४

मलोवन – दी टाइम्स सितम्बर १६३०, पृ० ६

मेक – एंथ्रापालेजी मेमायर्स, फील्ड म्युजियम, शिकागो ख0 1, प्र0 140

पिम्गट–ए न्यू प्रीहिस्टारिक पादरी फ्राम वलूचिस्तान–एनशण्ट इण्डिया नं ३, पृ० १३६

डॉ0 सचिन वर्मा
राजकीय महाविद्यालय हसनपुर
अमरोहा 244241
फोन – 7310985898
(उ0प्र0)

मांके–फरदर एक्सकवेशन्स एट मोहनजोदाड़ो, पृ० १७६
हाल एण्ड बूली– अल उबाईड–५० १६२
मांके–आन्ध्रापालिजिकल मेमायर्स फील्ड म्युजियम, शिकागो, ख० १, पृ० २३३
मांके–फरदर एक्सकवेशन्स चित्र–१०४– फिगर १, २
ब्रटन–काऊ एण्ड वढरी–ख० २, पृ० ४
इवान्स पालिश आफ माइनास–ख० १, पृ० ७५
मांके–फरदर एक्सकवेशन्स प्लेट–४०, फिगर–बी० डी०
वत्स–एक्सवेन्स 4 एट हरप्पा–पृ0 470, 47
मोहनजोदाड़ो से लकड़ी की राख प्राप्त हुई है–मांके फरदर एक्सकवेशन्स पृ० १०२
वतेलौं–मेमुरा डेलिगासियन एपर्स टॉम 20, प्लांश
मांके–फील्ड अन्ध्रापालोजी लीफलेट नं० ११, फील्ड म्युजियम शिकागो, प्लेट १२
हरिसन–पाट्स एण्ड पंस, पृ0 22
मांके फरदर एक्कवेशन्स, पृ० १७७
मांके–उपर्युक्त पृ० १०८
मांके–उपर्युक्त पृ० १७६
मांके उपर्युक्त पृ० १७६
मांके–उपर्युक्त पृ०.२१२
ईवान्स–पैलेस आफ माइनौस, खं० ३, १०४२३, ४५४
बत्स–एक्सकवेशन्स एट इड़प्पा–खण्ड २, प्लेट–१०२, फिगर–११, २२, २७
बत्स–एक्सकवेशन्स एट हड़प्पा, नं० ३, २६, १८
मांके करदर एक्सकवेशन्स एट मोहनजोदड़ो, नं० २१, २४
मांके–उपर्युक्त–पृष्ठ २१७
श्मांके–फरदार एक्सकेवेंस एट मोहनजोदड़ो, नं0 28 नं0 12 (केला), नं0 25 (नीम)
मांके–फरदर० एक्सकवेशन्स एट मोहनजोदड़ो पृ० २२१
पिम्गट– प्रिहिस्टारिक इण्डिया–पृ० २१५
सय्यद हसनत अहमद – ए प्री हड़प्पन सिविलीनेशन दो लीडर, १२ मई १९५७
बत्स– एक्सकवेशन्स एट हड़प्पा–पृ० २८३, नं० १५, १७
पिग्गट – प्रिहिस्टारिक इण्डिया पृ० २२७
पिग्गट–दि बानोलोजी आफ प्रिहिस्टारिक नार्थवेस्ट इण्डिया, एनशण्ट इण्डिया नं० १, पृ० १२, फिगर २, भंगर कलचर अन्युअल रिपोर्ट आर्केआलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया १९३५–३६ ५० ३९
अन्युअल रिपोर्ट आफ अर्कैआलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया १९३५–३६, पृ० ३९, ४०
मजुमदार– मेमायर्स–४८ चित्र ३५ नं० १३
पिग्गट–दी कानोलोजी आफ प्रि–हिस्टारिक नार्थवेस्ट इण्डिया–एनशण्ट इण्डिया नं० १, (१९४६) १० १४, फिगर – ३

10

छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की काव्य मान्यताएँ एवं विवेचनात्मक दृष्टि

राज श्री

सारांश

प्रसाद, निराला, पंत तथा महादेवी वर्मा छायावादी स्तंभ के धरोहर हैं। महादेवी वर्मा छायावाद के आंतरिक तत्व के अतिरिक्त कला पक्ष का भी विवेचन किया है। छायावाद को पूर्ववर्ती काव्य योग्य की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया स्वरुप उद्‌भभूत माना है। महादेवी वर्मा का मानना है कि छायावाद के जन्म का मूल कारण भी इसी स्वभाव में छिपा हुआ है। (बंधनों से ऊपर उठाना) छायावाद जन्म से पहले कविता के बंधन सीमा तक पहुंच चुके थे और दृष्टि के बाह्याकार पर इतना अधिक लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अपनी अभिव्यक्ति के लिए रो उठा। श्स्वच्छंद छंद में चित्रित उन अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था और मुझे तो आज भी उपयुक्त ही लगता है। –1

'स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि अनुभूतियों की अभिव्यंजना छायावाद की अपनी विशेषता है। जयशंकर प्रसाद ने तो अनुभूति – व्यंजन को ही छायावाद का प्रमुख तत्व माना है। तथा महादेवी वर्मा के अनुसार श्इस व्यक्ति प्रधान युग में व्यक्तिगत सुख – दुख अपनी अभिव्यक्ति के लिए आकुल थे। अतः छाया युग का काव्य स्वानुभूति– प्रधान होने के कारण व्यक्तिक उल्लास – विषाद की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बन सका।–2

'जयशंकर प्रसाद तथा महादेवी वर्मा की दृष्टि में छायावादः प्रसाद की दृष्टि में छायावाद रीतिकाल की श्रृंगारिकता और द्विवेदी युग की स्थूलता के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप विकसित नहीं हुआ, अपितु यह वैदिक युग से अब तक निरंतर प्रवहमान विकसित होता रहा है। वेदों और उपनिषदों की ऋचाओं तथा हिंदी के सगुण भक्ति काव्य में स्वानुभूति की व्याप्ति का उल्लेख करके उन्होंने इस मत की पुष्टि की है। छायावाद की इस विशेषता के उपरांत उन्होंने उसमें प्रकृति चेतना पर बल दिया है। छायावादी कवि को यह संदेश दिया कि वह प्रकृति और भावनाओं से संबंध स्थापित करने के लिए उनकी विभिन्नताओं में भी सामंजस्य लाने का प्रयास कर सके। जयशंकर प्रसाद के अनुसार– छायावाद प्रकृति, घट, कुप आदि से भरे जल की एकरूपता समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई। अतः मनुष्य के अश्रु मेघ के जल–कण और पृथ्वी के ओस–कण का एक ही कारण एक ही मूल है।–3

महादेवी के अनुसार– मानव और प्रकृति की इस पारस्परिकता को सर्ववाद कहा है, और छायावादी काव्य में इसे सुक्ष्म आधार प्रस्तुत करने पर बल दिया है। उनका मानना है कि छायावादी कवियों ने कल्पना और सहृदयता से प्रेरित होकर प्रकृति के व्यक्त रूप को अतिरिक्त सौंदर्य और विशिष्ट भावनात्मक रूप प्रदान किया है। उनके शब्दों में –श्छायावाद का कवि न प्रकृति के किसी रूप को लघु या निरपेक्ष मानता है, न अपने जीवन को क्योंकि वे दोनों ही विराट रूप – समष्टि में स्थिति रखते हैं और व्यापक जीवन से स्पंदन पाते हैं। जीवन के रूप– दर्शन के लिए प्रकृति अपना अक्षय सौंदर्य– कोष खोल देती है और प्रकृति के प्राण – परिचय के लिए जीवन अपना रंगमय भावकाश दे डालता है।–4

'छायावाद का विस्तार में महादेवी वर्मा का योगदानः

छायावाद का विस्तार करने वाले कवियों में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। काव्य रचना के साथ–साथ काव्य चिंतन में भी इन्होंने एक जैसा उत्साह से भाग लिया। महादेवी वर्मा ने काव्य स्वरूप, काव्य प्रयोजन, काव्य तत्व, काव्य भेद, काव्य वर्ण, छायावाद और रहस्यवाद का स्वतंत्र तथा गंभीर विवेचन किया है। लेकिन काव्य शिल्प की स्वतंत्रत विवेचना ना कर छायावाद के प्रकरण में विचार किया है। जयशंकर प्रसाद की भांति इनकी मान्यताएँ भी गद्य में उपलब्ध है।

'काव्य स्वरूप

महादेवी वर्मा ने काव्य स्वरूप का स्वतंत्र निर्धारण नहीं किया है लेकिन कवि– क्रम की व्याख्या के संदर्भ में काव्य स्वरूप का भी निर्देश कर दिया है। इन्होंने कवि के हृदय और बुद्धि के धरातल पर समान रूप से संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहां है– भावना, ज्ञान और कर्म जब तक सम पर मिलते हैं तभी युग प्रवर्तक साहित्यकार प्राप्त होता है।–5

महादेवी वर्मा ने चिंतन से पुष्ट अनुभूति को ही वाणी देने में ही कवि की सफलता माना है। कविता सबसे बड़ा परिग्रह है, क्योंकि यह विश्व मात्रा के प्रति स्नेह की स्वीकृति है। वह जीवन के अनेक कष्टों को उपेक्षा– योग्य बना देती है, क्योंकि उसका सृजन स्वयं महती वेदना है। वह शुष्क सत्य को आनंद में स्पंदित कर देती है, क्योंकि अनुभूति स्वयं मधुर है। – 6

'काव्य अनुभूति

काव्यगत अनुभूति के संबंध में महादेवी वर्मा का दृष्टि आदर्शवादी रहा है, किंतु उसमें अतिरंजना नहीं है। मानव मात्रा के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति काव्य का शाश्वत गुण है। और सहृदय को आनंद प्रदान करने वाले भावों का संवेदन उसकी सहज गरिमा है। इसमें कोई संदेह नहीं की लोक – संस्कार कविता की वास्तविक उपलब्धि है। महादेवी वर्मा ने इस उद्देश्य के सिद्धि के लिए रचनाकार को स्वःसंवेदन की ईमानदार प्रस्तुति का संदेश दिया है। अपने रेखा चित्रों में इसका संकेत करते हुए कहती है– श्इस स्मृति – चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है, यह स्वाभाविक भी था। मेरे जीवन के परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय दे पाते हैं, वह बाहर रूपांतरित हो जाएगा। फिर जिस परिचय के लिए कहानीकार अपने कल्पित पात्रों को वास्तविकता से सजाकर निकट लाता है और उसी परिचय के लिए

मैं अपने पथ के साथियों को कल्पना का परिधान पहनाकर दूरी की सृष्टि क्यों करती। परंतु मेरा निकटताजनित आत्मविज्ञापन उस राख से अधिक महत्व नहीं रखता, जो आग को बहुत अधिक समय तक जीवित रखने के लिए ही अंगारों को घेरे रहती है। जो इसके पर नहीं देख सकता, वह इन चित्रों के हृदय तक नहीं पहुंच सकता।–7

वह अनुभूति को कल्पना से अधिक महत्वपूर्ण मानती है। क्योंकि आत्माभिव्यक्ति के लिए अनुभूति तो प्राण तंतु के समान है।

'काव्य हेतु

महादेवी वर्मा ने प्रतिभा और व्युत्पत्ति को काव्य का प्रमुख प्रेरक तत्व माना है। और अभ्यास मात्र से कवित्व कला की सिद्धि का निषेध किया है। प्रतिभा के संबंध में उनकी मान्यता है कि –श्साहित्य सृजन केवल रुचि, इच्छा या व्यवस्था का परिणाम नहीं है क्योंकि इसके लिए एक विशेष प्रतिभा और उसे संभव करने वाले मानसिक गठन की आवश्यकता होती है।–8 यह मानसिक गठन जन्मजात न होकर संस्कार प्रेरित और ईश्वर– प्रदत्त होता है। प्रतिभा के गौरव को अक्षुण्ण रखते हुए इन्होंने व्युत्पत्ति और लोकदर्शन को भी काव्य का अनिवार्य तत्व माना है। कविता हृदय की वस्तु है और उसके लिए अनुभूति की प्रेरणा अनिवार्य है।

'काव्य प्रयोजन

काव्य के प्रयोजन पर महादेवी ने कवि और भावक दोनों दृष्टि से विचार किया है। काव्य से कवि को स्वान्तः सुख और यश मिलता है और प्रमाता को लोक जीवन को समझाने का अवसर प्राप्त होता है। स्वान्तःसुख को इन्होंने नवीन व्याख्या की है। उनकी दृष्टि में आत्म परिष्कार का पर्याय है और इससे कवि का भाव– संवेदन, सौन्दर्य बोध और जीवन दर्शन की विभूतियां प्राप्त होती है। महादेवी वर्मा के शब्दों में– श्अपने सृजन से साहित्यकार स्वयं भी बनता है, क्योंकि उसमें नए संवेदन जन्म लेते हैं, नए जीवन दर्शन की उपलब्धि होती है।– 9 प्रयोजन है सामाजिक – चेतना जागृत करना, मानव हृदय में समाज के प्रति विश्वास उत्पन्न करना, कवि और काव्य का प्रधान लक्ष्य है। इस संबंध में उनकी मान्यता है कि –श्साहित्य का उद्देश्य समाज के अनुशासन के अंदर स्वच्छंद मानव स्वभाव में उसकी मुक्ति को अक्षुण्ण रखते हुए समाज के लिए अनुकूलता उत्पन्न करना है।–10

'काव्य तत्व

कल्पना और चिंतन के महत्व को स्वीकार करते हुए महादेवी वर्मा ने अनुभूति को काव्य का तत्व माना है। इन्होंने काव्य को जीवन से संबंधित मानते हुए उसमें अंतर्जगत और बहिर्जगत के सामंजस्य पूर्ण चित्रण पर बल दिया है। इनके शब्दों में हमारी मानसिक वृतियों की ऐसी सामंजस्य पूर्ण एकता साहित्य के अतिरिक्त और कहीं संभव नहीं। इसके लिए न हमारा अंतर्जगत त्याज्य है और न बाह्य क्योंकि इसका विषय संपूर्ण जीवन है, आंशिक नहीं।–11

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि कविता में अनुभूत विषयों की प्रस्तुति को महत्व देना चाहिए। इस युग का कभी हृदयवादी हो या बुद्धिवादी, स्वप्नद्रष्टा हो या यथार्थ का चित्रकार, अध्यात्म से बंधा हो या भौतिकता का अनुगत उसके निकट यही एक मार्ग शेष है कि वह अध्ययन में मिली जीवन की चित्रशाला से बाहर आकर जड़ सिद्धांतों का पाथेय छोड़कर अपनी संपूर्ण संवेदन शक्ति के साथ जीवन में घुल– मिल जाए। –12 महादेवी वर्मा ने कवि को बौद्धिक तर्क की अपेक्षा जीवन के प्रति अखंड विश्वास रखने का संदेश दिया है। उनकी दृष्टि में – काव्य बुद्धि, पृष्ठ हृदय से अनुशासित रहकर ही सक्रियता पाती है, इसी से उसका दर्शन न बौद्धिक तर्क प्रणाली है और न सुक्ष्म बिंदु तक पहुँचाने वाली विशेष विचार पद्धति। वह तो जीवन को चेतना और अनुभूति के समस्त वैभव के साथ स्वीकार करती है अतः कवि का दर्शन जीवन के प्रति उसकी आस्था का दूसरा नाम है।– 13 'काव्य भेद

महादेवी ने गीति काव्य के स्वरूप की विशद विवेचना की है। गीतिकाव्य के संबंध में उनकी मान्यताएँ अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक विषाद है। विविध प्रसंगों में गीतिकाव्य के संबंध में व्यक्त उनके विचार उल्लेखनीय है। श्यामाश की भूमिका में वह कहती हैं– "सुख–दुख की भावावेशमयी अवस्था–विशेष की गिनी– चुने शब्दों में स्वर–साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही जीत है।" –14 इसी के आगे वह कहती हैं– "गीत का चिरंतन विषय रागात्मकता वृत्ति से संबंध रखने वाली सुख –दुखात्मक अनुभूति ही रहेगी। पर अनुभूति मात्र जीवन नहीं क्योंकि गेयता तो अभिव्यक्ति सापेक्ष है। साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख–दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द रूप है, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गए हो सके। पुनः आगे वह कहती हैं – गेयता में ज्ञान का क्या स्थान है यह भी प्रश्न है। बुद्धि के तर्क क्रम में जिस ज्ञान की उपलब्धि हो सकती है उसका भार गीत नहीं संभाल सकता। पर तर्क से परे इंद्रियों की सहायता के बिना भी हमारी आत्मा अनायास ही जिस सत्य का ज्ञान प्राप्त कर लेती है, उसकी अभिव्यक्ति में गेय स्वर के सामंजस्य का विशेष महत्व रहा है। महादेवी ने काव्यगीत की प्रवृत्तियों को लोकगीत से अभिन्न माना है।– श्यदि हम भाषा, भाव, छंद आदि की दृष्टि से लोकगीत और काव्यगीतों की सहृदयता के साथ परीक्षा करें, तो दोनों के मूल में एक सी प्रवृत्तियाँ मिलेगी।–15

'निष्कर्ष

महादेवी के काव्य चिंतन में पर्याप्त जागरूकता रही है। काव्य स्वरूप, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य तत्व और काव्य वर्ण के विषय में तो उनकी धारणाएँ लगभग परंपरागत ही है, किंतु काव्य भेद, छायावाद और रहस्यवाद के विवेचन में मौलिक विवेक का सहारणीय परिचय दिया गया है । छायावाद की स्वरूप– मीमांसा से संबंध प्रकरण इसी कोटि का है। इन्होंने छायावाद की विविध प्रवृत्तियों की नवीन दृष्टि से व्याख्या की है, और इसके प्रति तत्कालीन विरोधी प्रतिक्रियाओं को सशक्त उत्तर दिया है। पलायनवाद को काव्य का दोष न मानना ऐसी ही तर्कपूर्ण स्थापना है। काव्य में आध्यात्मिक मूल्यों की समष्टि के सिद्धांतों को भी पूर्ण

रूप से प्रस्तुत किया गया है वास्तव में इन प्रवृत्तियों के संबंध में उनकी धारणाएँ छायावाद के अन्य कवियों से अधिक समृद्ध है इसलिए छायावाद के सिद्धांत पक्ष को स्पष्ट करने में उनके योगदान का ऐतिहासिक महत्व है। अतः यह विचार कर लेना अप्रासंगिकता नहीं होगा कि काव्य के विषय में उनकी संपूर्ण विचारधारा पर छायावाद का प्रभाव किस सीमा तक है काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन के रोड निरूपण को छोड़ दे तो उन सभी का सिद्धांतों के प्रतिपादन में इन्होंने छायावाद की विशेषताओं से लाभ उठाया है

'संदर्भ–सूची

1. वर्मा महादेवी, रश्मि, अपनी बात, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –4
2. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य पृष्ठ संख्या– 84
3. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृष्ठ संख्या– 84
4. महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, पृष्ठ संख्या– 87
5. वर्मा महादेवी, पथ के साथी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –25
6. वर्मा महादेवी, पथ के साथी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –85–86
7. वर्मा महादेवी, अतीत के चलचित्र, अपनी बात, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –2
8. वर्मा महादेवी, क्षणदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –12
9. वर्मा महादेवी, क्षणदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 118
10. वर्मा महादेवी, क्षणदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या –122
11. आधुनिक कवि, भाग–1, पृष्ठ संख्या– 10
12. आधुनिक कवि, भाग–1, पृष्ठ संख्या– 11
13. वर्मा महादेवी, दीपशिखा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –17
14. अपनी बात, पृष्ठ संख्या –7
15. महादेवी का विवेचनात्मक, पृष्ठ संख्या –172

राज श्री

(हिंदी शोधार्थी) पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय,

पटना (बिहार)

रोल नंबर–2192080217

रजिस्ट्रेशन नंबर–202110600048

मोबाइल नंबर– 7324 944613

11

'द्रोपदी (याज्ञसेनी) : आधुनिक स्त्री चेतना'

डॉ० उमेश कुमार सिंह

सारांश

द्रोपदी का चरित्र सर्वविदित है। सम्पूर्ण विश्व में द्रोपदी का चरित्र अनौखा एवं मेरी दृष्टि में अनुपम कहना अनुचित नहीं होगा। यह एक मिथकीय चरित्र है। द्रोपदी को क्रष्णेयी (शांवली) महाभारती (विदुषी) सैरंध्री (अग्नसुता) पांचाली (पांचाल नरेश की पुत्री) एवं अग्निसुता (अग्नि से पैदा हुई एवं द्रुपद सुता) आदि नामों से भी जाना जाता है इतना ही नहीं द्रोपदी उन पाँच कन्याओं में से एक थी (पाँच कन्याएँ– द्रोपदी एवं कुंती (महाभारत से), अहिल्या, तारा एवं मंदोदरी (रामायण से) से हैं। आज आधुनिक युग की रचनाकर इस मिथकीय चरित्र पर फिर से लिख रही हैं इस उपन्यास में यह देखना आवश्यक हो जाता है कि इसकी आवश्यकता क्या है ? किसी भी रचनाकर का मिथक पर पुनर्कथन करना उसका उद्देश्य कदापि नहीं होता है बल्कि वह उसके माध्यम से युग सापेक्ष की चेतना को अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। जब रचनाकार द्रोपदी को केंद्र में रखकर रचना उसका उपक्रम करता है। मिथकीय चरित्रों को लिखते समय एवं संवाद करते समय ध्यान दिया जाता है कि परम्परा से घोषित मिथक अपने परिचित रूप में सुरक्षित रखते हुए और लेखक के मनोवांछित तत्व को संप्रेषित भी करें। इसलिए इतिहास अथवा पुराण के साक्ष्य पर स्रजनशील कल्पना के द्वारा लेखक को अपनी बात प्रस्तुत करनी होती है।आज के संदर्भ में द्रोपदी नारी शक्ति का प्रतीक के रूप में है। इस प्रक्रिया में ऐतिहासिक अथवा पोराणिक यथार्थ के साथ कल्पना का सानुपातिक संतुलन बनाए रखना पड़ता है। इस आधार पर इस कृति का विवेचन और मूल्यांकन करने का प्रयास करना हमारा अभीष्ट है।

प्रमुख शब्द रू याज्ञसेनी– द्रोपदी, कृष्णा– द्रोपदी (आयोनेय) श्यामांगी अर्थात श्याम वर्णवाली रूपवती, अतिसुंदर, मिथक – डलजी, स्थावर–जंगम संपत्ति– Immovable & Movable Property, औरस– (वैध, धर्मज) Legitimate of Birth] पूर्वजन्म & Past Life] धर्माचरण & Religious Conduct] vUreZu – Conscience] अस्तित्व –पेजमदबम, विरोधाभाष & Contradiction

शोध प्रविधिः इस शोध पत्र में समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

याज्ञसेनी / द्रोपदी का चरित्र आयोनेय है इसका जन्म यज्ञ कुंड की अग्नि से होता है। इस शोध पत्र में प्रथमतः (द्रोपदी का इतिहास क्या है, देखना आवश्यक हो जाता है– द्रोपदी के जन्म के संबंध में ऐतिहासिक तथ्यों को खंगालने पर दो कथाएँ मिलती हैं। एक – व्यासजी द्रोपदी के पूर्वजन्म की कथा कहते है। (संक्षिप्त महाभारत पृष्ठ 92) एक बड़े महात्मा ऋषि की सुंदरी और गुणवंती कन्या थी परंतु रूपवती, गुणवती और सदाचारिणी होने पर भी पूर्वजन्मों के कर्मों के फलस्वरूप किसी ने उसे पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किया। इससे दुखी होकर वह तपस्या करने लगी। उसकी उग्र तपस्या से भगवान संतुष्ट हुए। उन्होने उसके सामने प्रकट होकर कहा, तू मुंह मांगा वर मांग ले। उस कन्या को भगवान शंकर के दर्शन और वर मांगने के लिए कहने से इतना हर्ष हुआ कि वह बार – बार कहने लगी– मैं सर्वगुणयुक्त पति चाहती हूँ। शंकर भगवान ने कहा कि तुझे पाँच भरतवंशी पति प्राप्त होंगे। कन्या बोली मैं तो आपकी कृपा से एक ही पति चाहती हूँ। भगवान शंकर ने कहा तूने पति प्राप्त करने के लिए मुझसे पांच बार प्रार्थना की है। मेरी बात अन्यथा नहीं हो सकती। दूसरे जन्म में पाँच ही पति प्राप्त होंगे। पांडवो! वही देवरूपिणी कन्या द्रुपद की यज्ञवेदी से प्रकट हुई है।1 दूसरा संदर्भ स्वयं 'याज्ञसेनी' उपन्यास में उडिया की प्रतिष्ठित उपन्यासकार प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में (याज्ञसेनी) एवं श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा इसका 'द्रोपदी' के नाम से रूपांतर/ अनुवादित में किया गया है। याज्ञसेनी में राजा द्रुपद आचार्य द्रोणाचार्य से प्रतिशोध लेने के लिए पुत्र कामेष्ठि यज्ञ करवाते हैं। द्रोपदी का जन्म इस द्रोणान्तक पुत्र पाने के लिए राजा द्रुपद ने कश्यप ऋषि के वंशज उपयाज़ को संतुष्ट किया। पुत्र प्राप्ति के लिए उपयाज़ एवं याजऋषि से यज्ञ करवाया। यज्ञ की अग्नि से तेजोवन्त पुत्र भाई धृष्टद्युम्न और यज्ञवेदी के दो भागों से नील पद्मकांति मणि–सी मैं जन्मी–याज्ञसेनी अर्थात यज्ञ से धृष्टद्युम्न एवं द्रोपदी का जन्म होता है।2 पृष्ठ 92

1 आज के रूप में स्त्री के प्रति परिवर्तित दृष्टि।

2 द्रोपदी के माध्यम से स्त्री शक्ति कि पहचान।

3 स्त्री के प्रति समाज की दृष्टि तब और अब ।

इसमें लेखक के लिए ग्राहिय क्या है? महाभारत में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जब द्रोपदी को दुख और अपमान की यातना मिलती है दुःशासन का भरी सभा में उसके केश पकड़कर घसीटना, उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास करना, सभा पर्व में जयद्रथ द्वारा द्रोपदी का हरण करना एवं पांडवों द्वारा उसकी रक्षा करना 3, (महाभारत 365) और विरत पर्व में कीचक वध द्वारा द्रोपदी का अपमान 4 (महाभारत 415) उसका अपहरण करना आदि प्रसंग ऐसे हैं जिनसे व्यथित होकर भी द्रुपद की बेटी पांडवों की धर्मपत्नी धृष्टधुम्न वीर की बहन और कृष्ण की सखी सब होने के बावजूद सदैव वह अपने संघर्ष में नितांत अकेली पाती है

द्वापर की स्त्री वहाँ उस सभा में विरोध नहीं करती है विरोध किया भी होगा किन्तु प्रतिभा राय की द्रोपदी की तरह से नहीं। आज इस रूप में इसलिए वह प्रश्न करती है। इसमें स्त्री चेतना का प्रश्न वहाँ उपस्थित लोगों से भीष्मपितामह, कर्ण एवं उस राजसभा में उपस्थित विद्वत जनों से है। यहा उसके अस्तित्व के संबंध में विरोधाभाष है। दृ आज के युग में स्त्री वैज्ञानिक, प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री, मंत्री होने के

साथ– साथ सभी पदों को सुशोभित कर सकती है। आज युग बदला है। प्रत्येक परिवर्तित युग की युग चेतना होती है पुरातन स्त्री से अलग कहाँ हैं प्रतिभा राय द्रोपदी के माध्यम से आज के युग में स्त्री को संबोधित करना उनका अभीष्ट उद्देश्य प्रतीत होता है।

इस पृथ्वी पर जीवित मानव मात्र में अपने प्रति सम्मान पाने का भाव होता ही है। स्त्री सब कुछ सहन कर सकती है किन्तु अपमान को सहन करना उसकी प्रकृति में नहीं है। एक औरत ने दूसरी औरत अपनी सास कुंती का मान रखते हुये पाँच पतियों को स्वीकार किया था इसलिए उस समय द्रोपदी को पांडव कुल की राजरानी और कुलवधू होने का गौरव प्राप्त था। द्रोपदी इतनी ज्ञानी एवं मस्तिष्क की इतनी तेज थी कि उसके सामने उसके दौर का कोई भी मर्द सामना नहीं कर पाता था। उसने उस युग में अपना अपमान सहन कर लिया था, और पतियों की बेबसी के कारण चुप रही थी, भले ही उसके पाँच पतियों ने उसका बदला लेने के लिए महाभारत का प्रथम विश्वयुद्ध किया था किन्तु आज की स्त्री पांडवों के उस सदियों पूर्व स्त्री पर किए गए अपराध से कलंकित महसूस करती है।

लेखिका पतिभा राय ने 'द्रोपदी' उपन्यास के पांडवों की कथा के अंतिम भाग से प्रारम्भ किया है। लेखिका को हृदय के अन्तर्मन में द्रोपदी के साथ हुए अन्याय का प्रश्न चुभा अवश्य होगा एवं उसके दर्द को व्यथा को को मन में गहराई में महसूस किया होगा। उसी की परिणति के रूप में द्रोपदी उपन्यास है। यह घटना महाभारत युद्ध के बाद की है जब पांडवों ने 36 वर्ष तक राज करके पांडव द्रोपदी के साथ स्वर्ग जाने के लिए हिमालय जाते हैं। तब अचानक द्रोपदी के पैर मेरु गिरि से खिसक जाते हैं उदाहरण दृ "हिमालय मेरु गिरि की स्वर्णरेणु पैरों से खिसक रही है। पाँवों में और कुछ अनुभव नहीं होता। जिनका पीछा करते सारी उम्र इन कोमल पाँवों से रक्त झराया, व्यथा भोगी, वे सब लोग पता नहीं, कौन किधर चले गए हैं। एक बार भी आह ! कह मुड़कर नहीं देखा। उस आह! भर कह देने से उनके स्वर्ग पाने में कौन दृसी बड़ी बाधा खड़ी हो जाती ? किसने चाहा था स्वर्ग, किसने चाहा था राज ? और किसने चाहा था युद्ध" ? सब कारणों के कारणस्वरूप होते हुये भी सारा दोष मेरे माथे डालकर वे चले गए– मृत्यु दृद्वार पर मुझे यों छोड़कर 5 " (महाभारत 415) द्रोपदी घायल अवस्था में बिना पानी के मछली की तरह तड़फती रहती है किन्तु उसके पाँच पतियों में से एक पति भी उसकी ओर मुड़कर नहीं देख पाने का दर्द सहती हुई अंतिम सांस लेने को मजबूर होती है।

यहां पर द्रोपदी के दर्द एवं वेदना पर विचार करना आवश्यक हो जाता है जैसे – द्रोपदी ने स्वयंवर में केवल अर्जुन को वर चुना था किन्तु उसे पांचों पांडवों को अपना पति स्वीकार करना पड़ा। महाभारतकाल में भी बहुपति विवाह का प्रचलन नहीं था किन्तु कुंती के आदेश के कारण उसे वरन करना पड़ा। वह पूर्व की स्मृति को स्मरण करते हुये एवं भावुक होते हुये कहती है कि– "धर्म की रक्षा के लिए जीवनभर कितनी यातनाएँ नहीं सहीं। सोचा था पतिवृत के कारण और अपने धर्माचरण के बल पर पति संग स्वर्ग जा सकूँगी। पर गिरिराज हिमालय के पाद दृदेश की स्वर्णरेणु छूते–छूते ही पांव फिसल गए, मैं गिर पड़ी। पांचों पतियों ने मुड़कर भी नहीं देखा। वरन धर्मराज युधिष्ठर ने भीम से कहा– मुड़कर न देखो। आगे आ जाओ।6" पृष्ठ–1 इस तथ्य से हमें पाश्चत्य देशों की मशीनी संस्कृति का आभास मिलता है।

आज की द्रोपदी आने वाले देश की पीढ़ियों को याद कर चिंतित होती है तथा द्रोपदी आज की परिस्थित में स्वयं को भी नहीं छोड़ती है, वह आने वाली पीढ़ियों के समाज के लिए भी बहुत चिंतित है। आज की परिस्थिति में अपने ऊपर भी प्रश्न करती है, वह कहती है – "उसे देख कर कलयुग के नर–नारी विद्रूप कर हँसेंगे। कहेंगे – बहुपति वरन कर वे कलयुग में सती हो सकी, तो फिर एक पतिव्रत पालन की क्या आवश्यकता ? बहुपति वरन कर वे कलियुग में सती क्यों नहीं होंगी। यौनविकारग्रस्त कलयुग के ऊच्छृंखल नर–नारियों के बीच द्रोपदी होगी व्यंग परिहास का उपदान। पाँच पतियों की पत्नी द्रोपदी को सतीत्व के लिए तिल–तिल जलना पड़ा होगा, इसे ये लोग भला क्या समझेंगे? 7" पृष्ठ–8 अग्नि की तप्त ज्वालाओं में प्रवेश किए बिना नारी की वेदना को समझना आसान काम नहीं है।

द्रोपदी अपने अनुभव के ज्ञान की अग्नि के ताप से सेके गए शब्द वाणों के प्रहार एवं ज्ञान से महाभारत के सभी प्रमुख पात्र लाचार और निरुत्तर अवश्य दृष्टिगोचर होते हैं। जब भी वह प्रश्न करती है। तब सम्पूर्ण राजसभा निरुत्तर सी हो जाती है। इन प्रसंगों में स्वयं जुए में हारने का प्रश्न हो, । भीष्म, द्रोणाचार्य, और कर्ण जैसों की बोलती बंद कर देती है द्रोपदी राजसभा के सभी गलत फैसलों पर से चिंतित होते हुये निडरता से उंगली उठती है। इस अवसर पर युधिष्ठर चुप्पी साध लेते हैं। कमजोर और अबला स्त्री के प्रति अन्याय होते अन्याय पर तमाशबीन रहने वाली नीति निर्माताओं का यह तटस्थ और ढुलमुल व्यवहार उचित नहीं है। सम्पूर्ण महाभारत में आधुनिक द्रोपदी प्रश्न करती है। वह पुरुषवादी व्यवस्था को चुनौती देती है। जब उसके पति जुए में हार जाते हैं वह बहुत तिलमिलाती है और कहती है ? जाओ प्रातकामी ! "मेरे पति से पूंछ आओ। पहले स्वयं दाव पर हारे या मुझे ? यह उत्तर न पाने तक मैं अपने स्थान से न हटूँगी। 8" पृष्ठ–8 द्रोपदी की इस हृदय की पुकार से विद्रोह की गंध आती हुई प्रतीत होती है। द्रोपदी इसके बाद फिर से कहती है – "जाओ प्रातकामी मेरे श्वसुर एवं गुरुजनों से पूंछों– उनका मत क्या है ? उनका आदेश शिरोधार्य होगा मुझे। सुन लो, दुर्योधन मेरे प्रभु नहीं हैं। उनके आदेश पर मैं सभाग्रह में उपस्थित नहीं हो सकती। मेरे पतियों ने इसके लिए अनुमति दी है ? 9" वह आज अपनी बात पर अडिग है एवं बार–बार प्रश्न करती हुई दिखलाई पड़ती है।

इस समय अंतराल में वह स्वयं से भी प्रश्न कहती है "मैं स्तब्ध जड़ बनी खड़ी रही। सोच रही थी दृ युधिष्ठर की यह कैसी रीति है ? अपनी पत्नी को दाव पर रखकर भी कोई पाखंडी बार्बर

जूआ खेलता है ? ऐसा निंदनीय कार्य कभी किसी ने धरती पर किया है ?" 8 आज की नारी भी इतने कड़े स्वर में अपने पति से बात करने में हिचकेगी। वह "दुख और क्रोध में भरी सोच रही थी कि नारी क्या पुरुष की स्थावर–जंगम संपत्ति है ? मैं क्या युधिष्ठर की स्थावर–जंगम संपत्ति, दास–दासी, हाथी–घोड़ों में से हूँ। मैं नारी हूँ तो क्या मेरी अपनी आत्मा पर भी मेरा कोई अधिकार नहीं ? मेरी इस देह पर उनका अधिकार है तो क्या साथ जैसी मर्जी वैसा व्यवहार कर सकते हैं ?" 9 पृष्ठ–157 जब नारी तड़फती है, अकेलापन महसूस करती है, उस स्थिति में वे इस प्रकार सोचने को बाध्य होती है। वह स्त्रियों को संबोधित करते हुए कहती है– "सहिष्णुता नारी का आभूषण है। पर अन्याय को सिर झुकाकर सह जाना नारी धर्म नहीं। पति अन्याय मार्ग पर चले, पत्नी चुप रहकर सह ले, तो सबकी क्षति होगी। पृथ्वी पर पाप भार बढ़ेगा। उस पाप का फल निष्पाप मानवों को भोगना पड़ेगा।" 10 पृष्ठ–157 यह सब जहर की तरह तीक्ष्ण एवं तुरंत असर करने वाले दर्द भरे वाक्य आज की नारी कर रही है क्योंकि आज उसने स्वयं शक्ति अर्थात अपने आप ग्रहण की है।

धर्मराज सब कुछ ध्रुतक्रीडा में हार जाते हैं उसके पश्चात चीरहरण होता है वह कहती है ।दृ "नारी शृष्टि करती है, कल्याणी है, पापात्मा, दुरात्मा की संहारिणी भी होती है। नारी को दुर्बल समझ जिस दुशासन ने केश खींचे... अपमानित किया, उसी के रक्त से केश धोकर कबरी बाधूँगी, तब जग जानेगा कि नारी हृदय कोमल जरूर है, दुर्बल नहीं।"11 पृष्ठ–157 इस प्रकार हमें प्रतिभा राय के उपन्यास में आज नारी शक्ति एवं शशक्तिकारण में नारी मजबूत दृष्टिगोचर होती है इस तथ्य की खोज में बढ़ते हुये हमें महाभारत में भीम की प्रतिज्ञा अवश्य मिलती है किन्तु द्रोपदी की प्रतिज्ञा नहीं मिली है। इसे मिथक का विकास कह सकते हैं।

लोक व्यवहार के आलोक में माना जाता है कि जब किसी मानव का अंत समय बहुत समीप होता है। वह विरक्त भाव की सी बातें करने लगता है उसी प्रकार द्रोपदी का अंत समय बहुत पास होता है उस समय वे कहती हैं– वायु पुष्प से गंध ग्रहण कर लेती है। पता नहीं किसकी गंध पाकर जीवन यह देह छोड़ जाता है, कहाँ जाता है और कहाँ से आता है? 12 पृष्ठ–157–158 वह श्रीकृष्ण को अपने रक्त से प्रष्थर पर पाती लिखती है। पांवो–तले से प्राण निकलते जा रहे हैं। जो साथ–साथ थे, वे स्वर्ग पथ में आगे बढ़ गए है। महाशून्य में सब कुछ सूना–सूना सा लग रहा है। फिर भी जीवन भर का संचित मान–गुमान आज मृत्यु पथ में मोम की तरह पिघलकर झर रहा है– प्रश्न पर प्रश्न हृदय–तट से टकरा रहे हैं। फिर भी अंतिम बात कही नहीं जा सकी । चिट्ठी की इतिश्री हो चुकी है। मृत्यु पथ में पल–पल आगे सरकती जा रही हूँ।13 पृष्ठ–168

निष्कर्षरू– अंत में इस शोध पत्र में अंतिम तथ्य के रूप में कहा जा सकता है कि उस युग में पांच पतियों की पतिवृता स्त्री द्रोपदीका चरित्र अनौखा प्रतिबिम्बित होता है। प्रतिभा राय ने उपन्यास द्रोपदी में एक अवला स्त्री को सवला रूप देने का प्रयास करती नजर आती हैं। द्रोपदी इस बात को लेकर सदैव बहुत चिंतित और परेशान रहती है कि किसी भी घटना को लेकर उसे ही दोषी ठहराया जाता है। वह सोचती है अगर वह अतिरूपवती और अतिसुन्दरी है तब इसमें उसका क्या दोष है। वह एक सभ्य नारी है क्योंकि वह अपनी गलतियों को स्वीकार कर लेती है एवं उनमें सुधार करती दृष्टिगोचर होती है। द्रोपदी युद्ध के बाद वह पूर्ण शांति की पक्षधर नजर आती है। वह श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती है कि भविष्य में कभी भी शांति भंग न हो। तथा वह ओम शांति, ओम शांति, ओम शांति का जाप करती है। वास्तव में महाभारत की द्रोपदी स्त्री के सामाजिक स्थान पर चिन्तन और चेतना को प्रस्तुत करती है। जहां उसे प्रेम, त्याग, संवेदनाओं एवं बलिदान के बदले उसे कभी न भुला पाने वाला निर्वसना होने का अपमान मिलता है।

'मिथकों में परिवर्तन होता है और मिथक अपने नए रूप में भी आते हैं। इसमें यह नहीं मानना चाहिए मिथक टूटते नहीं हैं बल्कि मिथक इससे विकसित होता है।

संदर्भ :

1. सं. जयदयाल गोयंदका संक्षिप्त महाभारत पृष्ठ 92
2. सं. जयदयाल गोयंदका संक्षिप्त महाभारत, आदि पर्व पृष्ठ 92
3. प्रतिभा राय, 'द्रोपदी' उपन्यास पृष्ठ 92, उडिया में महाभारत, सरलदास से भी संदर्भ लेखिका ने ग्रहण।
4. प्रतिभा राय, 'द्रोपदी' उपन्यास पृष्ठ 212 (महाभारत 365)
5. प्रतिभा राय, 'द्रोपदी' उपन्यास पृष्ठ 223, (महाभारत 415)
6. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–1
7. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–8
8. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–8
9. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–157
10. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–157
11. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–157
12. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस,

कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–157–158

13. प्रतिभा राय द्वारा लिखित उपन्यास मूल रूप में याज्ञसेनी का श्री शंकरलाल पुरोहित द्वारा 'द्रोपदी'राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली 110006 प्रकाशन वर्ष 2004 पृष्ठ–168

डॉ० उमेश कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर,
हिंदी साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा–442001, महाराष्ट्र, भारत
मोबाइलः+91–9423307797,
ई–मेलः umesh&jnu@rediffmail-com

12

पं॰ श्रीराम शर्मा जी के काव्य में मानवीयता

दिनेश शर्मा, डॉ॰ बाबूराम प्रोफेसर,

सारांश

शर्मा जी ठेठ देहाती, ग्रामीण परिवेश में जन्में, जिए और उनकी विशेषताओं को प्रत्यक्ष अनुभव किया था। तभी तो उनके साहित्य में हमें ग्राम्य–संस्कृति का सुंदर झाँकी दिखाई देती है। उनके पात्र अत्यन्त संवेदनशील हैं, जिनके माध्यम से कवि ने मानवीयता का यथार्थ चित्रण किया है। शरणागत की रक्षा, धर्म, सत्य, मर्यादा की रक्षा, याचक की सहायता, गृहस्थ–आश्रम, अतिथि–धर्म, दया, ममता, करुणा, सहअस्तित्व आदि मूल्यों की व्यापक स्थापना हुई है। शर्मा जी ने भारतीय संस्कृति के सभी मूल्यों का रक्षण किया है। उनकी रचनाओं में आधुनिक, तकनीकी और वैज्ञानिक सोच का सुन्दर पदार्पण हुआ है। उनका राष्ट्रीय तत्व एवं यथार्थ चिंतन अनन्य है। कवि की करनी और कथनी में कोई अंतर नहीं था। श्रेष्ठ ब्राह्मणोचित जीवन जीया और जो अपनी कविता में मर्यादा और आदर्श स्थापित किए, उन्हें उन्होंने स्वयं पर लागू किया और कठोर संयमी मर्यादित लघु जीवन जीया। पूरा जीवन परोपकार, प्रेम, सत्यनिष्ठा व कर्तव्यनिष्ठा से बिताया। आज भी जब उनके शिष्यों और प्रशंसकों से मिलते हैं तो वे यही कहते हैं कि उनका एक–एक पल उस परमपिता परमात्मा के विराट स्वरूप को समर्पित था। अपनी मनुष्यता को देवत्व के स्तर तक पहुँचाया, कविता तो उनके कृत्यों की अनुगामिनी थी। कुछ उदाहरणों के माध्यम से उनकी समाज कल्याण भावना और नैतिकता के उत्थान की वृति को जानते हैं – शर्मा जी ने एक जगह कहा है – **'नीति, धर्म–कर्म करणा, श्रीशर्मा प्रचार पिया'** अर्थात् नीति, धर्म संगत कर्म करना ही शर्मा जी के प्रचार का उद्देश्य है। पात्रों के अन्दर कपटता नहीं सुस्पष्टता और सच्चाई है। सत्यवान का पिता, महाराज अश्वपति को अपनी सच्चाई के विषय में मुखर होकर बोलते हैं –

बिना बताये तोल बात का, अश्वपति पटै कोन्या।
मेरी टोटे गेल्याँ राड़ लागरी, सारी उमर मिटै कोन्या।।
क्यूं ब्याहै सै के फहरी सै, या तै ब्याह के चाह मैं कहरी सै,
सुख–आनंद मैं रहरी सै, इंहकी बण मैं उमर कटै कोन्या।
मैं मार्या मरूँगा लाज का, तूं बरतैगा नशा राज का।
पेट लागर्या सेर नाज का, फल तै खढ़ा अटैं कोन्या।।

अब अश्वपति का भी उत्तर सुनने योग्य है –

तेरा मांग लिया सत्यवान, म्हारै सावतरी इसके जोग सै।
या नीचे नै नैन करेगी, दुम्त सैन तेरा कहन करैगी,
या सहन करैगी, बियावान, इहंकै लिख्या कर्म मैं यो भोग सै।

न तो द्युतसैन को लड़के का पिता होने का गर्व न अश्वपति को चक्रवर्ती राजा होने का अभिमान! दोनों स्पष्ट अपनी भावानाएँ व्यक्त कर रहे हैं। विवाहोपरांत सावित्री ने भी अपने आपको वनवासिनी की भाँति ही प्रस्तुत किया –

मात–पिता की जगह जाण कै, सास–ससुर का साह्रा होग्या।
सावत्री नै कोठी कमरे, टुटी छान उसारा होग्या।।
मिलग्या जो कुछ था लहणा, तिलक चंदन बिंदी का गहणा,
ऋषियों के मांह रहणा–सहणा, बण मैं सुरग दवारा होग्या।

ज्यों–ज्यों समय गुजरता है, सावित्री का तप भी उग्र होता गया है। उनके तप को देखकर सास–ससुर बड़े मर्माहत हैं –

बरत निरजला ग्यास का, कर्या सावत्री नै बन मैं,
उन्हैं त्याग दिये जल–पान।
जब दुम्तसैन नै सुण्या, मन मैं ममता–महल चिष्या,
घणा ए था मोह सास का, ना कुछ खाया दिन मैं,
म्हारी भूखी बहू नदान।

यमराज तक सावित्री के उग्र तप, त्याग और पतिव्रता धर्म से प्रभावित होते हैं और बार–बार उसे वरदान देते हैं –

सावत्री तेरै होज्यांगे सौ बीर, इबतै उलटी फिरज्या,
झूठा लोभ करै, सत्यवान मिलै कोन्या।
तेरे सत की कै मारूं बौर, देब्बी तनै मचा दिया घोर,
और, मांग बर मन मैं करकै धीर, जिसतै कारज सरज्या,
देब्बी सबर करे बिन काम चलै कोन्या।

कृष्ण जन्म की कथा में श्री नारद जी की कहा मान कर देवकी, भूतेसर के मंदिर में पूजा का संकल्प लेती है। कंस के कठोर बंधन के बाद भी देवकी की पूजा करवाने में उसकी माता की सहेली सामने आती है और देवकी का स्वागत करती है –

हे इंद्राणी, ब्रह्माणी बरगी, कंगली आला हाल।
नहीं पिछाणी बेटी तेरे, पाट्टे लत्ते चाल।।
मैं जाणूं मन की सारी, तूं जिस मतलब खात्यर आह्री,
राखूं जी तै प्यारी बेटी, तेरी तरफ का ख्याल।

शर्मा जी ने तो कंस जैसे विलेन में से भी मानवीय गुण निकलवा लिए हैं। कंस अपनी बहन को समझाता है और कहता है कि उसे किसी पूजा–पाठ की क्या जरूरत है, कहता है –

सुख मैं पैदा होकै विपता, भर्या नहीं करते।
गैर बख्त मंदिर मैं पूजा, कर्या नहीं करते।।
तनै भगति मैं निगांह टेकली, मनै करकै न ख्यास देखली,
स्याणी उमर एकली देवकी, फिर्या नहीं करते।

बाद में कंस अपनी बहन की पसंद से वसुदेव जी के साथ धूमधाम से विवाह करता है। देवता तक उनकी भावना को देखकर प्रभावित होते हैं। कंस ने क्या–क्या विदा पर दान दिया –

विद्या पै बुलाये, देख्खण लोग लुगाई आये,
मथुरा सारी, आह्री, छोह्री–छोह्री, गावैं मंगल चार मिलकै।
ढ़ेर पड़े लत्ते चालां के, ब्याह, शादी हों धन आलां के,

ना मालां के छोड्डे तोड़े, एक लाख दस हाथी घोड़े,
दास्सी–दास की दिये तलाश, खास, आठ पहर करैं कार मिलकैं।

जब बहन की डोली को विदा कर रहा था तभी आकाशवाणी उसे भ्रमित की देती है। वह देवकी और वसुदेव को जेल में डाल देता है। सात पुत्र मार डाले। आठवाँ गर्भ स्थापित हुआ। कंस, देवकी पर थोड़ी करूणा दिखाता है। वह उसे एक–दो घड़ी यमुना तट पर घूमने की आजादी देता है। यशोदा भी उस समय यमुना तट पर मौजूद थी वह देवकी की रोने की आवाज सुनकर द्रवित हो जाती है –

तेरी रोवण की आवाज कान मैं पड़ी, मेरा हिरदा पाट्या।
हे पणिहारी के बेमारी, मैं चाहूं तेरा दुख बाट्या।।
सास नै लड़ पाणी घाल्ली सै, के बेट्याँ बिना गोद खाल्ली सै,
के तेरे घर पै कंगाली सै, मिल्या नहीं छिकमा आटा।
तूं आई जल नीर भरण नै, क्यूं होरी सै बाहण मरण नै,
नाहण–धौण और भजन करण नै, श्री जमना जी का काठा।
रहण–सहण नै घर दे दूंगी, बरतण नै धन–जर दे दूंगी,
तेरे बदले मैं सिर दे दूं दूगी, बता बाहण क्यांह का घाटा।
मौजीराम चरण सिर न्याले, श्रद्धा करकै कलसा ठाले,
शर्मा जी ईश्वर गुण गाले, क्यूं लाग्गै तेरे पांह कांटा।

देवकी का करूण विलाप सुनकर यशोदा कहती है –

हे रूप दे दिया ईश्वर नै, तकदीर ना देई।
डूबग्यी बेह्माता तेरा, रावणा सही।।
राम नै जै ना लिख राख्या काल, दुष्ट तै हो नां बांका बाल,
तेरा एक बचादूं लाल, अपणे देकै न कई।

देवकी को अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को उद्यत होती है। यद्यपि देवकी और वसुदेव को कंस ने नाना प्रकार के कष्ट दिए तो भी एक बहन का हृदय भाई के प्रति निर्मम नहीं हुआ देखिए –

मौजीराम ध्यान से धरकै, रहणा पड़ै कंस तै डरकै,
भाई करकै, सांस सबर का, घाल्या ना गया।
कालजा पाकड़ कै बैठी, चाल्या ना गया।।

अत्याचारों का सामना करने के लिए शर्मा जी करुणा, दया, ममता और मानवीयता को हर कथा में लेकर आए हैं। सरवर–नीर की कथा में जब धोबी दोनों भाइयों को रोता हुआ देखता है तो उसका हृदय पसीज जाता है –

कपड़े धोवण आया था, धोबी का कांठा।
रोवण की आवाज सुणी, जब हिरदा पाट्या।।
देश, नगर, घर कौण आपका, सारा पता बतादो रै,
कित तै आये कित जाओगे, ये भी हाल जतादो रै,
हम भी दुख के मारे सां, कदे तुम भी और सतादो रै,
सही बतादो, बात थारा दुख चाहूं बाट्या।
हिया उलझ कै आवण लाग्या, दुख का हिरदा भरकै रै,
मात–पिता तै नहीं पास मैं, अलग पाटग्ये मर कै रै।
सरवर नै उठा कै ल्याया, दरिया के मांह तिरकै रै,
फेर सिर पै धरकै, हाथ नीर रोवण तै डाट्यां।

राजा हरिश्चन्द्र की कथा में भी शर्मा जी ने कालिया को क्रुर नहीं दर्शाया है। जब हरिश्चन्द्र कर के बदले में चीर उसे सौंपता है तब कालिया हरिश्चन्द्र को फटकारता है, कहता है कि अगर कोई इतना गरीब व्यक्ति है कि सवा रुपया भी नहीं दे सकता तो उसे दाह–कर्म करने दिया जाए। चीर वापस करते हुए कहता है कि –

उल्टा चीर बीर नै जा दे, हों सैं दयावान के कादे,
अधम पड़ी सै लाश जलादे, न्यूं बोल्या जा साह्रा लाया।
उल्टा चीर फेर दिया तेरा, कर मरघट का कर लिया आया।।

धर्मपाल–शांताकुमारी की कथा में शर्मा जी ने ऐसा ही कारुणिक दृश्य उपस्थित किया है। धर्मपाल को डाकुओं ने लूट लिया है, वह निर्वस्त्र है। रात का समय, ठंडी हवा में ठिठुर रहा है। टोडी गाँव में जाकर किसी की बैठक के दरवाजे पर दस्तक देता है। लेकिन, घरबारी सुस्त है, वह ध्यान नहीं दे रहा है। धर्मपाल कहता है –

मौजीराम गुरु विपता मैं, पाणी नहीं पिया रै,
श्रीराम शर्मा रात बसेरे का, दुख आण दिया रै,
एक पहर का रूक्के देह्रया, कोन्या तरस लिया रै,
तू बिना दया का देख्या माणस, क्यांहका तेरा हिया रै,
सांकल खोल बिठालै जड़ मैं, इतना ए शान भतेरा।
सोवण आले बैठ्या होले, मैं कद् का रूक्के देह्रया।।

मानवीयता को झकझोरने वाला यूं तो पूरा ही भजन है, परंतु विस्तार भय से नहीं दिया जा सकता है। अब दयाराम वहाँ से चल कर शांताकुमारी से मिल, जिला अधिकारी के समक्ष अपनी बात रखने के लिए शांताकुमारी को कहता है –

हे चाल्ली जा बेटी, मेरी तूं चाल्ली जा माया,
हे हिम्मत करले तनै खंदाऊँ सूं,
दस डंग पाछै मैं भी आऊँ सूं।
सूली पर तै मनुष्य उतरज्या, पणमेसर तारैगा तै,
तेरे बारे मैं दान करूं देह, इतने मैं सौरगा तै,
जिला मारैगा तै, मरणा ए चाहूँ सूं।

इस प्रकार कई कथाओं में शर्मा जी ने मानवीय गुणों को उभारा है। इसके साथ जब शर्मा जी अपने श्रीमुख से वार्त्ता करते थे तो अमृत वर्षा होती थी। श्रोता भाव–विभोर होकर कभी रोते थे तो कभी शांत आनंद के समुद्र में डूबकी लगाते रहते थे। नरसी की कथा में नरसी अपने जमींदार मित्र से बैलगाड़ी माँगने जाता है, तब जमींदार की आँखों में पानी भर आता है। वक्त की बात है कि एक करोड़पति सेठ आज मुझ जैसे गरीब किसान के दरवाजे पर बैलगाड़ी माँग रहा है। गाड़ी का सारा सामान इधर–उधर टूटा–फूटा बिखरा पड़ा है, बैल बूढ़े हो गए हैं, फिर भी कहता है –

टूट्या सा लद्ढा, जिसमैं धुरा ना ठिकाणी,
नरसी लेज्या के इनकार सै।
बूढ़े बैल बाहरणै मेरै, कदे देख्खी ना सान्नी भेरै,

तेरै, आग्गै तै पड़गी नरसी, साफ बताणी, तूं मेरा बच्चेपन का यार सै।
तनै देख कै बोलता खिलग्या, जणु तै तेल दिवे मैं घलग्या,
प्यारा मिलग्या, आग्या आँख्या मैं पाणी, नरसी इतना ए सामान तैयार सै।
कदे कहैं थे लखी–किरोड़ी, आज टोटे नै आकै रोड़ी,
बोदी सी जौड़ी, वा भी बीझी पुराणी, नरसी खूंटे नहीं उडार सै।
गाड़ी के शौभ्या पावैगी, मुश्किल फुलसे तक जावैगी,
दुनिया गावैगी, तेरी राम कहाणी, नरसी, शर्मा जी प्रचार सै।

आपत्ति के समय में या बुरे–अच्छे वक्त में जो मदद करे, साथ आए वही जो मित्र होता है। यही भावना–संवेदना मानवीय–मूल्यों में देखी जानी चाहिए। भक्त और भगवान का जोड़ा होता है। शर्मा जी ने जो भगवान श्रीकृष्ण को नरसी का नौकर तक ही बना दिया है। भगवान भक्त के लिए गाड़ी हाँकते हैं और पाटड़े पर स्वयं चढ़कर मुँह बोली बहन हरनंदी का भात भरते हैं। पूरी कथा ही मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। कृष्ण–सुदामा की कथा में भगवान श्रीकृष्ण जब द्वारपाल के मुँह से सुदामा का नाम सुनते हैं, तभी सुदामा से मिलने नंगे पाँव दौड़ते हैं। अपने हाथों से पैर धोते हैं, चँवर डुराते हैं, सिंहासन पर बैठाते हैं –

मौजीराम शरण सूं थारी, आग्गै मिलग्ये नंद बिहारी,
कोली भरकै मिले मुरारी, आसण पै बिठाया रै।
पाट्ये लत्ते चाल पहररा, दूबली सी काया रै।।

भगवान कृष्ण मित्र की हालत देखकर द्रवित हो जाते हैं, लेकिन मित्र के आने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हैं –

चित्त पै आग्यी बात सै, बच्चेपण का प्यार मेरा।
चली कूणसी बाल सुदामा, आग्या यार मेरा।।
बांधर्या प्रेम रूप का पाला, रटै सै मेरे नाम की माला,
यो सै भक्त निराला, वूं ना, ले संसार मेरा।।

भगवान श्रीकृष्ण अपने मित्र की सेवा स्वयं करते हैं। बाद में, मित्र की गरीबी भी दूर कर देते हैं। शर्मा जी ने मित्र धर्म के माध्यम से मानवीय मूल्यों को अपनी कविता के माध्यम से पहुँचाया है। महाभारत में भी कुंती अपने आश्रयदाता ब्राह्मण के घर अपने पाँचों पुत्रों सहित, एक चक्रपुर ग्राम में रह रही थी। एक दिन ब्राह्मणी के रोने की आवाज कान में आती है, तब कुंती उसके पास जाकर पूछती है –

तूं शादी के मांह गम्मी कररी सै।
आंख्या के मांह आंसू भररी सै।।
मनै बता तेरै के बेमारी, क्यूं रोवै तेरी कन्या कुआंरी,
भय सा खाह्री, किसतै डररी सै।
हम मरते तेरी मेरां के मांह,
ब्राह्मण रोवे घेरां के मांह,
तूं शेरां के मांह, गां सी घिररी सै।

ब्राह्मणी अपना कष्ट कुंती को बताती है, कहती है कि दुष्ट बकासुर की भेंट में नित्य एक मानव की भेंट दी जाती है। आज हमारी बारी है। मेरा पुत्र उस दान्ने की भेंट में जा रहा है, इसलिए मैं रो रही हूँ –

के बुझोगी हाल राहण दे, दुखी लुगाई का।
आज–आज मैं हो लेगा मठ, मेरी कमाई का।।
दान्ना चाह्वै भेंट खलक, चहें हा–हा करही हो,
मूसलधार पड़ै पाणी, चहें गरमी–सरदी हो,
कूण बता हमदर्दी हो, इस, मौत पराई का।

अब कुंती ने कहा कि आज तुम्हारा नहीं, बल्कि मेरा पुत्र भीम जाएगा और पापी बकासुर को मार डालेगा। भीम बकासुर को मार डालता है। इस प्रकार अपने आश्रयदाता राजा के कष्टों का हरण करता है।

शोधार्थी
दिनेश शर्मा
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
शोध निर्देशक
डॉ॰ बाबूराम प्रोफेसर,
अध्यक्ष बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक
9991929926

13

संत ब्रह्मनन्द सरस्वती की वाणी में पर्यावरण चेतना

प्रवीन कुमारी

सारांश

आदिकाल से ही प्रकृति तथा मनुष्य का गहरा संबंध रहा। प्रकृति तथा प्राकृतिक उपादान मानवीय जीवन के अनिवार्य अंग रहे है। परन्तु मानव ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति से खिलवाड़ किया। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की प्रवृति ने पर्यावरण प्रदूषण की नई चुनौती को जन्म दिया जिससे आज पूरा विश्व चिन्तित है और इस समस्या के समाधान के लिए प्रयत्नशील है। इस समस्या ने मानव जीवन के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इस समस्या पर काबू पाना आवश्यक है। इसी कारण विश्व के सभी देश इस समस्या पर विचार–विमर्श कर रहे है और मुक्ति का रास्ता ढूंढ रहे है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का समाधान वृक्षों के माध्यम से हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर आज न केवल भारत वर्ष अपितु विश्व के अन्य देश भी बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण कर रहे है। आज विश्व में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के खतरे को देखकर पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता संत ब्रह्मनन्द सरस्वती जी की शिक्षा तथा सन्त समाज द्वारा वन्य जीवों एवं वृक्ष रक्षा हेतु किये गये बलिदानों से प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके द्वारा दिए गए उपदेशों का पालन करना चाहिए।

पर्यावरण का तात्पर्य पृथ्वी के जैव जगत को आवृत्त करनेवाले भौतिक परिवेश से है। पर्यावरण जैव जगत की प्राण वायु है। पर्यावरण वह सब कुछ है जो हमारे आस–पास है, जिसमें जीवित और निर्जीव दोनों तरह की चीजें शामिल है, जैसे मिट्टी, पानी, जानवर और पेड़–पौधें जो अपने आसपास के वातावरण के अनुसार खुद को ढाल लेते है। यह प्रकृति का उपहार है जो पृथ्वी पर जीवन को पोषित करने में मदद करता है।

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, 'परि' + 'आवरण' 'परि' शब्द का अर्थ है 'चारों ओर से' तथा आवरण शब्द का अर्थ है 'घेरे हुए या ढके हुए' से होता है। अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है चारों और से घिरा हुआ। जैसे नदी, पहाड़, तालाब, मैदान, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, वायु वन मिट्टी आदि सभी हमारे पर्यावरण के घटक है। यह भी कह सकते है कि पर्यावरण वह समूची भौतिक व जैविक व्यवस्था है, जिसमें जीवधारी निवास करते है और वृद्धि कर अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते है।

पर्यावरण का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'इनवायरमेंट' है, जो फ्रेंच भाषा के 'इनवायर' शब्द से बना है। इसका अर्थ अपने चारों और के वातावरण से है। पर्यावरण विद् 'पर्यावरण' शब्द के स्थान पर 'मिलेर' या 'नेविटेव' शब्द का प्रयोग भी करते है, जिसका अर्थ परिस्थिति से है। ''पर्यावरण परिस्थितियों एवं पदार्थो का समूह है, जो जीवधारियों के पालन–पोषण में सहायक होता है। इस तरह अंतरिक्ष, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, दिन–रात, वायु जल अग्नि, पृथ्वी, वन, वनस्पतियां, नदियां झीले समुद्र, पहाड़, वृक्ष, औषधियां खेती तथा मनुष्य सहित पशु–पक्षी, कीट–पतंग, अन्न, वस्त्र, शीत, ग्रीष्म वर्षा आदि ऋतुएं सभी पर्यावरण के समूह है।''[1] सम्भवतः इन्हीं कारणों से आदि–अनादि काल से मानव जाति की सभी सभ्यताओं में इन तत्वों का विशेष वर्णन किया गया है। पृथ्वी मानव का निवास क्षेत्र है। मानव जाति पृथ्वी पर स्वयं अकेले नहीं रह सकती क्योंकि मानव को अपनी खाद्य एवं अन्य आवश्यकताओं के लिए पृथ्वी के अन्य तत्वों व जीवन पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः हम केवल मानव के पर्यावरण का अध्ययन न कर पृथ्वी पर मिलने वाले समस्त जीवधारियों के पर्यावरण का अध्ययन करते है।

पर्यावरण विद्धो ने पर्यावरण की निम्न परिभाषा दी है।

डटले स्टाम्प के अनुसार; ''पर्यावरण प्रभावों का ऐसा योग है, जो किसी जीव के विकास एवं प्रकृति को परिवर्तित व निर्धारित करता है।''[2]

निकोलस के शब्दों में ''पर्यावरण समस्त बाहरी दशाओं एवं प्रभावों का योग है, जो प्राणी के जीवन विकास को प्रभावित करता है।''[3]

इस प्रकार अनेक प्रकार के कारक आपस में एक–दूसरे को प्रभावित करते हुए जीव जगत पर संयुक्त प्रभाव छोड़ते है, जिनका प्रभाव एकाकी न होकर संयुक्त होता है। ''पर्यावरण बाह्य शक्ति है, जो मनुष्य को प्रभावित करती है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण वह सब कुछ है, जो किसी वस्तु या मानव को चारों ओर से घेरे हुए है और उसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहा है।''[4]

संत साहित्य की दीर्घ परम्परा में संत ब्रह्मनन्द सरस्वती भूमा 'कुरूक्षेत्री' का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म हरियाणा प्रांत की गौरवमयी एवं पवित्र भूमि कुरूक्षेत्र के चूहड़माजरा गांव में रोड़ क्षेत्रीय वंश में 24 दिसम्बर, सन् 1908 ई0, तदानुसार पौष सुदी एकम (प्रतिपदा) विक्रमी संवत 1965 को हुआ। उन्होंने आजीवन साधनारत रहते हुए आध्यात्मिक ज्ञान अर्जन किया और उस अर्जित ज्ञान शक्ति को लोक कल्याण के लिए लगाया। संत ब्रह्मनन्द सरस्वती जी मानववादी सन्त थे। सत्य परोपकार, संयम, सच्ची मित्रता, नैतिकता, अपरिग्रह और ब्रहमाचार्य का पालन आदि समाज के उत्थान के लिए आवश्यक माने जाते थे। सामाजिक मर्यादा, शाश्वत जीवन मूल्यों, आपसी सद्भाव और सांस्कृतिक उत्थान के जो प्रेरक स्वर उनकी वाणी में है। संत ब्रह्मनन्द सरस्वती जी की वाणी उतनी ही प्रांसगिक है जितनी उनके समय में थी और निर्गुण संत काव्य परम्परा में जो स्थान कबीर, रैदास, नानक आदि संतों का है वहीं स्थान संत ब्रह्मनन्द जी का।[5]

स्वामी जी ने समाज के उत्थान के लिए शिक्षा प्रचार के लिए अनेक गुरूकुलों, पाठशालाओं और पुस्तकालयों की स्थापना की। संत जी सन्यासी होते हुए भी गृहस्थ जीवन जीते थे। गृहस्थ आश्रम का

मूलाधार मातृशक्ति है। उसे शिक्षा के द्वारा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र अन्धविश्वासों और कुरीतियों से स्वतन्त्र हो सके। इसलिए उन्होंने नारी शिक्षा के लिए बड़ी तीव्र गति से अभियान चलाया। उनके अनुसार समाज की उन्नति का मूल कारण गौवंश संवर्धन है। गौ के धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु आर्थिक दृष्टि से भी देश के विकास का कारण माना। उन्होंने अनुभव किया कि यह वह देश है जहाँ ऋषियों के तपोवनों में हजारों गांए होती थी और घी–दूध की नदियां बहती थी। इसलिए उन्होंने अनेक गौशालाओं की स्थापना की। वे वनों और नदियों की रक्षा करना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे। जो नदियां सदा स्वच्छ जल से भरी रहती थी, वे सुखने लगी थी। आज जो पर्यावरण को बचाने के लिए पूरे विश्व में चेतना जागृत हो रही है, दूरदर्शी संत ब्रह्मनन्द जी ने उसे पहले ही अनुभव कर लिया था। प्रदूषण भारत की ही नहीं समस्त विश्व की गंभीर समस्या है। उनका मानना था कि अगर पर्यावरण को नहीं बचाया गया तो धरती पर जीवन संकट ग्रस्त हो जाएगा। पर्यावरण के सुधार के लिए उन्होंने सारे भारत में 200 अखिल विश्व कल्याणकारी शांति महायज्ञ किये क्योंकि कहा गया कि यज्ञ करने से बादल वर्षा करते है। मेघ वनों के मित्र है। जल से ही सारा पर्यावरण हरा–भरा रहता है। इसके साथ–साथ स्वामी जी ने स्वच्छ भारत अभियान, पेड लगाओ देश बचाओ, जब सुरक्षित रहेगा पर्यावरण हमारा, तभी सुरक्षित रहेगा जीवन हमारा आदि अनेक आन्दोलन चलाए। वस्तुतः सारे विश्व में प्रकृति प्रेम रहा है। भारत के ऋषि–मुनि प्रकृति के पुजारी रहे है। वे अपने आश्रम पर्वत–घाटियों, नदियों, वनों आदि के किनारे बनाते थे। वे प्रकृति के एकान्त जगह पर अपनी साधना करते थे तथा यज्ञों का आयोजन किया करते थे। यज्ञों के हवन से उठने वाले धुएं से सारा वन सुगन्धित हो जाता था तथा सारा वातावरण स्वच्छ हो जाता था। वनों में पशुओं के झुण्ड विचरण करते रहे तथा घास चरते रहते थे तथा प्रकृति उनको अपना अलौकिक संगीत सुनाती रहती थी। मोर नाचते थे, हिरणों के झुण्ड छलांग लगाकर घुमते रहते थे, पक्षी कोलाहल करते रहते थे। ऋषि–मुनियों का विश्वास था कि प्रकृति के तत्व हमें जीवन प्रदान करते है और भूमा का सन्देश सुनाते है। ऋषिवृन्द पेड़–पौधों की रक्षा करते थे। लता और वल्लरियों का क्रसचन करते थे, फूलों की खुशबू चारों फैल जाती थी। ऐसे आश्रमों में प्रकृति का वरदान उनको प्रतिदिन प्राप्त होता था वे यह नहीं जानते थे कि प्रदूषण क्या होता है? शुद्ध जल और स्वच्छ वायु ही तो धरती के अमृत है। मानव एवं वृक्ष का गहरा संबंध है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्षों पर निर्भर रहता है। उसके जीवन के सभी महत्वपूर्ण कार्य वृक्षों की सहायता से पूरे होते है। वृक्षों के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। वृक्षों के इसी महत्व को देखकर ब्रह्मनन्द जी ने वृक्ष प्रेम की भावना पर बल दिया। वृक्ष प्रेम भावना के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से ही उन्होंने भ्रमण करते समय अनेक पाठशालाओं, गुरूकुलों और आश्रमों में वृक्षारोपण का कार्य प्रारम्भ किया था। वृक्षों की रक्षा के उद्देश्य से ही संत ब्रह्मनन्द जी ने अपनी वाणी में वृक्ष काटने का विरोध किया। वन पालन और वन संरक्षण भारत की प्राचीन परम्परा रही है। स्वामी जी ने इस परम्परा की महत्ता के विषय में समाज में प्रवचन दिए और स्वयं इसका पालन किया। संत स्वामी सरस्वती जी ने बाह्य और आन्तरिक शुद्धि पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार भगवान को शुद्ध–बुद्ध–मुक्त स्वभाव कहा गया है। वह पवित्रता को भगवान का स्वरूप मानते थे–

शरीर शुद्ध वस्त्र शुद्ध बर्तन शुद्ध स्थान।
विचार शुद्ध मन शुद्ध बुद्धि शुद्ध मकान।।
जल शुद्ध अन्न शुद्ध दूध घी शुद्ध।
अग्नि शुद्ध पृथ्वी शुद्ध आकाश शुद्ध।।
प्राण शुद्ध हवन शुद्ध सामग्री शुद्ध।
लोक शुद्ध परलोक शुद्ध।।[6]

इसी संदर्भ में वे आगे लिखते है–

धरती का कागज करूं, वृक्षों की कलम बनाए।
समुद्र दवात पर्वत स्याही शेष शारदा बोले लिखे
फिर भी पर्यावरण शुद्धि का पार न पाए।।[7]

स्वामी जी पर्यावरण के बड़े संरक्षक थे। वे वट, पीपल, नीम और आम आदि पेड़ों की रक्षा पर विशेष बल देते थे। तुलसी (वृन्दा) से उनका बहुत प्रेम था। प्रत्येक घर में तुलसी के पौधे लगाने का उपदेश देते थे, क्योंकि तुलसी बहुत ही गुणकारी और स्वास्थ्यवर्धक मानी जाती है।[8]

निष्कर्ष:

रूप में कहा गया है कि पर्यावरण चेतना भारतीय संस्कृति की प्राचीन धरोहर है। परम्पराओं और रीति–रिवाजों में इसे आज भी देखा जा सकता है। यजुर्वेद में वृक्षों को नमन कर कहा गया है, वृक्षेभ्यः हरि केशेभ्यों पशुनाः पतये नमः अर्थात हरे केशों वाले वृक्षों को जो प्राणियों की रक्षा करते है, नमन है। इसमें वृक्षों का मानवीकरण करते हुए उनकी उपयोगिता बतायी गयी है। आज के इस वर्तमान युग में हम दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहे है, परन्तु साथ ही मानव को यह भी स्वीकार करना पड़ेगा की प्रगति के साथ विनाश भी निरन्तर चल रहा है। इसलिए भविष्य के लिए अच्छा यही होगा की आधुनिक और प्रगतिशील बनने के लिए प्रकृति को दांव पर न लगायें और हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता संत ब्रह्मनन्द सरस्वती जी की शिक्षा तथा सन्त समाज द्वारा वन्य जीवों एवं वृक्ष रक्षा हेतु किए गये बलिदानों से प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके द्वारा दिए गए उपदेशों का पालन करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 अनिरूद्ध प्रसादः पर्यावरण एवं पर्यावरणीय संरक्षण विधि की रूपरेखा, पृष्ठ 1
2. डॉ0 त्रिभुवननाथ शुक्लः पर्यावरणीय अध्ययन, पृष्ठ 2
3. वही, पृष्ठ 2–3
4. प्रोफेसर धनंजय वर्मा, पर्यावरण चेतना, पृष्ठ 2

5. डॉ0 बाबूरामः संत ब्रह्मनन्द सरस्वती ग्रंथावली, पृष्ठ 16
6. डॉ0 बाबूरामः संत ब्रह्मनन्द सरस्वती ग्रंथावली, पृष्ठ 65, 66
7. श्री सतगुरू ब्रह्मनन्द पचासा, पद–485
8. डॉ0, बाबूरामः संत ब्रह्मनन्द सरस्वती ग्रंथावली, पृष्ठ 66

शोधार्थी
प्रवीन कुमारी (हिन्दी विभाग)
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

14

निर्गुण संत कवियों की स्त्री–विषयक चेतना

डॉ0 अनिता रानी

सारांश

भारतीय हिंदी साहित्य के मध्यकाल को दो भागां में विभाजित किया गया। पहले भाग को पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) तथा दूसरे भाग को उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) कहा गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में इन दोनों काल का सीमाकन करते हुये, भक्ति काल को संवत् 1975–1700 और रीतिकाल को संवत् 1700–1900 तक माना। भक्तिकाल स्वयं में एक स्वर्ग युग कहा जाता रहा है। भक्तिकाल की सभी ने अपनी परिभाषाएं दी है। किंतु डॉ बच्चन ने भक्तिकाल के बारे में बताते हुए लिखा, ''भक्तिकाल भक्तिकाल है, मध्यकाल नहीं। मध्यकाल सामान्यतः जकड़ी हुई मनोवृति का परिचायक है। इसे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जकड़ी हुई मनोवृति कहते है। (मध्यकालीन चिनवृत्ति में अंग्रेजी की 'मैडिसियल सैंसिबिल्टी का अर्थ प्रविष्ट हो चुका है। अनेक अर्थो में यह नवजागरण काल है– प्रथम नवजागरण''1

भक्ति काल में दो धारा प्रवाहित हुयी, एक निर्गुण धारा और दूसरी सगुण धारा। निर्गुण धारा में फिर दो शाखाएं संत काव्य और सूफी काव्य, सगुण में दो धाराएं कृष्णकाल और रामकाव्य बनी। ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में भक्ति काल को कई शाखाओं–उपशाखाओं में विभाजित किया है। पहली दो धाराएं है– निर्गुण और सगुण काव्य की। फिर निर्गुण धारा की दो शाखाएं है– ज्ञानाश्रयी और प्रेममार्गी।

सगुण धारा की दो शाखाएं है, रामभक्ति शाखा और कृष्ण भक्ति शाखा।''2 निर्गुण धारा से ज्ञानाश्रयी शाखा में संत कवि आते हैं। इसके केंद्र में मुख्यतः कबीर कहे जाते है। कबीर के अलावा इस शाखा में जो मुख्य कवि माने जाते हैं, वो कवि है, नामदेव, रैदास, गुरु नानक, दादू, रज्जन, मलूकदास, सुंदर दास, चरणदास, सहजोबाई। निर्गुण मार्ग के कवि समाज से ज्यादा जुड़े नजर आते है तथा उनके द्वारा दिखाया गया ज्ञान मार्ग मनुष्य को मनुष्यता पाने में मददगार सिद्ध होता है। निर्गुण और भक्तिमार्ग जो सुनने में विरोधी लग सकता है, पर परस्पर जुड़े हुए है। ज्ञान का अनुभव जब भी कर लिया गया, वही भक्ति हो गयी जो आचार्य ज्ञानमार्ग पर अग्रसर थे, उन्होंने अधिकतर अनुभूति पद पर बल दिया है। 'अवतारवाद को स्वीकार कर लेने के फलस्वरूप सगुण भक्ति को एक साकार आलंवन मिल जाता है जिसके कारण सामान्य अशिक्षित व्यक्ति भी उसे सहज स्वीकार कर लेता है। वह निर्गुण भक्ति का आंलवन निराकार है, फलस्वरूप वह जनसाधारण के लिए ग्राहय नहीं हो सकती।'3

संत कवि कोई सिद्ध पुरुष, दार्शनिक या ज्ञानी हो, यह बात शायद वो कभी कहते ही नहीं थे। उनकी सारी चीजे तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित थी, इसलिए उनके काव्य में यत्र तत्र यहीं नजर आता था। सामान्य जनता स्वयं को जोड़ लेती थी। 'संत लोग दार्शनिक नहीं थे और न इन्होंने इसके लिए कभी दावा ही किया है। वे लोग धार्मिक व्यक्ति व साधक थे। परमतत्व के विषय में किसी बात की वैज्ञानिक ढंग से निरूपण करना अथवा तद्विषक प्रत्येक प्रश्न की जांच के लिये कोरे तर्क की कसौटी लिये फिरना उनकी कसौटी नहीं था। उन्होंने उस वस्तु के अनेक नाम दिये है। उन्होने उसे कभी 'राम' कहा, कभी 'रहीम' कहा है, कभी 'ब्रह्य' कहा है, कभी खुदा कहा है और कभी कभी उसे केवल 'परमपद' या 'निर्वाण। जैसी स्थिति निर्देशक संज्ञा की प्रदान की है।''4 संतों की रचनाओं के मुख्य विषय मत का परमतत्वरूपी राम के स्वरूप का दिग्दर्शन उसके प्रति प्रकट किये गए विविधि प्रकार के उद्गार, आत्म निवेदन, नामस्मरण की साधना, सात्विक जीवन का महत्व तथा उसके लिये उन्होंने जो उपदेश या सीख दी, वही सब मुख्य रहा है। संतो ने संसारिक बातों में लिप्त लोगों का वर्णन, उनके सांप्रदायिक एवं सामाजिक भेदभावों की भी आलोचना की है।

भक्तिकालीन निर्गुण संत कवियों के मुख्य विषय अधिकतर समाज से जुड़े हुए थे। आज के समाज की जो अकसाहट है, उसकी शुरूआत कहीं न कहीं भक्ति आंदोलन से ही मानी गयी– चाहे वह दलित अस्मिता का प्रश्न हो या स्त्री विमर्श का। अंत मध्यकालीन निर्गुण संत काव्य में स्त्री विमर्श की तलाश तर्कसंगत और प्रासंगिक है। संत काव्य में नारी की स्थिति पर समय–समय पर बहुधा विचार होता रहा है। कुछ दोहों के उदाहरण देकर किसी कवि को स्त्री विरोधी या रूढिवादी घोषित किया जाता रहा है। तो किसी को स्त्री समर्थक या प्रगतिशील कवि की उपाधि दे दी गयी। परंतु कवि की सामाजिक सीख, विचारधारा एवं उसकी व्यक्तिगत अनुभूति के आधार पर स्त्री विमर्श में आए फांक को बहुधा नजरअंदाज किया जाता रहा है। चूंकि भक्ति आंदोलन एक जटिल व अंतविरोधी से भरा जन आंदोलन है।, अंत उसके पक्ष में एकपक्षीय या एकरेखीय निर्णय देना समाचीन नहीं जान पड़ता। यहां निर्गुण संत कवियों के नारी विषयक चिंतन पर विचार करते हुए कवि की व्यक्तिगत अनुभूति और उसकी विश्वदृष्टि को ध्यान में रखा गया है।

निर्गुण संत कवि कबीर वास्तव में जाति धर्म से परे एक ऐसे प्रारूप की स्थापना करते है जिसमें स्त्री पुरुष का भदे नही है। डॉ मैनेजर पाण्डरे के अनुसार ''सामाजिक व्यवस्था औत धार्मिक विश्वास संबंधी कबीर के अधिकांश विचारों से तुलसीदास असहमत है लेकिन स्त्री के बारे में दोनो की राय लगभग एक जैसी है।''5

'नारी की झाई परत अंधा होत भुंजग।
कबिरा तिनकी कौन गति नित नारी कोसंग।''6

''नारी कुंड नरक का, बिरला थामे बाग।

कोई साधुजन अबरे, सब जग मुआ लाग।।''

जो कबीर समाज में समानता की बात करते नजर आते है। स्त्री–पुरुष को एक ही मिट्टी से पैदा मानते है। फिर क्यों वह नारी विषयक इतनी नकारात्मकता अपने काव्य के द्वारा प्रस्तुत करते है। अब कबीर के विरहिन के पदों की तरफ दृष्टि डाले तो –

''विरहिन देय संदेसरा सुनो हमारे पीत।
जल बिना मच्छी कों जिए पानी में का जीव।''7

''हवस करै विय मिलन की औ सुख चाहै भेग।
पीर सहे बिनु पदमिनी पूत न क्षेत उंछग।''8

ऊपर के पदों में कबीर का जिस नारी के संग को नरक आदि मान रहे है, वही उनके अन्य पदों में हम देखते है कि वो उसी नारी द्वारा पिया मिलन की आस को दिखाते है, उस विरह वेदना को दिखाते है। कबीर के इस दोहरे भाव के कुछ तो कारण रहे होंगे। एक तरफ निर्गुणवादी संत नारी निंदा करते है, वही दूसरी ओर संत आदि स्वयं पुरुष होकर अपने प्रभु प्रेम को प्रस्तुत करने हेतु स्वयं को नारी के रूप में प्रकट करते थे और प्रभु को अपना पति अथवा प्रेमी। अनुभूति की ऐसी रूपांतरण प्रक्रिया स्वाभविक थी या अथवा साधना का अनिवार्य अंग। कबीर का एक पद देखते है–

''बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जित तरसै तुझ मिलन को, मन नाही विश्राम।।''

कबीर की यह कोई दोगली विचारधारा नहीं बल्कि उनके ज्ञान का परिचायक है। वह स्त्री के सभी गुणों से लगभग परिचित थे। उन्होंने इसलिए उसके दोनां रूपों का वणर्न अपने पदों में किया है। जहां वह रूत्री विरोधी दिखायी देते है तो वह स्त्री विरोधी नहीं बल्कि कुटिल स्त्री की बुद्धि की बात करते है। कुटिल बुद्धि विनाश की ओर ले जाती है, वह हमें पथ से भ्रष्ट करती है। लोग वासना आदि में तृप्त होकर अपना कर्म और धर्म भूल जाते है। कबीर जिस समाज में काव्य रचना कर रहे थे, वहां धार्मिक, सामाजिक, उथल–पुथल अधिक थी। वह चाहते थे कि लोग अपने पंथों से भ्रष्ट न हो तथा समाज में अपना योगदान दे। स्त्री को इन पदो में डालने का मुख्य कारण यह था कि पुरुष स्त्री शीघ्र आकर्षित होकर वासना में लिप्त होकर अपने पथ से भटक जाते है। उस समय समाज की जो स्थितियां थी, उस समय संतो द्वारा लोगों को जागरूक करने का जो तरीका सरल व सुगम लगा, उन्होंने वह अपना लिया।

दूसरी तरफ संत कवियो ने भक्ति के लिए स्वयं को रूत्री रूप में क्यों रखा। तो कारण यही है। अगर संत कवि स्त्री के दुष्ट गुणों से परिचित थे तो वह स्त्री के उन गुणों से भी परिचत थे जो उसे एक स्त्री बनाते है। त्याग, समर्पण, प्रेम, वात्सल्य और धैर्य स्त्री में पुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक मायने होते है। जिस राम नाम की भक्ति को कबीर तथा अन्य संत कवि मानते थे, सच्ची भक्ति के लिये त्याग, धैर्य, समर्पण व एकनिष्ठ प्रेम का होना आवश्यक है। इसलिये नाम सुमिरन के समय वह सभी स्वयं को सभी रूप में मानते है। ईश्वर के समक्ष अंहकार पैदा न हो जाए, इसलिए स्त्री को कोमलता हदय से होना आवश्यक है। इसलिये निर्गुण संत कवियों को पूर्ण रूप से स्त्री विरोधी या रूढिवादी कहना बिल्कुल निर्थक सिद्ध होता है। संत रैदास ने कहा है–

'तनु मनु देह न अंतर राशै। अवरा देषि न सुने अमाषै।'

रैदास जी यहां एक पतिव्रता स्त्री के लक्षण बता रहे कि वह पति से बिल्कुल अंतर नहीं रखती, तन मन बिल्कुल समर्पण कर देती है। वह जानते थे स्त्री में समर्पण व त्याग मुख्य होता है। स्त्री की पूर्ण परिभाषा ही यही है कि वह यहां कोई कमियां नहीं निकाल रहे बल्कि उसके अमूल्य गुणों का बखान ही कर रहे है। इसी भाव के कारण संतो के दांपत्य भाव के संबंध में यह सदा स्मरणीय है कि उन्होंने अपने को 'स्वकीया' मान कर पति–परमेश्वर के प्रति प्रणय निवेदन किया है। जो समर्पण व त्याग का भाव रूत्री का गुण होता है, वही गुण सच्ची भक्ति की सबसे बड़ी आवश्यकता हे। संत वाणी भाव की दृष्टि से अपनी परंपरा को ढूंढती नहीं है संत वाणी के बीज सिद्ध नाथ पंरपरा में हैं। सिद्धनाथ वाणी में मानवता के आधारभूत तत्व भाव को अपने समर्थन के योग्य नहीं समझा। गोरखनाथ आदि नाथों ने नारी का विरोध किया हैं इसके विपरीत संत वाणी में जहां नारी का विरोध हुआ है, उसे वहां स्वीकारा भी गया है। नारी का विरोध हुआ है वहीं नारी को संत चिंतन में सम्मान भरा स्थान भी प्राप्त है।

कबीर की वाणी में नारी उपमान रूप में पेश हुई है मगर यत्र तत्र। कबीर वाणी में नारी भेद की स्वतंत्रता को स्वर मिला। इसे नायिका भेद वर्णन नहीं कहा जा सकता। तो भी इतना स्पष्ट है कि तत्कालीन सामाजिक जीवन के यथार्थ नारी–व्यवहार को कबीर वाणी में यथेष्ट अभिव्यक्ति मिली है। जैसे–

'सुहागन है अति सुन्दरी'9 (सुहागन)

'गाऊ गाऊ री दुललनिआ–10 (दुहिलना)

'पेक्कड़े दिन चार'11 (बाली)

'कुआर का निभा जैसे करत सीगार''12 (कन्या)

नारी चित्रण संत वाणी का श्रृंगार सदा से रहा है। अगर नकारात्मकता व सकारात्मकता की तरफ दृष्टि डाली जाये तो चरित्र का मूल्यांकन प्रायः भला बुरा करके ही किया जाता है।

''ढूंढेदीए सुहागकू तम तन काई कोर।
जिना नाऊ सुहागणी तिना झाक न होर।।''13

संत कवि बहुत ज्यादा शिक्षित या शास्त्रवादी नहीं थे। वह स्पष्ट वाणी वाले सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्हे अपनी बात स्पष्ट रूप से जन के सामने रखना पसंद था। बात को घुमाकर और सजा कर पेश करने का हुनर उनमें शायद नहीं था। इसी कारण उनकी सच्ची बाते इतने सच तौर पर सामने रखी जाती थी कि लोगों को या किसी वर्ग विशेष को खटकती प्रतीत होती नजर आती थी इसी कारण इन संतों के उस वर्ग विशेष का विरोधी मान लिया जाता रहा है।

संत वाणी के प्रस्तुत नारी स्वरूप को एक अन्य दृष्टि से

विश्लेषित किया जा सकता है। संत वाणी में नारी के स्थूल प्राकृतिक रूप प्रस्तुत हुए है। यथा रू मां, मुंध, पत्नी आदि।

''रूदन कहै नाम की माई। राम छोड़ की ना भजहि खुदाए।''14

''पूता माता की आसीस,

सिमरन का बिसरऊ तुम को हरि हरि तुम सदा भजय जगदीस।''15

ऊपर दिये गए पदो से पूर्ण स्पष्ट है कि संत वाणी में नारी का सामान्य स्वरूप रूपमान हुआ है। माँ का बच्चे को भूल करने पर क्षमा करना, बच्चे के सुरक्षार्थ मां का रोना आदि लगभग सब माताओं के सामान्य गुण है। पुत्र के जीवन में भक्ति करने का रहस्य मां दे सकती है जो अपने आप में उच्चावस्था की स्वामिनी हो। 'माई मै किहि विधि लखऊ गुसाई।'16

माँ से किस विधि से प्रभु का आशाधन करू। इस प्रकार मां को संतो ने ऐसे उच्च स्थान पर बिठा दिया, वह भी तो स्त्री का रूप है, फिर क्यों वह स्त्री के इस रूप की निंदा क्यों नहीं करते दिखे। स्पष्ट है कि संत कवियों को नारी विरोधी कहना ठीक नहीं, उन्हें विरोध था नारी के कुटिल रूप से। मां को उन्होने गुरु जितना उच्च स्थान दिया, जिससे बालक अपनी आरम्भिक शिक्षा लेता है, अपनी मन की उलझनों का समाधान पाता है। मां को उस रूप मे ं दिखाया है जहां वह अपने बच्चो ं को भक्ति मार्ग पर अग्रसर करती नजर आये न कि भटकाती।

स्पष्टतः है कि संत का ज्ञान मार्ग पर चलने में नारी का योगदान मानते रहे है तथा उसका समर्थन चाहते रहे है। जहां एक ओर वो लोगों को कुटिल नारी से दूर रहने की सलाह देते है, दूसरी तरफ वही एक नारी को ही सतमार्ग पर चलने का प्रेरणादायक स्रोत मानते रहे है।

केवल यही नहीं है कि संत कवियों ने केवल कुटिल बुद्वि वाली नारियों की ही निंदा की है बल्कि उन्होने ऐस पुरुषों की भी निंदा की है जो अपने पथ से भ्रष्ट हो जाते है। 'संत दादू' नारी की समाजिकता को स्वीकार करते है। नारी की निंदा करते हुए तो केवल उस रूप में केवल जहां नारी अपना सामाजिक और घरेलू रूप गंवा बैठती है, अपनी मर्यादा का तितांजलि दे देती है। (ऐसी नारी प्रभु भक्ति क्या सामाजिक जीवन में भी बाधक होती है। दादू कहते है कि वह नारी और वेश्या का संग करने वाले पुरुष का रहलोक भी बिगडता है, परलोक भी बिगड़ जाता है –

''घर की नारि त्यागे अंधा। पर नारी सिऊ धातै धंधा

जैसे सिंवुलु देखि सुआ बिगसाना।''17

संत दादू भक्त को केवल भक्त नहीं बल्कि अच्छे सामाजिक की आचार संहिता का भी पारूप प्रस्तुत करते है और उसकी नियंत्रण प्रक्रिया का ध्येय भक्ति का ही है। संत नामदेव की नारी के प्रति सामाजिक दृष्टि का परिचय उनकी माता के रूप पर अगाध आस्था से भी मिलता है। वे अपनी वाणी में ईश्वर की कृपा की समानता मां के वात्सल्य से करते है। वह असीम संत्ता को भी कहकर उसकी उदारता एवं स्नेह का पात्र बनने का प्रयत्न करते है। ईश्वर की कल्पना संतान के अवगुणों को भुल देने ा वाली ममतामयी उदार हदय मां के रूप में करते है और लोक व्यवहार में प्रचलित भाषा में अपने प्रभु से कहते है कि –

''तू माझी माउली भी तो तुझा तान्हा, पाजी प्रेम पान्हा पांडरुगे

तू माझी माउली मी तुझे वासरू। नको पान्हा बोरू पादुरंगे।

तू माझे हिरणी सी तुझे पाउस। तोड़ी भाव पास पांडुरंगे।

तू माझी पक्षिणी मी तुझे अंडज। चारा घाली मज पांहुरंगे।''18

(तू मेरी माँ है, मै तेरा नन्हा बच्चा हूँ। मुझे अपने प्रेम का दूध पिलाओ। तू मेरी गाय है, तेरा बछड़ा हूँ। हे प्रभु, मुझे अपने प्रेम के दूध से वंचित न रखो। तू मेरी हिरणी भी है मैं तेरा शावक हूँ। हे प्रभु मेरी बेदी तोड़ दो। तू मेरी पक्षी मां भी और मैं तेरा छोटा सा पक्षी बच्चा हूँ।)

संत रविदास, दादू व नामदेव भक्ति के साथ साथ सामाजिक जीवन के आधारभूत मूल्यों से भी परिचित है। नारी घृणा, नारी त्याग, उसकी भर्त्सना उनकी दृष्टि का उद्देश्य नहीं बल्कि सन्मार्ग की वह सीमा है जहां नारी के द्वारा उसका उल्यघंन होता है। वहीं नारी के लिये भी वही व्यवस्था विधान है जो पुरुष के लिये है।

गुरु नानक ने नारी के प्रति सहज सहद्यता का प्रदर्शन किया है। सामाजिक प्रश्नों के प्रति उनकी सूझ बुझ अन्य संतों की अपेक्षा अधिक व्यवहारिक और अनुभवपरक प्रतीत होती है। डॉ धर्मपाल मैत्री अपने एक लेख में लिखते है ''गुरु नानक की एक महत्वपूर्ण देन है गृहस्थ जीवन का सामान्य स्थान व नारी का महत्व सिद्धो, नाथो एवं योगियों की गुहय तांत्रिक साधनाओं के कारण नारी अपना महत्व खो चुकी थी।'' उन्होंने ही उपेक्षणीय एवं त्याज्य नारी को गरिमामय माना और उसकी इस गरिमा को स्थिपत करने के लिये समाज की मूल इकाई परिवार की महता को गृहस्थी के रूप में स्वीकार किया। नारी निंदकों से उन्होंने स्पष्ट कहा है–

'भंडि जमिए भंडी निमिए भड मंगण वी माहु।।

भंडहु होते दोसती भंडहु चलै राहू

भंड मुआ भड मालिए भंड होवे बंधान।

से क्या मंदा आखिए जिन जंमहि राजान।''19

जन्म देने वाली भी नारी, सहधर्मिणी भी नारी है। नारी से संसार चलता है, वह राजाओं को जन्म देती है, फिर उसे निंदनीय क्यों माना जाये। इस प्रकार गुरु नानक ने नारी का महत्व स्थापित करते हुए उसे समाज में उचित स्थान की अधिकारिणी माना। विदेशी आक्रमणों के समय उन्होंने अपनी आंखो ं से सारा कोलाहल देखा था। उस आक्रमण में हुयी नारी की दुर्दशा के वह स्वयं साक्षी

रहे थे। वह नारी की पीड़ा को स्वयं महसूस कर रहे थे। यह सब देखकर उनका हदय आघात था। बाबर के आक्रमण से विजित जाति की स्त्रियों की जो दुर्दशा हुई, उसे देखकर गुरु नानक का हदय करूणा से भर उठा।

''जिन सिर सोंहनि पटीआ मांगी पाइ सघूट
से सिर काली मुनिअन्हि गल विचि आतै घूडि।।
महला अंदर होदिया हुणि वहणि न मिल्ट हदूरि।।
शरी छुहारे खांदीया माननि सेजडिया।''
तिनि गलि सिलका पाइया तुटनि मोतसरीआ।।''20

सुदर ढंग से सजाई गई केश राशि में जहां सिंदूर शोभायमान रहता था अब उस केश राशि को काट दिया गया है और धूल बालों में ही नहीं गले तक आ पहुचीं है। जो महलों में रहती थी। इस तरह एक ओर अतचारी नृंशस विदेशियों के अत्याचार और दूसरी ओर तथाकथित तांत्रिकों और कापालिकों की गुहय साधनाओं और सामाजिक वर्चनाओं के बीच पिसी हुयी तिरस्कृत नारी को गुरु नानक का संबल मिला। गृहस्थ जीवन का आदर्शीकरण करके सामाजिक जीवन का पुनरुत्थान करने का प्रयास किया। उन्होंने नारी के अभिजात्य की अम्मुर्यना की। माया की आड़ लेकर अनावश्यक नारी निंदा से परहेज बताया।

निर्गुण संत काव्य की नारी निंदा मूलक अभिव्यक्ति पर तत्कालीन धिर्मक विचारधाराओं का भी प्रभाव पड़ा था। किंतु एक पक्षीय विचारों से संपूर्ण विचाराधारा को परिभाषित करना सर्वथा गलत है। संत कवियों ने नारी के उस रूप की निंदा की है जो समाज में वांछनीय नहीं है जे मर्यादा से परे है और संत नामदेव और दादू ने उस पुरुष की भी निंदा की है जो असामजिक कार्य करता है। परंतु उन्होने नारी के सभी सम्मानजनक रूपों को अपनाया है और उसकी प्रंशसा की है। यह संतों की दोहरी मानसिकता नहीं बल्कि उनके ज्ञान का परिचायक है। वह समाज के हर वर्ग के गुण–अवगुण से परिचित थे और जनता को गलत मार्ग पर जाने से रोक कर सतमार्ग की तरफ अग्रसर करना उनका एकमात्र लक्ष्य था।

डॉक्टर अनिता रानी
मकान नं – 1655, सेक्टर – 4 , रेवाड़ी, हरियाणा
नजदीक जिमखाना क्लब

आधार ग्रंथ :–

1. गुरु गंथ साहिब
2. संत नामदेव, प्रकाशक– राधा स्वामी सत्संग ब्यास

सहायक ग्रंथ :–

1. कबीर वचनावली, संग्रहकर्ता– अयोध्या सिंह उपाध्याय (हरिसांध), संपादक– श्यामसुंदर दास बी.ए., प्रकाशक– काशी नागरी प्रचारिणी सभा, 2003, 9वां संस्करण।
2. संत काव्य, संपादक, परशुराम चतुर्वेदी, 2007
3. उत्तरी भारत की संत परंपरा– परशुराम चतुर्वेदी, प्रकाशक– लीडर प्रैस, प्रयाग, 2001
4. हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, दरियागज, नई दिल्ली (110002), 2015
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी, प्रकाशक– लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज (211001) 2021
6. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ0 बच्चन सिंह, प्रकाशक– राधाकृष्ण प्रकाशक प्राइवेट लिमिटेड, जगतपूरी, दिल्ली (110051), 2021
7. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ नगेन्द्र व डॉ हरदयाल प्रकाशक– मयूर बुक्स, दरिया गंज, नई दिल्ली (110002), 2021
8. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य– डॉ मैनेजर पांडेय, प्रथम संस्करण की भूमिका।

संदर्भ सूची :–

1. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ बच्चन, पृ0– 8
2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास– परशुराम चतुर्वेदी, पृ0 95
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ नगेन्द्र, पृ0 107
4. संतकाव्य– परशुराम चतुर्वेदी, पृ०–17
5. भक्ति आंदोलन व सूरदास का काव्य– मैनेकर पाण्डेय, पृ0–76
6. कबीर वचनावली– हरिऔध, पद संख्या– 555
7. वहीं
8. वहीं, पद संख्या–165
9. वहीं, पद संख्या–372
10. वहीं, पद संख्या–462
11. वहीं, पद संख्या–333
12. वहीं, पद संख्या–792
13. वहीं, पद संख्या–1389
14. वहीं, पद संख्या–1165
15. वहीं, पद संख्या–496
16. वहीं, पद संख्या–632
17. वहीं, पद संख्या–84
18. वहीं, पद संख्या–24
19. गुरु ग्रंथ साहिब, पृ0 973
20. मानव मूल्य, नवल किशोर

डॉ0 अनिता रानी
सहायक प्रोफेसर
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
रेवाड़ी, हरियाणा
रेवाड़ी– 123401

15

रामायण में वर्णित जीवन मूल्यों की वर्तमान प्रासंगिकता

राजीव कुमार, डॉ प्रशांत कुमार

सारांश

रामायण के जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता का विषय केवल आज का नहीं है बल्कि महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण को रचने के बाद से ही हर युग ने अपने युग के अनुरूप रामायण में जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता की तलाश की है। कम से कम 20 शताब्दियों का इतिहास तो हमारे पास है ही। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण की रचना के बाद भारत और भारत की सीमाओं से भी बाहर प्रत्येक शताब्दी में राम कथाएं अपने–अपने ढंग से लिखी जाती रही हैं, किन्तु उन सभी का उद्देश्य केवल रामायण के जीवन मूल्यों की स्थापना ही रहा। ऐसे में आज जब प्रौद्योगिकी क्रांति के बीच जब युवाओं के समक्ष प्रतिदिन नई–नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, तो फिर से प्रश्न उठता है कि क्या रामायण के जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं और यदि हैं तो उनमें हमारे लिए कौन से तत्व, किस प्रकार हमारे उपयोगी हो सकते हैं। रामायण की प्रत्येक शिक्षा मानव–जीवन को बदलने वाली और जीवन को नया दृष्टिकोण देने वाली है।

बीज शब्द – जीवन मूल्य, रामायण, महत्व, पुरूषार्थ, आकलन, धर्म, उत्साह, हौंसला, दृष्टिकोण, मनुष्य

प्रस्तावना –

उदासीन को उत्साह की ओर, पराजित को जीत की ओर ले जाने वाली हैं। आज से नहीं बल्कि सदियों से मनुष्य जब भी हताशा–निराशा से घिरा है तब ही रामायण एक सम्बल बन कर उसके साथ खड़ी हो गई। भारत के साथ–साथ दुनिया भर में रामायण के विविध स्वरूपों का मिलना रामायण और श्रीराम जी की स्वीकार्यता का स्पष्ट प्रमाण है। मुगलकाल में जब भारतीय समाज अपने धर्म से विमुख होने लगा और बेहद हताश होकर उदासीनता के अंधकूप में जाता दिखाई दे रहा था उसी समय गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम जी के व्यक्तित्व को लेकर रामचरितमानस जैसा एक ग्रंथ गढ़ दिया कि फिर से भारतीयों को एक संजीवनी मिली और वे जय श्रीराम कहकर उठ खड़े हुए।

आज हम पाते हैं कि युवा हतोत्साहित होता जा रहा है। उसे दिन–प्रतिदिन बेहतर होने की इच्छा है, वह हो भी रहा है लेकिन फिर भी संतुष्ट नहीं है। केवल 30 वर्ष पहले की तुलना करें तो आज हमारे पास अधिक सुख–सुविधाएं और बेहतर ज्ञान–विज्ञान हैं लेकिन हम संतुष्ट नहीं है। इसका साफ अर्थ है कि सुख–सुविधाएं या अधिक धन हो जाना जीवन में आनंद या खुशी देने का कोई निश्चित साधन नहीं है। पहले हम अधिक धन को कमाने के लिए शरीर को दांव पर लगाते हैं और फिर शरीर को बचाने के लिए धन को दांव पर लगा देते हैं। मानव जीवन में खुशी के दो पल के लिए लगातार भटक रहा है किंतु खुशी उससे कोसों दूर होती जा रही है। आनंद प्रदान करने वाली सफलता तो कोसों दूर है। जिस प्रकार एक बीमार को औषधि की आवश्यकता होती है, हताश मानव को भी अपनी मानसिक निर्बलता के लिए रामायण जी के ज्ञान जैसी औषधि की आवश्यकता है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में ऐसे श्लोकों का चयन किया है जो मानव–जीवन का श्रेष्ठ मार्गदर्शन करते हैं। यहाँ कभी सफल राजा होने का पाठ देखने को मिलता है, कभी मानव–जीवन की कठिन स्थितियों में उनसे निपटने की शिक्षा प्राप्त होती है।

जीवन में पुरुषार्थ

मनुष्य जीवन में किसी भी उपलब्धि के लिए पुरुषार्थ का बहुत महत्व है। रामायण में पुरुषार्थ के महत्व को बार–बार दर्शाया गया है। राम भी पुरुषार्थी हैं और रावण भी अपने पुरुषार्थ पर गर्व करता है किन्तु अन्त में उसी पुरुषार्थ कि विजय होती है जिसके उद्देश्यों में लोक–कल्याण छिपा हुआ होता है। महर्षि वाल्मीकि जिस पुरुषार्थ के विषय में लिखते हैं। जो अपने पुरुषार्थ से दैव (भाग्य) को दबा देने की शक्ति रखता है, वह दैव के द्वारा अपने कार्य में बाधा पड़ने पर खेद नहीं करता अर्थात् हतोत्साहित होकर नहीं बैठता –

दैवं पुरुषकारेण यः समर्थः प्रबाधितुम्।
न दैवेन विपन्नार्थः पुरुषः सोऽवसीदति।।[1]

मनुष्य ईश्वर की अमूल्य कृति है। कई बार मनुष्य के जीवन में कठिन से कठिन चुनौतियां आ जाती हैं। कई बार हमें लगता है कि दुर्भाग्य है कि हमारा पीछा ही नहीं छोड़ता। ऐसे में अनेक लोग इसे नियति मानकर बैठ जाते हैं किंतु पुरूषार्थी पुरूष अपने पौरूष से अपने दुर्भाग्य के लिए चुनौती बनकर अपना सौभाग्य गढ़ लेते हैं। यही सच्चा पुरूषार्थ है।

समय का सम्मान

रामायण में जिन मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया है उनमें समय का सम्मान भी एक है। श्रीराम के राज्याभिषेक से लेकर उनको वनवास तक सभी के लिए समय सुनिश्चित किया गया। सुग्रीव द्वारा वानरों को निश्चित समय के लिए सीता जी की खोज के लिए भेजना, हनुमान जी का निश्चित समय पर संजीवनी बूटी को लेकर आना इत्यादि सभी उदाहरण समय के महत्व पर ही आधारित हैं। रामायण में वर्णित है कि जो रात बीत जाती है, वह लौटकर फिर नहीं आती है। जैसे यमुना जल से भरे हुए समुद्र की ओर जाती ही है, उधर से लौटती नहीं।

अत्येति रजनी या तु सा न प्रतिनिवर्तते।
यात्येव यमुना पूर्णं समुद्रमुदकार्णवम्।।[2]

समय के महत्व को लेकर जो अवधारणा रामायण काल में थी वह आज भी है जीवन में समय का सम्मान करना बहुत आवश्यक है। जो व्यक्ति समय का सम्मान नहीं करता है, तो समय भी उसका सम्मान नहीं करता है। किसी भी कार्य को भविष्य के लिए बचाकर न रखें, प्रयास

करें उसे समय मिलते ही कर डालें क्या पता आने वाले समय में कितनी नई चुनौतियां आपका सामना कर रही हों। थोड़े से साहस, थोड़े से प्रयास और थोड़े से प्रबोधन से हम अपने समय का सदुपयोग कर सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आचरण ही मनुष्य की पहचान

रामायण में जीवन मूल्यों में आचरण को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। आचरणहीन मनुष्य को निकृष्ट और निन्दनीय माना गया है। रामायण में जीवन मूल्यों की धुरी श्रीराम हैं, वे स्वयं सदाचरण के शिखर को स्थापित करते हैं, वहीं सीता जी, भरत, हनुमान आदि पात्र भी अपने– अपने आचरण से लोक को प्रभावित करते हैं। वाल्मीकि जी रामायण में लिखते हैं – मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर है या कार्य अथवा पवित्र है या अपवित्र।

कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।
चारित्रमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाशुचिम्।।[3]

वास्तव में हमारा आचरण हमारे सामाजिक जीवन का सच्चा आधार कार्ड है। जब हम समाज में किसी भी प्रकार का अच्छा या बुरा व्यवहार करते हैं तो उससे लोग हमारे परिवार, जाति, संस्कार आदि का अनुमान कर लेते हैं। ऐसे में मनुष्य को चाहिए कि वह लोक में ऐसा व्यवहार करे जो कभी भी उसके या उसके परिवार के लिए किसी कठिनाई का कारण न बनें। अब तो समाज सोशल मीडिया पर की गई गतिविधियों को देखकर भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आकलन करने लगा है। हमारा अच्छा आचरण ही हमारी सच्ची पहचान बन सकता है।

क्षमतानुसार प्रयास का महत्व

रामायण में एक बात बड़ी महत्वपूर्ण है कि रामायण में प्रत्येक पात्र हमें वही कार्य करता दिखाई देता है जो उसके सामर्थ्य में है। लक्ष्मण इंद्रजीत का वध करते हैं तो श्रीराम रावण का वध करते हैं। यद्यपि रावण से युद्ध करने की आतुरता सुग्रीव, हनुमान और लक्ष्मण सब में है किन्तु राम स्वयं ही अपने हाथ में यह दायित्व लेते हैं। ऐसे ही जब समुद्र को लांघने की बात आती है तो सभी वानर अपनी–अपनी शक्ति का परिचय देते हैं किन्तु वीर जाम्बवान इस कार्य के लिए हनुमान का चयन करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि यह सामर्थ्य केवल हनुमान में ही है। रावण में अपने सामर्थ्य से बाहर होकर श्रीराम से बैर बांधा था इसी कारण उसे मृत्यु का वरण करना पड़ा। वाल्मीकि जी लिखते हैं – पुरुष को उतना ही बोझ उठाना चाहिए जो उसे शिथिल न कर दे और उसी अन्न का भोजन करना चाहिए जो पेट में जाकर पच जाए, रोग न पैदा करे।

स भारः सौम्य भर्तव्यो यो नरं नावसादयेत्।[4]
तदन्नमपि भोक्तव्यं जीर्यते यदनामयम्।।

प्रत्येक व्यक्ति की एक क्षमता होती है। कई बार ऐसा होता है कि हम अपनी ताकत से अधिक कार्य को करने का प्रयास करते हैं और हम असफल हो जाते हैं, इसका कारण है कि हमने अपनी क्षमता और कार्य दोनों के बीच अंतर का सही आकलन नहीं किया था। हम जब भी किसी लक्ष्य को केंद्र में रखें तो अपने वर्तमान सामर्थ्य, वहां तक पहुँचने में उपलब्ध साधन और अपनी बढ़ सकने वाली संभावित क्षमता का आकलन अवश्य एक बार कर लें, तभी लक्ष्य का निर्धारण करें। यदि हम इस प्रकार का आकलन कर लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाएंगें तो निःसंदेह सफलता मिलेगी।

मैत्री धर्म का पालन

रामायण में मैत्री का अलग ही महत्व है। श्रीराम के जीवन में पुरानी मित्रता के प्रति स्नेह और नई मित्रता के प्रति विश्वास का भाव है। जब राम वनवास के लिए जा रहे होते हैं तो वे अपने मित्र राजा गुह से मिलते हैं, उसके बाद वे अग्नि को साक्षी मानकर सुग्रीव से मित्रता करते हैं और युद्ध के मुहाने पर राक्षस कुल में जन्म विभीषण को मित्र बनाते हैं। श्रीराम सुग्रीव और विभीषण दोनों को राजा बनाकर अपनी मित्रता का फल भी प्रदान करते हैं। किष्किंधाकाण्ड में वाल्मीकि जी लिखते हैं – किसी को मित्र बना लेना सर्वथा आसान है परंतु उस मैत्री का पालना या निभाना बहुत ही कठिन है। क्योंकि मन का भाव सदा एक–सा नहीं रहता। किसी के द्वारा थोड़ी–सी भी चुगली कर दिए जाने पर प्रेम में अंतर आ जाता है।

सर्वथा सुकरं मित्रं दुष्करं प्रतिपालनम्।
अनित्यत्वात् तु चित्तानां प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते।।[5]

सामाजिक सम्बंधों में मैत्री का एक अलग ही स्थान है। मित्रता ही एक ऐसा सम्बंध है जो मनुष्य अपने पैमाने पर बनाता है, ऐसे में पहले मित्र बनाने में और फिर मित्रता को निभाने में एक बड़ा दायित्व होता है। मित्रता के सम्बंध को निभाने के लिए मन में स्थिरता और विश्वास का होना बहुत आवश्यक है। मित्रता को लेकर रामायण में वर्णित जीवन–मूल्यों में आज भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। आज भी मित्रता के मूल पैमाने वैसे के वैसे ही हैं। मन में आए विकारों से रहित होकर ही हम मित्रता धर्म का निर्वहन कर सकते हैं।

उत्साह, सामर्थ्य और मनोबल

दक्षिण दिशा में सीता जी की तलाश के लिए गया वानर दल जब हतोत्साहित होने लगता है तब उनका हौंसला बढ़ाने के लिए उनके दल के नेतृत्वकर्ता युवराज अंगद कहते हैं कि उत्साह, सामर्थ्य और मन से पराजित न होना (मनोबल)– ये कार्य सिद्धि कराने वाले सद्गुण कहे गए हैं, इसलिए मैं आप लोगों से यह बात कह रहा हूँ।

अनिर्वेदं च दाक्ष्यं च मनसश्चापराजयम्।
कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद् ब्रवीम्यहम्।।[6]

युवराज अंगद की प्रेरणोक्ति सुनकर वानर दल में फिर से हौंसला आ जाता है और वे सीता जी की तलाश में जुट जाते हैं। हमारे जीवन में कोई भी लक्ष्य क्यों न हो, हमारे समक्ष कोई भी चुनौती क्यों न हों अंगद द्वारा बताया गया यह सिद्धि मंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम लक्ष्य के प्रति हमारे भीतर उत्साह होना चाहिए क्योंकि उत्साह ही यह तय करेगा कि कितने साहस के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकते हैं। दूसरा है सामर्थ्य, उत्साह के साथ–साथ हमारा

समर्थ होना भी आवश्यक है। व्यक्ति अपने बल के आधार पर ही किसी कार्य को कर सकता है। समुद्र को देखकर चिंतित रामादल में वयोवृद्ध जामवंत ने हनुमान जी को ही क्यों कहा था – 'का चुप साधि रहा बलवाना', क्योंकि जामवंत जानते थे कि उत्साह तो सभी वानरों में है किंतु समुद्र को उड़कर पार करने का सामर्थ्य केवल और केवल हनुमान जी में है। ऐसे में हमारे समक्ष लक्ष्य कोई भी हो उत्साह के साथ–साथ हमारे भी सामर्थ्य या फिर सामर्थ्य को उस लक्ष्य के हिसाब से बढ़ाने की क्षमता भी होनी चाहिए। लक्ष्य सिद्धि के लिए तीसरी महत्वपूर्ण बात है कि मन से पराजित न होना। कहा भी है कि 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। जो व्यक्ति कठिन चुनौतियों में भी मन से पराजित नहीं होता है, एक न एक दिन सफलता अवश्य ही उसके पैर छूती है।

सफलता के चार सिद्धांत

रामायण की यही विशिष्टता है कि यहां मानव के व्यक्तित्व से जुड़ी शिक्षाएं कभी वानर देते हैं, कभी पर्वत और कभी पशु–पक्षी भी। महर्षि वाल्मीकि जी को जहां भी लगा कि मानव को ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए, उन्होंने उस स्थिति के निकटतम उपमान पर प्रयोग कर लोक व्यवहार और व्यक्तित्व विकास की शिक्षा दी हैं। यहां हनुमान जी की सफलता पर आकाश में विचरने वाले पक्षी ही बोल पड़ते हैं। वे कहते हैं कि धैर्य को धारण करना, समुचित दृष्टि से स्थिति को परखना, बुद्धि का उपयोग करना और स्थिति से निकल आने की कुशलता ये हमें प्रत्येक सफलता को प्राप्त करने में हमारे सहयोगी होती हैं। रामायण में वर्णित है – जिस पुरुष में आपके समान धैर्य, दृष्टिकोण, बुद्धि और कुशलता– ये चार गुण होते हैं, उसे अपने कार्य में कभी भी असफलता नहीं प्राप्त होती।

यस्य त्वेतानि चत्वारि वानरेन्द्र यथा तव।[7]
धृतिर्दृष्टिर्मतिर्दाक्ष्यं स कर्मसु न सीदति।।

रामायण की ये प्रेरणादायी शिक्षाएं आज भी पेशेन्स, एंगल ऑफ विजन, ब्रेन और स्किल के रूप में प्रत्येक मोटिवेशनल स्पीकर के भाषणों में और मोटिवेशनल पुस्तकों में देखने को मिलती हैं। जैसे–जैसे विज्ञान तेजी से प्रगति कर रहा है और युवाओं पर सफलता का दबाए बढ़ता जा रहा है ऐसे में इस शिक्षाओं का महत्व और अधिक बढ़ गया है। यही रामायण जी की प्रासंगिकता भी है। हमारी अनेक चिंताओं का समाधान रामायण की शिक्षाओं में छिपा हुआ है।

चुनौतियों के बीच आवश्यक है स्वप्रेरणा

ऐसा नहीं है कि प्रत्येक स्थिति में हमारे साथ हमारे माता–पिता, गुरूजन, मित्र या कोई अन्य शुभचिंतक उपस्थित ही हो और आपका मार्गदर्शन करता रहे। जीवन में ऐसे अनेक समय आते हैं जब व्यक्ति के पास कोई सलाहकार या सहयोगी नहीं होता और निराशा के बादल उसे घेर लेते हैं, ऐसे में उसे स्वयं ही निर्णय लेकर जीवन की कठिन डगर पर आगे बढ़ना होता है। हनुमान जी जब सीता जी की तलाश में समुद्र को लांघ कर लंका में पहुँच जाते हैं। वे रावण के अंतपुर से लेकर लंका नगरी की गली–गली में सीता जी को तलाशते हैं किन्तु उन्हें सीता जी कहीं नजर नहीं आती। वे निराश हो जाते हैं किन्तु किन्तु कुछ क्षण बाद फिर से अपने को प्रेरित करते हैं। हनुमान जी स्व चिंतन करते हैं – – हताश न होकर उत्साह बनाए रखना ही सम्पत्ति का मूल कारण है। उत्साह ही परम सुख का हेतु है, अतः मैं पुनः उन स्थानों पर खोज करुँगा, जहाँ अब तक तलाश नहीं की है। उत्साह ही हमेशा प्राणियों को सब प्रकार के कर्मों में प्रवृत्त करता है। उत्साह उन्हें उस कार्य में सफलता प्रदान करता है जो वे करते हैं।

अनिर्वेदः श्रियो मूलमनिर्वेदः परं सुखम्।[8]
भूयस्तत्र विचेष्यामि न यत्र विचयः कृतः।।
अनिर्वेदो हि सततं सर्वार्थेषु प्रवर्तकः।
करोति सफलं जन्तोः कर्म यच्च करोति सः।।

रामायण में वर्णित इन शिक्षाओं से लेकर आज तक मानव ने न जाने कितनी चुनौतियों का सामना किया है किन्तु चुनौतियों से निपटने का स्वप्रेरणा रूपी यह सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। यदि मनुष्य को अपने जीवन पथ पर सफलता अर्जित करनी है तो स्वप्रेरणा का यह मूल सिद्धांत सीखना ही होगा। जब भी कठिन चुनौती मनुष्य सामने हो तो वह स्वयं से बात करे, स्वयं को प्रेरित करे और स्वयं को अपने सामर्थ्य का अनुमान कराए। यदि मनुष्य ने स्वयं को प्रेरित कर लिया तो उसे कभी किसी अनावश्यक सहारे की आवश्यकता नहीं रह जाएगी।

यदि अगर – मगर तो फिर कठिन डगर

यदि हम अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं तो हमें अगर – मगर से बाहर निकलना होगा। संशय जीवन को कठिन कर देता है। यदि हम प्रत्येक बात में संशयी हैं तो यह हमारी निर्णय शक्ति पर भी प्रश्नचिन्ह है। संशयी व्यक्ति अपनी निर्णय शक्ति खो देता है, जिससे वह गलत निर्णय ले लेता है। निम्नोक्त श्लोक उस समय का जब हनुमान जी अशोक वाटिका में होते हैं, वे असमय राक्षसों से युद्ध नहीं करना चाहते क्योंकि उनका लक्ष्य कुछ और है। वे सोचते हैं – युद्ध अनिश्चात्मक होता है और मुझे संशययुक्त कार्य प्रिय नहीं है। कौन ऐसा बुद्धिमान होगा, जो संशय रहित कार्य को संशय युक्त बनाना चाहेगा।

असत्यानि च युद्धानि संशयो मे न रोचते।[9]
कश्च निःसंशयं कार्ये कुर्यात् प्राज्ञः ससंशयम्।।

रामायण का यह जीवन–मूल्य मनुष्य को संशय रहित होकर लक्ष्य की ओर बढ़ने की सीख देता है। आज प्रतिस्पृधी युग में जब व्यक्ति अपने जीवन के सही उद्देश्य की पहचान नहीं कर पा रहा है और उसके समक्ष केवल दुविधा ही नहीं बल्कि अनेक रास्ते खड़े हैं तब भ्रम और अधिक बढ़ गया है। ऐसे में चाहिए कि वह स्व विवेक से संशयरहित होकर अपने लक्ष्य को सुनिश्चित कर पूर्ण शक्ति से उसकी ओर बढ़े।

यथासमय और यथाक्रम हो कार्य

मनुष्य के जीवन में जितनी भूमिका उपयोगितापूर्ण कार्यों की है उतनी भी भूमिका उन कार्यों के व्यवस्था क्रम की भी है। जीवन में प्रत्येक कार्य का एक समय होता है और प्रत्येक कार्य का एक क्रम होता है। सही समय पर और क्रम के अनुसार किए गए कार्यों की ही हमारे शास्त्रों द्वारा प्रशंसा की गई है। भारतीय जीवन में चार आश्रमों की व्यवस्था भी पूर्वकाल में इसीलिए की गई थी। सही आयु में क्रमानुसार आने वाले आश्रम का अनुसरण ही भारतीय परम्परा का हिस्सा रहा है। यदि आयु ब्रह्मचर्य की है तो किसी बालक को गृहस्थ आश्रम से जो नहीं जोड़ा जा सकता। रामायण में यहाँ कुम्भकर्ण अपने भाई रावण को सीख देता है कि उसके द्वारा किया गया कार्य न्यायोचित नहीं है। कुम्भकर्ण कहता है – जो पहले करने योग्य कार्य को बाद में करना चाहता है और बाद में करने योग्य कार्य को पहले ही कर डालता है, वह नीति और अनीति को नहीं जानता।

यः पश्चात् पूर्वकार्याणि कर्माण्यभिचिकीर्षति।[10]

पूर्वे चापरकार्याणि स न वेद नयानयौ।।

रामायण आज भी हमें यही सीख दे रही है कि हमें भी अपने जीवन में बुद्धि का अनुसरण कर अपनी प्राथमिकताएं तय करनी चाहिए। उचित और अनुचित को दृष्टिगत रहते हुए पहले करने योग्य कार्य को पहले ही करना सही रहता है और बाद में करने योग्य कार्य को बाद में करना। यही नीति का मार्ग है।

निष्कर्ष – रामायण में वर्णित उपरोक्त श्लोकों और उनमें निहित शिक्षाओं के आधार पर देख सकते हैं कि भले ही महर्षि वाल्मीकि रामायण के काल से लेकर अब तक दुनिया में बहुत कुछ बदल गया हो लेकिन जीवन की चुनौतियां और जीवन से जुड़े हुए मूल्य लगभग वैसे के वैसे ही हैं। आज भी रामायण के जीवन मूल्यों का अनुकरण हमारे समक्ष आई चुनौतियों से निपटने में सहायक सिद्ध हो सकता है। आवश्यकता है कि हम फिर अपने इस गौरवपूर्ण ग्रंथ का नई चुनौतियों के हिसाब से पुनर्पाठ करें। रामायण में आज भी वह सामर्थ्य है कि वह हमारी समस्याओं का निदान कर हमारा सही मार्गदर्शन कर सकती है। निःसंदेह रामायण के जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ –

1 – **श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण** – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

अयोध्याकाण्ड, सर्ग – 23, श्लोक – 17, पृष्ठ संख्या – 255

2 – **श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण** – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

अयोध्याकाण्ड, सर्ग– 105, श्लोक – 19, पृष्ठ संख्या – 459

3 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

अयोध्याकाण्ड, सर्ग– 109, श्लोक – 4, पृष्ठ संख्या – 466

4 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

अरण्यकाण्ड, सर्ग – 50, श्लोक – 18, पृष्ठ संख्या – 607

5 – **श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण** – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

किष्किंधाकाण्ड, सर्ग – 32, श्लोक – 7, पृष्ठ संख्या – 769

6 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

किष्किंधाकाण्ड, सर्ग – 49, श्लोक – 6, पृष्ठ संख्या – 811

7 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

सुंदरकाण्ड, सर्ग – 1, श्लोक – 201, पृष्ठ संख्या – 859

8 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

सुंदरकाण्ड, सर्ग – 12, श्लोक – 10,11 , पृष्ठ संख्या – 893

9 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

सुंदरकाण्ड, सर्ग – 30, श्लोक – 35, पृष्ठ संख्या – 941

10 – श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – महर्षि वाल्मीकि प्रणीत, (अनुदित)

प्रकाशक – गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष – 1978

युद्धकाण्ड, सर्ग – 12, श्लोक – 32, पृष्ठ संख्या – 1079

– **राजीव कुमार उपाध्याय**,

शोधार्थी,

विभाग – स्कूल ऑफ लिबरल आर्टस एण्ड लैंग्वेजेज,

शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह (सहारनपुर)

– **डॉ प्रशांत कुमार**,

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, शोभित विश्वविद्यालय, गंगोह (सहारनपुर)

पत्राचार का पता – राजीव उपाध्याय यायावर, पत्रकार एवं लेखक

ग्राम एवं पत्रालय – सौराना, जिला – सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, पिनकोड – 247232

मोबाईल नम्बर – 09358445959,

ईमेल – rajeevupadhyaypress1983@gaill.com

16

मृच्छकटिकम् में नारी विमर्श – एक अध्ययन

डॉ0 सोनिया चौहान

सारांश

नारी समाज का दर्पण है। नारी विहीन घर भूतो का डेरा होता है, ऐसा शास्त्रों में गया है। स्त्री से ही पुरुष का जीवन है। समाज में नारी को कन्या, पत्नी, आदि अनेक रूपों में देखा जाता है। नारी का माता रूप सर्वोपरि है। माता के सिवाय कोई दूसरा प्रथम गुरु नहीं हो सकता। नारी को लक्ष्मीरूपा, सर्वपूज्या बताया है। काव्यों में नारी के कुलवधू, वै या, गणिका आदि भिन्न–भिन्न रूपो को दर्शाया है।

संस्कृत वाङ्गमय में काव्य वह विद्या है, जो आत्मानुभूति कराती है। विश्वनाथ के अनुसार **'वाक्यं रसात्मकम् काव्यम्'**[1] अर्थात् काव्य की इस परिभाषा के अनुसार रस काव्य की आत्मा है।

संस्कृत साहित्य के विद्वानों ने काव्य के दो रूप बताये हैं – **1. दृश्य काव्य 2. श्रव्यकाव्य,**[2] जिन काव्यों का रंगमंच पर अभिनय किया जाता है, वे दृश्य काव्य कहलाते हैं। ये दृश्य काव्य दो प्रकार के होते है–रूपक और उपरूपक इस प्रकार कहा भी गया है –

'अवस्थानुकृतिनाटयं रूपं दृश्यतो च्यते
रूपकं तत्समावेशाद्दश द्यैव रसाश्रय।।'[3]

रूपक को रस भाव आदि का आश्रय माना गया है। इस प्रकार यह रूपक 10 प्रकार का होता है –

'नाटकमथ प्रकरणं भाण व्यायोग संमवकारडिमाः
ईहामृगाङ्ग वीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश ।।'[4]

संस्कृत के साहित्यग्रन्थों के अनुसार नाटक रूपक का ही एक प्रकार है, लेकिन मातृ भाषा हिन्दी में सभी रूपक काव्यों को नाटक कह दिया जाता है। रूपक का ही एक प्रकार ''प्रकरण'' कहलाता है।

संस्कृत साहित्य के कालिदास, भवभूति, शूद्रक आदि नाटककारों में शूद्रक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका मृच्छकटिकम् अपने प्रकार का
अनुपम रूपक है। संस्कृत नाट्य साहित्य में यह एक ऐसी अद्भुत रचना है, जिसमें जनजीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है। मृच्छकटिकम संस्कृत का एकमात्र यर्थाथवादी रूपक है। कालिदास और भवभूति के काव्यों में हमें भावना का उदात्त वातावरण मिलता है, जबकि मृच्छकटिकम् मे जीवन की कठोर वास्तविकता के दर्शन होते हैं।[5] यहां चोर, जुआरी धूर्त, राजसेवक, भिक्षु, पुलिस, कर्मचारी, दरिद्र नायक, उदार गणिका, कुलवधू आदि का सुन्दर चित्रण मिलता है

शूद्रक विरचित प्रकरण में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाज में नारी की स्थिति, नारी, शिक्षा तथा सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता का सुन्दर चित्रण मिलता है। वैदिक काल से ही नर और नारी को समाज में सृष्टिकर्ता कहा है। स्त्रियों को गृहलक्ष्मीरूपा और सर्वपूज्या बताया है। मनु ने कहा है, जहाँ नारियों का आदर एवं सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। और जहाँ उनको अपमान व अनादर की दृष्टि से देखा जाता है वहाँ सभी कार्य निष्फल हो जाते है, जैसे कहा भी गया है–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्नु पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।'[6]

परन्तु बदलते समय के साथ–साथ नारियों की स्थिति में परिवर्तन आया मृच्छकटिकम् के समय तक नारियों की स्थिति ऐसी नही रही जैसी वैदिक कालीन समाज में थी। इस समय में वह देवी न रहकर गृहणी मात्र ही रहीं। मृच्छकटिकम् के अध्ययन से स्पष्ट है कि उस समय नारियों की दो श्रेणिया थी, कुलस्त्री एवं गणिका। इस रूपक में नायक चारुदत्त की पत्नी द्युता कुलस्त्री है, और प्रेमिका वेश्या वसन्तसेना है। प्राचीन काल से ही समाज में नारी का वेश्या रूप भी प्रचलित था। भोग विलासी राजा अपनी काम भावना को तृप्त करने के लिए गणिकाओं को अपने महलों में स्थान देते थे परन्तु समाज में इन वैश्याओं को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। मृच्छकटिकम् से विदित होता है कि–

एता हसन्ति च रुदन्ति च वित्तहेतो
विंश्वासयन्ति पुरुषं न तु विश्वसन्ति
तस्मान्नरेण कुलशीलसमन्वितेन
वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्णनीयाः।।[7]

अर्थात वेश्याओं को धन के लिए रोने वाली, हसनेवाली, पुरुषो को विश्वास दिलाने वाली व स्वयं किसी पर विश्वास नहीं करने वाली कहा जाता रहा है। लेकिन सभी गणिकाएँ समान नहीं होती कुछ गुणों को गृहण करने वाली होती हैं। मृच्छकटिकम् में गणिका वसन्तसेना दरिद्र चारुदत्त के सदाचारी व्यक्तित्व से प्रेम करती है और धन सम्पन्न राजा के साले शकार से घृणा करती है।[8]

बसन्तसेना गणिका होते हुए भी उच्चकोटी के गुणो से युक्त है। जब वह राजपथ पर भ्रमण करती है, तब राजश्याला शकार उसका पीछा करता है लेकिन वसन्तसेना उसको पसन्द नही करती तो विट गणिका की प्रसंसा मैं कहता है– **'रत्नं रत्नेन संगच्छते'**[9] भास के समय में स्त्रियां अर्थोपार्जन नहीं करती थी लेकिन गणिका स्वयं अर्थोपार्जन करती थी। वे समृद्धिशाली होती थी। मृच्छकटिकम् में वसन्तसेना धन सम्पन्न है। ''जब संवाहक द्यूत क्रीड़ा में सब कुछ हार जाता है, तो वसन्तसेना ही उसको धन देकर कर्जमुक्त कराती है।''[10]

कुलवधू की श्रेणी में आने वाली नारियाँ प्रायः स्वभाव से कोमल

व अपने घर को सुशोभित करने वाली होती हैं। लज्जा रूपी गुण जो नारी का आभूषण कहा जाता है, वह इस वर्ग की नारी में विद्यमान था। मृच्छकटिकम् में कुलवधू द्यूता पति को चोरी के कलंक से बचाने के लिए अपनी बहुमूल्य रत्नावली देती है। इससे प्रतीत होता है कि इस युग में नारी को उन्नत स्थान प्राप्त था। पत्नी अपने पति के लिए महान त्याग करने को तत्पर रहती थी। पति परमेश्वर की भावना इस वर्ग की नारियों में विद्यमान थी। ''प्रतिमानाटकम् में कुल स्त्री का साक्षात् उदाहरण परिलक्षित होता है– ''सीता वन जाते हुए राम का अनुसरण करती है।[11]

मृच्छकटिकम् से भी साक्षात् प्रमाण प्राप्त होता है कि चारुदत्त की पत्नी अपने पति के मृत्युदण्ड का समाचार सुनकर अग्नि में प्रविष्ट होने का निश्चय करती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में पत्नी को पति के बिना आदरणीय स्थान प्राप्त नही होता रहा है। पति के अभाव में जीवन व्यतीत करने से अच्छा वे मृत्यु को प्राप्त हो जाना. चाहती थी। कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम में '**पुनर्नवीकृत वैधव्य दुखया**'[12] कहने से विधवा की दयनीय अवस्था स्पष्ट होती है।

मृच्छकटिकम् मे वसन्तसेना को विभिन्न कलाओं में दक्ष बताया गया है। इसके साथ–साथ कुल स्त्री, द्यूता को धैर्यवान, परोपकारी, सदाचारी सभी गुणो से विभूषित बताया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस समय की नारियों को संगीत आदि विभिन्न कलाओं की व्यवहारोपयोगी शिक्षा के साथ–साथ लिखने, पढ़ने की शिक्षा भी दी जाती थी, क्योंकि महाकवि कालिदास को नाटको में भी अनेक शिक्षित नारियों का उल्लेख मिलता है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में 'शकुन्तला की सखिया उससे दुष्यन्त को पत्र लिखने को कहती है।'[13]

संस्कृत में कोई ऐसा नाटक नही जिसमें समाज के दोनो वर्गो निम्न वर्ग व उच्च वर्ग को एक साथ चित्रित किया गया हो, मृच्छकटिकम् मे यह दर्शनीय है।

निष्कर्ष रूप में यही कहूंगी कि महाकवि कालिदास, भास, शूद्रक के समय में समाज में नारी की सामाजिक स्थिति प्रायः समान थी उस समय सती प्रथा, पर्दा प्रथा का प्रचलन था। स्त्री को पुरुष के समान स्वतन्त्रता नही थी। आज बदलती परिस्थितियों के अनुसार सामान्य जनजीवन में प्रचलित संस्कृतियाँ भी बदलती गयी। सती प्रथा पूर्णरूप से समाप्त हो गयी है। पर्दा प्रथा कुछ स्थानों पर ही देखने को मिलती है। वर्तमान में नारियाँ सामाजिक व आर्थिक रूप से भी स्वतन्त्र है। वर्तमान समय में नारिया पुरुषो की बराबरी कर रही है। गाड़ी के दो पहियों की भाँति पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

सन्दर्भ सूची

[1] साहित्य दर्पण (काव्य स्वरूप निरुपण) प्रथम परिच्छेद

[2] दृश्य श्रव्यभेदेन..... मतम्। साहित्यदर्पण 6/1

[3] दशरूपक 1/7

[4] साहित्य दर्पण 1/3

[5] संस्कृत साहित्य का वि०इ0

[6] मनुस्मृति 18/99

[7] मृच्छकटिकम् 4/14

[8] मृच्छकटिकम् – अष्टम् अंक

[9] मृच्छकटिकम् – प्रथम अंक 1/32 के बाद पृ० 28

[10] मृच्छकटिकम् – द्वितीय अंक

[11] ब्रजतु चरतु .....हि वार्य प्रतिमानाटकम् 1/25

[12] मालविकाग्निमित्रम् – पंचम अंक

[13] अभिज्ञानशाकुन्तलम् – प्रथम अंक

पत्र व्यवहार का पता –

डॉ0 सोनिया चौहान

पत्नी पुनीत चौहान

(पुनीत ट्रेडर्स) हसनपुर रोड अल्लीपुर चौपला गजरौला

जनपद अमरोहा पिन कोड – 244235

मो0नं0 9756168997

17

महिलाओं के विरूद्ध अपराधों के प्रकार एवं कानूनी धाराएं: पानीपत नगर का एक अध्ययन

हेमलता, डॉ0 प्रदीप

सारांश

शोध सार : यह शोध पत्र भारतीय समाज में महिलाओं के विरूद्ध अपराध के मुद्दों से संबंधित है। हरियाणा ने हरित क्रांति में भारी योगदान दिया है और भारत में खाद्य धन और कृषि खपत का सबसे बड़ा योगदानकर्ता रहा है। गोवा और दिल्ली के बाद देश में इसकी प्रति व्यक्ति आय तीसरी सबसे ज्यादा है। हरियाणा आर्थिक रूप से एक प्रगतिशील राज्य है लेकिन सामाजिक मोर्चे पर यह अभी भी पिछड़ा और पितृसत्तात्मक है। इसमें वर्तमान में 22 जिलें शामिल हैं जिनमें से 19 जिलों में 880 से कम यौन अनुपात है। जनगणना 2011 के अनुसार इसमें सबसे कम लिंग अनुपात (877) और सबसे कम बाल लिंग अनुपात (830) है। हरियाणा राज्य में महिलाओं की स्थिति कम है, महिलाओं के विरूद्ध अपराध अधिक होने की संभावना है। पितृसत्ता का प्रतिबिंब और बड़े पैमाने पर समाज पर इसका प्रभाव हमारे आंकड़ों में बहुत स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त, रिपोर्ट किए गए मामले वास्तविक संख्या से बहुत छोटे हैं, क्योंकि अधिकारियों के नोटिस में कुछ अपराधों को कम करना उन महिलाओं की छवि को खराब कर देगा जो खुद पीड़ित हैं। इस प्रकार वर्तमान शोध पत्र का विषय हरियाणा राज्य के पानीपत नगर में महिलाओं के विरूद्ध अलग–अलग प्रकार के लिंग अपराध/हिंसा पर आधारित है।

शब्द कुंजी: महिलाओं के विरूद्ध अपराध, हरित क्रांति, पितृसत्तात्मक, पानीपत नगर

परिचय :–

महिलाओं के विरुद्ध अपराध उनकी स्थिति और समाजी अधिकारों का उल्लंघन हैं। इनमें शामिल हैं बलात्कार, छेड़खानी, दहेज प्रताड़ना, घरेलू हिंसा और अधिकृत निकटता। महिलाएं इन अपराधों की शिकार बनकर अपने जीवन की खुशी और स्वयं संरक्षण के अधिकार से वंचित हो जाती हैं। इसका मूल कारण समाज में महिलाओं के स्थान पर असंवेदनशील प्रवृत्तियों की बढ़ती गिरावट है। इस समस्या का समाधान शिक्षा, समाज सुधार, संस्थागत सुधार, सशक्तिकरण से संभव है। जब कोई व्यक्ति अपराध करता है तो उसको कई परेशानियों से गुजरना पड़ता है। वह समाज की नजरों में गिर जाता है। जब कोई अपराध करने से पहले यह सोच ले कि अगर मैंने यह अपराध किया तो मुझे सजा हो सकती है, तो वह व्यक्ति अपराध करने से बच सकता है। अपराध के पीछे इंसान की सोच होती है। व्यक्ति जो सोचता है वहीं वह करता है। जब कोई व्यक्ति अपने फायदे के लिए दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाता है तो जरूर उस व्यक्ति से अपराध होने की संभावना होती है। जब कोई व्यक्ति अपने फायदे के लिए दूसरे का खून कर दे तो वह बहुत बड़ा अपराधी बन जाता है। बड़े–बड़े शहरों में यह भी देखने को मिलता है कि बसों में महिलाओं और लड़कियों को परेशान किया जाता है और कुछ महिलाएं तो इसके विरूद्ध आवाज उठाती हैं और अपराधियों को सजा दिलाकर अपना फर्ज निभाती है। आज हम देख रहे हैं कि महिलाओं पर तरह–तरह के अपराध किए जा रहे हैं। जब किसी लड़की का विवाह होता है और वह अपने पति के घर जाती है तो उसको प्रताड़ित किया जाता है। कई बार तो यह देखने को मिलता है कि उस लड़की को खूब मारते हैं और जब वह लड़की अपने घर से पैसे लाना बन्द कर देती है तो लड़की को जला दिया है। यह महिलाओं के साथ घटने वाला सबसे बड़ा अपराध है। थामसन रायटस फाउंडेशन के एक सर्वे में महिलाओं के प्रति यौन हिंसा और सैक्स बाजारों में धकेले जाने के आधार पर भारत को सबसे खतरनाक बताया गया। आतंकवाद से प्रभावित अफगानिस्तान और युद्धग्रस्त सीरिया क्रमशः दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं। पाकिस्तान छठे नम्बर पर जबकि अमेरिका दसवें नंबर पर है।

सर्वे में महिलाओं के अधिकारों पर काम करने वाले करीब 550 विशेषज्ञ शामिल हुए थे। इन्हें 193 देशों में महिलाओं के लिए बदतर देशों में टॉप 10 रैंक देने को कहा गया था। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत में 2011 से 2021 के बीच महिलाओं के खिलाफ अपराध में 80 फीसदी बढ़ोतरी हुई है। वहां हर घण्टे चार बलात्कार के मामले दर्ज होते हैं। नैशनल क्राइम ब्यूरो के अनुसार यहां रोजाना 100 से भी अधिक यौन शोषण के केस दर्ज होते हैं। 2001 में हुए सर्वे के मुताबिक अफानिस्तान, कॉन्गो, पाकिस्तान, भारत और सोमालिया महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक देश माने गए थे लेकिन वर्तमान समय में बढ़ते अपराधों के मामले में भारत आगे निकल गया है। जिस समय मानव की रचना हुई है अर्थात् मनुष्य ने अपना सामाजिक संगठन प्रारम्भ किया उसी समय से उसने अपने संगठन को सुरक्षित रखने के लिए कानून बनाए और उन कानूनों को मानना ही श्रेष्ठकर बताया। लेकिन उसी समय से ही कानूनों के विरूद्ध काम करने वाले भी पैदा हो गए और जब तक मनुष्य की प्रवृति ही न बदल जाए ऐसे व्यक्ति बराबर पैदा होते रहेंगे। गैरो फालो अपराध को मनोविज्ञान का विषय मानते हैं। उनके अनुसार चार प्रकार के अपराधी होते हैं– हत्यारे, उग्र अपराधी, संपत्ति के विरूद्ध तथा कामुक वासना के अपराधी। इनके मत से प्राणदंड, आजन्म कारागार या देश निकाला ये तीन सजाएं होनी चाहिए। आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में मनुष्य की आकांक्षाएँ असीमित हो गई हैं। वह सारी सुख–सुविधाएँ पाना चाहता है। मनुष्य की प्रवृति में आए इस बदलाव के कारण ही आज समाज में

अपराधों की संख्या और गंभीरता में भी लगातार वृद्धि हो रही है। आजकल बलात्कार और हत्या जैसी घटनाएँ उग्र रूप धारण कर रही हैं।

शोध की समस्या :–

देश में अपराध बहुत ज्यादा बढ़ रहा है और साथ–साथ हमारे अध्ययन क्षेत्र में भी अपराध काफी बढ़ रहा है।सरकारी ऑकड़ों के मुताबिक हर घण्टें चार बलात्कार दर्ज होते हैं। नैशनल क्राइम ब्यूरो के अनुसार यहां रोजाना 100 से भी अधिक यौन शोषण के केस दर्ज होते हैं। समाज में अपराधों की संख्या और उनकी गंभीरता में भी लगातार वृद्धि हो रही है।

आजकल बलात्कार जैसी घटनाएं दिन–प्रतिदिन उग्र रूप धारण कर रही हैं। इसीलिए मैंने अध्ययन के लिए इस विषय को चुना ताकि स्थान विशेष को चिन्हित किया जा सके जिससे वहां पर हो रहे अपराधों के पीछे के कारणों का पता चल सके। इसी कारण अध्ययन में इस विषय की आवश्यकता महसूस हुई और मैंने शोध के लिए इस विषय को चुना।

अध्ययन का महत्त्व :–

महिलाओं के विरुद्ध अपराध अध्ययन का महत्व हमारे समाज में महिलाओं की सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए बहुत अधिक है। यह अध्ययन महिलाओं की समस्याओं को समझने और समाज में स्थायी समाधानों की खोज करने में मदद करता है।

इस अध्ययन के माध्यम से, महिलाओं के अधिकारों की पूरी समझ, अपराध करने वालों के धार्मिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का पता चलता है। इससे महिलाओं के खिलाफ जानलेवा अपराधों को रोका जा सकता है और महिलाओं को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं। इस अध्ययन का महत्व इस समय ज्यादा है, जब महिलाओं के विरुद्ध अपराधों की रिपोर्टिंग दर बढ़ती जा रही है।

यह अध्ययन महिलाओं को उनकी समस्याओं को पेश करने का एक संरचित माध्यम भी प्रदान करता है, जिससे उन्हें सही समय पर सही सलाह मिल सकती है। इससे न केवल महिलाओं के अधिकारों की समझ और उनकी सुरक्षा होगी, बल्कि समाज के लिए भी इससे फायदा होगा। इससे महिलाओं का सम्मान बढ़ेगा, उनकी समस्याओं का समाधान होगा और समाज में समता भी बढ़ेगी।

अध्ययन क्षेत्र :–

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र पानीपत नगर है। यह भारत के हरियाणा राज्य में स्थित पानीपत जिले का एक नगर है। 1 नवंबर 1989 को तत्कालीन करनाल जिले से पानीपत जिला बनाया गया था। 24 जुलाई, 1991 को इसे फिर से करनाल जिले में मिला दिया गया था। 1 जनवरी, 1992 को यह फिर से एक अलग जिला बन गया। पानीपत हरियाणा के पूर्वी भाग में ग्रैंड ट्रंक रोड पर स्थित है। पानीपत नगर का भौगोलिक विस्तार 29°09′15″ उत्तरी अक्षांश से 29°27′25″ उत्तरी अक्षांश तथा 76°17′6″ पूर्वी देशांतर से 76°18′15″ पूर्वी देशांतर है। यह राज्य की राजधानी चंडीगढ़ से लगभग 165 किमी. दक्षिण और दिल्ली से लगभग 85 किमी उत्तर में है। पानीपत नगर का कुल क्षेत्रफल 62 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 32 नगरपालिका वार्ड में 2,94,292 (2011 की जनगणना) जनसंख्या निवास करती हैं।

मानचित्र 1: अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति

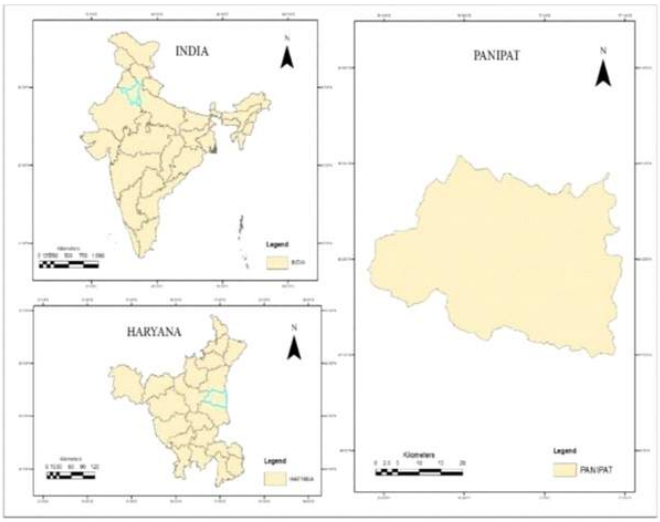

स्त्रोतः– भोधार्थी द्वारा आर्क–जीआईएस की सहायता से र्निमित

महिलाओं के विरुद्ध अपराधः

महिलाओं के विरूद्ध निम्न प्रकार के अपराध दृष्टि गोचर होते हैं। जिनका विवरण निम्न प्रकार से हैः

अपहरणः अपहरण शब्द का अर्थ भारत से अपहरण या वैध संरक्षकता से अपहरण है। आईपीसी की धारा 360 में कहा गया है कि जो कोई भी किसी व्यक्ति को उसकी सहमति के बिना भारत से बाहर ले जाता है, उसे भारत से उस व्यक्ति का अपहरण कहा जाता है और जो कोई भी नाबालिग (पुरुष के मामले में 16 वर्ष और महिला के मामले में 18 वर्ष) को उसकी सहमति या अभिभावक की सहमति के बिना ले जाता है, उसे वैध संरक्षकता से उस व्यक्ति का अपहरण कहा जाता है (धारा 361)। इस उद्देश्य के लिए सजा 7 साल तक की है और जुर्माना है। आईपीसी की धारा 366 में अपहरण, अपहरण या महिला को शादी और जबरन यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर करना परिभाषित किया गया है जिसके लिए अपराधी को 10 साल तक की कैद और जुर्माने से दंडित किया जा सकता है।

छेड़ छड करना : ईव टीजिंग एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल पुरुषों द्वारा महिलाओं के साथ सार्वजनिक रूप से यौन उत्पीड़न या छेड़छाड़ के लिए किया जाता है। यह आज के युवाओं में एक समस्या है। यह यौन आक्रामकता का एक रूप है जिसकी गंभीरता यौन टिप्पणियों, छेड़छाड़ और छेड़छाड़ से लेकर छेड़छाड़ तक होती

है। आईपीसी की धारा 509 में कहा गया है कि जो कोई भी किसी महिला की गरिमा को ठेस पहुँचाने का इरादा रखता है, कोई शब्द बोलता है, कोई आवाज या इशारा करता है या कोई ऐसी वस्तु प्रदर्शित करता है जो ऐसी महिला की निजता में दखल देती है, उसे 3 साल तक की कैद और जुर्माने से दंडित किया जाएगा।

चेन स्नैचिंग : महिलाओं के खिलाफ चोरी सिर्फ चेन–स्नैचिंग और अन्य कीमती सामान तक सीमित है। यह आधुनिक समाज की एक आम समस्या है। इन अपराधों से सबसे ज्यादा पीड़ित बुजुर्ग महिलाएँ हैं। अपराधी खुद को पुलिस अधिकारी के रूप में पेश करते हैं और सुरक्षा के उद्देश्य से महिलाओं से उनके कीमती सामान माँगते हैं। यह आईपीसी की धारा 378 के तहत आता है।

बलात्कारः बलात्कार एक बहुत व्यापक शब्द है और इसका दायरा व्यापक परिप्रेक्ष्य का है। यह महिलाओं के खिलाफ सबसे आम अपराध है और भारतीय समाज और व्यवस्था इस जघन्य अपराध को समाप्त करने में विफल रही है। दुनिया भारत को बलात्कारियों के देश के रूप में देख रही है। संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। कानून व्यवस्था पूरी तरह से विफल रही है। अपराध को विभिन्न पहलुओं में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे नाबालिग लड़की का बलात्कार, महिला का बलात्कार (धारा 376), हत्या के साथ बलात्कार (धारा 376ए), परिवारों में बलात्कार, सरकारी कर्मचारियों द्वारा बलात्कार (धारा 376 सी), सामूहिक बलात्कार (धारा 376 डी), वैवाहिक बलात्कार (धारा 376 बी)। इन अपराधों के लिए सजा 7 साल से 20 साल तक की कैद या आजीवन कारावास और जुर्माना भी है।

यौन उत्पीड़नः यौन उत्पीड़न को अवांछित यौन प्रस्ताव, यौन एहसान के लिए अनुरोध और यौन प्रकृति के अन्य मौखिक या शारीरिक उत्पीड़न के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें हल्के उल्लंघन से लेकर यौन दुर्व्यवहार या यौन हमला, महिलाओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध पोर्नोग्राफी दिखाना आदि शामिल हैं। आईपीसी की धारा 354 ए के अनुसार यदि कोई व्यक्ति यौन उत्पीड़न का कृत्य करता है, तो उसे 3 साल तक की कठोर कैद और जुर्माना हो सकता है।

घरेलू हिंसा : घरेलू हिंसा एक और शब्द है जो हमारे देश में आम है क्योंकि महिलाओं को मानव समाज का निम्न तबका माना जाता था और माना जाता है। मनोविज्ञान यह था कि पुरुष कमाता है और बाहर काम करता है इसलिए उसे अपनी पत्नी के साथ कुछ भी करने का अधिकार है। लेकिन समय के साथ, प्रवृत्ति बदल गई और अब महिलाएं समान रूप से काम करती हैं। हिंसा के इन कृत्यों में मारपीट, बलात्कार, जबरन सेक्स आदि शामिल हैं। घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 की धारा 498 ए में 1 वर्ष की सजा और जुर्माना निर्धारित किया गया है।

इज्जत के लिए प्यार करने वालों की हत्या करना : 'सम्मान' के नाम पर हत्याओं और अपमानजनक अपराधों की बाढ़ सी आ गई है, चाहे वह परिवार हो या जाति या समुदाय। हालांकि इनमें से ज्यादातर हत्याएं और अपराध भारत के विभिन्न राज्यों से रिपोर्ट किए जा रहे हैं। 'सम्मान' के नाम पर अपराध भावनात्मक, शारीरिक और यौन शोषण और अन्य बलपूर्वक कृत्यों सहित हिंसक या अपमानजनक कृत्यों की एक श्रृंखला है। पंचायतें या संघ, विभिन्न प्रकार के बलपूर्वक और दंडात्मक कार्यों के माध्यम से आतंक पैदा करना चाहते हैं और पसंद के आधार पर विवाह और संघों को होने से रोकना चाहते हैं। ये कार्य भारत के संविधान में कुछ मौलिक अधिकारों का भी उल्लंघन करते हैं, जिसमें जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार शामिल है जिसमें शारीरिक अखंडता का अधिकार और किसके साथ जुड़ना है यह चुनने का अधिकार शामिल है।

साइबर अपराध : तकनीक की दुनिया में भारत ने भी खुद को आगे बढ़ाया है और महिलाएं भी इसमें बराबर की भागीदार हैं। लेकिन बीमार दिमागों ने साइबर दुनिया में भी महिलाओं को अपमानित करने का कोई मौका नहीं छोड़ा है। महिलाओं के खिलाफ हर दिन कई साइबर अपराध जैसे धमकाना, गाली देना, पोर्नोग्राफी आदि हो रहे हैं। इन अपराधों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के तहत कई सजाएँ हैं, जिनमें 3 साल तक की कैद से लेकर 10 लाख रुपये तक का जुर्माना और जुर्माना शामिल है।

दहेज मृत्युः भारत के ग्रामीण इलाकों में शादी में दहेज लेने की कुप्रथा आज भी आम है, जिसका विरोध करने पर महिलाओं की धीरे–धीरे मौत हो जाती है। हाल के वर्षों में ऐसी मौतों की संख्या में वृद्धि हुई है।

एसिड अटैकः हालांकि भारत सरकार ने बिना उचित जानकारी के एसिड की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन महिलाओं को धमकाने और उन्हें चोट पहुँचाने के लिए एसिड अटैक अभी भी चलन में है। आईपीसी की धारा 326 ए और 326 बी में कहा गया है कि जो कोई भी व्यक्ति गंभीर चोट या हमले के लिए स्वेच्छा से एसिड फेंकता है, उसे 7 साल से लेकर 10 लाख तक की कैद और जुर्माने की सजा दी जाएगी।

पीछा करना : महिलाओं के खिलाफ चलन में आया नया अपराध है स्टॉकिंग। स्टॉकिंग का मतलब है महिलाओं का पीछा करके या नियमित संपर्क करके या इंटरनेट या किसी अन्य इलेक्ट्रॉनिक संचार पर निगरानी करके उनकी निजता का उल्लंघन करना। ऐसा करने वाले को 3 से 5 साल तक की कैद और जुर्माने की सजा दी जाएगी।

शील भंग करने के लिए हमला : जो कोई भी महिला की लज्जा भंग करने के इरादे से उस पर हमला करता है या आपराधिक बल का प्रयोग करता है (1–5 वर्ष कारावास) या उसे निर्वस्त्र करता है या नग्न होने के लिए मजबूर करता है (3–7 वर्ष कारावास) तो ऐसे

व्यक्ति को क्रमशः धारा 354 और धारा 354 बी के तहत दण्डित किया जाएगा।

महिला तस्करी : भारत में महिला तस्करी की अवधारणा 20वीं सदी के अंत में शुरू हुई और आज भी अस्तित्व में है। धारा 370 में तस्करी के विभिन्न तरीकों का वर्णन किया गया है जिसमें नाबालिग लड़कियों की तस्करी, शोषण के उद्देश्य से तस्करी आदि शामिल हैं। धारा 372 और 373 में वेश्यावृत्ति के उद्देश्य से नाबालिगों की खरीद–फरोख्त का उल्लेख है। प्रत्येक अपराध में कारावास की अवधि अलग–अलग होती है और 3 साल से लेकर 10 लाख तक और जुर्माना भी हो सकता है।

निष्कर्ष–

ये थे भारतीय दंड संहिता के तहत महिलाओं से संबंधित कई अपराध और उनकी सजाएँ। भारत सरकार ने हाल ही में कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम, (2013) यौन अपराधों के विरुद्ध बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2013 आदि जैसे कई अधिनियम लाकर महिलाओं के पक्ष में प्रयास किए हैं। इसने IPC और दंड प्रक्रिया संहिता में भी संशोधन किया है। सरकार दहेज से संबंधित अपराधों और ऑनर किलिंग के लिए कानून लाने की इच्छुक है। साइबर अपराधों से जल्द या बाद में निपटा जाएगा। हाल के वर्षों में समाज में हुए बदलावों के कारण, महिलाएँ अब अपने लिए लड़ने के लिए तैयार हैं और उन्हें बहुत बड़ा समर्थन मिल रहा है। हम अपने समाज को बदलना चाहते हैं लेकिन पहले हमें अपनी सोच बदलनी होगी।

सन्दर्भ सूची :–

1. खाँ, आई. ए. (2017). महिला अधिकार : द ा एवं दि ा. रिमार्किंग एन एनालाइसे ान, वॉल्यूम 2.(9).
2. तिवारी, विपिन. कुमार. (2016). सामाजिक न्याय की धारणा और महिला विधेयक, नारी स ाक्तीकरण योजना. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, सितम्बर।
3. माथुर, दीपा. (1992). वूमेन फैमिली एण्ड वर्क. रावत पब्लिके ान्स. जयपुर।
4. यादव, सुनीता. (2007). घरेलू हिंसा कानून 2005 के प्रति प्रतिक्रिया शोध–पत्र।
5. वि नोई, ओमराज, सिंह. (2000). सामाजिक परिप्रेक्ष्य में महिलाएं. अरावली बुक्स इंटरने ानल प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली, पृश्ठ संख्या–120.
6. सिवानी, डा., और सिंह, अनुप, (2020). समकालीन भारतीय समाज में महिलाओं में अपराध का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अनुसन्धानः एक बहुविषयक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वाल्यूम 5, पृश्ठ संख्या 1–5.
7. सिवानी, डा., और कुमार, संजीव. (2020). महिलाओं के विरूद्ध हिंसा एवं महिला अधिकारों का सामाजिक आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्रीय अध्ययन, दृश्टिकोण जर्नल, वाल्यूम 12, (5) पृश्ठ संख्या 762–770.
8. सिंह, आशा. (2003). महिलाओं के विरूद्ध घरेलू हिंसा का विभिन्न जातियों में प्रभाव. दृश्टिकोण जर्नल, वाल्यूम 11, (5).
9. शर्मा, प्रदीप (2013). नगरों में बढ़ते अपराध–समस्याऐं व निवारण. आर.के.बूक्स, नई दिल्ली।
10. श्रीनिवास, एम. एन. (1978). द चेजिंग पोजि ान ऑफ इण्डियन वूमेन. आक्सफोर्ड यूनिवीर्सटी प्रेस, मुम्बई।

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर रोहतक

हेमलता
शोधार्थी
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर रोहतक

18

रेवाड़ी नगर मे ठोस अपशिष्ट निष्पादन की विधियां एवम् उपाय

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा ,सोनू

सारांश

शोध सारः पर्यावरण संरक्षण से जुड़े मुद्दो पर जब भी बात की जाती है, तो सर्वाधिक चर्चा वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण की होती है। इसमे संदेह नही कि औद्योगिक विकास और इसके साथ हमारी जीवन शैली मे आए अभूतपूर्व परिवर्तन ने पर्यावरण और प्रकृति के मूल स्वरूप को बदल दिया है। इस बदलाव के दुष्परिणाम हम लगभग प्रतिदिन झेल रहे है। ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत मे छिद्र, अम्ल वर्षा, औद्योगिक गतिविधियों की निरंतर, अनियमित और अनियंत्रित वृद्धि ने पर्यावरण के समक्ष एक गंभीर संकट खड़ा कर दिया है। जिस पर गंभीरतापूर्वक चिंतन किया जा रहा है और अब तक पर्यावरण को जो क्षति पहुंच चुकी है, उसकी भरपाई के तरीको पर भी विचार किया जा रहा है। लेकिन वायु प्रदूषण और जल प्रदूषण के अलावा 21वीं सदी के आरंभ मे पर्यावरण के सामने एक और गंभीर चुनौती आ खड़ी हुई है और वो चुनौती है, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की। ये भी सच है कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर पड़ रहे इसके दुष्परिणामों को देखते हुए भी इसके प्रति अब तक वांछित जागरूकता या इसके निपटान के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता का अभाव साफ तौर पर देखा जा सकता है। ठोस अपशिष्ट पर विस्तृत चर्चा करने के पूर्व वास्तव में ठोस अपशिष्ट क्या है ये जान लेना जरूरी है।

शब्द कुंजी: ठोस अपशिष्ट, प्रबन्धन,अम्ल वर्षा, औद्योगिक गतिविधियों, जागरूकता, जल प्रदूषण

ठोस अपशिश्ट :– किसी भी कार्य के संपादन के पश्चात् बचा हुआ ठोस पदार्थ, जिसका तुरंत या भविष्य मे कोई सार्थक उपयोग नही रह जाता या किसी प्रकार से वह अनुपयोगी रहता है, ठोस अपशिष्ट कहलाता है। ये ठोस अपशिष्ट मात्रा और आकार मे अधिक होने के कारण फेंके जाने पर भूमि के बड़े भाग का उपयोग कर लेते है। इस कारण भूमि का वह हिस्सा उपयोग के योग्य नहीं रह जाता। इसके अलावा अपशिष्ट के क्षय होने से बदबू उत्पन्न होती है और आसपास का वातावरण दुर्गघमय हो जाता है। विभिन्न कीटो, जीवाणु और वायरस आदि के पनपने से अनेक बीमारियां उत्पन्न होने और फैलने की संभावना बनी रहती है। यही नही अपशिष्ट एवं इनसे उत्पन्न होने वाला लीचेट सतह एवं भूमिगत जल को प्रदूषित भी करता है।

औद्योगिकीकरण और आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रो से प्रवास के कारण नगरीय केन्द्रो की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि विश्व का एक परिदृश्य हो पिछले 200 वर्षों मे नगरीय जनसंख्या मे 100 गुणा वृद्धि हुई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण नगरों में पेयजल, आवास, चिकित्सा, परिवहन, पर्यावरणीय समस्याये, सीवेज और स्वच्छता इत्यादि के कारण नगरीय क्षेत्रो की भूमि पर दबाव पड़ा है। स्वच्छता नगरीयकरण से जुडी समस्याओं मे से एक है। ठोस अपशिष्ट के रूप मे कचरा, या तरल अवस्था में अपशिष्ट मानव और औद्योगिक इकाईयो के द्वारा उत्पन्न होता है।

भारत जैसे विकासशील देश में मुख्य रूप से ठोस अपशिष्टो से भूमि के गढ़ढो का भरने पर जोर दिया गया है। जयशिला और अन्य 2017 के अनुसार भारत मे दैनिक रूप से ठोस अपशिष्ट छोटे नगरो मे 1000 ग्राम तथा बड़े नगरो मे 5000 ग्राम होता है। मुम्बई में लगभग 5000 मीट्रिक टन, दिल्ली और कोलकाता में 4000 मीट्रिक टन तथा चैन्नई में 4000 मीट्रिक टन ठोस अपशिष्ट उत्पन्न होता है।भारत के अन्य नगरो के समान रेवाड़ी (हरियाणा) भी इस समस्या का सामना कर रहा है नगर परिषद के अनुसार ठोस अपशिष्ट की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

समस्या का विवरण :–हमारे देश में ठोस अपशिष्ट के डंपिंग स्थानों में कमी है। अपशिष्ट हर जगह मौजूद है, चाहे वह कस्बा हो या नगर व मंदिर या मस्जिद हो। यह समस्या पिछले दो–तीन दशकों से बढ़ रही है जिससे स्वास्थ्य के मुद्दों और पर्यावरण में गिरावट आई है। आज हम घरेलू व औद्योगिक और कृषि अपशिष्टो सहित कई प्रकार के अपशिष्टो के शिकार हैं। प्रतिवर्ष देश में अपशिष्ट या कूड़े का टनों की मात्रा में उत्पादन होता है और इसकी केवल एक प्रतिशत मात्रा का पुनर्नवीनीकरण होता है।

शेष अपशिष्टो की मात्रा या तो सड़कों में या तो खेतों में या फिर बरसात के मौसम में नालों में जमा हो जाती है। कुछ नदियों के माध्यम से महासागरों तक पहुंच जाती है। अपशिष्टों के जलने से उत्पन्न सूक्ष्म कण विषैले होते हैं जिनका आकार इतना छोटा होता है कि वे भवसन के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं और विशेष रूप से फेफड़ों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। भारत और चीन जैसे देशों में प्लास्टिक की बोतलों व इलेक्ट्रॉनिक सामान सहित सभी प्रकार के अपशिष्ट जलते रहते हैं वैज्ञानिकों के अनुसार यह वायु प्रदूषण का मुख्य कारण है।

शोधकर्ता आरडी क्रिस्टीन वाइडिनमीर व कोलोराडो वि ववियालय में विज्ञान के एसोसिएट डायरेक्टर, के अनुसार अनुसंधान करते हुए उन्होंने यह महसूस किया कि अपशिष्ट प्रबंधन और अपशिष्ट जलने के बारे में हमारे पास बहुत कम जानकारी है। ऐसी गतिविधियों से पैदा होने वाले विभिन्न प्रकार के विषाक्त पदार्थों का गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व :–किसी नगर में बेहतर जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि उसका पर्यावरण कैसा है। वहां साफ–सफाई कैसी है और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन किस तरह का है। वर्तमान में बड़े नगरों में अपशिष्ट प्रबंधन बड़ी चुनौती है लेकिन इसे सही कर लिया जाए तो यह पर्यावरण व स्वास्थ्य की दृष्टि सही हो

सकता है विकसित और विकासशील देशों में पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण अपशिष्ट है। विकास की बढ़ती तीव्रता कचरा उत्पादन का एक प्रमुख कारण हैं, इसका कारण नगरीकरण और समृद्धि है। जितना अधिक आर्थिक रूप से सम्पन्न देश या नगर होगा उतना ही अधिक कडा उत्सर्जित होगा। गरीबी और समृद्धि व दक्षता और अक्षमता से भी इसे जोड़कर भी देखा जा सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि जहां आबादी में सुविधाओं के लिए आकांक्षाएं अधिक हैं वहाँ कचरे की मात्रा में भी वृद्धि होगी। आज भारत और चीन दुनिया के प्रमुख उदाहरण हैं। दोनों आर्थिक विकास में प्रगति कर रहे हैं, इसी प्रक्रिया में वे कचरे के ढेर का भी उत्पादन कर रहे हैं। इसके अन्य कारणों में बदलती जीवन शैली अपशिष्ट प्रबंधन के विकल्पों की कमी और तेजी से खत्म होती नैतिकता शामिल है।

अपशिष्ट प्रबंधन में स्रोत से अपशिष्ट एकत्रित करना, इसका परिवहन, विभिन्न प्रकार से निरूपण तथा निरूपित अपशिष्ट का निपटान करना जैसी प्रक्रियाओं को शामिल किया जाता है अपशिष्ट प्रबंधन में ठोस तरल गैसीय व रेडियोधर्मी पदार्थों को शामिल किया जा सकता है और प्रत्येक के प्रबंधन के लिए विभिन्न तरीकों और विशेषज्ञता के क्षेत्र शामिल हैं। अपशिष्ट प्रबंधन के तरीके विकसित और विकासशील देशों के लिए नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों आवासीय और औद्योगिक उत्पादकों के लिए भिन्न है आवासीय व संस्थागत अपशिष्ट के लिए महानगरीय क्षेत्रों में प्रबंधन आमतौर पर स्थानीय सरकार की जिम्मेदारी है ठोस अपशिष्ट के डंपिंग के लिए भूमि एक प्राथमिक स्रोत है कचरे की भूमि निपटान के उपयोग को कम करने के तरीकों के रूप में पुनःचक्रण से खाद व जलाए जाने वाली परियोजनाओं को लागू किया गया यद्यपि सामग्री और ऊर्जा वसूली का लाभ देने वाली प्रथम में भी ऐसे हाउस श्रेष्ठ उत्पन्न होते हैं जिन्हें लैंडफिल (कारकजी और अन्य, 2014) पर निपटा जाना चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र :—रेवाड़ी नगर हरियाणा प्रदेश का एक विकसित एवं महत्वपूर्ण नगर है। रेवाड़ी नगर रेवाड़ी जिले के बीचो—बीच बसा हुआ है। रेवाड़ी नगर 28°11′ उत्तरी अंक्षाश तथा 76°37′ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। रेवाड़ी दक्षिणी हरियाणा का एक प्रमुख नगर है जो (एन.सी.आर.) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सम्मिलित है। यह हरियाणा राज्य की राजधानी से लगभग 212 कि.मी. तथा दिल्ली से 89 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 241.95 मीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र के 143021 व्यक्ति 24.37 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल पर निवास करते है। इस आधार पर नगर में 5868 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. के घनत्व से जनसंख्या निवास करती है। यह नगर चारों दिशाओं से स्थित मुख्य नगरों से सीधे सम्पर्क में है। अतः यह अनेक मार्गो का एक संगम स्थल है। नगर से मुख्य मार्ग दिल्ली, रोहतक, नारनौल, महेन्द्रगढ़, जयपुर इत्यादि को जाता है। नगर से इन स्थानों की ओर सड़क व रेल यातायात दोनों की सुगम परिवहन सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त पाली, कोसली, धारूहेड़ा, मीरपुर, बावल इत्यादि कस्बे भी नगर से पक्की सड़कों के माध्यम से जुड़े हुए है।

यहाँ सर्वप्रथम रेलवे का विकास 1873 में हुआ। यह रेलवे का एक प्रमुख जंक्शन व आवागमन का मुख्य केन्द्र बन चुका है। यह एशिया में मीटर गेज का सबसे बड़ा जंक्शन होने का गौरव भी रखता था। यहाँ से नारनौल, जयपुर, महेन्द्रगढ़, हिसार, रोहतक, दिल्ली आदि नगरों की रेल सुविधा से जोड़ा गया है ।

मानचित्र 1.1 अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति

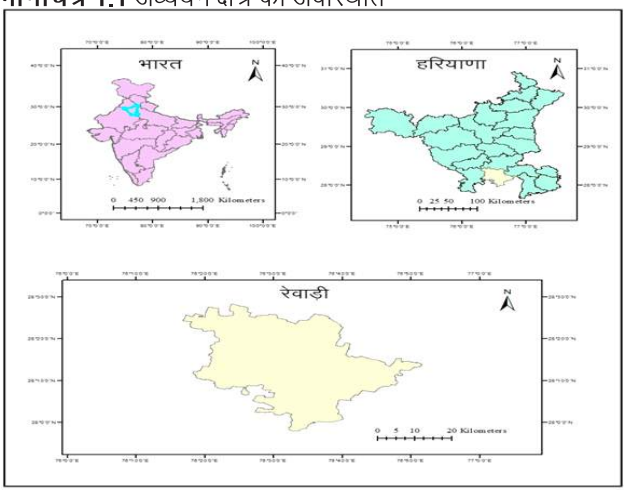

स्रोत :— भोघार्थी द्वारा आर्क—जी. आई एस. के माध्यम से निर्मित

ठोस अपशिष्ट निष्पादन की विधियां एवम् उपायः अपशिष्ट पदार्थों को नष्ट करनाः अपशिष्ट पदार्थों को नष्ट कर उनके कुप्रभाव से पर्यावरण एवं मानव को बचाया जा सकता है। इन्हें नष्ट करने की एक सहज विधि भस्मीकरण है। जिससे इसकी मात्रा 60 से 80 प्रतिशत तक कम की जा सकती है। इसके लिए दहन भट्टी या विशाल दहन प्लान्ट का उपयोग किया जाना चाहिए किंतु इस किया में वायु प्रदूषण न फैले इसका ध्यान रखना चाहिए। रासायनिक क्रिया द्वारा भी अनेक अपशिष्ट पदार्थो को नष्ट किया जा सकता है। अथवा उन्हें पुनः उपयोगी बनाया जा सकता है। अपघटित अपशिष्ट पदार्थों से कम्पोस्ट बनाना नगरीय अपशिष्टों को भूमि में दबाकर, सडाकर, उत्तम उर्वरक बनाया जा सकता है जो विशेषकर सब्जियों के उत्पादन में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होता है।

दारण (रनडरिंग)ः इसके अन्तर्गत हब्जियों, बसा, पंख, रक्त आदि पशुओं के अवशेषों का पकाकर चर्बी प्राप्त की जा सकती है जिसका प्रयोग साबुन बनाने में किया जाता है तथा प्रोटीन वाला अंश पशु चारे के रूप में लाया जा सकता है।

सुखाना :— इसमें केवल ठोस अपशिष्ट के आयतन को कम किया जाता है। सुखने पर अपशिष्ट का आयतन कम हो जाता है। इसके लिए सेण्ड ड्राइंग बेड तथा यान्त्रिक निर्जल यंत्र का उपयोग किया जाता है।

पुनः उपयोग : ठोस अपशिष्टों को पुनः उपयोग में लेकर हम ठोस अपशिष्ट की काफी मात्रा को कम कर सकते है। आज कल पुनः उपयोग को काफी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसमें अपशिष्टों को नये रूप में बदलकर उनका नया उपयोग किया जाता

है।

कम्पोस्टिंग :– कई जैविक अपशिष्टों को सुक्षम जीवों से किया करवा कर उनसे खाद का निर्माण किया जा सकता है। जैसे– गोबर मल, पत्तियां, खराब सब्जिया इत्यादि को खुले में फेंकने की जगह उससे खाद बनाई जा सकती है। यह किया छोटे स्तर जैसे घरों से लेकर बड़े स्तर जैसे उद्योग तक सम्भव है। इस प्रकार की उपघटनी किया के बाद बने मृदा समान पदार्थ को कम्पोस्ट या मल्य कहते है।

भूमिगत करना :– प्रायः गड्ढो में निचली भूमि समस्तर करने में, नींव भरने में प्रयुक्त होते है। इस प्रकार के प्रबन्धन में विशेष ध्यान इस बात का देना चाहिए कि अपशिष्ट में कोई हानिकारक तत्वों युक्त पदार्थ नही हो अन्यथा वह मृदा की उपयोगिता का कम करेगा तथा भूमिगत जल में मिलकर उसे दूषित करेगा।

रसायन पुनः प्राप्ति– इस विधि में अपशिष्टों से हानिकारक रासायनिक पदार्थों को निकाल लिया जाता है तथा श्शेष बचे कार्बनिक पदार्थों को उष्मा प्राप्ति में उपयोग किया जाता है।

रासायनिक पुनः प्राप्ति – इसका उपयोग उद्योगों से निकले अपशिष्टों में अधिक करते है क्योंकि उनमें कई हानिकारक पदार्थ सम्मिलित होते है। रासायनिक पुनः प्राप्ति के कुछ प्रमुख तरीके निम्न है–

1- Solvent Extraction
2-Electrolysis
3-Diffusion Dialysis D.D
4-Reverse Osmosis
5-Ultrafiltration
6- Micro

भस्मीकरण :–इस विधि में जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्लास्टिक, पेपर, पेस्टीसाइड्स,पेट्रोलियम अपशिष्ट इत्यादि विभिन्न प्रकार के दहनशील तरल तथा घातक ठोस अपशिष्टों को जला कर भस्म किया जाता है। इस तकनीक में भट्टियों में ऑक्सीजन की उपस्थिति में उच्चताप (900 से 1000°ब) पर घातक अपशिष्टों को जलाया जाता है। भस्मीकरण भट्टियाँ 2 प्रकार की होती है–

(1) बडी भट्टियाँ :– ये भटियाँ काफी बड़ी होती है तथा सभी प्रकार के ठोस अपशिष्टो को जला देती है। इनमें काफी उष्मा उत्पन्न होती है। अतः इन भट्टियों से ऊष्मा को संग्रह कर पुनः उपयोग किया जाता है।

2) छोटी भट्टियाँ :– इस प्रकार की भट्टियों में केवल ज्वलनशीन ठोस अपशिष्ट ही जलाया जा सकता है अतः इसके लिए सर्वप्रथम अज्वलनशील अपशिष्ट को अलग किया जाता है।

भस्मीकरण में ठोस अपशिष्ट का तापीय आक्सीकरण होता है। इस क्रिया विधि में कार्बन–डाई–आक्साइड, अन्य रोसे तथा सल्फर, फास्फोरस व नाइट्रोजन के आक्साइड निकलते है। जिन्हे स्थिर विद्युत अवशेषको द्वारा हटा लिया जाता है ताकि वे वायुमण्डल में न पहुंचे इस विधि में गैसों के अतिरिक्त राख भी बचती है जिन्हे सीमेन्ट बनाने, ईटे इत्यादि बनाने में काम लिया जाता है।

वर्मी कम्पोस्टिंग :– यह जैव तकनीकी का उदाहरण है। इसमें केंचुओं का उपयोग कर कार्बनिक पदार्थों का अपघटन किया जाता है केंचुऐं अपशिष्ट में उपस्थिति कार्बनिक पदार्थों को भोजन केरूप में लेते है तथा इन्हें अपघटित करते है अर्थात वर्मीकम्पोस्ट का तात्पर्य कंचुओं की सहायता से कम्पोस्टिंग निधि द्वारा उत्तम प्रकार की कार्बनिक खाद तैयार करना है। इस कार्बनिक खाद को वर्मीकम्पोस्ट कहते है यह खेतों में मिलाया जाता है जिससे मृदा की जल धारिता की क्षमता को बढ़ाता है अतः खाद को सुरक्षित जैव उर्वरक कह सकते है। इस प्रकार इस विधि द्वारा अपशिष्ट कार्बनिक पदार्थों से बहुउपयोगी स्वाद प्राप्त कर सकते है।

विद्युत उत्पाद : अपशिष्ट पदार्थों से विद्युत का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा चुका है। इस दिशा में समुचित ध्यान देना आवश्यक है। इसी प्रकार इसमें मिश्रित कार्बनिक पदार्थों को विशेष प्रक्रिया से गर्म कर मिथेन गैस प्राप्त की जा सकती है। जिसका उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है। कूडे करकट को अत्यधिक दबाव से ठोस ईटों में बदला जा सकता है। नगरों में मल–जल को नगरों से दूर गर्त में डाला जाये तथा वहां से शुद्धिकरण के पश्चात ही इसका सिंचाई आदि में उपयोग किया जाना चाहिए। उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थों को पुनःचक्रण में लाना चाहिए, सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण एवं उनके उपयोगों के संबंध में निरंतर शोध की आवश्यकता है।

जन चेतना : – इस समस्या का सही समाधान नागरिको की जागरूकता में निहित है हमे चाहिये कि पदार्थों को जहां तक सम्भव हो सके उपयोग करे तथा पुनः निर्मित वस्तुओं का अधिक उपयोग करे प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग कम करे। घरो में जिस तरह सफाई रखते है उसी प्रकार बाहर गली मोहल्लो में भी सफाई रखनी चाहिए।

अन्य :– नगर में मल–जल निकासी हेतु उचित सीवरेज प्रणाली का विकास आवश्यक है। नगरीय मल–जल को नगर से दूर गर्त में डाला जाये तथा वहा से शुद्धिकरण के पश्चात ही इसका सिंचाई आदि मे उपयोग किया जाना चाहिए। उद्योगो को अपशिष्ट निस्तारण हेतु कानुनी रूप से बाध्य किया जाना आवश्यक है। अपशिष्ट पदार्थो का पुर्नचकरण कर रदी कागज से कागज लोहे की कतरनों से स्टील, प्लास्टिक से प्लास्टिक बनाने आदि की समुचित व्यवस्था होनी आवश्यक है। इस प्रकार के उद्योगो को जो वर्तमान मे कार्यरत है और विकसित करने की आवश्यकता है। अपशिष्ट पदार्थो की बढती समस्या एवं पर्यावरण हेतु प्रत्येक क्षेत्र यहां तक कि प्रत्येक नगर हेतु एक दीर्घ कालिक मास्टर प्लान बनाया जाना आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची : –

डेनिसन और अन्य (1996), आयरलैंड के डबलिन शहर में घरेलू अपशिष्ट विशेषताओं का सामाजिक–आर्थिक आधारित सर्वेक्षण।

संसाधन, संरक्षण और पुनर्चक्रण, वॉल्यूम 17,पीपी. 245–257
स्टेंनेर, टी.और बार्टेलिंग्स,एच.(1999), स्वीडिश नगरपालिका में घरेलू अपशिष्ट प्रबंधनः अपशिष्ट निष्पादन, रीसाइक्लिंग और कंपोस्टिंग। पर्यावरण और संसाधन, वॉल्यूम 13,पीपी,473–491.
घोष और अन्य (2006), ''ठोस अपशिष्ट निपटान के लिए एक जीआईएस आधारित परिवहन मॉडल – आसनसोल नगर पालिका पर एक केस स्टडी''
जया, एच. और देवदास (2006),कानपुर शहर में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन। नगरलोक, वॉल्यूम ग्ग्टप्प्, नंबर 04, पीपी,20–31.
कारा और मिश्रा (2008), ने नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पुरी, ओडिशा, अपशिष्ट प्रबंधन वॉल्यूम 28, पीपी,1276–1287.
कुमार और अन्य (2009),नगर निगम ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम 25,पीपी, 289–313.
ओझा, कुलदीप (2011), उत्तरी भारत में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की स्थिति और अवलोकन, पर्यावरण विकास, वॉल्यूम 13, पीपी, 203–215.
वेलुमणी, ए (2014): ''जीआईएस आधारित इष्टतम संग्रह रूटिंग मॉडल नगर ठोस अपशिष्ट के लिए मॉडलः सिंगनल्लूर, भारत में केस स्टडी'', अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, वॉल्यूम. 4, अंक, 1, पीपी.100–104, आईएसएसएनः 2230–9926.
राणा और अन्य (2014), चंडीगढ़ में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन – एक केस स्टडी, जेपी सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश
हामिटू, और अन्य (2015), ''जीआईएस आधारित मानचित्र और वा, घाना में नगर निगम सॉलिड अपशिष्ट संग्रह प्रणाली का विश्लेषण, जर्नल ऑफ जर्नल इंफॉर्मेशन सिस्टम, वॉल्यूम। 7, पीपी 85–94।
कदम (2016): ''पिंपरी चिंचवड नगर निगम (पीसीएमसी) के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का उपयोग करके ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का अनुकूलन, अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, वॉल्यूम। 4 (6), पीपी.1576–1582.
सेंथिल, जे. और अन्य (2020), ''भू–स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर धूल के डिब्बे का इष्टतम स्थानः कुम्भकोणम टाउन का एक केस स्टडी, तमिलनाडु, भारत'', एप्लागिया रिसर्च लाइब्रेरी इन एप्लाइड साइंस रिसर्च, वॉल्यूम, 3, संख्या 5, पीपी 2997–3003.
यादव, आई सी और देवी, एन.एल.(2021) ''भोपाल में नगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, : उपस्थित प्रबंधन प्रथाओं का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण और प्रस्तावित कार्य योजनाएं'', अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ वेस्ट जर्नल, वॉल्यूम, 6, अंक 3, आईएसएसएनः 2252–5211.
घोष और अन्य (2006), "ठोस अपशिष्ट निपटान के लिए एक जीआईएस आधारित परिवहन मॉडल – आसनसोल नगर पालिका पर एक केस स्टडी"
हामिडू, ए एट अल (2015): "जीआईएस आधारित मानचित्र और वा, घाना में नगर निगम सॉलिड अपशिष्ट संग्रह प्रणाली का विश्लेषण, जर्नल ऑफ जर्नल इंफॉर्मेशन सिस्टम, वॉल्यूम। 7, पीपी 85–94।
कदम (2016): "पिंपरी चिंचवड नगर निगम (पीसीएमसी) के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) का उपयोग करके ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का अनुकूलन, अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, वॉल्यूम। 4 (6), पीपी.1576–1582.
कोकर और अन्य (2016): " नाइजीरिया में ठोस अपशिष्ट प्रबंधनः प्रथाओं और चुनौतियों", अपशिष्ट प्रबंधन, वॉल्यूम.29, पीपी. 470–478.
सोनी,ए.(2016), "नगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन", प्रोसेसिया एनवायरनमेंटल साइंसेज, वॉल्यूम,35, पीपी.119–126.
वेलुमणी, ए (2014): "जीआईएस आधारित इष्टतम संग्रह रूटिंग मॉडल नगर ठोस अपशिष्ट के लिए मॉडलः सिंगनल्लूर, भारत में केस स्टडी", अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, वॉल्यूम. 4, अंक, 1, पीपी.100–104, आईएसएसएनः 2230–9926.
सेंथिल, जे. और अन्य (2020), "भू–स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर धूल के डिब्बे का इष्टतम स्थानः कुम्भकोणम टाउन का एक केस स्टडी, तमिलनाडु, भारत", एप्लागिया रिसर्च लाइब्रेरी इन एप्लाइड साइंस रिसर्च, वॉल्यूम, 3, संख्या 5, पीपी 2997–3003.
यादव, आई सी और देवी, एन.एल.(2021) "भोपाल में नगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, : उपस्थित प्रबंधन प्रथाओं का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण और प्रस्तावित कार्य योजनाएं", अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ वेस्ट जर्नल, वॉल्यूम, 6, अंक 3, आईएसएसएनः 2252–5211.

डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक।

सोनू
शोधार्थी
भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

19

उत्तर पश्चिमी भारत के वाणिज्य व्यापार पर विदेशी आक्रमणों का प्रभाव : एक अध्ययन

पुष्पा देवी, डॉ० शोभा मिश्रा

सारांश

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का मूल्यांकन उस देश में स्त्रियों की स्थिति को माना जाता है। समाज के द्वारा महिलाओं के प्रति निर्धारित दृष्टिकोण ही उसका सबसे सशक्त आधार होता है। प्राचीन भारत की संस्कृति में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तित या परिवर्तन स्वरूप में दिखाई देता है। भारतीय समाज में कभी भी महिलाओं के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया। उसे माता, पत्नी, पुत्री, बहन तथा पुत्रवधू के रूप में सम्मान तो प्राप्त होता था लेकिन उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

हड़प्पा संस्कृति से जो प्रमाण प्राप्त होते हैं, उनमें महिलाओं को पूजनीय माना जाता था। तथा समाज में उनको विशेष दर्जा प्राप्त था। सिंधु सभ्यता से प्राप्त मोहरों पर मातृदेवी के रूप में पूजा की जाती थी।[1] ऐतिहासिक युग पितृसत्तात्मक सामाजिक संगठन होने पर भी समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा थी। बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक जीवन में उसे स्त्री, कन्या तथा माता के रूप में निरंतर सम्मान दिया जाता था। धार्मिक कृत्यों, सामाजिक उत्सवों एवं समारोह आदि में वे पुरुष के साथ समान आसन ग्रहण करती थी। कन्याओं को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। महिलाएं सभाओं में भाग लेती थी। अनेक स्त्रियां रणकौशल के कारण रणभूमि में अपने पतियों की सहायता करती थी। समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित नहीं थी तथा स्त्रियां स्वतंत्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करती थी। समाज में पुत्र गोद लेने की प्रथा का भी प्रचलन था।[2] पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करती थी। समाज में एक पत्नी प्रथा का प्रचलन था परंतु कुलीन वर्ग में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित थी। ऋग्वेद में सती प्रथा के संबंध में साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिसमें उसे प्राचीन परंपरा कहा गया है।

इस काल में घोशा, अपाला तथा वि वतारा जैसी दूसरी महिलाओं की जानकारी प्राप्त होती है जो कि उच्च शिक्षित तथा अनेक मंत्रों की रचयिता थी। उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया और उनकी स्थिति निम्न हो गई। कन्याओं को उपनयन संस्कार से वंचित कर दिया गया, जिसके कारण उनकी शिक्षा बंद हो गई। ऐतरेय ब्राह्मण में कन्याओं के जन्म की निंदा की गई।[3] स्त्रियों के लिए संगीत, नृत्य एवं गायन को महत्वपूर्ण माना गया। बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। बहुविवाह का प्रचलन केवल शासक वर्ग तक की प्रचलित था। उत्तर वैदिक काल में विधवा स्त्री को पुनर्विवाह एवं नियोग का अधिकार प्राप्त था। परंतु यह केवल पुत्र की प्राप्ति तक ही सीमित था। सामान्यतः विवाह सजातीय होते हुए कभी–कभी अंतर्जातीय विवाह भी होते थे।[4] इस काल में स्त्रियों की स्थिति निम्न होने लगी तथा उस पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए।

स्त्री पुरुष पर आश्रित होकर ही सुरक्षा और सम्मान प्राप्त कर सकती थी।[5] महाकाव्य काल में एक स्त्री के अनेक पतियों का उल्लेख मिलता है। कुलीन वर्ग की महिलाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था होती थी। महाभारत में एक स्त्री को धर्म तथा काम का मूल बताया गया है। स्वयंवर प्रथा, सती प्रथा, नियोग प्रथा तथा बहुविवाह का प्रचलन प्रचलित था। मौर्य काल में महिलाओं की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। चंद्रगुप्त मौर्य के द्वारा एक यूनानी कन्या से विवाह करना तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन था। इस काल में स्वंयवर प्रथा तथा विशेष परिस्थितियों में विवाह विच्छेद या तलाक का अधिकार स्त्रियों को प्राप्त था, जिसके लिए कौटिल्य ने मोक्ष शब्द का प्रयोग किया है। मेगस्थनीज के अनुसार विवाह करने का उद्देश्य संतानोत्पत्ति करना था। स्त्री और पुरुष दोनों ही विषय परिस्थितियों में पुनर्विवाह कर सकते थे। संगीत, सपिण्ड तथा संप्रवर में विभाग करना निषेध था। बहुविवाह का प्रचलन था, लेकिन इसका दायरा बहुत सीमित था।[6]

चंद्रगुप्त ने अपनी अंगरक्षिकाओं के रूप में स्त्रियों की को नियुक्त किया था। चाणक्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में स्त्रियों के लिए सूर्यप या शब्द का प्रयोग किया था जिसका अर्थ है सूर्य का न देखने वाली स्त्री। अर्थशास्त्र में गणिकाओं का उल्लेख किया गया है जिनका प्रमुख अध्यक्ष 'गणिकाध्यक्ष' नामक अधिकारी होता था। इसके अंतर्गत गायिका और नर्तकी को सम्मिलित किया गया।[7] जो राजदरबार से संबंधित होती थी। शक सातवाहन काल में स्त्रियों के सम्मान में वृद्धि हुई। सातवाहन शासकों ने अपने नाम के आगे अपनी माता के नाम का प्रयोग किया। इस काल में स्त्रियों द्वारा दान दिए जाने का उल्लेख तत्कालीन अभिलेखों में मिलता है। जिससे सिद्ध होता है कि उन्हें संपत्ति में अधिकार प्राप्त था।[8] इस काल में प्राप्त अनेक मूर्तियों में हम महिलाओं को अपने पतियों के साथ बौद्ध प्रतीकों की पूजा करते हुए, सार्वजनिक सभाओं में भाग लेते हुए दिखाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं को शिक्षा संबंधी अधिकार प्राप्त था।

गुप्तकाल में महिलाओं को प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था लेकिन दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति पर विशेष प्रभाव पड़ा। विदेशियों के लगातार आक्रमणों के कारण बाल विवाह का विधान प्रचलित हो गया था। उनके विवाह की आयु भी कम कर दी गई। स्त्रियों को परतंत्र, पराधीन निःसहाय और निर्बल बना दिया गया।[9] पति की मृत्यु होने पर स्त्री का सती होना सर्वश्रेष्ठ माना जाता था। नारद स्मृतिकार ने कन्या को पिता की संपत्ति में अधिकार प्रदान किया।

सती प्रथा का प्रचलन शकों के समय में हुआ यह प्रथा विदेशियों द्वारा शुरू की गई थी। विदेशियों के आगमन के बाद यह

प्रथा धीरे–धीरे पूरे भारत में लोकप्रिय हो गई। विदेशियों के आगमन से घूंघट का प्रचलन प्रचलित हो गया। हिंदुओं ने अपनी स्त्रियों की रक्षा के लिए घुंघट की प्रथा को अपनाया।[10]

हर्षवर्धन के शासनकाल में स्त्रियों की स्थिति पूर्ववर्ती बनी रही। इस काल में सतीप्रथा के साथ पुनर्विवाह जैसी प्रथा का विकास हो रहा था अंतर्जातीय विवाह का प्रचलन प्रचलित था।[11] हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद पूर्व मध्यकाल में स्त्रियों के अधिकारों एवं स्थिति में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं। विदेशी आक्रमणों के कारण सामाजिक व्यवस्था को अत्यधिक कठोर बना दिया गया। इस काल में भारत का राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पतन के लक्षण दिखाई देते हैं।[12] सामाजिक व्यवस्थाकारों ने अंतर्जातीय विवाहों को प्रतिबंधित किया गया। स्त्रियों के पुनर्विवाह के लिए कुछ नियम निर्धारित किए गए। इस प्रकार विशेष परिस्थितियों में नियुक्त करने का अधिकार प्रदान किया है। बाल विवाह तथा बहुविवाह ने स्त्रियों की स्थिति को भोचनीय बना दिया गया।

निष्कर्ष

प्राचीन भारत के इतिहास में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय महिलाओं की स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रही थी। प्रारंभिक काल में स्त्रियों को अनेक अधिकार प्राप्त है। धीरे–धीरे उनकी स्थिति निम्न होती चली गई। प्राचीन भारत में विदेशियों के आक्रमणों से स्त्रियों की स्थिति पर विशेष प्रभाव पड़ा। हिंदुओं ने अपनी स्त्रियों की सतीत्व की रक्षा के लिए बाल–विवाह, सती–प्रथा, जैसी प्रथाओं को प्रचारित किया। उनके विशेष अधिकारों को समाप्त कर दिया। पूर्व मध्यकाल तक आते–आते स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गई। महिलाओं से संबंधित सामाजिक कुरीतियां भारतीय समाज का अभिन्न अंग बन गई थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पांडेय, डॉ० राजेंद्र, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1983, पृष्ठ 27
2. सत्यकेतु विद्यालंकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ 161
3. बा ाम ए० एल०, अद्भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, 1907, पृष्ठ 40
4. नारायण हिजेंद्र झा श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 200, पृष्ठ 232
5. जैन कैलाश चंद्र, प्राचीन भारतीय समाज एवं आर्थिक संस्थाएं, मध्य प्रदेश हिंदी अकादमी ग्रंथ, गोपाल, 1987, पृष्ठ 40
6. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ 85
7. मिरासी वासुदेव मिश्रा, सातवाहनी एवं पश्चिमी क्षत्रपों का इतिहास एवं अभिलेख, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1902, पृष्ठ 3
8. पांडेय, डॉ० राजेंद्र, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, 1983, पृष्ठ 116
9. शास्त्री नीलकंठ, ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966, पृष्ठ 190
10. ठाकुर उपेन्द्र, सम एस्पेक्ट ऑफ इंडियन हिस्ट्री एंड कल्चर, अभिनव पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 120
11. ओमप्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, वि व प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृष्ठ 234
12. पांडेय सुष्मिता, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था एवं धर्म, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, गोपाल, 1991, पृ० 189

शोधार्थी
पुष्पा देवी
रिसर्च स्कॉलर
(इतिहास विभाग)
हिमाचल प्रदेश, विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला–171005

शोध निर्देशिका
डॉ० शोभा मिश्रा
सहायक प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
संध्याकालीन अध्ययन विभाग
हिमाचल प्रदेश, विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला – 171005

20

नई शिक्षा नीति 2020:उपलब्धि एवम् चुनौतियां

डॉ0 रविता पाठक

सारांश

विद्या ददाति विनयं,विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्म ततरूसुखम्।

चाणक्य नीतिःआचार्य चाणक्य
(अर्थात् विद्या से विनय,विनय से पात्रता,पात्रता से धन और धन से धर्म और सुख की प्राप्ति होती है।)

शिक्षा समाज के विकास की आधार–शिला है।आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।आज भी उसकी यह बात पूर्णतः सत्य है।मनुष्य एक चिंतनशील और विवेकशील प्राणी है।यों तो उसकी आवश्यकताएं अनंत हैं ,परंतु चार ऐसी मौलिक आवश्यकताएं हैं ,जिनके बिना जीवन जीना दूभर हैः
भोजन,वस्त्र, आवास और शिक्षा।गणना के क्रम में भले शिक्षा चौथे क्रम पर हो,परंतु महत्व और गुणवत्ता की दृष्टि से वह प्रथम स्थान की अधिकारिणी है।

शिक्षा का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है।संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना शिक्षा का कोशगत अर्थ है–सीखना,जानना और आचरण में उतारना।राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के अनुसार श्मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना ही शिक्षा है।श स्वामी विवेकानंद के अनुसार श्मनुष्य के भीतर निहित क्षमता का पूर्ण प्रकटीकरण ही शिक्षा हैश।यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इस बात पर बल दिया है कि शशिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकसित करने का प्रयत्न है।श प्लेटो ने लिखा है कि शशिक्षा छात्र के शरीर और आत्मा में उस सब सौंदर्य और पूर्णता का विकास करती है,जिसके योग्य वह है।श वेदांत के अनुसार समस्त ज्ञान हमारे भीतर विद्यमान है।एक बालक में भी है,केवल उसे जागृत करना है।बालक में ज्ञान का जागृत होना ही शिक्षा है।अतरूहम कह सकते हैं कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सत्यं,शिवं सुंदरं के भाव का प्रकटीकरण ही शिक्षा है।

हिन्दी का शिक्षा शब्द अंग्रेजी के श्म्क्न्ब्।ज्प्च्छश का हिंदी पर्याय है;जिसका गूढ़ार्थ निम्नवत् हैरू–

E: Etiquette–विनम्रता / शिष्टाचार / सदाचार
D:Discipline–अनुशासन
U:Universal Brothaerhood–विश्वबंधुत्व।
C:Creativity–सृजनशीलता
A:Awareness–जागरूकता / सजगता
T: Transformation–रूपांतरण / आदान–प्रदान।
I: Integrity–एकता / नेकता / सत्यनिष्ठा
O: Optimism–आशावादिता
N: Nobility–नम्रता / विनम्रता

विष्णु पुराण में कहा गया हैः
सा विद्या या विमुक्तये अर्थात विद्या(शिक्षा) वही है जो हमें सारे बंधनों से मुक्त करती है।प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्यपरक और नैतिकता परक थी ,आधुनिक शिक्षा व्यावसायिक और रोजगारपरक हो गई है।

ब्रिटिश कालीन भारत में पहली शिक्षा नीति 2.2.1835 में भारत के तत्कालीन गवर्नर लार्ड विलियम बैंटिक के द्वारा लागू की गई, जिसका मसौदा ब्रिटिश गवर्नर लार्ड विलियम बैंटिक के शिक्षा सलाहकार थामस बैबिंगटन लार्ड मैकाले ने तैयार किया था।जो 10.6. 1834 को शिक्षा शिक्षा सलाहकार नियुक्त होकर भारत आया था।लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीयों में अग्रेजीयत पैदा करना था और भारतीयता की भावना को विस्मृत कराना था।अपने उद्देश्य में मैकाले बहुत हद तक कामयाब रहा।

स्वतंत्र भारत में 1968 तक यह शिक्षा नीति लागू रही।1952 में लक्ष्मण स्वामी मुदलियार की अध्यक्षता में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग तथा 1964 में डा दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग की अनुशंसा के आधार पर 1968 में शिक्षा नीति पर एक प्रस्ताव प्रकाशित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय विकास के प्रति वचनवद्ध, चरित्रवान और कार्यकुशल युवक युवतियों को तैयार करना था।1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य राष्ट्र के सभी बच्चों को जाति,धर्म,लिंग,स्थान आदि के किसी भी आधार पर भेदभाव किए बिना शिक्षा के समुचित और समान अवसर प्रदान करना था।इसकी पूर्ति के लिए समस्त बालकों की पहुंच के अंदर ही कम दूरी पर प्राथमिक विद्यालय स्थापित किए गए। 24 जुलाई 1986 के पूर्व तक यह नीति लागू रही।

तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में 24 जुलाई 1986 को द्वितीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गई।यह शिक्षा नीति भी पूर्णतः कोठारी आयोग के प्रतिवेदन पर आधारित थी।सामाजिक दक्षता,राष्ट्रीय एकता एवम् समाजवादी समाज की स्थापना करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।बच्चों के समग्र व्यक्तित्व विकास पर जोर दिया गया और शिक्षकों के हाथ से छड़ी छिन ली गई।परिणामतरू छात्रों में उदंडता और अनुशासन हीनता का क्रमशःश्री गणेश हुआ,जो उनके सेहत के लिए शुभ नहीं हुआ।

भारत सरकार ने तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा 29 जुलाई 2020 को की। भारतवर्ष में 34 वर्षों बाद नई शिक्षा नीति आई है। इससे पूर्व 1986 में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई थी ।मोदी सरकार ने 2016 में ही नई शिक्षा नीति लाने की तैयारियां शुरू कर दी थीं और इसके लिए टी.एस.

आर .सुब्रमण्यम कमिटी का गठन भी हुआ था; जिन्होंने मई 2019 में शिक्षा नीति का अपना मसौदा (क्तंजि) केंद्र सरकार के सामने रखा, लेकिन सरकार को वह ड्राफ्ट (मसौदा)पसंद नहीं आया ।इसके बाद सरकार ने वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं जे.एन.यू. दिल्ली के पूर्व कुलपति डा. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक 9 सदस्य समिति का गठन किया। डा.के. कस्तूरीरंगन की कमेटी ने एक नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार किया, जिसे सार्वजनिक कर केंद्र सरकार ने आम लोगों से भी सुझाव मांगे। अनेक सुझाव आए। डा रमेश पोखरियाल श्निशंकश मानव संसाधन मंत्री ने कहा कि इस मसौदे पर आम और खास लोगों के सुझाव आए। जिसमें विद्यार्थी, अभिभावक, अध्यापक से लेकर बड़े–बड़े शिक्षाविद्, विशेषज्ञ पूर्व शिक्षा मंत्री और राजनीतिक दलों के नेता शामिल थे। इसके अलावा संसद के सभी सांसदों और संसद की स्टैंडिंग कमिटी से भी इस बारे में सलाह मशविरा किया गया। जिसमें सभी दल के लोग शामिल थे । इसके बाद अंग्रेजी में 66 पन्ने (हिंदी में 117 पन्ने)की नई शिक्षा नीति को मंजूरी दी गई।

वैसे तो इस शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक बड़े बड़े बदलाव किए गए हैं, लेकिन कुछ अहम् बदलाव की चर्चा यहां मैं करना चाहूंगा। अगर सबसे पहले स्कूली शिक्षा की बात की जाए, तो स्कूली शिक्षा के मूलभूत ढांचे में एक बड़ा परिवर्तन किया गया है। 10 + 2+3 पर आधारित हमारी शिक्षा प्रणाली को 5+3+3+4 के रूप में बदला गया है। इसमें पहले 5 वर्ष अर्ली स्कूलिंग के होंगे। इसे अर्ली चाइल्डहुड पॉलिसी का नाम दिया गया है; जिसके अनुसार 3 से 5 वर्ष के बच्चों को भी स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया जाएगा।

वर्तमान में 3 से 5 वर्ष की उम्र के बच्चे 10+2 वाले स्कूली शिक्षा प्रणाली में शामिल नहीं हैं और इसमें 3 से 5 वर्ष के बच्चों को भी स्कूली शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया है। हालांकि इन छोटे बच्चों के प्री–स्कूलिंग के लिए पूर्ववर्ती सरकारों ने आंगनबाड़ी की पहले से व्यवस्था की थी, लेकिन इस ढांचे को इस नई शिक्षा नीति में और मजबूत किया है ।

नई शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि बच्चे भगवान के रुप हैं और बाल्यावस्था एक महत्वपूर्ण आयाम है।इसमें बच्चों के देखभाल और शिक्षा की एक मजबूत बुनियाद की आवश्यकता है ; जिससे आगे चलकर बच्चों का विकास बेहतर हो।इसमें इस तरह शिक्षा के अधिकार (त्ज्म्) का दायरा बढ़ गया है। यह पहले 6 से 14 साल के बच्चों के लिए था ,जो अब बढ़कर 3 से 18 साल के बच्चों के लिए हो गया है और उनके लिए प्राथमिक, माध्यमिक और उत्तर माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य हो गई है।

सरकार ने इसके साथ ही स्कूली शिक्षा में 2030 तक नामांकन अनुपात यानी ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो(ळम्त्) को 100ः और उच्च शिक्षा में इसे 50ः तक करने का लक्ष्य रखा है और इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन द्वारा किए गए एक सर्वे के मुताबिक 2017 से 18 में भारत का उच्च शिक्षा में जी.ई.आर. 27.4 ःप्रतिशत था, जिसे अगले 15 सालों में दोगुना करने का लक्ष्य सरकार ने रखा है।

5+3+3+4 के प्रारूप में पहला 5 साल बच्चा चतम–ेबीववस और कक्षा एक एवं दो में पढेगा। इन्हें मिलाकर 5 साल पूरे हो जाएंगे। इसके बाद 8 साल से 11 साल की उम्र में आगे तीन कक्षाओं कक्षा 3, 4 और 5 की पढ़ाई होगी ।इसके बाद 11 से 14 साल की उम्र में कक्षा 6, 7 और 8 की पढ़ाई होगी ।इसके बाद 14 से 18 साल की उम्र में कक्षा नौवीं से 12वीं तक की पढ़ाई कर सकेंगे। यह 9 वीं से 12 वीं तक की पढ़ाई बोर्ड आधारित होगी ।इसे नई शिक्षा नीति में बहुत सरल बनाया गया है ।बोर्ड परीक्षा को दो भागों में बांटने का प्रस्ताव है ,जिसके तहत साल में दो हिस्सों में बोर्ड परीक्षा ली जा सकती है। इससे बच्चे पर परीक्षा का बोझ कम होगा और वे रट्टा मारने की वजह सीखने और आकलन पर जोर देंगे।

स्कूली शिक्षा में एक और अहम बदलाव के रूप में मातृभाषा को शामिल किया गया है; जिस पर काफी विवाद हो रहा है। नई शिक्षा नीति के अनुसार अब बच्चे पहली से पांचवी तक की कक्षा या संभवतरू 8 वीं तक की कक्षा अपनी मातृभाषा के माध्यम में ही ग्रहण करेंगे। इसके अलावा यह भी कहा गया है कि अगर आगे की कक्षाओं में भी इसे जारी रखा जाता है तो और बेहतर होगा।

शिक्षा मंत्रालय का कहना है कि बच्चा अपनी मातृभाषा में चीजों को बेहतर ढंग से समझता है; इसलिए शुरुआती शिक्षा मातृभाषा माध्यम में होनी चाहिए। इसमें कुछ नया नहीं है। लगभग हर शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा के माध्यम की बात को कहा गया है ;लेकिन कभी इसे पूर्ण रुप से लागू नहीं किया गया। यह शोध परक सत्य है कि बच्चा अपनी भाषा में सबसे अधिक सीख समझ सकता है और ऐसा होना भी चाहिए ;लेकिन मातृभाषा के संबंध में कई लोग सवाल उठा रहे हैं कि क्या जब बच्चा प्राथमिक कक्षाओं को पास कर आगे बढ़ेगा और उन्हें आगे की कक्षाओं में हिंदी या अंग्रेजी माध्यम से विषयों को पढ़ाया जाने लगेगा तब वे उससे सही ढंग से समझ पाएंगे? या उच्च कक्षाओं में वे अंग्रेजी माध्यम के छात्रों से प्रतियोगिता कर पाएंगे? इसके अलावा एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या स्थानीय या मातृभाषा माध्यम में पर्याप्त एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध होंगीं! किंतु मेरा मानना है कि यह बात हमें नहीं सरकार को सुनिश्चित करना होगा कि जब वह इस संबंध में नीति ला रही है तो वह पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री भी स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध कराए; क्योंकि यह बात अंशतः सत्य है कि पहले की सरकारें भी मातृभाषा में पढ़ाई पर जोर देती रही हैं लेकिन उन्होंने इस दिशा में कोई खास काम नहीं किया।

निष्कर्ष–

नई शिक्षा नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह व्यावसायिक और कौशल विकास पर केन्द्रित होगी।इसमें नैतिकता और राष्ट्रीय भावना पर जोर दिया गया है।नई शिक्षा नीति में डिग्री और डिप्लोमा के साथ साथ गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पर अधिक जोर

दिया गया है।नई नीति में 1 वर्ष में सर्टिफिकेट,2 वर्ष में डिप्लोमा,3 वर्ष में डिग्री और 4 वर्ष में मास्टर डिग्री प्राप्त होगी।एम.फिल को समाप्त किया गया है। इसमें अनुसंधान पर जोर है।भारत में सभी वैज्ञानिक और सामाजिक अनुसंधान के लिए रिसर्च फाउंडेशन बनेगा।सभी प्रांतीय सरकारें अपने संसाधनों के परिपेक्ष्य में यथाशीघ्र इस शिक्षा नीति को लागू करें ताकि देश का संपूर्ण विकास हो सके।नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन से भारत के प्रतिभावान छात्र–छात्राओं का भविष्य उज्ज्वल होगा और भारत पुनः विश्व गुरु बनेगा –ऐसा विश्वास है।

संदर्भ ग्रंथों की सूचीः–

1 नई शिक्षा नीति का ड्राफ्ट ,गजट में प्रकाशित भारत सरकार नई दिल्ली 2019

2 तत्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा –डॉ0 केदार नाथ तिवारी,मोती लाल बनारसी दास ,पटना 1997

3 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन की चार धाराएंः–डा नरेश प्र तिवारी, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी,पटना–2013

4 रवीन्द्र नाथ टैगोर का दर्शन –डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन,मोती लाल बनारसी दास, पटना –1995

5 उपनिषदों का दर्शन –डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन,मोती लाल बनारसी,पटना 2010

6 भारतीय संस्कृति –डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन –मोती लाल बनारसी दास,पटना 2005

जय हिंद जय शिक्षा

डॉ0 रविता पाठकः

सहायक प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)

ओड़िशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट (ओड़िशा) 764004

चलभाषः9679861217

Email: Mkd:ravitapathak05@gmail-com

21

आहार एवं नई फूड टेक्नोलॉजी का विश्लेषण

सुप्रिया

सारांश

मनुष्य इस सृष्टि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राणी है।आज से लगभग 2600 वर्ष यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।आज भी उसकी बात पूर्णतः सत्य है। मनुष्य की चार मौलिक आवश्यकताएं हैं–भोजन, वस्त्र, आवास और शिक्षा।भोजन का स्थान मनुष्य के जीवन में सर्वप्रथम है। यह मनुष्य की पहली मौलिक आवश्यकता है,इसके बिना मनुष्य का जीवन दूभर है। लोक किंवदंती है कि भूखे पेट तो भजन भी नहीं हो सकताः–

भूखे भजन न होहिं गोपाला।

राखी लेहु यह कंठी माला।

भगवान श्री कृष्ण ने भगवद्गीता में संतुलित आहार विहार के महत्व को प्रतिपादित करते हुए अर्जुन से कहा है किः–

युक्ताहार विहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य,योगो भवति दुरूखहा।6/17

अर्थात् दुखों का नाश करने वाला योग तो यथा योग्य आहार –विहार करने वाला, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करनेवाला और यथा योग्य सोने तथा जागने वाला ही सिद्ध होता है।

लेकिन आधुनिक युग का भौतिक मानव भोगवादी और विलासी हो गया है। अतः आहार संबंधी समस्याओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।इनसे छुटकारा पाने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भरपूर क्षमता से युद्ध स्तर पर विविध प्रयास करने होंगे। अधिक मात्रा में अन्न के उत्पादन पर बल देना, वर्तमान परिस्थितियों में जरूरी हो गया है;जिससे लोगों की आर्थिक स्थिति सुधरे तभी आम जनता के पोषक स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है। भोजन को गुणात्मक रूप में सुधारने के लिए प्रोटीन युक्त आहार को तथा रक्षात्मक भोज्य पदार्थों के सेवन को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय विकास तभी संभव है,जब राष्ट्र के लोग स्वस्थ रहें तथा श्रेष्ठ कार्य करने की स्थिति में रहें।इसके लिए भोजन की सही संयुक्ति, अनेक प्रकार के आहारों का प्रयोग,पोषक युक्त, आकर्षक, स्वादिष्ट, सुपाच्य, विटामिन युक्त बनाना अति आवश्यक है।इसके लिए पोषक संबंधी शिक्षा के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाना है।

नई फूड टेक्नोलॉजी को घर घर पहुंचाने से लोगों के रहने सहन का स्तर,उसके भोजन का स्तर उन्नत करना संभव होगा।

वर्तमान समय में गृह विज्ञान के माध्यम से नवीन फूड टेक्नोलॉजी पर काफी जोर दिया जा रहा है।इसका अर्थ यह है कि जनमानस के पोषण स्तर को ऊंचा उठाने के लिए कुछ संबद्ध कामों पर नई टेक्नोलॉजी लगाकर अधिक तेजी से और अधिक कुशलता से काम किया जाए। ये उपाय देश के पोषण स्तर को ऊंचा उठा सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के आहार एवं कृषि संगठन ने जोर देकर विकास शील देशों के लिए कृषि और पशुपालन की वर्तमान स्थिति में सुधार लाने के लिए वैज्ञानिक तरीकों और उपकरणों को प्रयोग मे लाने की अनुशंसा की है।अनाजों के लिए उचित संग्रह की व्यवस्था करके विनाश को रोकना है। संरक्षण और संग्रहण में वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने से ,उनकी कीड़ों आदि से वैज्ञानिक विधियों से सुरक्षा करके , संपूर्ण उत्पादन मानव के उपयोग में लाया जा सकता है,जो इसके पूर्व काफी मात्रा में नष्ट हो जाता करता था।

नष्ट होने वाले पदार्थों का वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण करके उन्हें मानव को उपलब्ध कराना,इसके लिए शीत संग्रहालयों (Cold storage) की सुविधा की व्यवस्था करना जरूरी है। डिब्बा बंदी तथा निर्जीवीकरण आदि से भी खाद्य पदार्थ अधिक से अधिक मात्रा में व्यापक क्षेत्र में तथा अधिक समय तक उपयोग में लाये जा सकते हैं ।भारत में इनसे संबंधित बहुत से उद्योग स्थापित किये गये हैं।मिलिंग और प्रोसेसिंग को ऐसी वैज्ञानिक विधियों को प्रयोग में लाया जाए,कि खाद्य पदार्थों के पोषक तत्व सुरक्षित रहे।

अतः ऐसी चीजें वैज्ञानिक विधियों से तैयार की जाएं,जिनको मिला देने से इनमें प्रोटीन खाने वाले को पर्याप्त मात्रा में मिले। वनस्पति जन्म भोज्य पदार्थों में प्रोटीन के कुछ अनिवार्य एमीनो एसीड कमी की पूर्ति अनुपूरक विधि से की जा सकती है।सान्द्र रूप में विटामिन खनिज लवण आदि का प्रयोग करने से पोषण स्तर ठीक रहता है।इस श्रेणी के उत्पादन जब वैज्ञानिक विधियों से तैयार किए जायेंगे,तब ही जन मानस इन्हें प्रयोग कर सकेंगे।अतः वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग करके इनका उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है, क्योंकि यह भी जरूरी है कि जनमानस को अधिक से अधिक मात्रा में इन्हें उपलब्ध कराया जाए।

इसके अतिरिक्त गैर पारंपरिक स्त्रोतों से पोषक तत्वों को प्राप्त करने पर रिसर्च एवं अनुसंधान आदि के कार्य आगे बढ़ाने चाहिए।जैसे पत्तों,सलगी, मशरूम, समुद्री पौधे,आदि पर अनुसंधान हो।इसके लिए वैज्ञानिक अनुसंधान शालाएं बनायी जाएं,जिसमें सुयोग्य वैज्ञानिक इनमें काम करें।साथ ही आटे,चावल,दूध आदि को संबलित(थ्वतजपलि) करने तथा संपन्न (मदतपबीउमदज)करने की विधि पर अनुसंधान हो और इनपर प्रयोग हो,जिससे जन साधारण को संपन्न भोज्य पदार्थ मिल सके। वैज्ञानिक विधि से अधिक संपन्न बनाकर, वैज्ञानिक अनुसंधानों पर आधारित नई टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके राष्ट्र के पोषण स्तर को उन्नत करना आधुनिक फूड टेक्नोलॉजी

का महत्व एवं उद्देश्य प्रदर्शित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1 डॉ0 के के दत्ता–बिहार में स्वतंत्रता का इतिहास भाग 3

2 डॉ0 मोती चंद्रा–प्राचीन भारत की पथ पद्धति, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना 1953

3 डॉ0 सिकंदर लाल –सर्वोदय दर्शन की वर्तमान समय में उपयोगिता,राका प्रकाशन, इलाहाबाद 2016

4 डॉ0 एल एम राय–माध्यमिक समाज अध्ययन,ज्ञानदा प्रकाशन, पटना 1975

सुप्रिया

शोध छात्रा

गृह विज्ञान विभाग

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, भोजपुर, आरा

22

डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन और आदर्श शिक्षक की कसौटी (5 सितंबर को शिक्षक दिवस पर विशेष)

डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेय तारेश

सारांश

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान् भारत वर्ष में गूंजे हमारी आरती।
हो भद्र भावोद्भाविनी,वह भारती हे भगवते।
सीतापते सीतापते,गीतापते गीतापते।
मैथिलीशरण गुप्त भारत–भारत
,,,,,,,,

तीन सजावत देश को,गुरु,सती और शूर।
तीन लजावत देश को,कपटी, कायर क्रूर।।

भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर अनेक गुरुओं और संतों का पदार्पण होते रहा है,इनमें याग्वल्क्य ,भारद्धाज, अष्टावक्र, वेदव्यास,शंकराचार्य, वशिष्ठ, विश्वमित्र, संदीपनी,द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, यमदग्नि, परशुराम, रामकृष्ण परम हंस,विवेकानंद आदि मुख्य हैं,जिनके ज्ञान और विवेक से भारतवर्ष गौरान्वित हुआ है।भारतवर्ष को सजाने संवारने वाले और विश्व गुरु बनाने वाले शिक्षक, सती,संत और शूर हैं,जिनपर हमें नाज और ताज है।

भारतीय गुरुओं की इसी सुदीर्घ परंपरा में तमिलनाडु के तरुत्तनी ग्राम में 5 सितंबर 1888 को जिस नवजात शिशु ने जन्म लिया और अपने वैदुष्य और शिक्षकत्व धर्म से न केवल भारतवर्ष को अपितु संपूर्ण विश्व को प्रकाशित और गौरवान्वित किया, इतिहास उसे डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन के नाम से जानता है।

पिता चाहते थे पुत्र पुजारी बने,लेकिन पुत्र की ख्वाहिश अंग्रेजी सीखने और शिक्षक बनने की थी।हरि ईच्छा बलीयसी, जहाँ चाह वहाँ राह की लोकोक्ति चरितार्थ हुई।मेधावी राधाकृष्णन ने कृश्चियन कालेज मद्रास से दर्शन शास्त्र में एम.ए.की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त की और उसी कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हो गए। वे अपनी प्रतिभा के बल पर निरंतर आगे बढ़ते गए।

कुछ दिनों के बाद वे रेजिडेंसी कालेज मद्रास में प्राध्यापक बन गए।पुनः मैसूर और कोलकाता विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर बनाए गए।लंबी अवधि तक आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर रहे।पुनरू आंध्र विश्वविद्यालय और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति बनाए गए।पं मदन मोहन मालवीय उन्हें आफर देकर अपने यहां ले आए।वे 1946 तक वहां के कुलपति रहे।वे अपने कुलपतित्व काल में प्रत्येक रविवार को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विश्वनाथ मंदिर में प्रातः 8 से10 बजे तक श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन करते थे और उनके उद्बोधन को सुनने के लिए न केवल छात्र छात्राओं का अपितु शिक्षकों तथा अन्य श्रध्दालुओं की भीड़ लगी रहती थी।यह बात मैंने रांची के सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक डा के.के.सिंहा से सुनी थी,जो 1945–46 में बी.एच.यू वाराणसी के छात्र हुआ करते थे।

उन्होंने अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों तथा शिष्टमंडलों का सफल नेतृत्व किया।उन्होंने 1948–49 में यूनेस्को के एक्जीक्यूटिव बोर्ड के अध्यक्ष पद को गौरवान्वित किया।अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पद माना जाता है।

डॉ0 राधाकृष्णन 1949–1952 मे स्वतंत्र भारत के रूस में राजदूत रहे।अपने राजदूतत्व काल में वे नियमित रूप से लेनिन पुस्तकालय अपने अध्ययन हेतु जाया करते थे।ज्ञान के प्रति उत्कृष्ट अभिलाषा ने उन्हें एक आदर्श शिक्षक बना दिया।आदर्श शिक्षक का यह एक महत्वपूर्ण गुण माना जाता है।

1952 से 1962 तक वे भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति रहे और 1962 से 1967 तक वे भारत के द्वितीय राष्ट्रपति बने। 1962 में भारत चीन युद्ध और 1965 में भारत पाकिस्तान युद्ध उन्हीं के राष्ट्रपति त्व काल में लड़ा गया था।अपने ओजस्वी भाषणों से भारतीय सैनिकों के मनोबल को ऊचां उठाने में उनका योगदान सराहनीय था।

डॉ0 राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन और संस्कृति पर अनेक ग्रंथों की रचना की,जिनमें प्रमुख हैंः–

1एथिक्स आफ वेदांत(वेदांत की नैतिक भूमिका)
2 दी फिलासफी आफ रवीन्द्र नाथ टैगोर(रवीन्द्र नाथ टैगोर का दर्शन)
3 दी रेन आफ रिलीजन इन कंटेंपरेरी फिलासफी(सामयिक दर्शन के क्षेत्र में धर्म का प्रभाव)
4 इंडियन फिलासफी(भारतीय दर्शन)
5 दी फिलासफी आफ दी उपनिषद्स(उपनिषदों का दर्शन)
6भगवदगीता इस्ट एण्ड वेस्ट सम रिफ्लेक्शनस
7 इस्टर्न रिलीजन एण्ड वेस्टर्न थौट्स।
8 एन आडियलिस्टिक व्यू आफ लाइफ
9 हिंदू व्यू आफ लाइफ
10भारतीय संस्कृति

सत्य की खोज, संस्कृति तथा समाज डा राधाकृष्णन के दर्शन पर शिप्ली द्वारा संपादित एक पुस्तक प्रसिद्ध है।यह एक अभिनंदन ग्रंथ है,जिसमें भारतीय दर्शन और डा राधाकृष्णन के अन्वेषणों पर अनेक विद्वानों के खोजपूर्ण लेख हैं।

अपनी रचनात्मक एवम् दार्शनिक उपलब्धियों के कारण वे देश और विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों के द्वारा डाक्टरेट्स की मानद उपाधियों से नवाजे गए।डा राधाकृष्णन को 1954 में स्वतंत्रता सेनानी सी.राजगोपालाचारी और भौतिक शास्त्री डा सी.वी.रमण के

साथ सबसे पहले भारत–रत्न के साथ सम्मानित किया गया था।

डॉ0 राधाकृष्णन भाषण कला के आचार्य थे। विश्व के विभिन्न देशो में भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन पर भाषण देने के लिए उन्हें सम्मान पूर्वक बुलाया जाता था।श्रोता उनके भाषणों से मंत्र मुग्ध हो जाते थे।डा राधाकृष्णन में विचारों, कल्पना यथा भाषा द्वारा विचित्र ताना बाना बुनने की अद्भभुत क्षमता थी।वस्तुतः उनके प्रवचनों की वास्तविक महता उनके अंतर में निवास करती थी,जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती है।उनकी यही आध्यात्मिक शक्ति सबको प्रभावित करती थी,अपनी ओर आकर्षित करती थी और संकुचित क्षेत्र से उठाकर उन्मुक्त वातावरण में ले जाती थी।

हाजिर–जबाबी में वे गजब के थे।एक बार वे इग्लैंड गए।विश्व में उन्हें हिंदूत्व के परम विद्वान के रूप में जाना जाता था,तब देश परतंत्र था।बड़ी संख्या में लोग उनके भाषण को सुनने के लिए आए थे।भोजन के समय एक अंग्रेज ने राधाकृष्णन से पूछा–क्या हिंदू नाम का कोई समाज है?कोई संस्कृति है?तुम कितने बिखरे हुए हो?तुम्हारा एक सा रंग नहीं, कोई गोरा,कोई काला,कोई बौना,कोई धोती पहनता है,कोई लूंगी कोई कुर्ता तो कोई कमीज ।देखो! हम अंग्रेज सभी एक जैसे हैं,सब गोरे गोरे लाल लाल।इस पर डा राधाकृष्णन ने तपाक से उत्तर दिया–घोड़े अलग अलग रंग रूप के होते हैं,पर गधे एक जैसे होते हैं।अलग अलग रंग और विविधता विकास के लक्षण हैं।अंग्रेज को काठ मार गया।

आदर्श शिक्षक की कसौटी और डा सर्व पल्ली राधाकृष्णन
(Criteria of an Ideal Teacheri & Dr SarvapalliRadhaKrishnan)

विद्या ददाति विनयं,विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततरूसुखम्।
चाणक्य नीतिःआचार्य चाणक्य
(अर्थात् विद्या से विनय,विनय से पात्रता,पात्रता से धन और धन से धर्म और सुख की प्राप्ति होती है।)

शिक्षा समाज के विकास की आधार–शिला है।आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कहा था कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।आज भी उसकी यह बात पूर्णतः सत्य है।मनुष्य एक चिंतनशील और विवेकशील प्राणी है।यों तो उसकी आवश्यकताएं अनंत हैं ,परंतु चार ऐसी मौलिक आवश्यकताएं हैं ,जिनके बिना उसका जीवन जीना दूभर हैः

भोजन,वस्त्र, आवास और शिक्षा।गणना के क्रम में भले शिक्षा चौथे क्रम पर हो,परंतु महत्व और गुणवत्ता की दृष्टि से वह प्रथम स्थान की अधिकारिणी है।

शिक्षा का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है।संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना शिक्षा का कोशगत अर्थ है–सीखना,जानना और आचरण में उतारना।राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के अनुसार श्मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना ही शिक्षा है।स्वामी विवेकानंद के अनुसार श्मनुष्य के भीतर निहित क्षमता का पूर्ण प्रकटीकरण ही शिक्षा हैश।यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने इस बात पर बल दिया है कि शशिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकसित करने का प्रयत्न है।श्प्लेटो ने लिखा है कि शशिक्षा छात्र के शरीर और आत्मा में उस सब सौंदर्य और पूर्णता का विकास करती है,जिसके योग्य वह है।श्वेदांत के अनुसार समस्त ज्ञान हमारे भीतर विद्यमान है।एक बालक में भी है,केवल उसे जागृत करना है।बालक में ज्ञान का जागृत होना ही शिक्षा है।अतरूहम कह सकते हैं कि मनुष्य के व्यक्तित्व में सत्यं,शिवं सुंदरं के भाव का प्रकटीकरण ही शिक्षा है।

हिन्दी का शिक्षा शब्द अंग्रेजी के श्म्क्न्ब।ज्प्वछश का हिंदी पर्याय है;जिसका गूढ़ार्थ निम्नवत् हैरू–

E: Etiquette–विनम्रता / शिष्टाचार / सदाचार
D:Discipline–अनुशासन
U:Universal Brothaerhood–विश्वबंधुत्व।
C:Creativity–सृजनशीलता
A:Awareness–जागरूकता / सजगता
T: Transformation–रूपांतरण / आदान–प्रदान।
I: Integriजल–एकता / नेकता / सत्यनिष्ठा
O: Optimism–आशावादिता
N: Nobiliजल–नम्रता / विनम्रता

विष्णु पुराण में कहा गया हैः
सा विद्या या विमुक्तये अर्थात विद्या(शिक्षा) वही है जो हमें सारे बंधनों से मुक्त करती है।प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्यपरक और नैतिकता परक थी ,आधुनिक शिक्षा व्यावसायिक और रोजगारपरक हो गई है।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन से पूछा था कि संसार में सर्वाधिक पवित्रम् गुण क्या है?इस प्रश्न के उत्तर में अर्जुन ने अनेक गुणों (यथा तप , त्याग ,सेवा,सुश्रुषा, सहिष्णुता,प्रेम, परोपकार आदि)का नाम लिया था लेकिन भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि अर्जुन इन गुणों की श्रेष्ठता और पवित्रता में संदेह नहीं है लेकिन ज्ञान संसार में पवित्रम् हैः–

नहि ज्ञानेन सदृशं,पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योग संसिद्धि कालेनात्मनि विंदति। 4 / 38

इस ज्ञान प्राप्ति का उपाय पूछने पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि श्रद्धा, तत्परता और इंद्रिय निग्रह से इस ज्ञान को प्राप्त कर क्षणमात्र में स्थायी शांति प्राप्त की जा सकती है–
श्रद्धावान लभते ज्ञानं,तत्परःसंयतेंद्रिय।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शांति अचिरणे अधिगच्छति।4 / 39

अस्तु संसार के इस पवित्रतम् गुण को धारण करने और कराने वालावाला शिक्षक होता है,जिसे हमारे शास्त्रों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी श्रेष्ठ मानकर पूजा गया हैः–

गुरु ब्रह्मारूगुरु विष्णुरू,गुरु देवो महेश्वररू।

गुरु साक्षात् परंब्रह्म,तस्मै श्री गुरुवे नमः।

इसीलिए संत कबीर ने गुरु को गोविंद से भी बड़ा घोषित किया हैः–

गुरु गोविन्द दोउ खड़े,काके लागूं पांय।

बलिहारी गुरु आपनो,जिन गोविंद दियो मिलाया।

कबीर ने तो यहां तक कह दिया है कि यह शरीर विष की लता है और गुरु अमृत की खान हैं,सीस देने पर भी सच्चे और अच्छे गुरु की प्राप्ति सस्ता ही हैः–

यह तन विष की बेलरी,गुरु अमृत की खान।

सीस दिये जो गुरु मिलें,तो भी सस्ता जान।

महाकवि तुलसीदास ने मानस की पहली चौपाई गुरु वंदना में लिखीः–

बंदों गुरु पद पदुम परागा।

सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।

अमिय मूरिमय चूरन चारू।

समन सकल भव रुज परिवाः।

और यह भी कहा कि ब्रह्मा के कुपित होने पर गुरु अपने शिष्य की रक्षा कर सकता है लेकिन गुरु के कुपित होने पर ब्रह्मा भी उनकी रक्षा नहीं कर सकते हैंः–

राखई गुरु जो कोप विधाता।

गुरु विरोध नहीं कोउ जग त्राता।

गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई।

जो विरंची शंकर हम होई।

शिक्षण एक पवित्र कार्य है। संस्कृत वांग्मय के श्रेष्ठ महाकवि कालिदास ने अपने सुप्रसिद्ध नाटक श्मालविकाग्निमित्रंश में शिक्षण कला का उल्लेख करते हुए दो प्रकार के शिक्षकों की चर्चा की हैः–

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्म संस्था,

संक्रांतिन्यस्त विशेष युक्ता।

यस्योभयं साधुरू सरूशिक्षकानां,

धुरि प्रतिष्ठा पवितव्य एवं।1/16

अर्थात कुछ शिक्षक की योग्यता का प्रदर्शन केवल अपने तक के लिए होता है,कुछ दूसरों में विद्या संक्रमित करने में विशेष रूप से दक्ष होते हैं।जिस शिक्षक के पास ये दोनों क्षमताएं हैं,वे ही सर्वाधिक रूप से प्रतिष्ठा के योग्य होते हैं।कुछ शिक्षकों में अनुभूति होती है और कुछ में अभिव्यक्ति । अर्थात् कुछ विषय तो समझ जाते हैं लेकिन समझा नहीं पाते।जिन शिक्षकों में अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों का मणिकांचन संयोग होता है,वे ही प्रतिष्ठा की धुरी बनते हैं।स्वयं मन से अध्ययन करें और मन लगाकर अध्यापन करें यही शिक्षक का मूल धर्म है।मुझे यह लिखने में प्रसन्नता हो रही है कि डा सर्व पल्ली राधाकृष्णन में अनुभूति की सघनता और अभिव्यक्ति की कुशलता दोनों का मणि कांचन संयोग था। अतः वे एक श्रेष्ठ और आदर्श शिक्षक के विग्रह थे। मुझे यह लिखने में संकोच नहीं हो रहा है कि आजकल ऐसे शिक्षकों का प्रायः अभाव हो गया है। हमें इस विषय पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

शास्त्रानुसार एक आदर्श शिक्षक मे 7 गुण अपेक्षित हैः–

विद्वत्वं,दक्षता,शीलं, संक्रांतिः अनुशीलनम्।

शिक्षकस्य गुणारूसप्त,सचेतस्त्वं प्रसन्नता।

अर्थात 1 विद्वता 2 दक्षता (निपुणता) 3 उत्तम आचरण 4 पढ़ाने की कुशलता 5 बहुधा अभ्यास 6 जागरूकता और 7 प्रसन्नता ये आदर्श शिक्षक के 7 गुण हैं।(1Scholarship 2 Ability 3 Good conduct 4 Teaching Skills (Transmission or Communication) 5 Repeated study 6 Awareness & 7 Hapiness, Pleasure)

आदर्श शिक्षक में ज्ञान की बड़ी ही तीव्र अगस्त्य पिपासा होती है।वह यावतजीवमधीते विप्ररू की सूक्ति को चरितार्थ करता है।वह सही अर्थों में विद्या व्यसनी होता है।वह अहर्निश अपने अध्ययन की परिधि का विस्तार करता है।अपनी जिज्ञासाओं और शंकाओं के समाधान के लिए शास्त्र चिंतन से भागता नहीं है। दूसरों के द्वारा उंगली उठाते जाने पर भी जो चुप रहता है,ऐसा व्यक्ति शिक्षक नहीं वरन् ज्ञान बेचनेवाला कहलाता है। भर्तृहरि ने अपने नीति शतक में ठीक ही लिखा है किरू–

लब्धास्पदोस्मीति विवादभीरोस्तितक्षिमाणस्य परेण निंदाम्।

यस्यागमःकेवल जीविकायां,

तं ज्ञान पण्यं वणिजं वदंति।

आदर्श शिक्षक का एक सूत्री कर्तव्य है अहर्निश ज्ञान की ज्योति विकीर्ण करना। पाश्चात्य विद्वान रुफिनी ने ठीक ही लिखा है कि "The teacher is like the candle which lights others consuming itself-"अर्थात शिक्षक उस मोमबत्ती के सदृश है,जो जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। आदर्श शिक्षक को विद्या व्यसनी,विनयी और निरंहकार के साथ साथ अत्यंत चरित्र निष्ठ होना चाहिए।यदि अध्यापक चरित्रहीन है तो वह खारेपन से रहित नमक जैसा होगा।यदि शिक्षक चरित्रवान है तो वह अपने तेज से दूरस्थ छात्रों को भी प्रभावित किये बिना नहीं रहेगा–ऐसा राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने कहा है। चरित्रवान शिक्षक को देखकर विद्यार्थियों में स्वयमेव श्रद्धा जागृत होती है और वे अपने को स्वयमेव ज्ञान यज्ञ के लिए आत्मार्पित कर देते हैं।

इसीलिए आचार्य चाणक्य ने कहा है कि शिक्षक साधारण नहीं होता, निर्माण और प्रलय दोनों उसकी गोद में पलते हैं। महर्षि अरविन्द ने ठीक ही कहा है कि शिक्षक राष्ट्र रूपी उपवन के चतुर माली होते हैं। भूतपूर्व राष्ट्रपति डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है

कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होते हैं। इसीलिए उन्होंने अपना जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण डा सर्व पल्ली राधाकृष्णन में मौजूद थे।राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने कहा है कि किसी देश का भविष्य वहां के योग्य नागरिकों पर, नागरिकों का भविष्य वहां की उत्तम शिक्षा पर और शिक्षा का भविष्य योग्य शिक्षकों पर निर्भर करता है।(Future of the country depends upon its citizens] Future of citizens depend upon its good education & Future of good education depends uopn its good teachers)

पाश्चात्य विद्वान विलियम आर्थर वर्ड (William Arthur Ward) ने 5 प्रकार के शिक्षकों की चर्चा की हैः–

A poor teacher tells-

An Average teacher e•plains-

A good teacher demonstrates-

A very good teacher motivates-

An e•cellent teacher inspires-

अस्तु अध्यापन कला साधना और लगन से अर्जित एक ऐसी कला है जो निरंतर अभ्यास से परिपूर्णता को प्राप्त करती है और किसी आदर्श शिक्षक की लोकप्रियता की एकमात्र कसौटी यही अध्यापन कला है।

मैं अपने पाठकों को बताना चाहता हूं कि जब उनके शिष्यों और शुभैषियों ने उनका जन्मदिन मनाने की इच्छा जाहिर की, तो उन्होंने कहा मेरा जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए।वे चाहते तो अपना जन्मदिन राष्ट्रपति दिवस के रूप में मना सकते थे,लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उनकी दृष्टि में शिक्षक ही सर्वोपरि होता है।शिक्षक ही राष्ट्रपति बनाता है,अतः वह सर्वोतोभावेन संपूज्य है।सचमुच वे आदर्श शिक्षक के साक्षात् पर्याय थे।उनके जन्मदिन पर उन्हें कोटिशः नमन,वंदन और अभिनंदन है।

ऐसे गुरुजनों के ज्ञान से भविष्य का भारत अपनी खोई समृद्धि और श्रेष्ठता को हस्तगत करेगा क्योंकि अब हम एक और नेक बन गए हैं।

शिक्षक दिवस के पावन पुनीत अवसर पर भविष्य के भारत के सर्वागीण कल्याण और विकास के लिए परमपिता परमेश्वर से हमारी प्रार्थना हैः–

सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो।

गुण, शील,साहस,बल तथा सबमें भरा उत्साह हो।

सबके हृदय में सर्वदा, संवेदना की दाह हो।

हमको तुम्हारी चाह हो,तुमको हमारी चाह हो।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1 कालिदास ग्रंथावली –संपादक , आचार्य सीताराम चतुर्वेदी , मोतीलाल बनारसी दास, पटना, दिल्ली 1995

2 रवीन्द्र नाथ टैगोर का दर्शन –डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन, मोतीलाल बनारसी दास,पटना, दिल्ली 1995

3 भारतीय संस्कृति –डा सर्व पल्ली राधाकृष्णन,मोती लाल बनारसी दास, पटना, दिल्ली 2005

4 सर्वोदय –महात्मा गांधी,सस्ता साहित्य मंडल, वाराणसी 2001

5 स्वराज –डा सर्व पल्ली राधाकृष्णन,सस्ता साहित्य मंडल, वाराणसी 2001

डॉ0 जंग बहादुर पाण्डेयश्तारेश

पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग

रांची विश्वविद्यालय, रांची 834008 (झारखंड)

चलभाषः9431595318

8797687656,9386336807

द्रुत डाकः चंदकमल –ru05@yahoo-co-in

23

रामवृक्ष बेनीपुरी की साहित्य–साधना
(23.12.1899–7.9.1968)

डॉ0 सुरेश साहु

सारांश

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में से एक रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी जी का जन्म 23 दिसम्बर 1899 ई. में बिहार प्रांत के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुरी गाँव में हुआ था। बचपन में ही इनके माता पिता का स्वर्गवास हो गया।अतरू इनका लालन पालन और प्रारभिक शिक्षा ननिहाल में हुई।आम तौर पर ननिहाल में पालित पोषित होने वाले बच्चे बिगड़ जाते हैं,लेकिन मुझे यह लिखने में प्रसन्नता हो रही है कि बेनीपुरी जी इसके अपवाद साबित हुए।

इन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन से प्रथमा एवं विशारद की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। 1920 ई. में मैट्रिक पास करने के पूर्व ही महात्मा गाँधी के आह्वान पर ये स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। 1930 ई. से 1942 ई. तक इन्हें 12 बार जेल की यात्रा करनी पड़ी। श्रामचरितमानसश के नियमित पठन–पाठन से साहित्य और कविता के क्षेत्र में इनकी रूचि जाग्रत हुई। स्कूल–काल से ही इनकी रचनाएँ पत्र–पत्रिकाओं में छपने लगी थी। इनकी पहली रचना प्रसिद्ध पत्रिका श्प्रतापश में छपी थी। कविता से ये शीघ्र ही गद्य के क्षेत्र में आ गए और पत्रकारिता के माध्यम से भी राष्ट्र सेवा करने लगे। इन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया, जिनमें प्रमुख हैं – तरुण–भारत, किसान ,मित्र, बालक, युवक, लोकसंग्रह, कर्मवीर, योगी, जनता, हिमालय, नई धारा तथा चुन्नू–मुन्नू आदि। 07 सितम्बर 1968 ई. में इनका निधन हो गया।

रामवृक्ष बेनीपुरी की गिनती हिंदी के समर्थ निबंधकार, संस्मरण तथा रेखाचित्र लेखक के रूप में की जाती है। इन्होंने लगभग एक सौ ग्रंथों का प्रणयन किया है, जिनमें प्रमुख हैं –

उपन्यास–पतितों के देश में (1930–32), कैदी की पत्नी(1940)

कहानी संग्रह

चिता के फूल (1930–32), संसार की मनोरम कहानियां।

रेखा चित्र

लाल तारा (1937–39), माटी की मूरतें (1941–45)

निबंध

गेंहूँ और गुलाब (1948–50) मशाल वंदे वाणी विनायकौ (ललित निबंध)

संस्मरण

मील का पत्थर, जंजीरें और दीवारें,। मुझे याद है।

(माटी की मूरतेंश का साहित्य अकादमी की ओर से अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद किया जा चुका है।)

नाटकरू–अम्बपाली (1941–45), नेत्रदान (1948–50), सीता की माँ (1948–50), संघमित्रा (1948–50), अमर ज्योति (1951) तथागत(1952)

यात्रा वृतांतरू–पैरो में पंख बांधकर।

जीवनीरू–जयप्रकाश, रोजा,लुक्जेम्बर्ग।

जय प्रकाश की विचारधारा(चितंन परक निबंध।

बाल साहित्यरू–अमर कथाएँ, बिलाई मौसी, बेटे हो तो ऐसे, बेटियाँ हों तो ऐसीं ,हमारे पुरखे,हमारे पड़ोसी, प्रकृति पर विजय,पृथ्वी पर विजय,हीरामन तोता, बच्चों के बापू, सियार पांडे आदि।

अन्य संपादित ग्रंथ रू–विद्यापति की पदावली (सम्पादित), मेरी डायरी (डायरी) बिहारी सतसई की सुबोध टीका, लालचीन, जान हथेली पर, आविष्कार और आविष्कारक, नई नारी, रवीन्द्र भारती आदि। (बेनीपुरी का साहित्य श्बेनीपुरी ग्रंथावलीश में प्रकाशित है।)

वैशिष्ट्य

एकता और समता के पक्षधर बेनीपुरी जी की समाज कल्पना अद्भुत थी।सामान्य किसान परिवार में जन्मे बेनीपुरी जी यद्यपि एक ग्रामीण व्यक्ति थे,किन्तु इन्होनें अपनी साधना से ज्ञान और मान पा लिया था।साहित्य ,पत्रकारिता और राजनीति से समन्वित इनकी दृष्टि सदा समाज की उन्नति और विकास की ओर अग्रसर थी।इन्होनें अपने जीवन में जो कुछ देखा,भोगा और अनुभव किया,साहित्य में उसी की अभिव्यक्ति की।जीवन की विकासोन्मुख धारा में जहाँ कही सामाजिक रूढ़ियाँ, कुरीतियां दिखाई दीं,इन्होंने उसका निराकरण करते हुए नया समाज बनाने की आकांक्षा प्रकट की।उन्होंने गुलाम भारत की पीड़ा देखी और भोगी थी और आजाद भारत में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे।उनकी अभिलाषा थीरूसमृद्ध भारत देखने की और शाश्वत भारत लिखने की।

बेनीपुरी जी प्रेम विवाह और अंतर्जातीय विवाह के हिमायती थे।उनका मानना था कि ऐसे संबंध होने से विश्व में कल्याण कारी भावनाओं का उदय होगा,विश्व मैत्री की भावना बढ़ेगी, एक दूसरे के प्रति अपनत्व होगा।ये भावनाएं मन की कुत्सित बुराइयों को दूर करने में सहायक और समर्थ होंगी।

बेनीपुरी जी अनोखे शब्द चित्रकार थे।बिहार में तीन ऐसे शैली कार उत्पन्न हुए ,जिन्होंने अपनी शैली से साहित्याकाश में अमरता प्राप्त कर लीः

आचार्य शिवपूजन सहाय,राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह और श्री रामवृक्ष बेनीपुरी।सहाय जी की शैली तत्सम प्रधान थी,बेनीपुरी की शैली तद्भव प्रधान ,जबकि राजा जी की शैली उर्दू मिश्रित थी।विशिष्ट प्रकार की अंलकृत भाषा,भावुकता तथा विशिष्ट शब्द शिल्प के कारण हिन्दी गद्य के इतिहास में बेनीपुरी जी का अपना विशिष्ट स्थान

है।उनकी श्माटी की मूरतें श रेखा चित्र बहुत प्रसिद्ध है।इसमें सामाजिक जीवन तथा व्यक्तियों की सहज सरस अनुभूति है।इसमें 12 रेखा चित्र हैं:

1 रजिया 2;बलदेव सिंह 3 सरजू भैया 4 मंगर 5 रूपा की आजी 6 देव 7 बालगोविंद भगत 8 भौजी 9 परमेसर 10 बैजू मामा 11सुभान खां 12 बुधिया

भूमिका में बेनीपुरी जी ने लिखा है कि ष्ये मूरतें, न इनमें कोई खूबसूरती है,न रंगीनी। .....ये माटीं की बनी हैं,माटी पर धरी हैं,इसीलिए जिंदगी के नजदीक हैं,जिंदगी से सराबोर हैं।ये देखती हैं सुनती हैं,खुश होती हैं,शाप देती हैं,आशीर्वाद देती हैं।ष

गेहूं और गुलाब में गेहूँ भूख का प्रतीक है तो गुलाब कला और संस्कृति का।मानवीय जीवन में जितना महत्व भूख है उतना ही महत्व कला और संस्कृति का।

बेनीपुरी जी की भाषा में या तो आवेगमयता है या प्रशांति।उसमें जटिलता कही नहीं।

बेनीपुरी जी दो टूक लिखने में विश्वास करते थे।जिस राम चरित मानस से उन्हें पढ़ने लिखने की प्रेरणा मिली उसके नायक मर्यादापुरुषोत्तम राम को वे आधा ही वीर मानते थेरू

ष हमने सुन रखा था दुनिया में साढ़े तीन ही वीर हैंरूपहला भैंसा, दूसरा सूअर, तीसरा गेहुंअन और आधा राजा रामचंद्र।भैंसा,सूअर और गेहुंवन सीधा वार करते हैं कभी पीठ नहीं दिखाते।राम चंद्र वीर थे,लेकिन बाली को मारने के लिए उन्होंने पेड़ की ओट ली थी।ष ऐसी दो टूक बात बेनीपुरी जी ही लिख सकते थे।

बेनीपुरी जी नारी विकास के परम हिमायती थे।उन्होंने लिखा हैरू ष्सामाजिक क्रांति की अग्नि में स्त्रियों की गुलामी भी जलने वाली है,समय के प्रवाह को कोई रोक नही सकताष।

इन्होंने समाज के विकास में नारी की अनिवार्यता बतायी है।इनके इसी सपने को साकार करने के लिए मुजफ्फरपुर में बेनीपुरी महिला कालेज की स्थापना हुई है।

वे संपूर्ण भारतीय समाज में एकता और समता के पक्षधर थे।समाजवादी चितंन से प्रभावित हो उन्होंने मनुष्यता को टुकडे में बाटने वाली जाति, वर्ण और धर्म के खिलाफ विद्रोह का बिगूल फूंक दिया था।यह 1930 के आस पास की घटना है, जब शिखा सूत्र टाइटिल सब कुछ सदा के लिए उन्होंने त्याग दिया।स्वयं बेनीपुरी जी के शब्दों में:

भज्यों ही राजनीति में आने की सोची,सबसे पहले मैंने धर्म और जाति पांति से अपने को दूर करने का निर्णय कर लिया।धर्म का आधार भगवान है,मै भगवान से भी द्रोह कर बैठा।

कहाँ बचपन का वह चंदन टीका,कहां किशोरावस्था का ब्राह्मणत्व और गायत्री का प्रतिदिन जाप और कहाँ एक मैं हूँ किअपनी चुटिया काट डाली,जनेऊ उतार फेंका,अपने नाम की उपाधि शर्मा हटा दी और जोरों से कहने लगा भगवान से बचो,सबसे बड़ा भूत वही है।जब तक तुम्हारे सिर पर वह भूत है,कोई अच्छा कार्य नहीं कर सकते।

विकासोन्मुख और समता मूलक समाज की स्थापना चाहने वाले बेनीपुरी जी के संपूर्ण साहित्य में जीवन को आगे बढाने वाली नयी दिशा दृष्टि गोचर होती है। यदि जीवन को सीधे सादे ढ़ंग से कह देना ही कला की सबसे बड़ी विशेषता है तो बेनीपुरी जी इसके सबसे बड़े परमाचार्य हैं।बेनीपुरी जी एक सच्चे समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ, सफल साहित्यकार और प्रखर पत्रकार थे।यही कारण है कि राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था किरूनाम से दिनकर मैं था काम से असली सूर्य बेनीपुरी जी थे।

बेनीपुरी जी के संदर्भ में कतिपय साहित्य मनीषियों के उदगार द्रष्टव्य हैं:

भयदि हमसे प्रश्न किया जाय कि आजकल हिंदी का सर्वश्रेष्ठ शब्द चित्र कार कौन है,तो हम बिना किसी संकोच के श्रीबेनीपुरी जी का नाम उपस्थित कर देंगे।

बनारसी दास चतुर्वेदी

भयह लेखनी है या जादू की छड़ी है आपके हाथ में।ष

राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त

ष्बेनीपुरी की सजीव लेखनी वास्तविकता और साथ ही रस और सौन्दर्य की पराकाष्ठा साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृत्यों में ष।

राहुल सांकृत्यायन

आधुनिक साहित्य निर्माताओं में आपका अनूठा स्थान है।

कला मनीषी राय कृष्ण दास

गद्य साहित्य को अभूतपूर्व देन–साहित्य सृजन का नया आदर्श, उदार दृष्टिकोण ज्योतिर्मय व्यक्तित्व।

जगदीश चंद्र माथुर

अस्तु बेनीपुरी जी जैसे शब्दों के जादूगर का हिंदी भाषा में होना हिन्दी भाषा के लिए सम्मान और गौरव का संदर्भ है।

संदर्भ ग्रंथः–

1 बेनीपुरी ग्रंथावली –संपादक श्री महेन्द्र बेनीपुरी,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 1985

2 विद्यापति पदावली संपादक –रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तक भंडार,पटना 1975

3 हिंदी साहित्य का इतिहास –रामचंद्र शुक्ल,नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी 1990

4 सुकवि समीक्षा –डॉ0 आनंद नारायण शर्मा,भारती भवन,पटना,1990

5 नई धारा– संपादक– राम वृक्ष बेनीपुरी, अशोक प्रेस,पटना 1956

डॉ0 सुरेश साहु

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

जनता शिवरात्रि कालेज, डालटेनगंज(, पलामू,मेदिनीनगर)

चलभाषः6206157576

अणुडाक–sureshsahu169@mail.com

24

हिंदी साहित्य को संत रविदास का प्रदेय

डॉ0 चंद्र मणि किशोर

सारांश

तीन सजावत देश को,सती संत और शूर।
तीन लजावत देश को,कपटी,कायर, क्रूर।

भारत संतों,सतियों और शूर वीरों का देश रहा है।इनके कारण भारत विश्व गुरु बना और विश्व में सम्मानित हुआ।कपटी,कायर और क्रूर लोगों के कारण भारत पराजित और लज्जित हुआ।यूनान के सुप्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने कभी कहा था कि परम पिता परमेश्वर को जब अपने द्वारा निर्मित सृष्टि के लोगों से वार्तालाप करना होता है तो वह केवल दो को माध्यम बनाता है–या तो वह संतों के मुखारविंद से बोलता है या कवियों के मुखारविंद से। भारतवर्ष में अनेक संत महात्मा हुए हैं और भविष्य में भी होंगे लेकिन संत रविदास के समकक्ष होंगे या नहीं यह विचारणीय पहलू है।

संत गुरु रविदास भारत के महान संतों में से एक परम संत शिरोमणि रहे हैं, जिन्होंने अपना जीवन समाज सुधार कार्य के लिए समर्पित कर दिया। समाज से जाति विभेद को दूर करने में रविदास जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वो ईश्वर को पाने का एक ही मार्ग जानते थे और वो है 'भक्ति', इसलिए तो उनका एक मुहावरा आज भी बहुत प्रसिद्ध है कि, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'।

रविदास जी का जन्म
==========

रविदास जी के जन्म को लेकर कई मत हैं। लेकिन रविदास जी के जन्म पर एक दोहा खूब प्रचलित है–

चौदस सो तैंसीस की,माघ सुदी पन्दरास।
दुखियों के कल्याण हित,प्रगटे श्री गुरु रविदास।

इस पंक्ति के अनुसार गुरु रविदास का जन्म माघ मास की पूर्णिमा को रविवार के दिन संवत् 1433 (यानि सन् 1376 ई)को हुआ था। रविवार के दिन इनका जन्म हुआ, इसीलिए इनका नाम रविदास पड़ा। उत्तर प्रदेश मध्यप्रदेश और राजस्थान में इन्हें रैदास भी कहा जाता है। हर साल माघ मास की पूर्णिमा तिथि को रविदास जयंती के रूप में मनाया जाता है जो कि इस वर्ष 24 फरवरी 2024 को है।इनका निधन अनुमानतः 1518 में वाराणसी में हुआ।

संत रविदास जी का जन्म 15 वीं शताब्दी में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में गोवर्धन पुर गांव में एक मोची परिवार में हुआ था। इनकी माता का नाम करमा देवी (कलसा) और पिता का नाम संतोख दास (रग्घू) था। इनके दादा का नाम श्री कालूराम और दादी का नाम श्रीमती लखपति देवी और पत्नी का नाम लोना देवी और पुत्र का नाम विजय दास है।इनके पिता श्री जाति के अनुसार जूते बनाने का पारंपरिक पेशा करते थे, जो कि उस काल में निम्न जाति का माना जाता था। लेकिन अपनी सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद भी रविदास जी भक्ति आंदोलन, हिंदू धर्म में भक्ति और समतावादी आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उजागर हुए। 15 वीं शताब्दी में रविदास जी द्वारा चलाया गया भक्ति आंदोलन उस समय का एक बड़ा आध्यात्मिक आंदोलन था,जो समता मूलक था।

समाज के लिए संत गुरु रविदास का योगदान
==========

संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास जी एक महान संत और समाज सुधारक थे। भक्ति, सामाजिक सुधार, मानवता के योगदान में उनका जीवन समर्पित रहा।

धार्मिक योगदानरू– भक्ति और ध्यान में गुरु रविदास का जीवन समर्पित रहा। उन्होंने भक्ति के भाव से कई गीत, दोहे और भजनों की रचना की, आत्मनिर्भरता, सहिष्णुता और एकता उनके मुख्य धार्मिक संदेश थे। हिंदू धर्म के साथ ही सिख धर्म के अनुयायी भी गुरु रविदास के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं। रविदास जी की 41 कविताओं को सिखों के पांचवे गुरु अर्जुन देव ने पवित्र ग्रंथ आदिग्रंथ या गुरुग्रंथ साहिब में शामिल कराया था।

सामाजिक योगदानः– समाज सुधार में भी गुरु रविदास जी का विशेष योगदान रहा। इन्होंने समाज से जातिवाद, भेदभाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ होकर समाज को समानता और न्याय के प्रति प्रेरित किया।संत रविदास के विचार धर्म,समाज और मानवता से जुड़े थे। उन्होंने समाज में असमानता, भेद–भाव, उत्पीड़न, उच्छृंखलता और अन्यान्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उनके विचारों में धर्म और समाज के संबंधों का विस्तार पूर्वक उल्लेख मिलता है।संत रविदास के विचारों के मुख्य संदर्भों में श्रद्धा,सेवा, एकता,नेता, समानता,संयम, आदर्शों का पालन, प्रेम और समझौता शामिल हैं।वे सभी लोगों के साथ एक जैसे बराबरी की मांग करते थे।उनके अनुयायियों का कहना है कि संत रविदास जी के धर्म के महत्व का सभी लोगों तक पहुंचाने के लिए कई प्रचार यात्राएं भी की थी।वे एकता,समता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के पोषक थे।सच तो यह है कि आधुनिक भारत के आध्यात्मिक नेपोलियन कहे जाने वाले विवेकानंद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और संविधान निर्माता डा बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर पर

उनके विचारों का गहरा प्रभाव परिलक्षित होता है।

शिक्षा और सेवाः– गुरु रविदास जी ने शिक्षा के महत्व पर जोर दिया और अपने शिष्यों को उच्चतम शिक्षा पाने के लिए प्रेरित किया।अपने शिष्यों को शिक्षित कर उन्होंने शिष्यों को समाज की सेवा में समर्थ बनाने के लिए प्रेरित किया। मध्यकाल की प्रसिद्ध संत मीराबाई भी रविदास जी को अपना आध्यात्मिक गुरु मानती थीं।

रविदासजी अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के तथा अत्यंत दयालु थे वे जूते बनाने का कार्य करते थे ,ऐसा करने में उन्हें बहुत खुशी मिलती थी और वे पूरी लगन तथा परिश्रम से अपना कार्य करते थे।

रविदास का वैशिष्ट्यः–उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में मुगलों का शासन था, चारों ओर अत्याचार, गरीबी, भ्रष्टाचार व अशिक्षा का बोलबाला था। उस समय मुस्लिम शासकों द्वारा प्रयास किया जाता था कि अधिकांश हिन्दुओं को मुस्लिम बनाया जाए। संत रविदास की ख्याति लगातार बढ़ रही थी जिसके चलते उनके लाखों भक्त थे जिनमें हर जाति के लोग शामिल थे। यह सब देखकर एक मुस्लिम श्सदना पीरश उनको मुसलमान बनाने आया था। उसका सोचना था कि यदि रविदास मुसलमान बन जाते हैं तो उनके लाखों भक्त भी मुस्लिम हो जाएंगे। ऐसा सोचकर उनपर हर प्रकार से दबाव बनाया गया था, लेकिन संत रविदास तो संत थे उन्हें किसी हिन्दू या मुस्लिम से नहीं मानवता से मतलब था।

संत रविदासजी बहुत ही दयालु और दानवीर थे। संत रविदास ने अपने दोहों व पदों के माध्यम से समाज में जातिगत भेदभाव को दूर कर सामाजिक एकता पर बल दिया और मानवतावादी मूल्यों की नींव रखी। रविदासजी ने सीधे–सीधे लिखा किः–

श्रैदास जन्म के कारने, होत न कोई नीच।
नर कूं नीच कर डारि है, ओछे करम की नीच।

यानी कोई भी व्यक्ति सिर्फ अपने कर्म से नीच होता है। जो व्यक्ति गलत काम करता है वो नीच होता है। कोई भी व्यक्ति जन्म के हिसाब से कभी नीच नहीं होता। संत रविदास ने अपनी कविताओं के लिए जनसाधारण की ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। साथ ही इसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और रेख्ता यानी उर्दू–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। रविदासजी के लगभग चालीस पद सिख धर्म के पवित्र धर्मग्रंथ श्गुरुग्रंथ साहबश में भी सम्मिलित किए गए है।

स्वामी रामानंदाचार्य वैष्णव भक्तिधारा के महान संत रहे हैं। संत रविदास उनके शिष्य थे। संत रविदास तो संत कबीर के समकालीन व गुरु भाई माने जाते हैं। स्वयं कबीरदास जी ने श संतन में रविदास श कहकर इन्हें मान्यता दी है। राजस्थान की कृष्ण–भक्त कवयित्री मीराबाई उनकी शिष्या थीं। यह भी कहा जाता है कि चित्तौड़ के राणा सांगा की पत्नी झाली रानी उनकी शिष्या बनीं थीं। वहीं चित्तौड़ में संत रविदास की छतरी बनी हुई है। मान्यता है कि वे वहीं से स्वर्गारोहण कर गए थे। कहते हैं कि वाराणसी में 1540 ई. में उन्होंने देह छोड़ दी थी। वाराणसी में संत रविदास का भव्य मंदिर और मठ है। जहां सभी जाति के लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। वाराणसी में श्री गुरु रविदास पार्क है, जो नगवा में उनकी स्मृति के रुप में बनाया गया है। ईश्वर के प्रति उनकी भक्ति अभिन्नता और अद्वैत की भक्ति है। उनका यह पद उनकी इसी भावना का डिम डिम महाघोष हैः–

अब तो राम नाम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।
जाकी अंग अंग वास समानी।
प्रभु जी तुम घन वन हम मोरा।
जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती।
जाकी जोत बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा।
जैसे सोनहि मिलत सोहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा।

संदर्भ ग्रंथः–

1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल –हिंदी साहित्य का इतिहास,नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी,1995
2 डा नगेंद्र सं हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली 2005
3 डा विनय कुमार सं.मध्यकालीन काव्य,भारती भवन , पटना 1990

डॉ0 चंद्र मणि किशोर
वरीय हिंदी शिक्षक
+2 जिला स्कूल, रांची 834001
चलभाष –7979852019
9431595318

25

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से किसानों की स्थिति पर प्रभाव (उत्तर प्रदेश के संदर्भ)

वर्षा त्यागी, डॉ0 सीमा मलिक

सारांश

रेडफील्ड के अनुसार – ''कृषक वे छोटे उत्पादनकर्ता है जो केवल उपयोग के लिए ही उत्पादन करते हैं प्रस्तुत शोध पत्र में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना ;पी0एम0 किसानद्ध ने किसानों की स्थिति पर कैसा प्रभाव डाला है उन सब तथ्यों का अध्ययन किया गया है। पी0एम0 किसान योजना को 2018 में ही प्रारंभ कर दिया गया था लेकिन यह योजना 2019 के अन्तरिम बजट में लागू की गई थी। पी0एम0 किसान योजना केंद्र सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर स्थान से शुरू की गई थी। इस योजना के तहत छोटे व लघु किसान जिनके पास दो हेक्टेयर तक जमीन हो उन किसानों को 6000 प्रतिवर्ष उनके बैंक अकाउंट में हस्तांतरण किए जाते हैं। इस योजना के दौरान 2000 की तीन किस्त प्रति वर्ष दी जाती है। कृषि के मुख्य तीन स्तंभ होते हैं 1. संतुलित अर्थव्यवस्था 2. पर्यावरण और 3.सामाजिक निष्पादन इन तीनों स्तंभों को प्राप्त करने के लिए पी0एम0 किसान योजना ने मुख्य योगदान दिया है। पीएम किसान योजना में लगभग 11,00,00,000 किसान लाभार्थी हुए हैं जिसमें से 2,56,00,000 किसान उत्तर प्रदेश में लाभान्वित हुए हैं। उत्तर प्रदेश में इस योजना का सबसे बड़ा भाग व्यय किया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद का 25.7 प्रति ात उत्तर प्रदेश के राज्य से प्राप्त होता है। उत्तर प्रदश गेहूं की फसल के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। उ0 प्र0 की अधिकाशं जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर हैं। पी0एम0 किसान योजना किसानों को औपचारिक ऋण के लिए प्रेरित करती है ताकि वह नई तकनीक व बीज का प्रयोग सुविधानुसार कर सके। के0वी0के0 ;कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में यह पता लगाया, कि सीमांत व लघु किसान की पहुँच नवीन तकनीक तक नहीं होती है इसलिए सरकार को समय समय पर इस प्रकार की योजनाएं चलानी पड़ती है, ताकि किसानों को प्रत्यक्ष सहायता देकर उनकी आय को बढ़ाया जा सके और उन्हें नवीन तकनीकी और बीज की ओर आकर्षित किया जा सके।

मुख्य शब्द– पी0एम0 किसान योजना, उत्तर प्रदेश, सीमांत व लघु किसान, फसल, अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना राष्ट्र के आर्थिक विकास में कृषि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। 2022–23 के सर्वेक्षण के अनुसार 42 प्रतिशत रोजगार कृषि से प्राप्त होता है इसलिए कृषि भारत के लिए उसकी रीढ़ की हड्डी मानी जाती है। भारत कृशि उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। भारत की सफलता में कृषि का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिसके लिए सरकार ने समय समय पर कई योजनाएं चलाई है। जैसा कि किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, सिंचाई परियोजना आदि लेकिन ये सभी योजनाएं ज्यादातर बड़े किसानों को लाभान्वित करती है। हरित क्रान्ति जैसी बड़ी नीति कुछ ही किसानों की स्थिति में सुधार कर सकी, यदि सत्य कहा जाए तो बड़े किसानों को ही लाभ पहुंचाया है छोटे किसानों का तो शोषण किया गया है। इस बढती खाई को पटने के लिए सरकार ने छोटे किसानों के लिए योजना चलाई– प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना। पी0एम0 किसान योजना में लघु व सीमांत किसानों को लिया गया है जिनके पास दो हेक्टेयर तक की ही जोते हो उन किसानों को ₹6000 प्रति वर्ष तीन किश्तों के रूप में दिए जाते हैं। इस योजना को वर्तमान के प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी जी के द्वारा 24 फरवरी 2019 को अंतरिम बजट में शुरू किया गया था। इस योजना का मुख्य उददे य किसानों की वित्त की समस्या को दूर करना है। 2022–23 में पी0 एम0 किसान योजना के द्वारा 11,00,00,000 से ज्यादा किसानों को 3.04,00,000 करोड़ तक का लाभ प्राप्त हुआ इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश में किसान सबसे ज्यादा लाभान्वित हुए। उत्तर प्रदेश ने पी0एम0 किसान योजना का 26 प्रति ात हिस्सा प्राप्त किया तथा उत्तर प्रदेश में किसानों की स्थिति में सुधार भी देखा गया है।

पी0एम0 किसान योजना के उद्देश्य

- किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना।
- नई नई आधुनिक तकनीक के प्रयोग करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना।
- मत्स्य पालन पशुपालन मुर्गी पालन व डेरी आदि गैर कृषि कार्यों को बढ़ावा देना।
- पी0एम0 किसान का एक उद्देश्य तरलता की बाधाओं को कम करना और ऋण तक पहुँच आसान बनाना है।

योजना की सीमाएं यदि भूमि धारण के पास 10 हेक्टेयर जोते है और केवल एक परिवार है तो उसे इस योजना का लाभ प्राप्त नहीं होगा।

- यदि किसान या भूमि धारण आय कर देता है तो उसे पीएम किसान योजना का लाभ प्राप्त नहीं होगा।
- यदि किसान को 10,000 से ज्यादा की पेंशन मिलती है तो उस किसान को इस योजना का लाभ प्राप्त नहीं होगा।
- पेशेवर डॉक्टर वकील इंजीनियर आदि को भी इस योजना में शामिल नहीं किया गया है।
- यदि किसी किसान का बैंक में खाता नहीं है तो उस किसान को इस योजना का लाभ प्राप्त नहीं होगा।
- यदि किसी की खेती बटाई पर या ठेके पर लेकर की जाती है तो भी उस मनुष्य को इस योजना में शामिल नहीं किया जाता है।

उत्तर प्रदेश में किसानों की स्थिति

उत्तर प्रदेश राज्य जनसंख्या की दृष्टि में भारत में प्रथम स्थान पर है। इस राज्य का मुख्य व्यवसाय कृषि है। राज्य की कुल

जनसंख्या में से 59.3 प्रतिशत कृषि पर ही निर्भर होती है जिनमें 80–85 प्रतिशत किसान लघु और सीमांत है जिनके पास एक या दो हेक्टेयर तक ही कृषि जोते हैं। उत्तर प्रदेश में 75 जिले हैं और 18 मंडल हैं। इस राज्य में छह तरीके की मिट्टी पाई जाती है जिसके कारण फसल में यहाँ विविधता देखी गई है। उष्णकटिबंधीय जलवायु खेती की उर्वरक शक्ति के लिए बहुत अनुकूल है जिसके तहत इस राज्य की अधिकांश जनसंख्या कृषि के माध्यम से अपना जीवनयापन करती है। उत्तर प्रदेश में कई तरीके की फसल उगाई जाती है जैसे गेहूं मक्का, धान व सरसों आदि। उत्तर प्रदेश पूरे देश का लगभग 21 प्रतिशत खाद्यान्न, 10.8 प्रतिशत फल और 15 प्रतिशत सब्जियां उगाता है। कृषि निर्यात नीति 2019 में किसानों को प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में ''प्राकृतिक खेती के विज्ञान पर क्षेत्रीय परामर्श कार्यक्रम'' में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने संबोधित करते हुए कहा कि 'हमें धरती माँ को रसायनों से बचाना हैं'। शिवराज सिंह चौहान ने किसानों को जैविक खेती के और आकर्षित करने के लिए सब्सिडी देने का वादा किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत लोगों को जैविक खेती से होने वाले लाभ के वारे में बताया गया है और रसायनिक खेती से स्वास्थ्य में होने वाली हानि के प्रति किसानों को जागरूक किया गया है।

स्वतंत्रता से पूर्व व पश्चात किसानों की स्थिति में कुछ ज्यादा सुधार देखने को नहीं मिला है। हरित क्रांति का प्रभाव कुछ ही किसानों पर देखने को मिला जो समृद्ध थे और जिनकी गिनती उंगलियों पर की जा सकती है। इन सब तथ्यों के उपरांत बढ़ती आबादी भी कृषि जोतों को कम कर रही है। कृषि पर प्रतिवर्ष 1.84 प्रतिशत की जनसंख्या वृद्धि हो रही है जिसके कारण कृषको को कृषि के साथ साथ आय के अन्य स्त्रोत की भी तलाश करनी पड रही हैं, जो तालिका में दर्शाया गया है।

आय के मुख्य स्त्रोत अनुसार प्रति 1000 कृषक परिवार

धारित भूमि हेक्टेयर	कृषि	पशुपालन	अन्य कृषि कार्यकलाप	गैर कृषि उघम	मजदूरी/ वेतन	अन्य	समस्त
<0.01	46	187	24	165	551	27	1000
0.01–0.40	565	16	24	42	321	32	1000
0.40–1.00	847	17	1	14	96	26	1000
1.01–2.00	940	5	0	3	33	19	1000
2.01–4.00	941	0	1	1	36	20	1000
4.01–10.00	1000	0	0	0	0	0	1000
10+	1000	0	0	0	0	0	1000

स्त्रोत अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान, नियोजन विभाग उ0प्र0 इस तालिका के माध्यम से देखा जा सकता है कि कृषि में लघु व सीमांत किसान उत्तर प्रदेश में ज्यादा संख्या पर है। राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में 154.98,00,000 कृषक परिवार अनुमानित हुए। उत्तर प्रदेश में 0.01 हेक्टेयर से कम भूमि धारित कृषि परिवार में सर्वाधिक 55.10 प्रति ात का मुख्य आय का स्रोत मजदूरी/ वेतन अनुमानित हुआ राज्य में 0.01 0.40 हेक्टेयर वर्ग में भूमि धारित करने वाले कृषक परिवारों में सर्वाधिक 56.50 प्रतिशत कृषक परिवारों का मुख्य आय स्रोत मजदूरी वेतन माना गया है। कृषि में कार्यरत पुरुषों की साक्षरता दर 73 प्रतिशत है वहीं महिलाओं की साक्षरता दर 38.8 प्रति ात आंकी गई है। राज्य में नलकूप व ट्यूबवैल के उपयोग में बढ़ोतरी हुई है। किसानों की आय में भी प्रग्रति हुई है। किसानों का मासिक वेतन 7581.49 प्रति माह है वही प्रति माह व्यय 6349.52 अनुमानित किया गया है। कृषकों की आय में ओर बढ़ोतरी करने के लिए सरकार समय समय पर कार्यक्रम चलाती हैं। 1997–98 में किसान क्रेडिट कार्ड योजना चलाई गई ताकि किसानों को निम्न ब्याज दर पर ऋण प्राप्त हो सके। राष्ट्रीय कृषि नीति 2007 ने कृषि के सभी पहलुओं का विकास किया पशुपालन से लेकर प्रौद्योगिकी तक के सभी तथ्यों में सुधार किया गया परंतु उत्तर प्रदेश सुधार की जरूरत है। मुख्य फसल धान गेहूं सरसों आदि में बर्षा व सूखे के कारण क्षति देखने को मिली है। इसके लिए कृषि नीति को सिंचाई के पर्याप्त साधन किसानों को मुहैया कराने चाहिए। वर्तमान स्थिति में भी किसान कृषि करने के लिए परंपरागत रूप से खेती करते हैं नवीन तकनीक का प्रयास नहीं करना चाहते है इसके लिए सरकार को किसानों को नई प्रौद्योगिकी के लिए जागरूक करना चाहिए।

पी0एम0 किसान योजना की आवश्यकता क्यों–

सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1994 से 2014 तक इन 20 सालों में लगभग 3,00,000 किसानों ने आत्महत्या कर के अपने जीवन को समाप्त कर दिया। आत्महत्या का मुख्य कारण आय में कमी व प्राकृतिक आपदा को माना जाता है। आपदा की भरपाई करने के लिए मुख्य योजना प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना है इस योजना के अंतर्गत यदि प्रकृति के कारण फसल का नुकसान हो जाता है तो उसकी भरपाई सरकार द्वारा की जाती है। आय में बढ़ोतरी के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना को शुरू किया गया है इस योजना के अंतर्गत किसानों को पेंशन के रूप में प्रतिवर्ष ₹6000 दिए जाते हैं ताकि वह फसल की लागत को वहन कर सके।

पी0 एम0 किसान योजना कि किस्त का समय व खेती में लागत का समय आस पास होता है इसका यह परिणाम देखा गया है कि सरकार द्वारा दी गई वित्त सहायता कृषि के निर्गत पर व्यय की जाती है जिससे किसान नवीन बीज खाद का प्रयोग करने में सक्षम हो गए हैं अच्छी किस्म के बीज व कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग से पैदावार में बढ़ोतरी हुई है जिससे किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है। भारत में लगभग 50 प्रतिशत ही किसान औपचारिक रूप से ऋण लेते हैं बाकी के 50 प्रतिशत किसान अनौपचारिक, साहूकार जमींदार रूप से ऋण लेते हैं जो उन्हें उच्च ब्याज दर पर ऋण देता है उस ऋण से किसान अपनी कृषि लागत को पूरा करता है लेकिन किसान को जो लाभ होता है ब्याज को चुकाने में ही समाप्त हो जाता है। जिसके कारण किसान को अपनी मेहनत भी प्राप्त नहीं होती है। पी0 एम0 किसान योजना किसान क्रेडिट कार्ड को अपने साथ जोड़ती है ताकि सीमांत किसान भी किसान

क्रेडिट कार्ड का लाभ ले सकें। पी0एम0 किसान योजना का जिन किसानों को लाभ मिलता है वह कृषक किसानक्रेडिट कार्ड से दो या चार ब्याज दर पर ऋण ले सकते हैं। जिससे किसानों के वित्त की समस्या को समाप्त करने की कोशिश की गई है। पी0एम0 किसान योजना को मानधन योजना से भी जोड़ा गया है जिससे किसानों को अपने वृद्ध अवस्था में पेंशन प्राप्त होगी। यह योजना किसानों के लिए एक वरदान साबित हुई है। उत्तर प्रदेश में लगभग 80 प्रति ात किसान सीमांत है इसलिए सरकार को विशेष तौर पर ऐसी योजना चलानी चाहिए जो छोटे किसानों की ओर अपना ध्यान केंद्रित करें इस स्थिति को समझते हुए केंद्र सरकार द्वारा पी0एम0 किसान योजना चलाई गई। लघु किसान में नवीन तकनीक व बीज उर्वरक का प्रयोग करते हुए किसानों में भय की भावना बनी होती है एक तरफ उनके प्रयोग से फसल खराब न हो जाए और दूसरी ओर वह नई बीज व खाद खरीदने में सक्षम नहीं होते जिसके कारण वह परंपरागत तरीके से खेती करना पसंद करते हैं। पी0एम0 किसान योजना उन्हें वित्त प्रदान करने नवीन तकनीक के प्रयोग करने के लिए सक्षम बनाती है। यह योजना गैर कृषि उत्पादन को भी प्रेरित करती है। क्योकि किसान सिर्फ खेती पर निर्भर रहकर ही अपना भरण पोषण नहीं कर सकता जिंस वजह से किसान गैर कृषि जैसे मत्स्य पालन पशुपालन मुर्गी पालन आदि कार्य भी करते है। पी0एम0 किसान योजना इन सब कार्यों के लिए भी वित्त प्रदान करती है जो किसानों की आय में बढ़ोतरी करने में मदद करती है।

निष्कर्ष व सुझाव

प्रस्तुत शोध पत्र में पी0एम0 किसान योजना से किसानों की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा है उन सब तथ्यों का अध्ययन किया गया है। इसमें संदेह नहीं है कि पी0एम0 किसान योजना के माध्यम से किसान की उत्पादन शक्ति में वृद्धि हुई है पीछे पढें गए सभी आंकड़े यह साबित करते हैं कि उत्तर प्रदेश में किसानों की स्थिति में सुधार हुआ है। उत्तर प्रदेश में पी0एम0 किसान योजना का सबसे बड़ा भाग खर्च किया जाता है। गेहूं के उत्पादन में प्रथम स्थान पर पर है और किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हुई है। परंतु यह भी सत्य है कि सरकार जिस अनुपात में इस योजना पर खर्च कर रही है उस अनुपात में उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पा रही है जिसका एक कारण है कि राशि का कम होना और दूसरा यह है कि मिली राशि को कृषि के निर्गत पर खर्च न करना बल्कि अन्य किसी स्थान पर खर्च कर देना।

वर्तमान में भी आत्महत्या में ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिली है सरकारी आंकड़ों के अनुसार औसतन एक वर्ष में 15,168 किसान आत्महत्या करते हैं जिसमें से 72 प्रति ात लघु किसान होते हैं। पीएम किसान योजना को और प्रभोवात्पाद बनाने के लिए सरकार को योजना में कुछ संशोधन करने चाहिए जैसे कि वित्त राशि को बढ़ाकर 6000 से 12,000 तक कर देना चाहिए ताकि किसान नई नई तकनीक व बीज का प्रयोग कर सकें उसे बीज खाद तकनीक पर सब्सिडी देनी चाहिए। रायथू बंधु तेलंगाना में चलने वाली एक योजना है जो पी0एम0 किसान योजना के समान ही है लेकिन यहाँ किसानों को ₹4000 हर मौसमी फसल के लिए दिए जाते हैं झारखंड व ओडिशा में भी प्रतिवर्ष किसानों को ₹10,000 दिए जाते हैं। उत्तर प्रदेश को तेलंगाना व उड़ीसा की तरह ही किसानों को दी जाने वाली राशि में बढ़ोतरी करनी चाहिए ताकि किसानों की आय को दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- उत्तर प्रदेशा में कृशक परिवारों की अवस्थिति का मूल्यांकन रा.प्र.स. 70वीं आवृत्ति अनुसूची–33 पर आधारित ; जनवरी–दिसम्बरद्ध
- नीलमणि शर्मा, अगस्त 2018– भारतीय किसान–दशा और दिशा, प्रकाशन संचार सौरभ, पेंज न0 24–29
- javed Akhtr (2022) the impact of pradhan mantri kisan samman nidhi scheme on the form Economic Research Centre University of Allahabad Prayagrai- 211002
- Nishali Balasingh –january 2023 A study of pradhan mantri kisan samman Nidhi Yojana DOI-10,131401, Research Gate 2.2 17543.88488
- Website- https:\\pmkisan.gov.in
- Agriculture Department,U.P Digital Agriculture Realtime Services Hasselfree Assistance and New Initiative.

वर्षा त्यागी
शोध छात्रा– अर्थ शास्त्र विभाग
एम0 जे0 पी0 रुहेलखण्ड. विश्विघालय बरेली
उत्तर प्रदेश
मोबाइल न0 6397295763
Email Id- tyagivarsha443@gmail.com

शोध पर्यवेक्षिका–
डॉ0 सीमा मलिक
असिस्टेंट प्रोफेसर– अर्थ ाास्त्र विभाग
गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद उ0प्र0

वर्षा त्यागी
स्थाई पता– ग्राम अलीपुर मान उर्फ खेडा.
पो0 कोतवाली देहात त0 नागीना जि0 बिजनौर
पिन कोड 246764
मोबाइल न0 6397295763

26

मानव और प्रकृति के बीच संबंधः एक पर्यावरणीय भूगोलिक दृष्टिकोण

डॉ0 नाज़िया खान

सारांश

पर्यावरणीय भूगोल मानव और प्रकृति के बीच जटिल और बहुआयामी संबंधों का अध्ययन करता है। यह अध्ययन करता है कि कैसे मानव गतिविधियाँ प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्रों को प्रभावित करती हैं, और इसके विपरीत, प्रकृति कैसे मानव जीवन को प्रभावित करती है। पर्यावरण भूगोल अध्ययन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच की खाई को पाटता है। यह मानव समाजों और उनके भौतिक परिवेश के बीच जटिल संबंधों की खोज करता है, जिसका उद्देश्य यह समझना है कि ये अंतःक्रियाएँ पर्यावरण और मानव कल्याण दोनों को कैसे प्रभावित करती हैं। जैसे–जैसे पर्यावरणीय मुद्दे अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं, पर्यावरण भूगोल से प्राप्त अंतर्दृष्टि स्थायी समाधान विकसित करने और लोगों और प्रकृति के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

पर्यावरण भूगोल भौतिक और मानव भूगोल दोनों को शामिल करता है, जो इस बात को समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है कि प्राकृतिक प्रणालियाँ और मानवीय गतिविधियाँ कैसे परस्पर जुड़ती हैं। जटिल पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए यह अंतःविषय दृष्टिकोण आवश्यक है।

मानव सभ्यता की प्रगति के साथ, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग भी बढ़ा है। जल, वायु, भूमि, वन और खनिज मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं, लेकिन इनका अत्यधिक उपयोग पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न कर रहा है। जल का उपयोग कृषि, उद्योग और घरेलू कामों में अत्यधिक बढ़ गया है। इसके परिणामस्वरूप जल स्रोतों का अव्यवसायिक उपयोग और जल प्रदूषण बढ़ा है। वायु प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या बन गया है, जिसका मुख्य कारण औद्योगिकीकरण और वाहनों का अत्यधिक उपयोग है। इन प्रदूषकों के कारण स्वास्थ्य समस्याएँ, जलवायु परिवर्तन, और ओजोन परत में छिद्र जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन संसाधनों का अत्यधिक उपयोग और अव्यवसायिक प्रबंधन पर्यावरणीय संकट उत्पन्न कर रहे हैं। वनों की कटाई और शहरीकरण के कारण जल पुनर्भरण की प्रक्रिया बाधित हो रही है, जिससे सूखा और जल संकट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

वायु प्रदूषण एक और गंभीर समस्या है, जिसका मुख्य कारण औद्योगिकीकरण, वाहनों का अत्यधिक उपयोग, और कोयले की जलाने वाली ऊर्जा है। वायु में प्रदूषक तत्वों की वृद्धि स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा करती है, जैसे अस्थमा, हृदय रोग, और कैंसर, और यह ग्लोबल वार्मिंग में भी योगदान करती है।

वनों की कटाई ने भी प्राकृतिक संतुलन को बाधित किया है। वनों की कमी से जैव विविधता में कमी आई है और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ी है। वनों का नष्ट होना मिट्टी के कटाव, जलवायु परिवर्तन और बायोडाइवर्सिटी का नुकसान कर रहा है। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकंप, बाढ़, सूखा और तूफान मानव समाज को गहराई से प्रभावित करती हैं। इन आपदाओं की तीव्रता और प्रभाव समाज की तैयारी और पुनर्वास क्षमताओं पर निर्भर करता है।

भूकंप और तूफान जैसे आपदाएँ अचानक होती हैं और बहुत अधिक विनाशकारी हो सकती हैं। भूकंप के कारण इमारतें ढह जाती हैं और तूफान के कारण बाढ़ और भूमि क्षति होती है। इन आपदाओं का प्रभाव समाज की आपातकालीन प्रबंधन और पुनर्वास क्षमताओं को प्रभावित करता है। सूखा और बाढ़ जैसी आपदाएँ दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। सूखा फसलों की कमी, जल संकट और खाद्य असुरक्षा का कारण बनता है, जबकि बाढ़ के कारण भूमि का कटाव और जलजनित बीमारियाँ बढ़ती हैं। इन आपदाओं का सामना करने के लिए प्रभावी नीतियों और योजनाओं की आवश्यकता होती है।

पर्यावरणीय परिवर्तन और मानव गतिविधियाँ

मानव गतिविधियाँ जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और कृषि परिवर्तन प्राकृतिक पर्यावरण को बदल देती हैं। इन गतिविधियों के कारण विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। औद्योगिकीकरण ने ऊर्जा और संसाधनों की मांग को बढ़ाया है, जिससे वायु, जल, और मृदा प्रदूषण में वृद्धि हुई है। औद्योगिकीकरण के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और अव्यवसायिक उपयोग हुआ है, जिससे पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हुआ है।

शहरीकरण के बढ़ते स्तर ने प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने और कंक्रीट के जंगलों के निर्माण को जन्म दिया है। इससे जैव विविधता में कमी आई है और पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बिगड़ा है। शहरीकरण के कारण जल निकासी, वायु प्रदूषण, और कचरे की समस्या भी बढ़ी है।

कृषि परिवर्तन ने पारिस्थितिक तंत्रों में असंतुलन उत्पन्न किया है। अत्यधिक कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और जल स्रोतों को प्रदूषित करता है। वनों की कटाई और भूमि जुताई ने पारिस्थितिक तंत्रों की संरचना को बदल दिया है।

पर्यावरणीय संरक्षण और मानव जिम्मेदारी

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए संरक्षण की दिशा में उठाए गए कदम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वृक्षारोपण और रिसाइक्लिंग जैसी पहलें पर्यावरणीय संरक्षण में सहायक हैं। वृक्षारोपण से वनों की कटाई को कम किया जा सकता है और रिसाइक्लिंग से कचरे का पुनः उपयोग होता है। सतत विकास की अवधारणा भी पर्यावरणीय संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय, सामाजिक, और आर्थिक आवश्यकताओं को संतुलित करना है, ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके।

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग भी पर्यावरणीय संरक्षण में योगदान करता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा जैसे स्रोतों का उपयोग पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की तुलना में कम प्रदूषण उत्पन्न करता है और स्थायी विकास को प्रोत्साहित करता है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण

मानव और प्रकृति के बीच संबंध केवल भौगोलिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ प्रकृति के साथ गहरे और सम्मानजनक संबंध बनाए रखती हैं, जो उनके जीवनशैली, परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं में परिलक्षित होता है। स्थानीय परंपराएँ जैसे आदिवासी समाज की प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध ने प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा दिया है। इन संस्कृतियों में प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा और सम्मान होता है, जो पर्यावरणीय संरक्षण में सहायक है। धार्मिक आस्थाएँ भी प्राकृतिक तत्वों की पूजा और सम्मान को प्रोत्साहित करती हैं। जैसे कुछ धर्मों में नदियों और पहाड़ों की पूजा की जाती है, जिससे लोगों को प्रकृति के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ती है।

निष्कर्ष

मानव और प्रकृति के बीच संबंध जटिल और बहुआयामी है। यह समझना कि मानव गतिविधियाँ और प्राकृतिक प्रक्रियाएँ कैसे आपस में जुड़ी हुई हैं, पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान और सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है। केवल वैज्ञानिक और नीति दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी इस संतुलन को बनाए रखना आवश्यक है। एक समग्र दृष्टिकोण अपनाकर हम मानव और प्रकृति के बीच एक सामंजस्यपूर्ण और स्थायी संबंध बनाए रख सकते हैं।

सन्दर्भः

- अर्थशास्त्री, सी. (2019)। पर्यावरण भूगोलः सिद्धांत और अभ्यास। आदर्श पुस्तकालय।
- विवेक, एस. (2017)। भारत में पर्यावरणीय समस्याएँ और उनके समाधान। विज्ञान प्रकाशन।
- शर्मा, आर. (2018)। जलवायु परिवर्तन और भारतीय पर्यावरण। भारतीय प्रेस।
- भारतीय पर्यावरण मंत्रालय (2022)। भारत में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय रिपोर्ट। भारतीय सरकार।
- विश्व संसाधन संस्थान (2020)। भारत में जल प्रबंधनरू चुनौतियाँ और समाधान।

डॉ0 नाज़िया खान
सहायक आचार्य
बरेली कॉलेज, बरेली।

27

अज्ञेय का विचार और दर्शन निबंधों के संदर्भ में

डॉ0 उर्मिला कुमारी

सारांश

'अज्ञेय' हिन्दी के बहुचर्चित साहित्यकार हैं। हिन्दी साहित्य को अज्ञेय ने अपनी पद्य एवं गद्य रचनाओं से समृद्ध बनाया है। आधुनिक युगीन परिवेश की माँग के अनुरूप अज्ञेय ने रचनाएँ की। वे आधुनिक दृश्टि और अनुभव से संपन्न एक विचारक, चिंतन ील कवि के रुप में सर्वमान्य हैं।

कविता, कहानी, उपन्यास के अतिरिक्त अज्ञेय ने अनेक महत्वपूर्ण निबंधों की भी रचना की। इनके निबंधों को तीन भागों में विभक्त किया जाता है।–

1. साहित्य चिंतन संबंधी विचारात्मक निबंध
2. यात्रापरक निबंध
3. आत्माभिव्यंजक निबंध

सब रंग और कुछ राग, आलवाल, भवंती, अंतरा, लिखी कागद कोरे, अद्यतन, जोगलिखी, धार और किनारे अज्ञेय के महत्वपूर्ण निबंध संग्रह है। इनके निबंधों में बौद्धिक संवेदना का प्रखर चिंतन और भाशा का सौंदर्य पूरी तरह से देखने को मिलता है। त्रिशंकु अज्ञेय की निबंध यात्रा का प्रस्थान बिन्दु है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1945 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसमें आठ निबंध और आठ संक्षिप्त टिप्पणियों सहित कुल संख्या सोलह है :–

1. संस्कृति और परिस्थिति :

''संस्कृति और परिस्थिति'' निबंध में निबंधकार अज्ञेय ने परिवर्तित परिस्थिति में सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रासशील प्रवृत्तियों की ओर ध्यान खींचा है।

आधुनिक युग मशीन का युग है। इस युग में मानव जीवन को दो भागों में बाँट दिया है :– एक जिसमें मेहनत है, पर जीवन स्थगित है, दूसरा जिसमें अवकाश है और जीवन को पाने की उत्कट प्यास है।

'अज्ञेय' की दृष्टि में 'संस्कृति का मूल आधार भाषा है, और भाषा का चरम उत्कर्ष साहित्य में प्रकट होता है। ''अतः साहित्य का पतन संस्कृति का और अन्ततः जीवन का पतन है।''[1]

इस स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि क्या हम अपनी गतिशील संस्कृति की सुरक्षा उसी रूप में कर सकते हैं जिस रूप में हमारे पूर्वज किया करते थे? संस्कृति का ह्रास, साहित्य का ह्रास है और साहित्य की सुरक्षा, संस्कृति की रक्षा। अगर इसका कोई उपाय है तो वह है, संस्कृति की रक्षा और निर्माण की चिर जागरूक चेष्टा की आवश्यकता में अखंड विश्वास के द्वारा ही हो सकता है।

2. कला का स्वभाव और उद्देश्य :

''कला का स्वभाव और उद्देश्य'' शीर्षक निबंध में अज्ञेय जी ने कला के उद्देश्य और स्वभाव पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

अज्ञेय जी की इस स्थापना में एडलर की हीनता की अनुभूति और कला द्वारा उसकी क्षतिपूर्ति वाला सिद्धान्त ध्वनित है।

कला के स्वभाव की परीक्षा करने के पश्चात् अज्ञेय जी कला का उद्देश्य का प्रश्न उठाते हैं अपने दृष्टिकोण के आलोक में उन्होंने कला के उद्देश्य को बड़ी ही कुशलता से व्यक्ति और समाज के साथ जोड़ा है।

उनके अनुसार ''कला सम्पूर्णता की ओर जाने का प्रयास है। व्यक्ति की अपने को सिद्ध प्रमाणित करने की चेष्टा है।''[2] यह प्रयत्न व्यक्ति करता है वह अपने को अक्षुण्ण रखने के लिए कला द्वारा सामाजिक हित में आत्मदान करता है।

अतएव अपनी सृष्टि के प्रति कलाकार में एक दायित्व भाव रहता है – अपनी चेतना के गूढ़तम स्वर में वह स्वयं अपना आलोचक बनकर जाँच करते रहे।

इस प्रकार कलावस्तु – रचना का एक नैतिक मूल्यांकन निरन्तर होता रहता है, इस क्रिया को हम यह भी कह सकते हैं कि 'सच्ची कला कभी भी अनैतिक नहीं हो सकती। और यह भी कहा जा सकता है कि प्रत्येक शुद्ध कला–चेष्टा में अनिवार्य रूप से एक नैतिक उद्देश्य निहित है अथवा सच्ची कलावस्तु अन्ततः एक नैतिक मान्यता पर आश्रित है।

अर्थात् सच्चा कलाकार तभी प्रमाणित हो सकता है, जब वह कला के प्रति अपना उत्तरदायित्व को समझते हुए समाज के साथ अपना सम्बन्ध कायम रखे तभी कला संसार के लिए फलप्रद होगा।

3. रूढ़ि और मौलिकता

'रूढ़ि और मौलिकता' अज्ञेय जी की सैद्धांतिक निबंध है। इस निबंध पर इलियट के विचारों का प्रभाव है।

लेखक का विश्वास है कि साहित्यिक प्रौढ़ता के लिए रूढ़ि की साधना साहित्यकार के लिए वांछनीय ही नहीं, अनिवार्य भी है। परंपरा स्वयं लेखक पर हावी नहीं होती अपितु परिश्रम और प्रयत्न से उसे प्राप्त किया जाता है।

रूढ़ि का सम्बन्ध ऐतिहासिक चेतना से है। ऐतिहासिक चेतना का अर्थ है, जो कालानुक्रम में बीत गया है, अतीत है, उसके बीतेपन की ही नहीं उसकी वर्त्तमानता की भी तीखी और चिर जाग्रह अनुभूति।

दूसरे शब्दों में साहित्य और जीवन में 'आसीत' और 'अस्ति' की परस्परता का अन्योन्याश्रयता का ज्ञान ही ऐतिहासिक चेतना है।

''यदि साहित्यकार में ऐसी चेतना बनी रहेगी, तो उसकी रचना में न केवल अपने युग, अपनी पीढ़ी से उसका सम्बन्ध बोल रहा होगा, बल्कि उससे पहले की अनगिनत पीढ़ियों की ओर उसके साथ अपनी पीढ़ी की संलग्नता और एक सूत्रता की भी तीव्र अनुभूति स्पन्दित हो रही होगी।''[3]

अज्ञेय जी ऐतिहासिक चेतना को जीवित चेतना के रूप में स्वीकारते हैं। ''उनका विश्वास है कि बिना एक गतियुक्त और वर्तमान परम्परा के एवं रूढ़ि के, कला का अस्तित्व टिक ही नहीं सकता। परंपरा के विरूद्ध हमारा कोई विद्रोह हो सकता है, तो यही कि हम परंपरा के आगे जोड़ दें।''[4]

कलाकार रूढ़ि के आगे अपने व्यक्तित्व को उत्सर्ग करता है इसे टी.एस. इलियट के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि कविता भावों का उन्मोचन नहीं है, बल्कि भावों से मुक्ति है।

4. परिस्थिति और साहित्यकार :

'परिस्थिति और साहित्यकार' शीर्षक निबंध में लेखक ने बाह्य परिस्थितियों के दबाव से उत्पन्न हुई मजबूरियों को छोड़कर आन्तरिक अथवा मानसिक परिस्थितियों और उनमें पैदा होनेवाली प्रवृत्तियों पर विचार किया है।

अज्ञेय साहित्य की व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों चेतनाओं को सम्यक महत्व देते हैं। वे साहित्य को ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों के साथ देखने के पक्षपाती हैं। उनकी दृष्टि में कलाकार केवल निरा सामूहिक प्राणी नहीं है, वह समष्टि का एक अंग होने के अतिरिक्त एक सचेतन प्राणी भी है।

व्यक्तिक्ता का अधूरा ज्ञान होते ही उसमें इच्छा होती है कि उसकी रूचियों उसके विचार और दृष्टिकोण उसकी भावनाएँ सामाजिक स्वीकृति पाये। सामाजिक प्रवृत्ति से अज्ञेय का तात्पर्य –

केवल खान–पान का भागी होना नहीं, अपितु उसमें आचरण और अनुभूति की समानता भी निहित है।

''कलाकार की कृति को सामाजिक स्वीकृति मिलनी चाहिए चूंकि व्यक्ति की सर्वोत्तम कृतियों की बुनियाद अन्ततोगत्वा उन्हीं मान्यताओं पर कायम है, जो समाज द्वारा स्वीकृत है।''[5]

5. पुराण और संस्कृति :

'पुराण और संस्कृति' एक मुसलमान द्वारा लिखित 'हिन्दू देवमाला' पुस्तक की भूमिका का एक संक्षिप्त अंश है। यहाँ पुराणों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने स्वीकारा है कि किसी भी देश के जीवन के गहनतम रहस्य तक पहुँचने के लिए उसका पुराण साहित्य ही सबसे अच्छी कुंजी है कि उसी में समष्टिगत आदर्शो और जातिगत आकांक्षाओं के वे स्वप्न चित्र मिल सकते हैं जिनका कि विभिन्न व्यक्ति अपनी–अपनी रूचि, दीक्षा, योग्यता और संस्कारों के आधार पर परिष्कार करते हैं। पुराण ही वह पहली सांस्कृतिक इकाई है, जिसमें से जीवन की बहुरूपता प्रस्फुटित हुई है।''[6]

उनके अनुसार – ''कृतिकार का उद्देश्य या लक्ष्य केवल अनुभव का सम्प्रेषण है। सहजबोध द्वारा अपनी अनुभूतियों से व्यापकतर अनुभव में प्रवेश, उन अनुभवों की पकड़ और उनका सम्प्रेषण यही उसका लक्ष्य है।''[7]

संक्रान्तिकाल की कुछ साहित्यिक समस्याएँ हैं साहित्य किसके लिए, राजनीति और साहित्य काव्य द्वारा समाज–सुधार के विषय में उनका मत यह है कि समाज पर इस बात का प्रभाव नहीं पड़ता कि जो कुछ लिखा गया है वह क्या है वरन् प्रभाव पड़ता है कि जिसने लिखा है वह क्या है? अतः सहज बोध द्वारा अपने घटित से परे के अनुभव में प्रवेश और उसकी पकड़ यह तो प्रत्येक लेखक के लिए आवश्यक है ही परन्तु अच्छे लेखक का निर्धारण इस बात से होता है कि जिस अनुभव का उसने सम्प्रेषण किया है वह उसके अपने घटित से कितना बड़ा है और मानव समाज के कल्याण की दृष्टि से उसका मूल्य क्या है? सामाजिकता के प्रश्न को उन्होंने एक अन्य अन्तः प्रक्रिया में भी उठाया है – राजनीति और साहित्य, साहित्य और प्रगति – लेखक अपने दो अलग–अलग स्पष्ट व्यक्तित्व देखता है – (1) उसका नागरिक रूप और (2) उसका कवि या लेखक रूप।

कवि या लेखक होने के नाते किसी को अपने सामाजिक उत्तरदायित्व दे छुट्टी नहीं मिल सकती, क्योंकि वह नागरिक भी है।

सामाजिक सन्दर्भों में भी यथार्थ का रूप धीरे–धीरे पर काफी दूर तक बदला है। समकालीन पारिवारिक और सामाजिक जीवन में व्यक्ति को बाहरी शालीनता बढ़ी है, भीतरी सहिष्णुता उतनी ही कम हुई है। यथार्थ के ऐसे बहुत से नये रूप अज्ञेय की विचार–परिधि में आते हैं, और इन्हीं के माध्यम से वे 'जीवन की बढ़ती हुई जटिलता को समझते हैं। परिवर्त्तन और विकास के कुछ तात्विक रूपों का अध्ययन लेखक ने 'त्रिशंकु' में संकलित 'चेतना का संस्कार' शीर्षक निबंध में किया है। अज्ञेय कला को एक साधना मानते हैं, जो ज्ञान और दर्शन के समक्ष है या कहें तो दर्शन से कुछ ही नीचे की सीढ़ी है। कला को साधना मानने वाली दृष्टि लेखक को रहस्यवाद के निकट ले जाती है। 'चेतना का संस्कार' निबंध का समापन करते हुए लेखक ने एक प्रकार के नूतन रहस्यवाद की चर्चा की है। यह नूतन प्रकार का रहस्यवाद जो कुछ आधुनिक वैज्ञानिकों की विचारधारा में भी मिलता है। अज्ञेय की आरम्भिक रचनाओं में यत्किंचित होने पर भी लेखक की परवर्ती कृतियों में अधिक व्यापक रूप से अभिव्यक्त हुआ है।

केशव की कविताई :–

लेखक की एक महत्वपूर्ण निबंध कृति है। संवाद शैली में यहाँ महाकवि केशवदास के काव्यत्व पर प्रकाश डाला गया है। त्रिपाठी जी केशव के पक्ष में तथा बलराज विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करते हैं बीच में आनन्द के रूप में लेखक स्वयं प्रवेश करता है और वार्तालाप के स्वरूप को ही बदल देता है। ''केशव की कविताई'' को विवेचित करने के लिए इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त का सहारा लिया है। अज्ञेय जी की मान्यता है कि ''केशव संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे और विरासत में उन्हें जो परंपरा मिली थी वह भी संस्कृत के पंडितों की ही थी। इसीलिए उनका काव्य यदि दुर्बोध हो गया है, तो इसमें आश्चर्य नहीं। हिन्दी साहित्य को केशव की सबसे बड़ी देन 'काव्यशास्त्र' की देन है।''[8]

''केशव ने जो 'ट्रेडिशन' बनाया आगे के कवि उस पर आसानी से चल सके। व्यंग्य और संवाद लिखने में भी उन्हें

अत्यधिक सफलता मिली है।''[9]

''भारतीय संस्कृति और विश्व संस्कृति'' निबंध में अज्ञेय जी ने इस बात पर बल दिया है कि एक आत्मविश्वास भरी देश–व्यापी सांस्कृतिक भावना के आधार पर ही विश्व–संस्कृति का आदर्श–प्राणवान और प्रेरणा देनेवाला बना रहता है। अपने देश की संस्कृति को भुलाकर विश्व संस्कृति की बात करना एक तरह से संस्कारी भारतीय होने के दायित्व से छुट्टी ले लेना है।

आत्मनेपद :–'आत्मनेपद' निबंध संग्रह का प्रकाशन वर्ष सन् 1960 ई0 है। द्वितीय संस्करण का प्रकाशन सन् 1971 है। अज्ञेय के शब्दों में – ''आत्मनेपद निःसंदेह अत्यन्त आत्मचेतन रचना है। पर आत्मचेतना के कारण ही पुस्तक लेखक की अहमन्यता का प्रमाण हो– बल्कि स्वयं वैसी अहम्यन्यता का स्वीकार! ऐसा नहीं है।''[10] 'जीवन का रस' निबंध में अज्ञेय जी ने जेल जीवन की अपनी कुछ स्मृतियों को पाठकों के सामने रखा हैं उनका कहना है कि ''समय की दूरी तीखे और कटु अनुभवों को भी मीठा कर देती है। अनुभवों के माधुर्य का प्रधान कारण उनका धुँधला हो जाना है, लेकिन कुछ अनुभव ऐसे भी हैं, जो घुँधला न होकर व्यक्ति की स्मृति में अद्यतन जीवन्त रूप में विद्यमान रहते हैं, उन्हें मधुर कहना उतना ही अनुचित है जितना कि कटु कहना। गहराई का एक आयाम होता है जो अनुभूति को कड़वी मीठी की परिधि से परे ले जाता है। ऐसी ही गहन अनुभूति से अलगाव स्थापित कर उसे साहित्य की वस्तु बनायी जाती है।''[11]

''मैं क्यों लिखता हूँ'' शीर्षक निबंध में लेखक ने उन कारणों की विवेचना करता है, जिससे उसे लिखने की प्रेरणा मिलती है।''[12]

निष्कर्ष:–

अज्ञेय ने अपने निबंधों में जिन विषयों पर विचार किया है वे आज भी महत्व ही नहीं रखते हैं, बल्कि समय के साथ उनकी प्रासंगिकता बढ़ गइ है। अज्ञेय के निबंध साहित्य अस्मिता की चेतना से सम्पृक्त है। विदे ाी साहित्य, संस्कृति और विचार द र्शन का प्रभाव भी उनके निबंधों में देखने को मिलता है। गहरी रागात्मकता, तटस्थता और प्रखर चिंतन इनके निबंधों की वि ोशता है।

संदर्भ सूची1. 'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 222.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 313. 'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 344.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 375.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 536.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 497.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 848.'अज्ञेय' त्रिशंकुपृ0 1019.

10.

11.

12.'अज्ञेय' त्रिशंकु

'अज्ञेय' आत्मनेपद

'अज्ञेय' आत्मनेपद

'अज्ञेय' आत्मनेपदपृ0 102

पृ0 08

पृ0 149

पृ0 238

डॉ0 उर्मिला कुमारी

मो0– 9572474739

इमेल– urmilakumari0870@gmail.com

c/o मुकेश कुमार

ग्राम– भुड़वा(मिडिल स्कूल के पास)

पोस्ट– भाोले, थाना– पाटन, जिला– पलामू, (झारखण्ड),

पिन– 822123

28

विश्व–साहित्य में वाल्मीकि रामायण

डॉ0 राम कृपाल

सारांश

भारतवर्ष की साहित्यिक परम्परा में वाल्मीकि को आदिकवि और 'रामायण' को आदिकाव्य कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण एक लोकप्रिय महाकाव्य है । भारतीय राष्ट्र की साहित्यक विचारधारा को सहस्रों वर्षों तक अन्य किसी भी ग्रन्थ की अपेक्षा रामायण ने अधिक प्रभावित किया। यह काव्य और आचारशास्त्र का संयुक्त रूप है जिसमें मानव के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। साधारण वार्तालाप में रामायण के पात्रों का दृष्टान्त भोजपुरिया समाज एवं संस्कृति के लोग प्रायरू प्रयोग करते हुए देखे व सुने जा सकते हैं। काव्य शास्त्रियों ने काव्योपदेश के रूप में निरंतर यही कहा है श्रामादिवत् वर्तितव्यं न तु रावणादिवत्श(1) रामायण काव्य होने के कारण कान्तासम्मित उपदेश से युक्त है । वाल्मीकि जी ने सामाजिक व्यवस्था व विज्ञान के मध्य समन्वय स्थापित करने का अमूलचूल प्रयास किया है, जिसका प्रमाण बालकाण्ड में विधिवत् दृष्टिगोचर होता है। किसी भी देश की जीवन पद्धति उस देश की संस्कृति कहलाती है। आर्याव्रत की संस्कृति विश्व की संस्कृतियों में से एक है, राम, लक्ष्मण, भरत,जैसे पात्र के माध्यम से किया गया सांस्कृतिक चिन्तन अदभुत एवं कालजयी है। वैश्विक धरातल पर मानव जीवन जितना व्यापक है उतना ही विविधताजन्य रहा है। रामकाव्य आचार शास्त्र के समन्वय सेतु भी कहे जा सकते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम आसुरी शक्तियों को नष्ट करने हेतु समाज को प्रेरित करते हैं। राम ने काव्य व आचार्यशास्त्र का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह अद्वितीय ही नहीं वल्कि अविस्मरणीय भी है।

बीजशब्द – आर्याव्रत, कान्तासम्मित, संस्कृति–सभ्यता, समन्वय, दिशा–निर्देश, भक्ति–भाव, जीवन–मूल्य, नाद–सौन्दर्य।

शोध–पद्धति – प्रस्तुत शोध आलेख में विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति का उपयोग कर निष्कर्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

वाल्मीकि रामायण संस्कृत–साहित्य में आदिकाव्य के रूपमें विश्व विख्यात है। संस्कृत भाषा में वाल्मीकि द्वारा नयी अभिव्यक्ति–शैली का प्रवर्तन हुआ है । प्राचीन शैली स्वाभावोक्ति थी, जिसमें विषय – वस्तु का विवेचन यथार्थ रूप में किया गया है। रामायण में जिस नवीन शैली का प्रयोग किया गया वह वक्रोति की थी जो जन–सामान्य का हृदयवर्जना कर सकती थी। जनभाषा को काव्य भाषा के रूप में रूपांतरित करने का महत्वपूर्ण कार्य वाल्मीकि जी ने किया है। रामायण को महर्षि वाल्मीकि ने वह रूप प्रदान किया जो वैदिक भाषा साहित्य में अन्यत्र नहीं मिलता है। उदाहरण के रुप में वाल्मीकि के वर्षा वर्णन हम भली भाँति देख सकते है –

क्वचित्प्रकाशं क्वचिदप्रकाशं,
नभः प्रकीर्णाम्बुधरं विभाति ।
क्वचित्क्वचित्पर्वत सन्निरुद्धं,
रूपं यथा शान्त महार्णवस्य ।।(2)

रामायण का सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से जोमहत्व रहा, उसका साहित्यिक मूल्य सर्वोपरि है। यह ग्रन्थ परवर्ती काव्य रचनाओं का उपजीव्य है । रामायण की कथा एवं शैली दोनों का ग्रहण परवर्ती साहित् य की रचनाओं में किया गया।रामायण के कथा की अमरता के विषय में वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार संकेत किया गया है–

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लौकेषु प्रचरिष्यति ।।(3)

रामायण का सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से जो भी महत्व हो लेकिन वाल्मीकि के पूर्व की रचनाएँ पद्यात्मक और छन्दोंमयी होने पर स्तुति धर्म, यज्ञ, पूजा, और अध्यात्म के संदशों से आकण्ठ भरी हुई है,जबकि जन–भावना एवं मानव चेतना से महर्षि वाल्मीकि का कोई विस्तृत सरोकार नहीं दिखाई पड़ता। वाल्मीकि के मन में क्रान्तिकारी साहित्य के रचना की उत्कट आकांक्षा बलवती हुई, जिससे तमसा तीर पर 'निषादविद्धाण्डज–दर्शनोत्थरू' काव्य का श्लोक–छन्द रूप में फूट पड़ा। वही कालांतर में काव्य की आत्मा के रूप में ग्राह्य हुआ, जिसे भवभूति ने 'शब्द व्रह्म विर्वत'कहा । वाल्मीकि की काव्य कृति जन–भावना की वाहिनी बनकर लोक में नई धारा का प्रवर्तन करने में समर्थ हो गयी। वाल्मीकि चाहते थे कि ऐसी काव्य रचना करें जो अमर हो, जन जीवन से समृद्ध हो, चर्तुवर्ग की प्राप्ति में सहायक हो, भाव, भाषा, छन्द, शैली, अलंकार की दृष्टि से नवीन हो, लोक और परलोक दोनों का साधक हो (4) महर्षि वाल्मीकि नायकका अन्वेषण कर रहे थे । (5) महर्षि वाल्मीकि ने नारद से पूँछ रखा था कि गुण, बल, चरित्र, धर्मज्ञता, कृतज्ञता, सत्यवाणी, व्रत–पालन, सर्वभूतहितः, ज्ञान, सार्मथ्य आदि की दृष्टि से कौन व्यक्ति श्रेष्ठ है। ''महर्षि त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवं बिधंनरम।(6) नायक के रूप में नरश्रेष्ठ के नाम का चयन होते ही बाल्मीकि की काव्यधारा प्रवाहित हो चली। वैदिक गायत्री की पवित्रता प्रदान करने के लिए उनकी कविता एक–एक वर्ण पर एक–एक सहस्र श्लोकों को समर्पित करती हुई 'चतुर्विंशति–साहस्री' संहिता बन गयी । क्षेमेन्द्र ने 'रामायण–मन्जरी' में वाल्मीकि को प्रथम तथा सर्वोपजीव्यं कवि कहते हुए पद्यों में आदर प्रदान किया है –

नुमः सर्वोपजीव्यं तं कविनां चक्रवर्तिनम् ।
यस्येन्दुधवलैः श्लोकैर्भूषिता भुवनत्रयी।।
स वरू पुनातु वाल्मीकेः सूक्तामृतं महोदधिरू।
ओंकार इव वर्णानां कवीना प्रथमो मुनिः ।। (7)

भोज ने अपनी रामायण चम्पू में वाल्मीकि को मधुर

काव्यशैली का प्रर्वतक माना जाता है।

मधुमय–भाणितीनां मार्गदर्शी महर्षि : ।(8)

वाल्मीकि रामायण का ऐतिहासिक दृष्टि से जो भी महत्व हो परन्तु इसका साहित्यिक मूल्य सर्वोपरि है। वाल्मीकि रामायण काव्य होने के कारण कान्तासम्मित उपदेश से परिपूर्ण है। वाल्मीकि रामायण में पितृभक्ति, पुत्र प्रेम स्वाभाविक, प्रजावत्सल, मातृस्नेह इत्यादि मानवीय गुणों, धर्म एवं सदाचार कर्तव्यनिष्ठा इत्यादिका विस्तार से प्रतिपादन किया गया है । अन्याय पर न्याय की विजय का निरुपण रामायण का प्रमुख आदर्शवादी पक्ष हैं । आदर्श मानव के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम में गुण सर्वोपरि है, ऐसे व्यक्ति का चित्रण करके वाल्मीकि ने काव्य में नायक का आदर्श प्रस्तुत किया है।(9) राम के शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक गुणों का वाल्मीकि ने सूत्र रूप में चित्रण करके पुनरू उसका विस्तृत प्रदर्शन किया है–

यश्च रामं न पश्येतु च रामो न पश्यति।

निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हतेङ्कः ।।(10)

उपरोक्त गुणों के कारण भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में राम कथा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ। उस दृष्टि से वाल्मीकि रामायण भारत के समस्त साहित्य में श्रेष्ठ उपजीव्य ग्रन्थ है। वाल्मीकि रामायण संस्कृत साहित्य में आदिकाव्य के रूप विख्यात है क्योंकि परवर्ती साहित्य के द्वारा भाव, भाषा, और शैली को निर्देश प्राप्त हुआ है। मार्धुयमयी उक्तियों का आरम्भ रामायण से ही संस्कृत साहित्य में हुआ। रामायण की भाषा सरल, सुन्दर, ललित, प्रज्जल, प्रवाहपूर्ण तथा परिष्कार युक्त है। भावानुरुप भाषा में आरोह–अवरोह का विन्यास वाल्मीकि जी ने ही किया है जो उदाहरण स्वरुप दृष्टिगोचर होता है–

रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम् ।

सर्वपापहरं पुण्यं सर्वदुरूखनिबर्हणम्।

समस्त पुण्यफलदं सर्वयज्ञ फलप्रदम्।। (11)

रामायण ग्रन्थ के पारायण का धार्मिक विधान हैं । रामायण ऊँचे स्थान पर रखी जाती है, इसे भूमि पर रखना अनुचित एवं अशुभ माना जाता है। रामायण में उत्कृष्ट समाज एवं संस्कृति काचित्र भी प्राप्त होता है। इतना ही नहीं है जहाँ किसी घटना का विवरण देना होता है वहीं महर्षि वाल्मीकि पौराणिक सरलता की मिशाल कायम करते हुए दिखाई देते हैं जैसे –

यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति तां पुरीम् ।

भरतेनापि तां रात्रिंस्वप्नो दृष्टोऽयप्रियं ।। (12)

उपदेश इत्यादि देने में भी ऐसी ही सरल भाषा शैली का प्रयोग किया गया है जैसे–

मरणान्तानि वैराणि निर्वृतंनरू प्रयोजनम्।

क्रियतामस्य संस्कारों ममाप्येष यथा तव ।।(13)

लम्वे वर्णनों में वाल्मीकि ने अपनी भाषा को ईषत् अनलंकृत करके शैली–सौन्दर्य के प्रति जागरुक हो जाते है। सामान्य रूप से प्रयुक्त अनुष्टुप् छन्द का भी परित्याग कर दिया जाता है और अन्य छन्दों को साहित्यक मूल्य मानकर उनका प्रयोग आरम्भ हो जाता हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में मानव हृदय के सभी पक्षों का वर्णन किया है। पात्रों को उन्होंने जीवन की परिस्थितियों के अनुसार प्रस्तुत किया है जिससे आज भी भारतीय संस्कार से युक्त व्यक्ति को जीवन के सभी स्तरों में दिशा–निर्देश से प्राप्त होता हैं। राजा के कर्तव्यों का वाल्मीकि ने बहुत सुंदर वर्णन किया है, राजा के रहने पर प्रजा में असुरक्षा एवं भय का माहौल व्याप्त हो जाता है जैसे–

नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः ।

शेरते विवृतद्वारारू कृषिगोरक्षजीविनः ।।(14)

राजा से रहित देशों में धनी लोग सुरक्षित नहीं रहते कृषि और गोपालन से जीविका चलाने वाले गृहस्थ भी द्वार खोलकर नहीं सो सकते इसलिए प्रजा में शांति एवं सुरक्षा का दायित्व राजा का होता है। महर्षि वाल्मीकि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि प्रमुख अधिसंख्य अंलकारों का प्रयोग किया। महर्षि वाल्मीकि ने किष्किन्धा काण्ड के वर्षा वर्णन में कितना सुन्दर मनोहारी चित्रण प्रस्तुत किया है –

वहान्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।

नथो धना मत्तगजा वनान्तारू प्रिया विहीनाः शिविनः प्लवङ्गा।।(15)

वाल्मीकि को प्रकृति चित्रण में माँ सरस्वती का वरदान प्राप्त है जिसमें पद शैय्या तथा लालित्य निवेश का सौन्दर्य काव्य को नई ऊचाईयों का स्पर्श कराता हैं । वर्षा वर्णन के प्रसंग में यह देखा जा सकता है कि दक्षिण भारत की नदियों में ताम्रवर्ण जल का दृष्य प्रस्तुत है जो रमणीय एवं आहलादक है –

व्यामिश्रितंसर्जकदम्बपुष्पैर्नवं जलं पर्वत धातुताम्रम् ।

मयूरकेकाभिरनु प्रयातं शैलापगारू शीघ्रतरं वहान्ति ।।(16)

महर्षि वाल्मीकि नेनगर,ग्राम,आश्रम,उपवन, पर्वत, नदी, पम्पा – सरोवर, सेना, युद्ध, चन्द्रोदय आदि के रोचक एवं सजीव वर्णन प्रस्तुत किये है जो परवर्ती महाकाव्यों के लिए दिशा–निर्देश कर सके । पात्रों के लम्बे संवाद भी रोचक हैं । पात्रों के चिंतन तथा विषय–विवेचन रामायण के विराट परिदृष्य के अनुकूल दिखाई पड़ते हैं।

निष्कर्ष–

उपर्युक्त तथ्यों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि रामायण काव्य के रूप में है जिसका प्राण रस होता है 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' आदि कवि भी रसवादी है जिन्होनें मानव जीवन की विविध स्थितियों में विविध रसों की उदभावना का संचार करने का कार्य किया । वाल्मीकि को रस के रचना की प्रेरणा रामायण से हुई क्योंकि क्रौञ्च पक्षी युगल में एक के मारे जाने से कवि का हृदय शोकाकुल ही उठा, वही शोक श्लोक बनकर निर्गत हुआ। अपनी शोकमयी प्रेरणा को क्रियान्वित करने के लिए रामायण की समाप्ति

सीता के अत्यन्तिक वियोग तक की कथा का समावेश करने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1– वाल्मीकि रामायण दृ 2 / 17 / 14

2– वही – 4 / 28 / 17

3– वही – 1 / 2 / 37

4– द्विवेदी. कपिलदेव. (सन–1992). 'संस्कृत साहित्य का इतिहास'. मुक्ता प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं.– 111

5– वाल्मीकि रामायण दृ 1 / 1 / 24

6– वही – 1 / 1 / 5 (उत्तरार्द्ध)

7– रामायण मंजरी – 1 / 1 / 5

8– रामायण चम्पू – 1 / 8

9– रामायण – 1 / 1 / 2–4, 8–11

10– वही – 2 / 17 / 14

11– रामायण महत्व – 5 / 63

12– वाल्मीकिरामायण – 2 / 69 / 1

13– वाल्मीकि रामायण – 6 / 111 / 100

14– वर्मा.मनीराम. (सन–1998).'रामायण कालीन समाज'.विशाखा प्रकाशन. दिल्ली, पृ.सं.– 184

15– रामायण – 4 / 28 / 27

16– वही – 4 / 28 / 18

17– काव्य प्रकाश – आचार्य मम्मट दृ पृ.सं. 10

डॉ0 राम कृपाल

सहायक प्रोफ़ेसर,

भारतीय भाषा – विभाग (संस्कृत–भाषा)

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी

विश्वविद्यालय,वर्धा, महाराष्ट्र–442001

मो०–9452466249

Email: drramkripalv@gmail-com

29

बनासकांठा जिले के दांता तालुका की आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थितिरू स्थानीय/आंशिक और सरकारी/गैर–सरकारी दोनों स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Parul Patel

सारांश

सामाजिक न्याय प्राप्त करने, लोगों के कल्याण और समाज के लोगों की समस्याओं का समाधान करने के उद्देश्य से व्यावसायिक सामाजिक कार्य शुरू हुआ है।

पेशेवर सामाजिक कार्य की प्रेरणा दया, दान और करुणा जैसी व्यक्तिगत भावनाओं में निहित है। जरूरतमंदों की मदद के लिए दान, परोपकार या समाज सुधार आदि के रूप में स्वैच्छिक सामाजिक कार्य किये जाते थे। व्यावसायिक समाज कार्य को प्रेरणा ऐसे ही सामाजिक कार्यों से मिली है। लेकिन इसके पीछे कुछ पद्धतिगत और वैज्ञानिक ज्ञान का आधार निहित है। व्यावसायिक समाजशास्त्र का जन्म यूरोप, अमेरिका में औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं का समाधान खोजने के प्रयासों से हुआ। उस समय के समाज में उत्पन्न होने वाली समस्याओं की व्यापकता ऐसी थी कि स्वैच्छिक भावनाओं के आधार पर किये जाने वाले सामाजिक कार्य उन तक नहीं पहुँच पाते थे, इसलिए अधिक सामाजिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता उत्पन्न हुई जिससे उन्हें प्रशिक्षित करने की बात शुरू हुई। पूरी प्रक्रिया वैज्ञानिक ज्ञान और तरीकों द्वारा समर्थित थी। फलस्वरूप धीरे–धीरे यह एक व्यापारिक शाखा के रूप में विकसित हो गया। परिणामस्वरूप, कई प्रशिक्षण स्कूल भी शुरू किए गए और पेशेवर कार्यकर्ताओं को शामिल करके सामाजिक कार्य संगठन शुरू किए गए। पेशेवर प्रशिक्षण के कारण, सामाजिक कार्यकर्ता मानव व्यवहार, ज्ञान, समस्याओं को समझाने और हल करने के तरीकों और कौशल को समझाने वाले विभिन्न विज्ञानों के ज्ञान से लैस हैं। पेशेवर मूल्यों के आधार पर उपयोगकर्ता की सहायता करने में भी सक्षम। कोई व्यक्ति किसी समूह या समुदाय की वैज्ञानिक ढंग से इस प्रकार सहायता करता है कि समस्या से प्रभावित व्यक्ति स्वयं अपनी समस्याओं को समझने और उनका उपयोग समस्या के समाधान के लिए करने का कौशल और योग्यता विकसित कर ले। इस प्रकार व्यावसायिक समाजशास्त्र को समस्या समाधान की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। जैसा कि डॉ. गीता चावड़ा (2010रू3) ने अपनी पुस्तक प्रोफेशनल सोशल वर्क में कहा है, प्रोफेशनल सोशल वर्क की अवधारणा एक निश्चित अवधारणा नहीं है बल्कि समाज में बदलाव के साथ बदलती रहती है। सामाजिक कार्य का एक अभ्यास जो उस समय की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक अभिविन्यास से आकार लेता है। इसलिए इसकी निरंतर बदलती प्रकृति को समझने के लिए ऐतिहासिक रूप से सामाजिक कार्य के विकास की जांच करना आवश्यक है। इस प्रकार सामाजिक कार्य केवल एक व्यक्ति की समस्या का समाधान नहीं करता। लेकिन व्यक्ति समाज में रहता है और समाज की समस्याओं का समाधान भी करता है। इस प्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता विभिन्न विषयों के बारे में आवश्यक ज्ञान, कौशल और ज्ञान लेता है और उपयोगकर्ता को समस्याओं को समझकर उनका समाधान करने में हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाने का प्रयास करता है।मैरी और जॉन (चावड़ा; 2010रू3) के अनुसार ष्सामाजिक कार्य विविधता हैष् सामाजिक कार्य एक विज्ञान है जो व्यक्ति की बदलती जरूरतों, अपेक्षाओं, समस्याओं, मूल्यों, कौशल और बाधाओं के साथ काम करता है और बदलते सामाजिक के साथ बदलता है।

आदिवासी समाज के मुद्दे और कल्याण

भारतीय समाज विविधता का संगम है। इस विशाल देश की खूबसूरत भूमि के इतिहास को कई संस्कृतियों ने आकार दिया है।

आज भी भारत में कुछ ऐसे समुदाय हैं जो सभ्यता के प्रभाव से दूर परंपराओं से घिरे हुए हैं जिनके रीति–रिवाज, निवास, आस्था और विश्वास आदि अन्य समाजों से भिन्न हैं।

हालाँकि भारत एक विकसित देश है, लेकिन इसे विकासशील देशों में से एक माना जाता है क्योंकि यहाँ कुछ जातियाँ हैं जिनका विकास न होने के कारण विकास अवरुद्ध हो गया है। अनुसूचित जनजातियाँ देश में सबसे गरीब और सबसे शोषित लोग हैं ब्रिटिश काल के दौरान पहाड़ी अंदरूनी इलाके मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन के माध्यम से आत्मनिर्भर थे, उन्होंने इन लोगों की अज्ञानता का फायदा उठाकर उनकी जमीनें जब्त कर लीं और अधिकांश लोगों को जीवन भर के लिए बेघर कर दिया।

समुदाय के लोग रोगों के इलाज के लिए जिन जड़ी–बूटियों का उपयोग करते हैं, वे उनकी जलवायु, पर्यावरण के लिए उपयुक्त हैं, भारत की जलवायु के अनुसार, उपचार की अधुर्वेद पद्धति सबसे अच्छी और सबसे प्रभावी और वैज्ञानिक पद्धति है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में व्यावसायिक सामाजिक कार्य

स्वास्थ्य क्षेत्र में एक सामाजिक कार्यकर्ता विभिन्न शारीरिक और मानसिक बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों की मदद करता है। इन्द्रियों या मासिक धर्म से शारीरिक रूप से पीड़ित व्यक्ति इनका विस्तार से अध्ययन कर विभिन्न सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझता है और उनका अध्ययन करता है। वह अपने परिवार, रिश्तेदारों, दोस्तों की मदद करने के लिए विभिन्न संगठनों से भी संपर्क करते हैं और रोगियों का मनोबल मजबूत करने के लिए उन्हें उपयुक्त सेवाएं प्रदान करते हैं और उन्हें सही दृष्टिकोण, मूल्यों और अच्छी आदतों के विकास के लिए उचित सलाह देते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता वातावरण में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए हर संभव प्रयास करता है। यहां तक कि मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति के लिए भी उसके मन को खुश करने के लिए मनोरंजन और खेलों की व्यवस्था

की जाती है। सामाजिक कार्यकर्ता रोगी को बताता है कि बीमारी के दौरान और उसके बाद क्या करना है। यह क्या करें और क्या न करें की सारी जानकारी देता है इसलिए वे हर संभव प्रयास करते हैं। ताकि समस्याग्रस्त बीमारी से पीड़ित व्यक्ति पहले की तरह ही दैनिक दिनचर्या शुरू कर सके और उचित मार्गदर्शन एवं पुनरावृत्ति से बचाव हो सके।

मरीज़ों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति ख़राब होने के कारण वे स्वास्थ्य सेवाओं का पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। ऐसे समय में एक सामाजिक कार्यकर्ता मददगार होता है। अस्पताल में ऐसे मरीज आ रहे हैं जिन्हें अच्छे इलाज की जरूरत है

औद्योगिक क्रांति के कारण भीड़भाड़, प्रदूषण एक समस्या बन गई। स्वास्थ्य प्रणाली में कई प्रगति के साथ–साथ इन समस्याओं से निपटने के लिए एक सामाजिक कार्यकर्ता की भी आवश्यकता पैदा हुई। क्षेत्र में, उन्होंने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को समझने के लिए अपने विशेष ज्ञान और कौशल का उपयोग किया, उस दौर से बाहर निकलने और सामुदायिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए भी इस सर्वेक्षण में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सामाजिक कार्यकर्ता की शुरुआत

1981 में लेडी एल्मोर्स नाम की एक महिला ने लंदन की पहली चौरिटी संस्था सोसाइटीज से संपर्क किया। इसकी जिम्मेदारी सी.ओ.5 को सौंपी गयी कि अस्पताल में इलाज के बावजूद मरीज ठीक क्यों नहीं हो रहा है? इसके बाद संस्था के मंत्री ने कहा कि डॉक्टर के साथ–साथ ऐसे व्यक्ति की जरूरत है जो उनकी भावनाओं और सामाजिक समस्याओं को समझ सके और उनसे जुड़ सके और इस क्षेत्र में मेडिकल सोशल वर्कर की शुरुआत हुई. जिसमे मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें शुरू हुई

सबसे पहले 1885 में लंदन के रॉयल फ्री हॉस्पिटल में शुरुआत हुई जिसमें चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं के मुद्दों की पहचान की गई जिसमें कर्तव्यों को परिभाषित किया गया।

व्यक्ति को इलाज के साथ–साथ अस्पताल आने पर दान द्वारा राहत दी जाती थी। अमेरिका में डॉक्टर कहते हैं कि श्शरोगी को मरीज के रूप में नहीं बल्कि एक इंसान के रूप में देखने का प्रयास करें।श्श चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्रारम्भ हुई।

(3) व्यक्ति बार–बार अस्पताल क्यों आता है। इसके कारण क्या हैं ये जानना जरूरी है यह किस क्षेत्र में होता है, यह जानने से रोगी की बीमारी का संबंध उसके वातावरण, मौजूदा बीमारी से भी होता है। एक सामाजिक कार्यकर्ता को मरीज़ का इलाज करते समय उसके सामाजिक परिवेश को जानना आवश्यक है।

विषय चयन

उपरोक्त विषय को चुनने के पीछे शोधकर्ता के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यावसायिक सामाजिक कार्य का उद्देश्य सामाजिक न्याय और सामाजिक सद्भाव प्राप्त करना है। इसलिए, आदिवासी कल्याण और स्वास्थ्य उनके फोकस का क्षेत्र बन गया है क्योंकि भारतीय समाज में आदिवासी लोग विकास के मामले में बहुत हाशिए पर हैं और कई जरूरतों से वंचित हैं, इसलिए यह पेशेवर सामाजिक कार्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। दूसरी ओर, स्वास्थ्य का ढांचा एक ऐसा क्षेत्र है जिसके बिना कोई भी व्यक्ति या समाज अपनी किफायती भलाई हासिल नहीं कर सकता है। इसलिए स्वास्थ्य क्षेत्र को सामाजिक कार्यों में भी योगदान देना होगा। इसलिए, इन दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों के संबंध में, शोधकर्ता ने ष्आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति काष्बनासकांठा जिले के दांता तालुका की आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थितिरू स्थानीय/आंशिक और सरकारी/गैर–सरकारी दोनों स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययनष विषय का चयन किया है।

अनुसंधान विधि

संपूर्ण शोध कार्य वैज्ञानिक पद्धति से तैयार की गई शोध रूपरेखा के आधार पर किया गया है यदि शोध कार्य के प्रथम चरण को सावधानीपूर्वक सरल नहीं किया गया तो आगे की शोध प्रक्रिया कमजोर हो जाएगी। इस तरह प्रस्तुत शोध शोध पद्धति के सभी चरणों से गुजरकर वैज्ञानिक ढंग से किया गया है।

अनुसंधान उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में तथ्यों का पता लगाने के लिए निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति के बारे में जानना

आदिवासियों को स्थानीय/आदिवासी औषधीय सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता के बारे में जानना।

सरकारी एवं गैर सरकारी दवा उपचार सेवाओं की उपलब्धता एवं प्रभावशीलता के बारे में जानना.

आदिवासियों की स्वदेशी/आदिवासी औषधीय प्रणालियों और सरकारी/गैर–सरकारी दोनों औषधीय प्रणालियों की उपलब्धता, आवश्यकता और प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना निर्माण

शोध की संपूर्ण प्रक्रिया में परिकल्पना निर्माण एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। कोई परिकल्पना आम राय के अनुरूप भी हो सकती है या उसके विरुद्ध भी हो सकती है। एक परिकल्पना अनुसंधान के शुरुआती बिंदु के रूप में किसी घटना की एक संभावित और अस्थायी व्याख्या है।

वर्तमान शोध की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं।

1. आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति खराब होगी।

2 आदिवासी महिलाओं के लिए स्थानीय जातीय–औषधीय उपचार सेवाएँ अधिक सुलभ लेकिन कम प्रभावी हो सकती हैं।

3. सरकारी और गैर–सरकारी दवा उपचार सेवाओं की उपलब्धता कम होगी लेकिन प्रभावशीलता अधिक होगी।

4. जनजातीय लोग जातीय–औषधीय प्रणालियों से इलाज करने की अधिक संभावना रखते हैं।

5. आदिवासियों के स्थानीय/जनजातीय औषधीय उपचार की तुलना में सरकारी/निजी औषधीय उपचार की उपलब्धता, आवश्यकता और प्रभावशीलता

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मानव जीवन की उन्नति, कल्याण एवं सुधार है, अतः यह व्यावहारिक है। यह संख्यात्मक भी है क्योंकि यह विशिष्ट मानकीकृत उपकरणों के साथ डेटा के एक बड़े समूह से प्राप्त संख्यात्मक माप पर आधारित है। साथ ही, चूंकि यह आदिवासी महिलाओं के लिए विभिन्न उपचार विधियों का मूल्यांकन करता है, इसलिए विभिन्न उपचार विधियों के बीच अनुसंधान के लिए मूल्यांकनात्मक शोध भी किया जा सकता है।

अनुसंधान क्रियाविधि

चूंकि वर्तमान शोध प्रकृति में संख्यात्मक है, इसलिए विभिन्न शोध विधियों में से सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है।

विश्व एवं अनुसंधान का क्षेत्र

गुजरात के पूर्वी क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति समुदाय निवास करते हैं। समय, शक्ति की कमी और अन्य कारणों से पूरे समुदाय का अध्ययन करना संभव नहीं था। इसलिए, बनासकांठा जिले के दांता तालुक के बलपानी ग्राम पंचायत के गांवों को ब्रह्मांड की एक इकाई के रूप में अध्ययन के उद्देश्य के रूप में लिया गया है और बनासकांठा जिले के दांता तालुका के साबलेपानी पंचायत के कुल 12 गांवों में से 8 गांवों को क्षेत्र के रूप में चुना गया है। . इन 8 गांवों की कुल आदिवासी आबादी 3552 है। चयनित गाँवों में से पहले दो गाँव अम्बाजी के करीब हैं और अन्य दो गाँव भीतरी इलाकों में हैं जहाँ कोई परिवहन और सड़क सुविधाएँ नहीं हैं। तीसरे दो गांव वीरमपुर के करीब हैं। जहां स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं. और अंतिम दो गाँव अम्बाजी से बहुत दूर हैं लेकिन कुछ हद तक परिवहन योग्य हैं। इस प्रकार शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही शोध क्षेत्र का निर्धारण किया गया है।

नमूने का चयन

चयनित 8 गांवों में महिलाओं की कुल संख्या 1768 है। उत्तरदाताओं का चयन करते समय, वयस्क उम्र की महिला जो शादीशुदा है और उसके बच्चे हैं को प्रतिवादी के रूप में चुना गया है। इस प्रकार शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में शोध के लिये कुल 250 उत्तरदाताओं का चयन किया है।

डेटा संग्रहण के तरीके

प्रस्तुत शोध में दो प्रकार के आँकड़े एकत्रित किये गये हैं। प्राथमिक डेटा और द्वितीयक डेटा.

प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। अनुसूची तैयार करते समय सभी वैज्ञानिक मानदंडों का उपयोग किया गया था। शोध के उद्देश्य को पूरा करने के लिए अनुसूची में कुल 9 अनुभाग प्रदान किए गए और विस्तृत प्रश्न तैयार किए गए। चूंकि अनुसूचित जनजाति समुदाय के लोगों और इसमें रहने वाली महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर नगण्य है, इसलिए अनुसूची के माध्यम से डेटा एकत्र करने के लिए इसे चुना गया। अनुसूची के माध्यम से डेटा एकत्र करते समय अवलोकन का भी उपयोग किया गया था। जबकि द्वितीयक डेटा के लिए पुस्तकालय और विशेषज्ञों के साथ चर्चा का उपयोग किया गया है।

डेटा वर्गीकरण, सारणीकरण और विश्लेषण डेटा संग्रह के बाद, वर्गीकरण, मास्टरचार्ट, सारणीकरण, डेटा के विश्लेषण के लिए नामकरण का निर्माण जैसे विषयों को शामिल किया गया है।

निष्कर्ष –

आदिवासियों की स्थानीय/आदिवासी औषधीय उपचार सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता को जानना।

जनजातीय समुदाय आज भी कुछ बीमारियों का इलाज अपनी अनूठी जनजातीय उपचार प्रणाली का उपयोग करके करते हैं। वर्तमान शोध स्थानीय/जातीय औषधीय उपचार सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता को जानने का प्रयास करता है। आज इस समुदाय के लोग भुवा–तौत्रिक और स्थानीय डॉक्टरों से इलाज कराते हैं। वर्तमान शोध में लिए गए कुल उत्तरदाताओं में से 87.20ः उत्तरदाता औषधीय उपचार के लिए जाते हैं।

उत्तरदाताओं से पूछा गया कि सभी उपचारों में से कौन सा उपचार सबसे तेज़ आराम प्रदान करता है और उन्होंने भुवा–तांत्रिक का नाम लिया। 85,32 उत्तरदाताओं के अनुसार, भुवा–तांत्रिक उपचार 1 से 3 दिनों में राहत देता है इसलिए यह कहा जा सकता है कि भुवा–तांत्रिक की आसान उपलब्धता उत्तरदाताओं के लिए उपचार की पहली पसंद बनाती है।

आदिवासियों की सरकारी/गैर सरकारी औषधीय उपचार सेवाओं की उपलब्धता एवं प्रभावशीलता को जानना

सरकारी इलाजरू बदलते समय के साथ आज आदिवासी समुदाय इलाज के लिए सरकारी और निजी अस्पतालों का रुख कर रहा है। सरकारी सेवाओं के प्रभारी सी.एच.सी. वहीं किसी भी उत्तरदाता को उपकेंद्र के बारे में जानकारी नहीं है। 97,20 उत्तरदाताओं को सरकारी सिविल अस्पतालों के बारे में जानकारी है।

सरकारी सेवाओं की उपलब्धता के संबंध में 70ः उत्तरदाताओं को पीएचसी उपचार के लिए पड़ोसी गाँव में जाना पड़ता है। उत्तरदाताओं का कहना है कि अंबाजि में सिविल अस्पताल में उपचार उपलब्ध है

27.20ः उत्तरदाताओं की पहली डिलीवरी सरकारी अस्पताल में हुई। लेकिन बाद की डिलीवरी में यह अनुपात धीरे–धीरे बढ़कर 55.20 हो गया है। यानी सरकारी अस्पतालों में प्रसव की दर अधिक है. 90.40ः उत्तरदाताओं ने गर्भावस्था के दौरान पंजीकरण ,वैक्सीन, आयरन की गोली, शारीरिक जांच जैसी सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का भी लाभ उठाते हैं। जो उनकी बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है. सरकारी सुविधाओं का लाभ

उठाने का कारण यह है कि वे निःशुल्क हैं।

सामाजिक स्वास्थ्य की उन्नति के लिए काम करना समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार को सक्रिय रूप से समर्थन देना। ऐसा करने से स्वयं का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

सुधार हुआ तो समुदाय का स्वास्थ्य भी सुधरेगा। स्व–समुदाय में कार्य करने की क्षमता बढ़ेगी जिससे आर्थिक विकास होगा। और जीवन स्तर के साथ–साथ जीवन स्तर भी ऊपर उठेगा। सभी को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

पर्यावरण को बनाये रखने में एक सामाजिक कार्यकर्ता की भी अहम भूमिका होती है। लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना और कार्यक्रमों, योजनाओं तथा व्यक्तिगत, सामूहिक, समुदाय आदि के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता से ही पर्यावरण का संतुलन बनाए रखा जा सकता है। ताकि पर्यावरण में उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को रोका जा सके। यदि वातावरण अच्छा हो तो इसका प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। यदि व्यक्ति को अच्छा वातावरण मिले तो वह स्वयं के साथ–साथ समाज और देश को भी अच्छा स्वास्थ्य प्रदान कर सकता है।

Dr. Parul Patel
MSW, MPHIL, PHD
Guest Faculty, Mlsu
Udaipur
ADDRESS: 20/North Sunderwas,
Vidya Vihar Collony,
Pin No. 313002
Contact. No. 9414167228

30

महादेवी के काव्य में गीति तत्त्व

सुनीता देवी

सारांश

अभिव्यक्ति की दृष्टि से महादेवी वर्मा का काव्य के अन्तर्गत आता है। सहज भावनुभूति की सफल अभिव्यंजना के लिए निश्चय ही गीत से बढ़कर अन्य कोई उपयुक्त माध्यम नहीं स्वीकारा जा सकता। गीता के सभी उदात्त तत्व भावात्मक, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता, भावानुकूलता आदि अपनी सम्पूर्ण गरिमा और सौश्ठव से साथ महादेवी के काव्य में सहज रूप में उपलब्ध है। कवयित्री की अभिव्यक्ति का श्रेश्ठतम माध्यम गीत ही है। कवयित्री ने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख–दुख, हर्श–शोक, करूणा, आनन्द, हास–रूदन की अभिव्यक्ति अपने गीतों में की है।

बीज भाब्द– गीत, सरसता, मधुरता, गेयता, भाव–प्रवणता ध्वन्यात्मकता, वेदना, करूणा, संक्षिप्तता, भव्यता, विराटता कोमलता आदि।

पूर्व अवधारणा

गीत क्षणों की उपलब्धि है। जीवन के व्यक्तिगत और एकान्त भावुक क्षण जब सुमधुर पदावली में स्वतः स्फूर्त रागात्मक एवं लयात्मक चेतना से दीप्त हो उठते हैं, तो गीतों की रचना होती है। सरलता इनका परिचय है, मधुरता इनका स्वभाव। प्रबंधकाव्य जीवन के समक्ष दर्शन से अनुप्राणित होता है उसमें जीवन के अनेकांगी विकास और नवरसता की योजना होती है। विपरित इसके गीति–काव्य वि ाश्ट भावाकुल क्षणों की वाणी है। गीत स्वरूप से मुक्ततक, शिल्प से बौद्धिक होते हुए भी सहज और लोकगीतात्मक स्फूर्ति से संकलित होते हैं।

प्रस्तावना

गीतों की परम्परा यों सीधी वेदों से स्थापित की जा सकती है, पर हमारी भाशा की अमराई में सबसे पहला स्वर संधान मैथिल–कोकिल विद्यापति ने किया। विद्या पति के उपरान्त कबीर ने अपनी खंजरी संभाली और एकाग्रता की मस्ती में सेकड़ो पद उनके ज्ञान–निर्झर से निःसृत हुए। तब एक अंधा गायक उठा जिसने अपने इकतारें पर पूरे एक लाख पद तैरा दिये और अपनी बंद आंखों से नवनीत–चोर के प्रेम की असंख्य रंगीनियों को चित्रित किया।

'तुलसी' भी सूर की भांति राग–रागनियों की प्रजा के सम्राट थे। गीतावली की पृष्ठभूमि में कथानक की धारा बहती है। अतः वे पद उतने संगीतात्मक नहीं है जितने वर्णनात्मक। सच्चे अर्थों में गीतात्कता का चरम विकास मीरा में मिलता है– मीरा में स्वर–लहरियाँ ही जैसे साकार हो गई है। मीरा ने रो–रो कर गया है, अतः उसके शब्द–शब्द में क्रन्दन बन्दी है, जिसके उच्चारण मात्र से हृदय भर–भर उठता है। बेशक मीरा के बाद गीत का स्वभाविक रूप महादेवी में ही प्राप्त होता है। यों छायावादी युग में प्रसाद, निराला, पंत तथा अन्य कवियों के सुंदर गीत भी मिल सकते हैं, परंतु गीतिकाव्य की ऐसी पूर्णता उनमें नहीं है जो महादेवी की कला को छू सके।

पक्ष वेदना है और उत्तर पक्ष करूणा। प्रणय, वेदना करूणा आदि भावों का आलंबन कोई अज्ञात प्रिय है जिसके प्रति कवयित्री का आत्मसचेतन निवेदन प्रस्तुत हुआ है। वह आज्ञात प्रिय रहस्यमय, सुंदर मोहन प्रणयी के रूप में चित्रित हुआ है।

दीपशिखा की भूमिका में महादेवी ने लिखा है कि– ''मेरे गीत अध्यात्म के अमूर्त आकाश के नीचे लोक–गीतों की धरती पर पले हैं। इस कथन का अर्थ है कि प्रथम तो उनके गीतों की आधार भूमि आध्यात्मिक और दूसरे उनके गीतों में लोक–गीत की लय है, उन जैसी भाव प्रवण्ता है। लोक–गीतों की लय बहुत सीधी–सादी होती है। उसमें आरोह–अवरोह पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। महादेवी के गीतों में लोक–गीतों की लय की प्रवृत्ति आरंभ से ही मिलती है। 'दीपशिखा' में भी लोक–गीतों की लय की प्रवृति आरंभ से ही मिलती है। ''कहाँ से आये बावल काले; मैं न यह पथ जानती री'' आदि गीतों में लोक गीतों की ही लय है। डॉ० नगेन्द्र के शब्द इस संबंध से उल्लेख है– ''प्रचलित लोक गीतों की वन्य गति–लय में लय में अमूल्य काव्य सामग्री भरकर महादेवी जी ने खड़ी बोली कविता में गीत के माध्यम को अमर कर दिया है।''

लोकगीत जनसाधारण के गीत होते हैं उनमें हृदय तत्त्व प्रधान होता है, उनमें भाशा की प्रांजलता पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता है, कला पक्ष को उतना समृद्ध बनाने का प्रयास नहीं होता, जितना भावाभिव्यक्ति को सहज बनाने का। प्रत्येक भाब्द भावगर्मित होता है। हृदय से सीधा निकला प्रतीत होता है, अतः उसमें हृदय के स्पर्श की भाक्ति अधिक होती है। महादेवी इस निश्कर्श पर खरी नहीं उतर पाती। मीरा का 'मैं तो दरद दिवानी मेरा दरद न जाने कोय' वाली पंक्ति सुनते ही प्राण मर्मर कर उठते हैं, आँखे छलछला आती हैं। मगर महादेवी की 'मैं नीर भरी दुःख की बदली वाली पंक्ति एक हल्का दर्दीला स्पर्श देकर ही रह जाती है।

महादेवी के गीतों में निश्चय ही कला की साज–सँवार है, संयम और अनुशासन है। अतः उसमें उतनी भाव प्रवणता नहीं जितनी लोकगीतों में मिलती है। अधिकांश साहित्यिक गीतों की तरह इनके गीतों में भी कला पक्ष की सुंदरता है–

''देखकर कोमल व्यथा की आंसुओं के सजल रथ में
मोम–सी साधे बिछा दी थी इसी अंगार पथ में
स्वर्ण है वे मत कहो अब क्षार मैं उनको सुला लूँ।''

महादेवी की अभिव्यंजना पर कल्पना, प्रतीकात्मकता संयम और चिन्तन का इतना गहन आवरण पड़ा है कि उनकी भाव प्रवणता बहुत क्षीण हो गई है। प्रतीकों के कारण ही उनका व्यक्तित्व प्रच्छन्न रह गया है।

प्रसाद के नाटकों में अधिकाशं गीतों का भाव के भीतर भाव और उस भाव के भीतर भावों का गुम्फन होने से आकर्शण कुंठित हो गया है। निराला ने पहले सांचे तैयार कर लिए हैं, और फिर उनमें शब्दों की स्थापना की है। लय और विशेष रूप से अनुप्रास का प्रयोग उन्होंने बहुत सचेष्ट होकर किया। उनके गीतों में श्री विशवम्भर मानव के अनुसार– स्वरों के उतार–चढ़ाव तो हैं, पर भावों की गहराई नहीं, आलाप की मधुरता तो है दर्द या आहलाद की अतिशयता नहीं।'' पंत की रचनाओं में बहुत सौंदर्य की इंद्रधनुशी रेखाएँ तो हैं, पर किसी गहरी चोट का निर्दे ान उनमें अप्राव्य है फिर कहना पड़ता है कि महादेवी इस क्षेत्र में अद्वितीय है उनके गीत निसर्ग सुन्दर है और उसमें अपनी निजी विशेषता है और वह है उनकी स्वाभाविक गति और भाव भंगिमा। श्री विश्वम्भर मानव में बहुत ही सही लिखा है– उनका मानस भी तरंगगायित है, पर वह तट को नहीं डुबाता, दर्शन की भी वह पंडिता है, पर माया और मन के विकारों पर ही दृष्टि गड़ाये रखना उनका काम नहीं। भाव गम्भीर्य उनमें भी है, पर भाुश्कता बचा करके अलंकारों का प्रयोग वह भी करती है पर अनायास ही अकृत्रिमता से उपर्युक्त बातों के स्पष्टीकरण के लिए दो उहाहरण प्रस्तुत है– 'मैं' पलकों में पाल रही हूँ यह सपना सुकुमार किसी का।

महादेवी वर्मा के गीतों में जो कोमलता जो गूंज है उनकी प्र ांसा में भाब्द बौने दिखने लगते है, इनमें संगीत का वह मोहन मंत्र है जो मन को लोरी देकर स्वप्नाविश्ट करने की भाक्ति रखता है। 'दीपि ाखा' की भूमिका में गीत की परिभाशा देते हुए महादेवी ने कहा–

''साधारणतः गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख दुःखात्मक अनुभूति का वह भाब्द रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सकें।'' कहना न होगा उनकी इस परिभाशा गीतिकाव्य के अनिवार्य तत्व गेयता, व्यक्तित्व की प्रधानता नाव–प्रववल और अन्ट– स्फूर्ति आदि अनुस्यूत है।

महादेवी ने अपने गीतों को अधिकाधिक गेय बनाया है। गेयता के लिए प्रायः कवि दो साधनों का आश्रय लेता है– स्वर का संगीत तथा भाब्द–योजना का संगीत। महादेवी के काव्य में इन दिनों का आश्रय लिया गया है। कवयित्री ने लय और ताल के समवेत संयोजन पर उपयुक्त ध्यान दिया है, गति–नियम, यति–बंधन और तुक पालन का सर्वत्र ध्यान रखा है। उनके गीतों की लय सरल और भावानुकूल है। साथ ही आरोह–अवरोह का कहीं व्यवधान नहीं है। भाब्दों की लयपूर्ण योजना जैसे–

'रही लय रूप छलकाती। चली सुधि रंग ढलकाती और कोमलता का पद विन्यास जैसे– यह मंदिर का दीप इसे नीख जलने दो'' ने उनके गीतों को बड़ा मधुर बना दिया है। उन्होंने कु ाल स्वर्णकार की भांति प्रत्येक भाब्द को ध्वनि, वर्ण और अर्थ की दृश्टि से नाप–तोल और काट–छांटकर तथा कुछ नए गढ़कर अपनी सूक्ष्म भावनाओं को कोमलता कलेवर दिया है।

यह सच है कि महादेवी की रचनाओं में पन्त की भाँति विविधता या निराला की भांति प्रयोग–विपुलता नहीं है, किंतु उनका साधारण भी असाधारण की दीप्ति से चमक उठा है, एक तुच्छ महूर्त भी नया हो गया है। प्रायः सभी गीत रागात्मक ''सरल सौंदर्य'' से अभिनिवे ित है। भाब्द–चयन में उन्होंने श्रुति–माधुर्य और स्मृति चित्र–क्षमता का बहुत कम ध्यान रखा है। कठोर भाब्द कम, कोमल स्वरों का अधिक्य है। अनुस्वारी वर्णों की भी बहुलता है। यह बहुलता गीतों को अपेक्षित कोमलता और रागात्मकता भाशा की भाक्ति प्रदान करती है। इनके सभी गीत मिलकर प्रलय और वेदना की डोर में गुँथ कर एक माला का निर्माण करते हैं। भाव–तत्व की दृश्टि से महादेवी का गीत– ौली के निम्नलिखित प्रकार नि चत किये जा सकते हैं–

1. प्रणय भाव
2. वेदनात्मक भाव
3. प्रकृतिपरक गीत
4. रहस्यात्मक गीत
5. करूणा संबंधी गीत
6. सौन्दर्यात्मक अनुभूति के गीत
7. प्रयोगात्मक गीत

प्रणय महादेवी के भावों के केन्द्रस्थित तत्वों में से एक है। प्रणय का स्वभाविक परिणाम वेदना है और वेदना अब क्रिया ाील होती है तब करूणा बन जाती है। प्रणय की अनुभूति का पूर्व ऐसे भाव प्रवणता तथा अन्तः स्फूर्ति 'दीपि ाखा' में कई स्थानों पर मिलती है–

''अब तरी पतवार लाकर तुम दिखा मत–पार देना
आज गर्जन में मुझे बस एक बार पुकार लेना।''

अथवा

''मोम सा तन घुल चुका अब दीप सा मन जल चुका है।
इस इंगित के लिए भात बार प्राण मचल चुका है।'' पर कुल मिलाकर यह यथेश्ट मात्रा में नहीं है।

डॉ० नगेन्द्र की आपति है– ''इस अनुभूति के मूल में जो काव्य का स्पन्दन है, उसके ऊपर कवि ने चिन्तन और कल्पना के इतने आवरण चढ़ा रखे हैं कि स्वभावतः उसकी तीव्रता दब गई है और उसको टटोलने पर बहुत नीचे गहरे में एक हल्की–सी धड़कन मिलती है।''

निष्कर्ष

महादेवी के काव्य–विकास क्रम को देखते हुए इसे स्वीकार करने में मुझे कोई हिचक नहीं है। 'नीरजा' से बढ़कर 'सान्ध्यगीत' और 'सान्धगीत' से बढ़कर 'दीपशिखा' में उनकी स्वर लहरी कोमल से कोमलता और फिर कोमलता हो गई। वि वम्भर मानव के शब्दों में– ''जीवन के अगाध अकूल क्षीर सिन्धु से कितनी एकान्त रातों में, व्यथित प्राणों की रई के संचालन से यह अमृत मंथन हुआ, कहा नहीं जा सकता।

सुनीता देवी
1785 सैक्टर – 2
पैटोल पम्प के सामने
रोहतक – 124001
हरियाणा

31

गुप्तजी की नारी भावना

राजश्री गुप्ता

सारांश

''अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।''

–'यशोधरा'

मैथिलीशरण गुप्त :– आचार्य द्विवेदी जी के काव्यादर्शों को चरितार्थ करने वाले महान कवि मैथिलीशरण गुप्त (1887–1964 ई०) हुए, जिन्होंने लगभग 40 मौलिक काव्य–ग्रन्थों की रचना की है। उनके महत्वपूर्ण ग्रन्थों में 'रंग में भंग' (1909 ई०), 'जयद्रथ–वध' (1910 ई०), 'भारत–भारती' (1912 ई०), 'किसान' (1917 ई०), 'पंचवटी' (1925 ई०), 'साकेत' (1932), 'यशोधरा' (1933 ई०), द्वापर (1936), 'नहुष' (1940ई०), 'काबा और कर्बला' (1942), 'पृथ्वी पुत्र' (1950 ई०), 'जयभारत' (1952 ई०), 'विष्णू–प्रिया' (1957) आदि उल्लेखनीय हैं।

गुप्त जी द्विवेदी–युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। वे राष्ट्रीय काव्य धारा के कवियों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी व प्रमुख प्रतिनिधि कवि है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से 'साकेत' जैसे महाकाव्य की रचना करने वाले गुप्त जी पहले 'वैश्योपकारक' पत्रिका में अपनी रचनाएँ छपवाते थे, किन्तु 'सरस्वती' मासिक पत्रिका में अपनी रचना को प्रकाशित कराने की तीव्र आकांक्षा उनके हृदय में थी। उन्होंने 'रसिकेन्द्र' उपनाम से ब्रजभाषा में लिखी कविता 'सरस्वती' के लिए भेजी, किन्तु उनकी वह कविता 'सरस्वती' में नहीं छपी और द्विवेदी जी ने उन्हें पत्र लिखकर सूचित किया कि 'सरस्वती' में हम बोलचाल की भाषा (खड़ीबोली हिंदी) में लिखी गई कविताएँ ही छापते हैं तथा उन्होंने यह भी लिखा कि 'रसिकेन्द्र' बनने का जमाना अब गया। गुप्तजी पर इन दोनों बातों का विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने खड़ीबोली में कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया और 'उपनाम' से सदा के लिए मुक्ति पा ली। तत्पश्चात् उन्होंने 'हेमन्त' नामक कविता 'सरस्वती' के लिए खड़ीबोली में लिख कर भेजी जो अनगढ़ और अस्त–व्यस्त थी, किन्तु द्विवेदी जी ने उसका संशोधन करके 'सरस्वती' मासिक पत्रिका में वह कविता छाप दी। यद्यपि कविता में इतना संशोधन परिवर्द्धन किया गया था कि वह एक नई रचना बन गई थी तथापि उस कविता के नीचे नाम मैथिलीशरण गुप्त जी का ही दिया गया था। निश्चय ही आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी गुप्त जी के गुरु और प्रेरक थे, इसलिए उन्होंने अपने महाकाव्य 'साकेत' (1932) में उनकी प्रेरणा को स्वीकार करते हुए श्लिष्ट शब्दों में आभार स्वीकार किया :

''करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद ?
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।''

हिन्दी में रामकथा पर कई महाकाव्य लिखे गए हैं जिनमें प्रमुख हैं– तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस', केशवदास कृत 'रामचन्द्रिका' और मैथिलीशरण शरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' कवि को इसके निर्माण की प्रेरणा 'भी आचार्य, महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से प्राप्त हुई जिसमें उन्होंने 'सरस्वती' में प्रकाशित एक लेख में कवियों से आग्रह किया था कि वे (कवियों से) रामकथा की उपेक्षित पात्र उर्मिला पर कुछ लिखे। 'साकेत' में दो सर्ग अधिक महात्वपूर्ण है– आठवाँ सर्ग जिसमें 'चित्रकूट में हुई सभा में के कैकेयी के अनुताप को दिखाया गया है और नवम सर्ग, जिसमें विरहिणी उर्मिला की विरह वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति है। जब उर्मिला, लक्ष्मण से चित्रकूट में अचानक मिलती है और लक्ष्मण अपने सामने उर्मिला को देखकर घबरा जाते है तब उर्मिला जो पंक्तियाँ कही हैं वे उसकी वेदना और महानता को एक साथ व्यक्त करती हैं:–

''मेरे उपवन के हरिण आज वनवारी।
मैं बांध न लूँगी तुम्हें तजो भय भारी।।''

इस प्रकार रामकथा के परम्परागत नायक राम ही है, किन्तु 'साकेत' की रचना 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' लेख (द्विवेदी) से प्रेरित होकर की गई। कैकेयी का अनुताप गुप्त जी ने 'साकेत' में वर्णित रामकथा में यह भी मौलिक उद्भावना की है। कैकेयी की अपने किये पर पश्चाताप होता है। चित्रकूट में कैकेयी भी सभा में अपना अपराध को स्वीकार करती है और राम को घर लौट चलने के लिए कहती है। अपने को धिक्कारती हुई वह कहती है:–

''युग–युग तक चलते रहे यह कठोर कहानी
रघुकूल में भी थी एक अभागिन रानी ।
निज जन्म–जन्म में सुने जीव यह मेरा ।
धिक्कार उसे था महा– स्वार्थ ने घेरा ।।''

कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी द्विवेदी–युग के महान कवि माने जाते हैं जिनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता समाज–सुधार, युग–निरूपण, भारतीय संस्कृति एवं नारी का विशद चित्रण हुआ है। उन्होंने 'साकेत' महाकाव्य में वियोगिनी 'उर्मिला' का मातृत्व भाव की प्रबलता से युक्त 'कैकेयी' का 'द्वापर' कांव्य मे 'विधृता' का, यशोधरा खण्ड काव्य में 'यशोधरा' का तथा 'विष्णुप्रिया' में इसकी नायिका का चित्रण बड़े मनोयोग से किया है।

गुप्तजी के नारी सम्बन्धी विचार – कवि ने नारी सम्बन्धी विचारों को व्यक्त करते हुए काव्य में नारी के सम्पूर्ण जीवन को जिन दो पंक्तियों में चरितार्थ किया हैं, वे उनकी नारी भावना को मार्मिकता से अभिव्यक्त करती है :–

'अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।''

इन पंक्तियों में नारी को अबला कहते हुए उसकी असामर्थ्य

एवं अक्षमता पर दुःख व्यक्त किया गया है तथा मातृत्व भाव की प्रबलता को स्वीकार करते हुए उसके जीवन को दुःख से भरा हुआ माना गया है।

किन्तु ऐसा नहीं है कि गुप्त जी नारी को नर से हीन मानते हैं। वे नारी को नर की तुलना में गरिमा देते हुए उसे नर से श्रेष्ठ निरूपित करते हुए उनकी नारी पात्रों की गौरवशाली चरित्र को देख हम भी गुप्त जी के स्वर में स्वर मिलाकर पुकार उठते हैंः–

''एक नहीं दो–दो मात्राएँ, नर से भारी नारी ।''

'साकेत' में राम–कथा की उपेक्षिता उर्मिला को कवि ने उसका यथोचित स्थान दिलाया है। लक्ष्मण को राम–सीता का अनुगमन करके बन जाते देख उर्मिला अपने अन्तर उमड़ते भावावेश को बलपूर्वक दबाकर मन को समझाती हैः–

''हे मन! तू प्रिय–पथ का विघ्न न बन ।''

'यशोधरा' काव्य का नायिका यशोधरा पर भी गुप्तजी ने अपनी संवेदनशील दृष्टि डालकर अपनी नारी–विषयक पूज्य भावना का परिचय दिया है। यशोधरा को सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) के गृह–त्याग का खेद नहीं; पीड़ा है तो सिर्फ इस बात की–

''सखि! वे मुझसे कहकर जाते।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुप्तजी कविता में नारी के प्रति पूज्य भावना प्रकट की गई है।

गुप्त जी की नारी भावना और उसके विकास का क्रम उनके प्रथम काव्य ग्रन्थ 'रंग में भंग' (1909) से लेकर 'विष्णुप्रिया' तक उनकी नारी भावना विकसित होती और पनपती रही है। 'रंग में भंग' में नारी की करुणा का ही वर्णन है। 'सैरन्ध्री', 'हिडिम्बा' 'शकुन्तला' आदि में भी उसी नारी भावना का प्रसार है। 'साकेत' की उर्मिला ने गुप्तजी भी नारी भावना को एक निश्चित आधार दिया और उसके 'यशोधरा', 'द्वापर', 'जयभारत' और 'विष्णुप्रिया' ने।

गुप्तजी की नारी–भावना का मूल तत्व और केन्द्र है – सीता। सीता गुप्त जी के कुल की अधिष्ठात्री है। शैशव काल से ही वे उनके जीवन और काव्य की मूल प्रेरणा रही है। उन्हीं के शब्दों में :– ''मेरे पिता राम के अनन्य उपासक थे। सीता जी उनकी कुल देवता थीं। घर में वही चर्चा में रहती थी, उसी वातावरण में पला '' – (लेखक के एक पत्र से)। राम की स्तुति उन्होंने बहुत की हर ग्रन्थ में की, पर सीता की स्थिति वे कहां और कैसे करते ? सीता जी के जीवन में उन्हें नारीत्व की सारी करुणा और वेदना पूँजीभूत होकर मिली थी। नर का नारी के प्रति किया गया कठोर व्यवहार और घोर अंविश्वास और घोर उपालम्भ ! सीता जी इस, नारीत्व का प्रतीक थी। उत्तररामचरित में स्वयं भवभूति जी को भी कहना पड़ा :–

''करुणास्थ मूर्तिरथवा शरीरिणी
विरह व्यथेव वनमेति जानकी।''

–उत्तर रामचरित, तीसरा अंक

अपने इस कुल–देवता से ही गुप्त जी को नारी भावना का मूल मंत्र मिला **''आँचल में है दूध, और आँखों में पानी''** उनका 'कवि' हृदय यह चाहता था कि अपनी 'माँ' के उसी दुःखी और तिरस्कृत जीवन का चित्र आँके पर गुप्त जी के भक्त हृदय ने यह अनुमति नहीं दी। सनातन मर्यादा, वैष्णव भावना और भक्त परम्परा इसके विपरीत पढ़ती थीं– सीता जी के कारुण्य का चित्रण राम को उपालम्भ है और गुप्तजी का भक्त हृदय इसे कैसे स्वीकार करें ? इसीलिए कवि ने भिन्न–भिन्न स्थान पर, सीता जी के ही सामानान्तर नारी–पात्रों की उद्‌भावना की और उनकी करुण कथाएँ लिखीं।

कवि चाहता है कि सीताजी पर किए गए अति–दुर्व्यवहार को भी नारीत्व की करुणा और वेदना की व्यापक भूमि में समा ले, पर करे क्या ? भक्त हृदय आगे आने नहीं देता। अपने इष्ट राम के समीप इन्हें बहुत सावधान ही रहना पड़ता है। सीता ही गुप्त जी की नारी भावना का चरम लक्ष्य है। एक ओर प्रेम, करूणा और वात्सल्य दूसरी ओर घोर अपमान और तिरस्कार के मध्य भी त्याग, धैर्य और क्षमता का प्रवाह । यही गुप्तजी की नारीत्व है। अपनी समस्त कृतियों में उन्होंने इसी का विश्लेषण किया शकुन्तला, उर्मिला, यशोधरा, राधा, विधृता, द्रौपदी और विष्णु प्रिया इसी विश्लेषण और विकास की क्रम–श्रृंखलाएँ हैं। 'जयभारत' में उन्होंने स्पष्ट कह दियाः–

''नारी लेने नहीं लोक में देने आती है,
अश्रु शेष करके वह उनसे प्रभु पद धो जाती है।''
–'जय भारत' द्रोपदीः सत्यभामा

अतएव इन नारी–पात्रों का सृजन और पालन जीवन की दुखान्त भूमिका में हुआ है – वे नर के तिरस्कार और उपालम्भों के प्रतीक हैं।

मैथिलीशरण गुप्त जी के ये नारी पात्र प्रायः उपेक्षित रहे हैं, जीवन में भी, काव्य में भी। परन्तु गुप्त जी ने उनके जीवन के भीतर झांक कर सदैव ही नारी को नर से ऊँचा पाया है :–

''दो–दो मात्राएँ लेकर है नर से भारी नारी''

ये दो मात्राएँ स्वरों की नहीं, प्रेम और करुणा की हैं, प्रेम जो जीवन की चरम साधना है और करुणा उसकी सवोच्य निधि है। 'विष्णुप्रिया' में तो यह स्वर और अधिक तीव्र हो उठा, जब गुप्तजी कहते हैंः–

''नारी पर नर का कितना अत्याचार है।
लगता है, विद्रोह मात्र ही अब इसका प्रतिकार है।। ''

गुप्तजी की 'साकेत' और 'यशोधरा' प्रबन्धात्मक काव्य हैं। 'साकेत' की रामकथा की उपेक्षिता उर्मिला तथा 'यशोधरा' में गौतमबुद्ध की तिरस्कृत पत्नी यशोधरा की करुण गाथा को वर्ण्य विषय बनाया है। 'साकेत' में उर्मिला के अतिरिक्त कैकेयी के मातृहृदय की कोमलता को मानवीय घरातल पर चित्रित किया है।

नारी पर अविश्वास करने वाला वह पुरुष भी नारी की कोख से उत्पन्न हुआ है। जाया और जननी होकर भी उसे **'पाप की**

पिटारी' कहना कहाँ तक उचित है:–

''उपजा किन्तु अविश्वासी नर हाय! तुझी से नारी।
जाया होकर जननी है तू ही पाप की पिटारी।।''

पति–परायण अनुरागिनी पत्नी उर्मिला कहती है–

''तू हे मन, प्रिय पथ का विघ्न न बन।''

'यशोधरा' की गोपा (यशोधरा) अपनी व्यथा को व्यक्त करती हुई कहती है:–

''सखि वे मुझसे कहकर जाते।
सिद्धि हेतु स्वामी गए यह गौरव की बात।
पर चोरी–चोरी गए यही बड़ा व्याघात ।।''

चित्रकूट में हुई सभा में वात्सल्यमयी माता रूप कैकेयी का पश्चाताप मैथिली शरण गुप्त की मौलिक कल्पना है:

''सौ बार धन्य! वह एक लाल की माई ।
जिस जननी ने है जना भरत सा भाई।।
पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई।
सौ बार धन्य! वह एक लाल की माई।।''

गुप्तजी ने युग के अनुरूप नारी को जन–सेविका एवं राष्ट्र–सेविका के रूप में भी चित्रित किया। सीताजी वनवासियों को अच्छे संस्कार देती हैं, उन्हें कातें–बुनने के लिए प्रेरित करती है:–

''आओ! हम कातें–बनें गीत की लय में।''

गुप्तजी के रचनाओं में नारी–भावना उदात्त है तथा वर्तमान नारी समाज के लिए प्रेरणादायक है।

उपेक्षित नारियों की दयनीय दशा का चित्रण करते हुए मैथिलीशरण गुप्त जी ने अपने काव्य में जगह दी! यशोधरा के माध्यम से गौतम बुद्ध की पत्नी का, साकेत के माध्यम से लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का, विष्णुप्रिय के माध्यम से चैतन्य महाप्रभु की पत्नी का उत्सर्ग भाग योजित किया है:–

''सखी वे मुझसे कहकर जाते,
प्रियतम के प्राणों को पल में स्वयं सुसज्जित करके।
भेज देती रण में, छत्र धर्म के नाते,
सखी वे मुझसे कहकर जाते।।

गुप्तजी का कोई नारी–पात्र अपना जाति गौरव और स्वाभिमान नहीं खोती, नारीत्व की अन्य मर्यादाओं से च्युत नहीं होती। गुप्तजी के नारी पात्र नवीन होकर भी प्राचीन हैं, वर्तमान में रहकर भी अतीत से पोषित है। उनकी प्रेम भावना पुरुष की भाँति केवल वासना की तुच्छ भूमि पर ही आश्रित नहीं रहती, वह तो भोग से प्रारम्भ होकर वियोग झेलती हुई योग में परिणत हो जाती है:– **(गुप्तजी द्वारा गाँधी जी को लिखे पत्र से)**

लक्ष्मण ने भाई के लिए मार्यादा छोड़ी। गौतमबुद्ध ने सिद्धि के लिए नारी को बाधा पाया, कृष्ण राधामय हो ही नहीं सके, और चौतन्य महाप्रभु विष्णुप्रिया नहीं बन सके। सीताजी की ही भाँति इन परित्यकाओं ने इस वियोग और परवशता से नहीं, गौरव और कर्तव्य से, त्याग और बल से धैर्यपूर्वक ग्रहण किया :–

''चल गए माधव मुंह मोड,
राधा जा न सकी ब्रज छोड़।
कुल छोड़ा ब्रज क्यों न छोड़ती पर था कौन उपाय?
उनका पीछा कर क्या उनकी हंसी कराती हाय।।?''
विष्णुप्रिया (1957)

अन्त में विजय भी उन नारियों की हुई। गौतमबुद्ध ने यशोधरा (गोपा) के वधू धर्म को सराहा और चैतन्य ने गृहस्थ की मर्यादा को । इन नारी चरित्रों के नूतन उन्मेष में गुप्त जी की नारी भावना विशिष्ट स्थान रखती है। नारी जीवन के ये समस्त चित्र एकांकी नहीं हैं और न ही वर्तमान युग से पृथक। हाँ, इनमें समान अधिकार के प्रलोभन का, सामाजिक विद्रोह का चित्रण नहीं है। उनके मूलभूत कर्त्तव्य और आत्म–धर्म का, मर्यादा और धैर्य का, जो भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं में रंगे हैं, उसकी उच्च विचार–गरिमा के समक्ष नर अपराधी और फीका है।

गुप्तजी के काव्य 'शकुन्तला' की नायिका सैरन्ध्री काम–वासना ग्रस्त कीचक को स्पष्ट शब्दों में यह कहकर फटकारती है–

''पर नारी पर दृष्टि डालना योग्य नहीं है,
और किसी का भाग्य किसी को भोग्य नहीं है।''

'रंग में भंग' की इउडोसिया जानती है कि जोनस का प्यार उसके प्रति वासनामय है। जब जोनस काम में अन्धा होकर उसे पाने का प्रयत्न करता है तो वह दुःखी होकर कहती है:–

''कैसे करूँ ? अर्पित है देह, लो यही,
आओ वीर! पूरी करो तुम निज वासना।"
रंग में भंग (1909)

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य के स्त्री–पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि गुप्तजी के स्त्री–पात्रों की रागात्मक प्रवृत्ति (काम) को स्थानान्तरण आदर्शोन्मुखी हुआ है। सैरन्ध्री ही नहीं, शूर्पनखा जैसी राक्षसी नारी को भी अपने नारी होने का गौरव है। वह लक्ष्मण से कहते हैं :–

''होकर मैं राक्षसी भी अन्त में तो नारी हूँ,
जन्म से जो भी रहूँ, जात से तुम्हारी हूँ।''

इस प्रकार गुप्तजी का काव्य जहाँ मनोविज्ञान से कुछ ग्रहण करता है, वहीं मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को साहित्य की व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर उतारकर सुदृढता भी प्रदान करता है। मूल प्रवृतियों एवं मनोविश्लेषण की दृष्टि से गुप्तजी का काव्य अपनी स्वतंत्र सत्ता की घोषणा करता है।

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य का प्रमुख स्वर है नारी–जागरण, जो राष्ट्रीय चेतना और मानवीय भावबोध का महत्वपूर्ण हिस्सा है। गुप्तजी ने नारी के प्रायः सभी रूपों का सहृदयता पूर्वक निरूपण किया है। एक ओर तो वह अबला जीवन की करुण कहानी लिखते हैं, दूसरी ओर उनकी दृढ़ता, त्याग और

बलिदान का स्तवन करते हैं। गुप्तजी ने चिर–उपेक्षिता उर्मिला, यशोधरा और विष्णुप्रिया जैसी नारी–रत्न हिन्दी साहित्य को प्रदान किए। इसके पूर्व नारी को ऐसा सम्मान कहीं नहीं मिला था उन्होंने नायिकाओं की विरह–वेदना का अपने काव्य में मार्मिक चित्रण तो किया हैं, लेकिन उन नारियों को कातर होने कभी नहीं दिया, बल्कि कर्तव्यपथ की ओर अग्रसर किया है। उनका त्याग–समर्पण '**सत्यं शिवं सुन्दरम्**' की भावना से समन्वित है ।

संदर्भ और सहायक ग्रंथ सूची

(1) गुप्त डॉ. गणपतिचन्द्रः ''हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास'', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, बारहवाँ संस्करण– 2018, (ISBN: 978–81–8031–8204–5)

(2) यादव डॉ. उषा, ''हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ'', प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ –226020, (पृ.स. 128)

(3) अग्रवाल विजय (संपादक), ''राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त'', प्रकाशन विभागः सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, अग्रहायण 1916 (दिसम्बर, 1994), ISBN: 81–230–0

(4) राय बाबू गुलाब, ''हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास'', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा–2, ISBN: 81– 89770–05–5, पृ०सं० 340

(5) सिंह करनैल, 'यू जी सी नेट हिन्दी' अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड ISBN : 978–93–5094–362–5, पृ० सं०– 340

(6) अग्रवाल विजय (संपादक), ''राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त'', प्रकाशन विभागः सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, अग्रहायण 1916 (दिसम्बर, 1994), ISBN: 81–230–0

पताः– राजश्री गुप्ता,
पति ललित प्रसाद साहु, घर सं.–302,
कामडारा बस्ती (गुप्ता स्टोर),
ग्राम+पोस्ट+थाना– कामडारा, जिला गुमला
(झारखण्ड) –835227
चलभाषः– 8709769044
इमेल– rajshreegupta71065@gmail.com

32

Measuring ICT Adoption and Utilization in Indian E-Business and Marketing: A Benchmarking Study[1,2]

Dr. Vinod Kumar, Mr. Chandan Kumar

Abstract

In the rapidly evolving digital landscape, Information and Communication Technology (ICT) has become a critical enabler for businesses, particularly in the e-business and marketing sectors. This study aims to measure the adoption and utilization of ICT within Indian e-businesses and marketing practices, providing a comprehensive benchmarking analysis. By examining key indicators such as internet penetration, digital literacy, ICT infrastructure, and the integration of digital tools in business operations, the study seeks to understand the extent to which Indian businesses are leveraging ICT for competitive advantage. The research is based on secondary data. The benchmarking framework compares these findings against global standards and best practices to identify gaps and opportunities for improvement.

Preliminary findings suggest that while there is significant progress in ICT adoption, especially in urban centers, challenges persist in rural areas and among smaller enterprises. Factors such as inadequate infrastructure, limited digital literacy, and high costs of technology acquisition are major barriers. The study also highlights the uneven distribution of ICT resources, with metropolitan regions being more advanced compared to rural counterparts. This benchmarking study provides valuable insights for policymakers, business leaders, and stakeholders in the ICT ecosystem, emphasizing the need for tailored strategies to enhance ICT utilization. Moreover, the research explores the impact of government policies and initiatives, such as the Digital India campaign, in facilitating ICT adoption. The findings indicate that while these initiatives have created awareness and provided some support, more targeted efforts are needed to address the unique challenges faced by rural and SME sectors.

1. Introduction

The emergence and spread of Information and Communication Technology (ICT) have been transformative forces in the global economy, reshaping traditional business models and enabling the rise of e-business and digital marketing as dominant forms of commerce. In the last two decades, ICT has fundamentally altered how businesses operate, communicate, and compete. The digital revolution has led to the creation of new markets, enhanced customer experiences, and streamlined operations across various industries. As companies increasingly adopt digital tools and platforms, ICT has become a critical enabler of competitive advantage, driving innovation and growth.

In India, the adoption and utilization of ICT in business have been particularly significant, given the country's position as one of the fastest-growing digital economies in the world. With a large and youthful population, rapid urbanization, and increasing internet penetration, India has witnessed a flow in digital activities, from e-commerce and online banking to digital payments and social media marketing. Government initiatives like Digital India, Start-up India, and Make in India have further accelerated this transformation by fostering an environment conducive to digital entrepreneurship and innovation.

Despite the progress, the landscape of ICT adoption in India is marked by disparities and challenges. While large enterprises and tech-savvy startups have embraced advanced ICT tools such as artificial intelligence (AI), big data analytics, cloud computing, and the Internet of Things (IoT), many small and medium-sized enterprises (SMEs) and businesses in rural areas lag behind. The uneven adoption of ICT across different sectors and regions raises concerns about the digital divide and the potential for some businesses to be left behind in the rapidly evolving digital economy.

The importance of ICT in e-business and marketing cannot be overstated. E-business, which encompasses all forms of conducting business over electronic networks, including online sales, supply chain management, and electronic payments, relies heavily on ICT infrastructure. Marketing, too, has undergone a paradigm shift with the advent of digital platforms, enabling businesses to reach and engage with consumers in ways that were unimaginable just a few years ago. Digital marketing tools such as search engine optimization (SEO), social media marketing, email marketing, and digital advertising are now integral components of business strategies, allowing companies to target specific demographics, personalize customer experiences, and measure the effectiveness of their campaigns with precision.

However, the adoption and effective utilization of ICT in e-business and marketing are not without challenges. High costs of implementation, especially for advanced technologies, can be prohibitive for many businesses, particularly SMEs. The lack of a skilled workforce capable of managing and leveraging these technologies is another significant barrier. Additionally, issues related to data security, privacy, and regulatory compliance pose ongoing challenges that businesses must navigate. For many companies, particularly those in traditional industries or those operating in less developed regions, the transition to digital can be daunting.

Given the critical role of ICT in modern business, it is essential to assess the current state of ICT adoption and utilization in India, particularly in the context of e-business and marketing. This assessment is crucial not only for understanding where

Indian businesses stand in comparison to global peers but also for identifying areas where policy interventions, investments, and capacity-building efforts are needed. Benchmarking the adoption and utilization of ICT in Indian e-business and marketing against global standards can provide valuable insights into the strengths and weaknesses of the current digital ecosystem and offer guidance for future growth and development.

The significance of this study lies in its potential to inform both policy and practice. For policymakers, understanding the current state of ICT adoption in Indian businesses is crucial for designing effective interventions that can support digital transformation across sectors and regions. For business leaders and practitioners, the study provides insights into best practices and strategies for leveraging ICT to achieve competitive advantage in the digital economy.

2. Literature Review

The literature review provides a comprehensive understanding of the existing body of knowledge on ICT adoption and utilization in e-business and marketing, particularly within the context of India. It covers the conceptual framework of ICT in business, the specific dynamics of ICT adoption in India, global benchmarking practices, and the impact of ICT on business performance.

2.1 The Role of ICT in E-Business and Marketing

The integration of Information and Communication Technology (ICT) in business has fundamentally transformed how companies operate and engage with customers. ICT is a broad term that encompasses various digital tools, platforms, and infrastructure that enable businesses to function more efficiently and competitively. Key components of ICT in business include hardware (computers, servers, and networking devices), software (enterprise applications, customer relationship management systems, and marketing automation tools), and communication technologies (internet, mobile networks, and cloud computing) (Turban, et al., 2018). The rise of e-commerce platforms like Amazon, Flipkart, and Alibaba exemplifies how ICT can disrupt traditional business models and create new opportunities for businesses to reach global markets. According to Laudon and Traver (2020), e-business models are heavily dependent on ICT to manage inventory, process transactions, and deliver customer service in real-time.

Chaffey and Ellis-Chadwick (2019) highlight that digital marketing enables businesses to engage with customers in a more personalized and targeted manner, leveraging data analytics to optimize campaigns and measure ROI. The shift from traditional marketing to digital marketing has been particularly pronounced in industries like retail, finance, and hospitality, where customer engagement and experience are key differentiators.

2.2 ICT Adoption in India: Trends and Challenges

India's journey towards becoming a digital economy has been marked by significant advancements in ICT infrastructure and usage. The country has made considerable progress in expanding internet access, with over 700 million internet users as of 2023, driven by the expansion of affordable smartphones and data services (IAMAI, 2023). The government's Digital India initiative, launched in 2015, has been a key driver of this growth, aiming to empower citizens and businesses through the widespread adoption of digital technologies.

A study by Nasscom (2022) found that while large corporations in sectors such as IT, finance, and telecommunications have adopted advanced ICT tools, many SMEs still rely on basic technologies like email and websites, with limited integration of more sophisticated systems such as ERP, CRM, and data analytics.

One of the primary barriers to ICT adoption in India is the high cost of technology, particularly for SMEs. The initial investment required for implementing advanced ICT solutions can be prohibitive for smaller businesses, which often operate on tight margins. Additionally, the lack of a skilled workforce is a significant challenge. According to a report by McKinsey (2021), there is a growing demand for digital skills in India, but the supply of trained professionals is not keeping pace, leading to a skills gap that hinders the effective utilization of ICT.

Another challenge is the digital divide between urban and rural areas. While urban centers like Bangalore, Mumbai, Noida and Delhi have become hubs of digital innovation, many rural areas still lack basic ICT infrastructure, such as reliable internet access and electricity. This divide limits the ability of rural businesses to participate in the digital economy and benefit from the efficiencies and opportunities that ICT can provide (World Bank, 2023). With the increasing reliance on digital platforms for business operations, concerns about cybersecurity have become more pronounced. The introduction of regulations such as the Personal Data Protection Bill, 2019, highlights the need for businesses to adopt robust data protection measures, which can add to the complexity and cost of ICT implementation (MeitY, 2020).

2.3 Global Benchmarking of ICT Adoption

Benchmarking ICT adoption involves comparing the level of digital integration within businesses against established standards or best practices from other countries or industries. This process helps identify gaps, opportunities, and areas where businesses can improve their ICT capabilities. Various global indices provide benchmarks for assessing ICT adoption across countries, including the Networked Readiness Index (NRI), the Global Innovation Index (GII), and the Digital Economy and Society Index (DESI).

The Networked Readiness Index (NRI) is a widely

recognized benchmark that measures how well countries are positioned to leverage ICT for competitiveness and well-being. It assesses factors such as infrastructure, affordability, skills, and usage by individuals, businesses, and governments. According to the NRI 2023 report, India ranks 61st out of 139 countries, reflecting significant improvements in areas like mobile internet penetration and digital payment systems, but also highlighting challenges in digital skills and regulatory environments (Portulans Institute, 2023).

The Global Innovation Index (GII), published by the World Intellectual Property Organization (WIPO), ranks countries based on their innovation capabilities and outcomes. ICT adoption is a key component of the GII, with indicators such as ICT access, ICT use, and online service delivery. India has shown steady improvement in the GII rankings, reaching 46th position in 2023, driven by strong performance in ICT services exports and the growth of its innovation ecosystem (WIPO, 2023).

These benchmarking tools provide a valuable reference point for assessing the status of ICT adoption in Indian businesses. By comparing India's performance with global leaders, it becomes possible to identify specific areas where India can improve, such as enhancing digital skills, improving regulatory frameworks, and expanding ICT infrastructure to underserved regions.

2.4 Impact of ICT on Business Performance

The relationship between ICT adoption and business performance has been extensively studied in the literature. Numerous studies have demonstrated that the effective use of ICT can lead to significant improvements in productivity, efficiency, and competitiveness. For example, Brynjolfsson and Hitt (2003) found that firms investing in ICT experience higher productivity growth compared to those that do not, primarily due to the complementary investments in organizational change and human capital that often accompany ICT adoption.

In the context of e-business, ICT enables businesses to operate more efficiently by automating routine tasks, streamlining supply chains, and enhancing communication with customers and suppliers. A study by Devaraj and Kohli (2003) found that firms that successfully integrated ICT into their supply chain management processes achieved better performance in terms of cost reduction, customer satisfaction, and speed to market. The impact of ICT on marketing performance is equally significant. A study by Tiago and Veríssimo (2014) found that firms using digital marketing strategies achieved better customer acquisition, retention, and brand awareness compared to those relying solely on traditional marketing methods.

In the Indian context, research on the impact of ICT adoption on business performance is still emerging. While there is evidence to suggest that ICT can enhance the competitiveness of Indian firms, particularly in the IT and services sectors, there is a need for more empirical studies to understand the specific dynamics at play in different industries and regions (Dasgupta, 2016).

2.5 Summary and Research Gaps

The literature reviewed highlights the critical role of ICT in driving business performance, particularly in the context of e-business and marketing. There is still remains gaps. Firstly, much of the existing literature focuses on developed economies, but the dynamics of ICT adoption in India are shaped by unique factors such as the digital divide, regulatory environment, and the role of government initiatives.

Secondly, there is limited empirical research on the impact of ICT adoption on business performance in India, particularly at the firm level. While aggregate data suggests that ICT can enhance competitiveness, there is a need for more detailed studies that examine how different types of businesses—such as SMEs versus large enterprises, or rural versus urban firms—experience the benefits and challenges of ICT adoption.

Finally, there is a need for more research on the role of policy and institutional frameworks in supporting ICT adoption in Indian businesses. Understanding how government policies, public-private partnerships, and educational initiatives can facilitate ICT adoption and utilization is critical for ensuring that the benefits of digital transformation are widely shared.

This study seeks to address these gaps by following objectives, providing a comprehensive analysis of ICT adoption and utilization in Indian e-business and marketing, benchmarked against global standards.

3. Objectives of the Study

1. To assess the adoption levels of Information and Communication Technology (ICT) across various business sectors in India, focusing on differences between large, medium, and small enterprises.
2. To investigate the usage of ICT tools in marketing activities, identifying the most and least utilized tools across different sectors.
3. To measure the impact of ICT adoption on business revenue growth, considering factors like business size, sector, and location.
4. To identify barriers faced by businesses, especially SMEs and those in rural areas, in adopting and utilizing ICT effectively.

Data: The study utilized secondary data from government reports, industry publications, and global ICT indices to fulfilment of the above objectives.

3.1 Information and Communication Technology (ICT) adoption is critical for business growth and competitiveness in today's digital economy. This report analyses the ICT

adoption levels across various business sectors in India, focusing on differences between large, medium, and small enterprises. The data presented in Table-1highlights ICT adoption across five key sectors: Manufacturing, Retail, Finance, Healthcare, and Information Technology (IT).

Table-1: ICT Adoption Levels Across Some Business Sectors in India

Business Sectors	Large Enterprises (LE)	Medium Enterprises (ME)	Small Enterprises (SE)
Manufacturing	85%	70%	45%
Retail	80%	60%	30%
Finance	80%	60%	30%
Healthcare	88%	68%	40%
Information Technology	95%	85%	65%

Sources: Different Reports of NASSCOM: PwC, KPMG and Deloitte.

Manufacturing: The high ICT adoption rate (85%) in large manufacturing enterprises reflects their need for advanced automation, supply chain management, and enterprise resource planning (ERP) systems. Medium enterprises (70%) show substantial adoption, focusing on improving operational efficiency and reducing costs. Small Enterprises (45%) lag in ICT adoption due to limited financial resources and a lack of technical expertise.

Retail: Large Enterprises (80%) giants utilize ICT for e-commerce platforms, customer relationship management (CRM), and data analytics to enhance customer experience. Medium Enterprises (60%) are increasingly adopting ICT to compete with larger players by integrating point-of-sale systems and digital payment solutions. Small Enterprises (30%) particularly in unorganized sectors, exhibit low ICT adoption, relying on traditional business methods.

Finance: Large Financial institutions heavily invest in ICT for online banking, digital payment systems, and cybersecurity measures. While Medium Enterprises (60%) financial firms are adopting ICT for online services, though at a slower pace compared to large firms. Small Enterprises (30%) including local cooperatives, show minimal ICT adoption due to regulatory constraints and lower digital literacy.

Information Technology (IT): Large Enterprises (95%) integrating the latest technologies such as cloud computing, artificial intelligence, and blockchain. Medium IT firms follow closely, adopting ICT to remain competitive and innovative while Small Enterprises (65%) comparatively shows low ICT adoption, constrained by capital and skilled workforce.

The analysis reveals a clear trend: larger enterprises lead in ICT adoption across all sectors, with small enterprises lagging behind. While sectors like IT and healthcare are at the forefront of ICT integration, others like retail and finance need more targeted efforts to enhance ICT adoption, particularly among smaller players. Addressing the challenges faced by SMEs could unlock significant economic potential and drive overall digital transformation in India's business ecosystem.

3.2 Identify Key ICT Tools in Marketing

Investigate the usage of ICT tools in marketing activities, identifying the most tools like social media platforms, email marketing software, Customer Relationship Management (CRM) systems, digital advertising platforms (Google Ads, Facebook Ads), content management systems (CMS), and analytics tools (Google Analytics) While least tools like virtual reality (VR) marketing, augmented reality (AR), AI-driven chatbots, and Internet of Things (IoT) applications might be less widely adopted but gaining traction presented in Table-2.

Table-2: Kye ICT Tools sector wise usages

Sector	Most Utilized Tools	Least Utilized Tools
Retail	Social Media Marketing, CRM, Email Marketing	VR/AR Marketing, IoT in Marketing
Manufacturing	CRM, Email Marketing, Analytics Tools	AI Chatbots, VR/AR Marketing
Healthcare	Content Management Systems, Email Marketing, CRM	IoT Applications in Marketing, VR/AR Marketing
Information Technology	Digital Advertising, Social Media Marketing	VR/AR Marketing, IoT in Marketing
Finance	CRM, Email Marketing, Analytics Tools	AI Chatbots, IoT in Marketing

Sources: Different Reports of NASSCOM, PwC, KPMG and Deloitte.

Above different sectors usually follow the common tools like CRM, Email Marketing, and Social Media Marketing are among the most utilized ICT tools. This trend highlights the importance of customer relationship management, direct communication, and social media presence in contemporary marketing strategies.

Emerging Technologies like VR/AR Marketing and IoT in Marketing are the least utilized across most sectors. These tools, while innovative, are still in the early stages of adoption. The high cost of implementation, technical challenges, and the need for specialized skills may contribute to their slower uptake. The IT sector, unsurprisingly, leads in the adoption of advanced digital marketing tools, while sectors like Healthcare and Manufacturing are more conservative, focusing on tried-and-tested technologies.

3.3 The impact of ICT adoption on business revenue growth with numerical data across different aspects like business size, sector, and location are presented by different tables. Table-3 shows impact of ICT Adoption on revenue growth by business size.

Table-3: Impact of ICT Adoption on Revenue Growth by Business Size

Business Size	Average ICT Adoption Rate	Average Revenue Growth (%)
Small Enterprises (SE)	40%	5-10%
Medium Enterprises (ME)	60%	10-15%
Large Enterprises (LE)	85%	15-25%

Sources: Different reports of NASSCOM, IAMAI, PwC and Deloitte.

Larger enterprises typically have higher ICT adoption rates, which correspond to greater revenue growth. Small enterprises, while benefiting from ICT, see more modest revenue growth due to lower adoption rates and smaller scale.

Table-4: Impact of ICT Adoption on Revenue Growth by Sector

Sectors	Average ICT Adoption Rate	Average Revenue Growth (%)
Information Technology	90%	20-30%
Healthcare	70%	15-20%
Manufacturing	65%	10-15%
Manufacturing	65%	10-15%

Sources: Different reports of NASSCOM, IAMAI, PwC and Deloitte.

Table-4 presents that IT sector, being heavily reliant on digital tools, shows the highest revenue growth. Healthcare and Manufacturing, while increasingly adopting ICT, show moderate growth. Retail, with lower adoption rates, sees the least impact.

Table-5: Impact of ICT Adoption on Revenue Growth by Location

Location	Average ICT Adoption Rate	Average Revenue Growth (%)
Urban Areas	80%	15-25%
Semi-Urban Areas	60%	10-15%
Rural Areas	40%	5-10%

Page 1271. Dr. Vinod Kumar, Assistant Professor, Deptt. of Economics, S N Sinha College, Warisaliganj, Nawada, Bihar
2. Mr. Chandan Kumar, Research Scholar, Deptt. of Management, Magadh University, Bodhgaya, Bihar of8

Sources: Different reports of NASSCOM, IAMAI, PwC and Deloitte.

Table-5 highlights those Urban areas, with better infrastructure and access to technology, exhibit higher ICT adoption rates and greater revenue growth. Semi-urban areas show moderate growth, while rural areas, with lower ICT adoption, show the least growth.

This numerical data highlights the correlation between ICT adoption and revenue growth across various factors. Larger businesses and those in the IT sector or urban areas tend to see the most significant revenue increases from ICT adoption.

3.4. Objective: Adopting and effectively utilizing Information and Communication Technology (ICT) presents various challenges, particularly for Small and Medium Enterprises (SMEs) and businesses in rural areas. These barriers can be categorized into several key areas:

- ✓ **Cost Constraints:** High Initial Investment: SMEs often face significant financial challenges in affording the initial costs associated with ICT infrastructure, such as purchasing hardware, software, and licenses and Ongoing Costs as Maintenance, upgrades, and subscription fees for cloud services or cybersecurity measures can strain limited budgets, making sustained ICT adoption difficult.
- ✓ **Limited Access to Infrastructure:** Poor Connectivity: Businesses in rural areas frequently struggle with unreliable internet connections and limited broadband coverage, and Inadequate Power Supply.
- ✓ **Skill Gaps and Lack of Training:** Lack of Technical Expertise and Inadequate Training: There is often a lack of affordable training programs tailored to the needs of SMEs and rural entrepreneurs, limiting their ability to maximize ICT benefits.
- ✓ **Cultural and Organizational Resistance:** Resistance to Change and Lack of Awareness: SMEs in rural areas might not fully understand the potential benefits of ICT, leading to low prioritization of technology investments.
- ✓ **Limited Access to Finance:** SMEs, particularly those in rural areas, often face challenges in obtaining financing from banks or financial institutions to invest in ICT due to perceived risks or lack of collateral and Insufficient Government Support.
- ✓ **Cybersecurity Concerns:** Fear of Cyber Threats: SMEs are particularly vulnerable to cyberattacks due to limited resources for robust cybersecurity measures, leading to reluctance in adopting digital technologies.
- ✓ **Regulatory and Compliance Issues:** Complex Regulations and Inconsistent Policies: In some regions, inconsistent or unclear government policies regarding ICT adoption can create uncertainty, discouraging investment.

4.. Conclusion:

The results of this study underscore the critical role of ICT adoption and utilization in driving business performance in Indian e-business and marketing. While large enterprises and businesses in urban areas are leading the way in ICT adoption, SMEs and rural businesses face significant challenges that hinder their ability to fully leverage digital tools. The positive impact of ICT on revenue growth highlights the importance of digital transformation for enhancing competitiveness and achieving business success.

By addressing the challenges identified in this study and taking advantage of the opportunities presented by

government initiatives, businesses in India can enhance their ICT adoption and utilization, leading to improved performance and greater participation in the digital economy. This comprehensive discussion of the study's results provides a deeper understanding of the dynamics of ICT adoption in Indian e-business and marketing, offering practical recommendations for businesses and policymakers to drive digital transformation and economic growth.

5. References:

1. Brynjolfsson, E., & Hitt, L. M. (2003). Computing Productivity: Firm-Level Evidence, 'Review of Economics and Statistics', 85(4), 793-808.
2. Chaffey, D., & Ellis-Chadwick, F. (2019). 'Digital Marketing: Strategy, Implementation, and Practice' (7th ed.). Pearson Education.
3. Dasgupta, S. (2016). ICT Adoption in India: Emerging Trends and Challenges. 'Journal of Global Information Technology Management', 19(3), 177-195.
4. Devaraj, S., & Kohli, R. (2003). Performance Impacts of Information Technology: Is Actual Usage the Missing Link? 'Management Science', 49(3), 273-289.
5. European Commission. (2023). 'Digital Economy and Society Index (DESI) 2023'. Retrieved from https://ec.europa.eu/digital-strategy/our-policies/desi
6. Global Innovation Index (2023). Cornell University, INSEAD, and WIPO.
7. Laudon, K. C., & Traver, C. G. (2020). 'E-Commerce 2020: Business, Technology, Society' (16th ed.). Pearson Education.
8. Ministry of Electronics and Information Technology (MeitY). (2023). Digital India Programme.
9. McKinsey & Company. (2021). 'India's Digital Future: Accelerating the Transformation'. Retrieved from https://www.mckinsey.com/india/our-insights/indias-digital-future
10. Melville, N., Kraemer, K., & Gurbaxani, V. (2004). Information Technology and Organizational Performance: An Integrative Model of IT Business Value. 'MIS Quarterly', 28(2), 283-322.
11. Ministry of Electronics and Information Technology (MeitY). (2020). 'Personal Data Protection Bill, 2019'. Government of India. Retrieved from
12. National Association of Software and Service Companies (NASSCOM). (2022). India ICT Report.
13. Tiago, M. T. P. M. B., & Veríssimo, J. M. C. (2014). Digital Marketing and Social Media: Why Bother? 'Business Horizons', 57(6), 703-708.
14. Turban, E., King, D., Lee, J. K., Liang, T.-P., & Turban, D. C. (2018). 'Electronic Commerce 2018: A Managerial and Social Networks Perspective' (9th ed.). Springer.
15. World Bank. (2023). Digital Economy Report. Washington, DC: World Bank.
16. World Bank. (2023). 'Digital Economy Report 2023: Enabling Digital Transformation in Rural India'. Washington, DC: World Bank.
17. World Intellectual Property Organization (WIPO). (2023). 'Global Innovation Index 2023'. Cornell University, INSEAD, and WIPO. Retrieved from
18. World Bank. (2023). Digital Economy Report. Washington, DC: World Bank.

****

Dr. Vinod Kumar
Assistant Professor
Deptt. of Economics
S N Sinha College, Warisaliganj
Nawada
Bihar

Mr. Chandan Kumar
Research Scholar
Deptt. of Management
Magadh University
Bodhgaya
Bihar

33

The Role of a Public Prosecutor and Victim's Limited Right to Represent his Case

Ms. Sujata, Dr. Arti Sharma

Abstract

In a criminal system the State plays an important role in case a crime is committed by a person against another person. The person against whom a crime is committed is the victim in the case and the person who commits the crime is the wrongdoer. When the crime committed is a cognizable offence, the law machinery comes into motion on receiving the information of the same, on the basis of which a First Information Report is registered. After that the investigation is conducted and after completion of the same the Police officer/investigating officer submits the Police Report as a charge-sheet or a closure report or a cancellation report as the case may be depending on the facts and circumstances of the case in the concerned Court. After filing of the charge sheet the Public Prosecutor becomes the master of the case whose primary duty is to represent the case of the victim on behalf of the State and to get justice. An accused has been given the right to be represented by a counsel of his choice from the very first day when he is arrayed in the case. If the accused is not able to hire a counsel of his choice, legal aid is provided to him. On the other hand the victim is represented by the Public Prosecutor with whom he has never met as a counsel and if a victim wants to be represented by a pleader of his choice then he has been given limited right in this regard. This article is going to deal with the provisions and various judicial interpretations settling the right of the victim to get represented.

Key words:

Victim, Prosecution, Public Prosecutor, right to representation of victim.

INTRODUCTION

Justice is functionally outraged not only when an innocent person is punished but also when a guilty criminal gets away with it stultifying the legal system.

In a society, a criminal judicial system is required to control the crime prevailing in that society. A criminal justice system is comprised of police, prosecution, courts and correctional institutions and it is effective when all the organs of that system are independent of each other and independent of any other outer force, which can affect the same adversely but still these components have to work with each other or complementing each other so that justice can prevail. An accused has been given the Constitutional safeguards when his rights are curtailed in form of arrest etc., and further rights are also conferred upon him like right to be represented by a counsel of his choice. On the other hand the victim has been given limited right in the Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023 (hereinafter called as BNSS) to be represented by a pleader of his choice. In India, a **public prosecutor** represents the victim on behalf of the state as the offence is considered to be a wrong not only against the victim but against the State also. The Hon'ble Supreme Court in *Thakur Ram* v. *State of Bihar* has observed that "Barring a few exceptions, in criminal matters the party who is treated as aggrieved party is the State which is the custodian of the social interests of the community at large and so it is for the State to take all steps necessary for bringing the person who has acted against the social interests of the community to book." The rationale behind this theory is that there should be a proper procedure to administer the justice and parties should not be given scope to settle their personal scores in such situation and the confidence of public should remain in Criminal Justice System.

A public prosecutor is an officer of the court who has to perform his duties in imparting justice to the victim and punishing the wrongdoer. The public prosecutor, while performing his duties is to maintain impartiality and neutrality. The Public Prosecutor has been described as a Minister of Justice who plays a critical role in maintaining purity and impartiality in the field of administration of criminal justice. The UN Guidelines on the Role of Prosecutors describe the role of the public prosecutor in detail, stating that prosecutors must strive to use every legitimate means to obtain justice, without resorting to any improper methods which could result in a wrongful conviction. And further they have to protect the public interest by taking proper account of the victim and the suspect. A Public Prosecutor is not expected to show a thirst to reach the case in the conviction of the accused somehow or the other irrespective of the true facts involved in the case. The expected attitude of the Public Prosecutor while conducting prosecution must be couched in fairness not only to the court and to the investigating agencies but to the accused as well. If an accused is entitled to any legitimate benefit during trial the Public Prosecutor should not scuttle/conceal it. On the contrary, it is the duty of the Public Prosecutor to winch it to the fore and make it available to the accused. Even if the defence counsel overlooked it, Public Prosecutor has the added responsibility to bring it to the notice of the court if it comes to his knowledge. Public prosecutors represent the state in a

criminal trial with a duty to assist the fair trial process and to prevent the misuse of the court process by not letting the citizens directly handle criminal cases for satisfaction of personal vengeance. In this context, the role of the victim gets reduced to that of a prime witness rather than that of an active participant (party) in the trial. However, while placing that trust in the government and the criminal justice system, the victims harbours expectations that their case will be prosecuted with full efficiency and sincerity, the offender will be duly punished, and that he will be kept involved in the trial.

A victim means a person who has suffered any loss or injury caused by reason of the act or omission for which the accused person has been charged and the expression "victim" includes his or her guardian or legal heir. There is no provision in BNSS which lays down any procedure or provision which paves the way for a meeting of victim with the public prosecutor as, even though, the case is considered to be a wrong against State also, but it is the victim only who has suffered loss or injury due to the wrong act or omission of the accused and the prosecutor has to represent him only through State and no others.

If the scheme of the BNSS is observed the term "victim" was not even defined till the year 2009, and this definition of victim was inserted in the Code of Criminal Procedure, 1973 (which has been substituted by BNSS in the year 2024) only in the year 2009. A victim has not been given a right to engage a counsel of his choice. If a victim wants to engage a counsel of his choice, the counsel will be engaged with the permission of the court and that too is to assist the public prosecutor.

Section 338 of BNSS (S. 301 of CrPC) enables a public prosecutor or the assistant public prosecutor in charge of the case to appear and plead without any written authority. In sub-section (2) of the same section if any person instructs a pleader on his behalf to appear and plead, he can't directly plead before the court. The authority given here is to only assist the public prosecutor.in such case the mandate is still on the public prosecutor to prosecute the accused as the word "shall" has been used and if the pleader wants to represent the private person, he "shall" assist the public prosecutor. Further if the pleader of the private person wants to submit the written arguments, he may do so with the permission of the court.

But section 339 of BNSS (S. 302 of CrPC) enables the magistrate to allow prosecution to be conducted by any person other than a public prosecutor but not a police officer below the rank of an inspector or the police officer who has taken part in the investigation of that case.

These above-mentioned two sections of BNSS have been interpreted by the various courts and the same has tried to settle the position in the following judgments:

In *Thakur Ram* v. *State of Bihar* the Hon'ble Supreme Court ruled that in a case which has proceeded on a police report, a private party has no locus standi.

In another decision *Shiv Kumar* v. *Hukam Chand and Anr.,* the Supreme Court denied the right of representation to the victim citing the reason as protection of accused, during the trial.

It has been further stated by the court that the duty of the Public Prosecutor is to ensure that justice is done. It further talked about the impartial role of a public in ensuring the justice stating that if there is some issue that the defence could have raised, but has failed to do so, then that should be brought to the attention of the court by the Public Prosecutor. Hence, he functions as an officer of the court and not as the counsel of the State, with the intention of obtaining a conviction. It stated that if the victim or the informant is allowed to have her own counsel, then the situation would not be the same, since the aim of such a counsel would be to obtain a conviction. It stated that the role of the advocate appointed by the third party to the proceeding would be similar to a junior counsel.

But the above view has been changed in *Delhi Domestic working women's Forum* v. *Union of India*, gave parameters with respect to assisting victims of rape, even before the stage of trial, the Hon'ble Supreme Court, inter alia held that the complainants in sexual assault cases would be provided with legal representation. The Hon'ble Court said that it is important to secure continuity of assistance, by ensuring that the same person, who looked after the complainant's interest in the police station, represent her till the end of the case. This could be interpreted to mean, that an intervener be allowed, to assist the victim.

In *J.K. International* v. *State (Govt. Of NCT of Delhi)*, the Hon'ble Court ruled that a reading of section 301 makes it clear that the fact that the police have investigated the case, based on the information given by the informant and filed a charge sheet, on the basis of which cognizance is taken, does not in any way mean that the informant is wiped out from the scenario of the trial.

Both sections 301 and 302 cover two different situation, section 301 envisages a situation where the public prosecutor is in charge of a case and a private person instructs his pleader to intervene. In such cases, as has been rightly it is the public prosecutor under whose overall conduct and supervision the prosecution is continued. However, section 302 is concerned with a situation where any person not being a police officer below the rank of inspector, can prosecute a case, with the permission of the court, either himself or through his pleader. Two levels of

intervention of private persons are envisaged under code of criminal procedure one is under the supervision and control of the public prosecutor and the other independent of the prosecution.

In *Dhariwal Industries Limited* v. *Kishore Wadhwani & Ors.*, the Hon'ble Supreme Court explained the distinction between section 301 and 302 CrPC the role of the informant or the private party is limited during the prosecution of a case in a court of session. The counsel engaged by him is required to act under the directions of public prosecutor. As far as section 302 of CrPC is concerned, power is conferred on the Magistrate to grant permission to the complainant to conduct the prosecution independently. The Court held that "when permission is sought to conduct the prosecution by a private person, it is open to the court to consider his request. The Court has proceeded to state that the court has to form an opinion that cause of justice would be best subserved and it is better to grant such permission. And it would generally grant such permission."

In *Delta Car Private Limited* v. *Sanjeev Shah and Anr.,* while dealing with the cancellation of bail the court observed that it need not be by the prosecution agency but also by victim or any witnesses of the prosecution and even any other public party or persons, who want to bring it to the notice of the Court any circumstance, it is for the Court, if necessary, to make use of the remedy for cancellation of the bail subject to notice of hearing of accused and referring to these expressions hold that "the very criminal justice delivery system may fail and ultimately justice may not be done in serious and heinous criminal offences if the witnesses are not allowed to depose freely without any fear or favour. In view of the same, though there is a limited scope, I feel the victims and the de-facto complainants can be heard at the stage of considering the bail applications or cancellation of bail with the permission of the Court and as supplementary to the arguments advanced by the Public Prosecutor.

In *Smt. Mahabunnisa Begum* v. *State of Telangana and ors.* 2017, it was held that either u/s 302 CrPC or even u/s 24(8) proviso of amended CrPC magistrate court got power to permit the victim or the de-facto complainant to conduct prosecution by participating in the proceeding by engaging private advocate.

Through the catena of judgments cited above, it can be said that the courts in India have given progressive interpretations regarding the right of a victim to represent his case, be it the stage of bail, stage of arguments on charge or during trial which is a welcome step. But where a lacuna can be found is the stage of investigation. At the stage of investigation, the investigating officer remain in charge of the case and not even a magistrate can control the investigation. A public prosecutor receives the challan after completion of investigation but before filing the same in court to highlight the lacunae in the charge-sheet if any. In *State of Gujrat* v. *Kishanbhai etc.*, the Division Bench of Hon'ble Supreme Court directed that the prosecuting agency should apply its independent mind to the charge-sheet submitted by the investigating officer and require all shortcomings to be rectified. For that purpose, it can even require further investigation to be conducted. This practice burdens a public prosecutor with the scrutiny of every challan to the effect that after highlighting any such lacuna, the investigating officer is really not bound to rectify the same. And moreover, at this stage an investigating officer can simply avoid any such rectification to be made by stating that "at this stage this objection can't be rectified" because practically there are many things in investigation which gets diluted by the time like scene of crime or evidence which could be procured from the body of victim or accused or from the case property etc. No other remedy lies with the public prosecutor except to highlight those lacunae because at this stage no control can be exercised on the investigating officers. Even this practice of scrutiny of challan is found to be illegal as it is against the scheme of CrPC as well against the mandate of Article 14 and 21 of the Constitution of India and the law laid down by Hon'ble Supreme Court of India in several judgments particularly in *R. Sarla* v. *T. S. Velu and Ors.*, and *M. C. Mehta* v. *Union of India and Ors.*

And further whether it can help the victim in any case is doubtful. Because at this stage there is no provision under which the public prosecutor or a victim can meet or discuss the lacunae in case with the public prosecutor. There may be cases where the true case of the victim is not represented or put forwarded by the investigating officer for example the victim is not literate and does not know about the documents where his thumb impressions are obtained; or there may be a case where victim is not properly examined or medically examined other not all the documents offered by the victim taken on record so on and so forth. There is one more situation where the police may act mechanically which includes preparing various memos like seizure memo, arrest memo, site plan or statements with respect to these memos. A common man does not understand these formal documents and in many cases the witness is not able to recall such thing in which case he is examined as a hostile witness. No document except the free copy of FIR in general given to the victim like an accused is given the complete copy of charge-sheet.In such situation the case made by a police officer on whom no one can exercise control goes to the

court. Further there may be cases where the State has a vested interest in the accused also have disinterest by the public. And at this stage a very less scope is left with the public prosecutor that it can help the victim. So the victim in such cases is only a witness in the case and not more than that. The counsel of the accused is there with him at every stage of the trial to represent him unlike a victim. There may be cases where after filing of FIR, the victim is examined by an investigating officer, and after that, he is directly called to police station to depose and that too after so many years. In such a situation it is very difficult for a victim to recall all the things done by a police officer during investigation. For their active participation, there is need to make more provisions or to amend provisions so that a victim can represent his case like a party to the case and not only a witness.

CONCLSION

State being the custodian of society, it is the duty of the State to safeguard the interest of all stakeholders specially the victim who has actually suffered loss due to the wrong act of an accused. The victim should be given chance to represent his case at every stage of the trial as he is given at the stage of filing of cancellation report by the investigating officer in form of protest petition. If a victim is not satisfied with the work investigating officer, he has opportunity that he can go to higher authorities or can go to court. But if at all stages of case, participation of the victim is mandated there will be less chance of corruption or facts twisting. Further amendment should be made in the law where the victim also should get the complete set of documents from the investigating officer of his case like an accused so that he can raise an issue wherever he feels the need of doing so and justice can be imparted to the victim.

Section 2(1)(g) of The Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023 (BNSS)

See Section 173 of BNSS

See Article 22 of the Constitution of India 1950, section 340 of BNSS etc.

Refer section 341 of BNSS and other similar provision.

Krishna Iyer, Justice in *P. S. R. Sadhanantham* v. *Arunachalam & Anr.*, 1980 AIR 856.

Article 22 of The Constitution of India 1950 and similar provisions are contained in BNSS.

S.2(1)(v) of BNSS defines public prosecutor as "Public Prosecutor" means any person appointed under S.24 and includes any person acting under the directions of a Public Prosecutor. See also Section 18 of BNSS.

AIR 1996 SC 911

Jitendra Kumar @ Ajju v. *State (NCT of Delhi)* Crl. W.P. 216/99, Delhi High Court.

Guidelines on the Role of Prosecutors adopted by United Nations, https://www.ohchr.org/en/instruments-mechanisms/instruments/guidelines-role-prosecutors, (Last visited 19.05.2024 at 13.18 pm)

Shiv Kumar v. *Hukum Chand and Anr.* 1999 SC

Anupama Sharma, Public Prosecutors, Victims And the Expectation Gap: A analysis of Indian Jurisdiction, 13 Social Legal review, 87 (2017) https://docs.manupatra.in/newsline/articles/Upload/116BE5E2-14EF-4753-BD49-3E308403D5E7.pdf.

Id.

Section 2(1)(y) of the The Bhartiya Nagarik Suraksha Sanhita, 2023

Ins. by Act 5 of 2009, s. 2 (w.e.f. 31-12-2009).

The proviso to subsection (8) of section 18 of BNSS [0Earlier Section 24 of the Code of Criminal Procedure, 1973(CrPC)] enacts that "Provided that the court may permit the victim to engage an advocate of his choice to assist the public prosecutor."

388. Appearance by Public Prosecutors. — (1) The Public Prosecutor or Assistant Public Prosecutor in charge of a case may appear and plead without any written authority before any Court in which that case is under inquiry, trial or appeal.
(2) If in any such case any private person instructs a pleader to prosecute any person in any Court, the Public Prosecutor or Assistant Public Prosecutor in charge of the case shall conduct the prosecution, and the pleader so instructed shall act therein under the directions of the Public Prosecutor or Assistant Public Prosecutor, and may, with the permission of the Court, submit written arguments after the evidence is closed in the case.

339. Permission to conduct prosecution.—(1) Any Magistrate inquiring into or trying a case may permit the prosecution to be conducted by any person other than a police officer below the rank of inspector; but no person, other than the Advocate-General or Government Advocate or a Public Prosecutor or Assistant Public Prosecutor, shall be entitled to do so without such permission:

Provided that no police officer shall be permitted to conduct the prosecution if he has taken part in the investigation into the offence with respect to which the accused is being prosecuted.

(2) Any person conducting the prosecution may do so personally or by a pleader.

AIR 1966 SC 911

(1999) 7 SCC 467

(1995) 1 SCC 14

(2001) 3 SCC 462

AIR 2016 SC 4369

2014 (42) RCR (Criminal) 705
2017 SCC OnLine Hyd 497
(2014) 5 SCC 108
Jamshed Ansari, Scrutiny of charge-sheets by Prosecutors is a practice without backing of any law, Latest Laws.com
(2000) 4 SCC 459
(2007) 1 SCC 110
Compliance of section 230, BNSS.
Mrinal Satish and Aprarna Chandra, Third Party Intervention in Criminal Litigation available at https://www.ebc-india.com/lawyer/articles/2005_2_75.htm

Ms. Sujata, Research Scholar,
Faculty of Law, Jagannath University,
Jhajjar.

Dr. Arti Sharma,
Research Supervisor,
Faculty of Law, Jagannath University,
Jhajjar.

34

Impacts of Climate Change Over Agriculture in India

Virender

Abstract

Climate is essential for the growth and survival of all types of life over the planet Earth. Its change would affect agricultural productivity, crop pattern, diversity etc. leading to affecting food security. It is projected that India would experience warming above global level throughout the 21st century. India would face more climatic variability with warmer winters and extreme summers. Of late, more heat waves, warmer nights and hotter days have been seen and this trend is expected to be continued. Fourth assessment report on climate change(IPCC, 2007) states that warming of climate is unequivocal and evident from increased global air and ocean temperature, melting of ice and rising global mean sea level. Climate change would affect agricultural productivity either positively or negatively. In many tropical and subtropical regions potential yield of crops is projected to decrease with expected increase of temperature. Climate impact assessment was carried out with the help of crop simulation models by network centres located in different parts of the country by incorporating projected climate of 2050 and 2080. By 2050 wheat and rice yield is projected to be reduced by 19.3% and 20% respectively in India.

Keywords: Climate Change; Agriculture Productivity; Rainfall; Heat waves; Global warming.

Introduction

Agriculture is largest sector of Indian economy in terms of workforce engaged into it. It is crucial for ensuring food, nutrition and livelihood securities in India. Presently Indian agriculture is facing number of challenges like, stagnating net sown area, plateauing yield levels, degrading soil health, adverse effect of climate change etc. Climate change is a big challenge before India because about 60% of net cultivated area is rainfed and exposed to biotic and abiotic stresses arising from climatic variability and climatic change. Climate change would cause more distress to farmers in Inadia as about 80% of farmers are small and marginal farmers. They are less equipped and aware to tackle with climate change resulting into aggravating the problem of food security and agricultural sustainability (Climate Change and Agriculture in India-A Thematic Report, Ministry of Science and Tech. GOI, jan.,2016).

Some impacts of climate change in some areas such as longer growing period, warmer temperature or greater amount of insolation, increased rainfall etc. may bring positive change in crop production and yield. But there will be a range of adverse impacts in tropical and subtropical regions due to reduced water availability and more frequent extreme weather conditions. Climate change has already led to greater damage to our present crop profile or pattern and unfolding more threats to future (WHO, 1992). Wheat yields are predicted to fall by 5-10% with every one degree increase of temperature and overall about 30% crop yield decrease is projected in south Asia by mid 21st century(IPCC (2001) climate change 2001).

Material and Methods

In order to understand the impacts of climate change over Agriculture in India mainly secondary data is used. It is taken from authentic sources viz. IPCC reports, WHO, Indian Meteorological Department (IMD), National Action Plan on Climate Change (NAPCC), ICAR, PIB reports , various research papers, crop stimulation models, governmental reports etc. impacts of climate change on agriculture. To make impacts of climate change more perceptible table and graphical methods of data representation are used. Impact of climate change is mainly seen over main food grains i.e. wheat and rice in India.

Results and discussion

A study based on the measurements of the IMD has shown that the all India mean annual temperature has increased by 0.5°c in the period 1901-2003 (**Kothawale D R et al., 2005**).

As per **PIB report(march 2023)** through crop simulation models wheat and rice crops yield in rainfed areas is projected to reduce by 40% and 47% respectively by 2080. All climatic models suggest about more extreme weather events with more frequent droughts, heavy rainfall and storms. Such extreme weather would cause more disease spread, greater stress among crop plants thereby leading more crop failures. In developing countries like India climate change is additional burden where ecological and socio- economic systems are already over saturated or under high pressure by rapid population growth. Increasing GHGs particularly CO2 is responsible for progressive warming which may cause agriculture under stress as about 60% of our cultivated area is rain dependent.

Diwan Singh et al. (2008) suggest yield of some crops in tropical regions would decrease even with minimal increase in temperature under rainfed agriculture. climate change will have significant impact not only over crop growth but also over

entire ecosystem productivity. In many tropical and subtropical regions , potential yield is supposed to decrease with projected increase of temperature as increase of temperature would raise stress over crop plants.

As per **'Climate Change and Agriculture in India' (ministry of science and Technology, 2016),** there is changes occurred in pest spectrum over past 100 years. Climatic conditions affect the pest incidences. Reproduction is maximum in pest during Aug.-Sept. when temperature is moderate and relative humidity is higher leading to more crop loss.

Agriculture is a primary activity which directly depends upon climate of a specific area. Different atmospheric conditions such as temperature, rainfall, sun light, humidity, wind conditions etc. affect growth of crops. Moisture is important for all important physiological processes such as photosynthesis, respiration, and grain formation. For India as a whole mean annual temperature shows a significant warming trend of 0.51 degrees Celsius per 100 years during the period 1901-2007 (**Kothawale et al., 2010**).This sector is also highly dependent on the South West monsoon (June-September), while 60 percent of the crop area under rain fed agriculture is in areas highly vulnerable to climate variability and change (**National Communication on Climate Change, 2004**).

As per **a thematic report (2016) on "climate change and agriculture in India"**, Indian Agriculture is highly prone to extreme weather events like drought, heat waves, frequent floods, cyclones etc. due to increased atmospheric temperature, resulting in increased risk with substantial loss of agricultural production. Increase of temperature can cause altered photosynthesis pattern, respiration, reduced crop duration, more pests population, fast nutrient mineralization in soils, decreased fertilizer efficiency, change in humus formation rate, change in land use pattern, increased evapo - transpiration rate etc. leading to substantial change in agricultural productivity. Copping pattern and agricultural biodiversity will also be affected by change in climate.

To show the impact of climate change over productivity or yield of Indian agriculture Fig. 1 suggests the change in yield (kg/ha) of from 1980-81 to 2006-07. Yield in 1980-81, 1990-91, 2000-01 and in 2006-07 was 1000 kg/ha, 1300 kg/ha, 1700kg/ha and 1750 kg/ha respectively

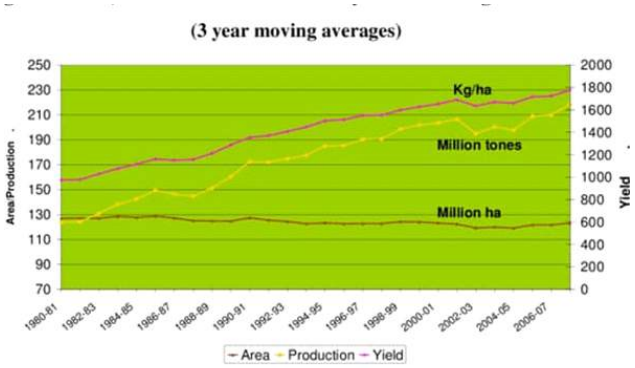

Fig. 1: Area, Production, and Productivity of total food grains in India.

Wheat productivity is shown in fig. 2. It was about 1600kg/ha, 2250 kg/ha, 2750 kg/ha and 2650 in the year 1980-81, 1990-91, 2000-2001 and 2006-07 respectively. Data shows decreasing trend in yield of wheat in India. Graph 1 projects continuous decrease in yield of wheat. This decrease in yields in India is supposed to be caused by climate change..

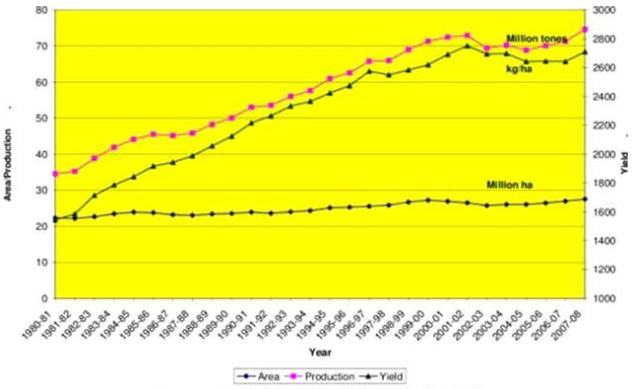

Source: Agricultural Statistics in India 2008

Fig.2: Area, Production, and Productivity of wheat in India.

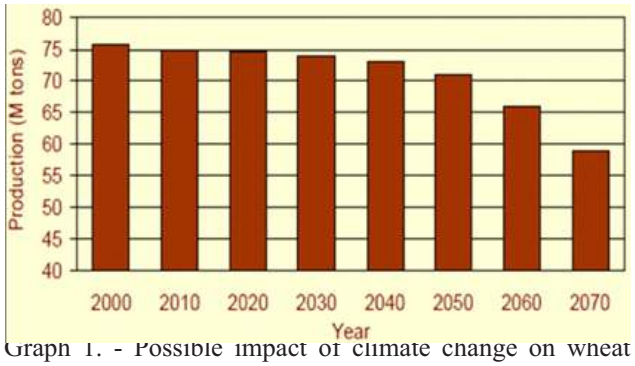

Graph 1. - Possible impact of climate change on wheat production in India.

(sources: Aggarwal et al., 2002).

Variation in yield of rice is shown in fig.3 from 1980-81 to 2007-08. Yield was about 1250 kg/ha , 1850 kg/ha , 1950 kg/ha and 2150 kg/ha in the years 1980-81,

1990-91, 2000-01 and 2007-08 respectively. By 2050 wheat and rice yield is projected to be reduced by 19.3% and 20% respectively in India. As per **PIB report(march 2023)** through crop simulation models wheat and rice crops yield in rainfed areas is projected to reduce by 40% and 47% respectively by 2080.

Graph in fig 4. Shows relationship between event of droughts and reduction in production of food grains in India. With climate change and global warming incidence of droughts are projected to increase leading to more crop failure and greater reduction in production of Indian agriculture. Droughts of 1965-66, 1979-80,1987-88 and 2002-03 led to great reduction in agricultural production in India.

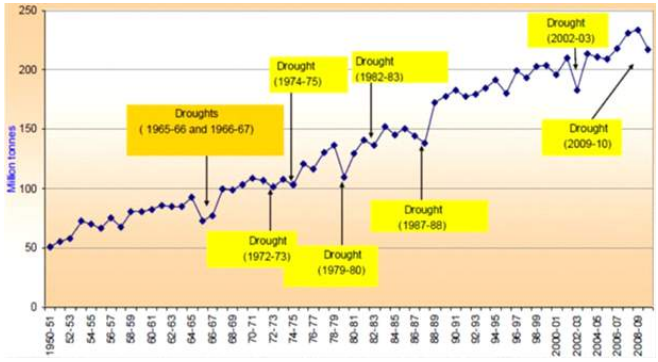

Fig. 4. Impact of droughts on Indian food grains production from 1950-51 to 2009-10. Source: Gopakumar, 2011.

Conclusion

It is now well accepted fact that climate change is happening thereby extreme meteorological events with increasing frequencies are supposed to take place. They would affect agriculture and situation is projected to be more aggravated in future. Various crop simulation models predict tremendous loss of agricultural productivity and biodiversity. Climate change has already led to greater damage to our present crop profile or pattern and unfolding more threats to future (WHO, 1992). Wheat yields are predicted to fall by 5-10% with every one degree increase of temperature and overall about 30% crop yield decrease is projected in south Asia by mid 21st century (IPCC (2001) climate change 2001). Wheat and Rice crops yield in rain fed areas is projected to be reduced by 40% and 47% respectively by 2080. In developing countries like India where stress over resources is more and agriculture is important sector for livelihood and employment for more than half population of the country, climate change would cause more problems. In order to understand challenges, threats to come and to sustain our agricultural productivity we have to have more research to know about potential impacts. Developing effective mitigation and adaptation strategies along with efficient technologies is need of hour.

Refrences

-Kumar R, Gautam HR (2014). Climate Change and Its Impact on Agricultural Productivity in India. J. Climatology and Weather Forecasting, 2, 109.

- Diwan,S, Singh, S and Rao,V.U.M. (2008).*Climate Change and Agriculture in India. Impact of Climate Change on Agriculture Over Haryana.* Pp 215-235.

-4th Assessment Report on Climate Change (IPCC 2007).

- PIB Report on 'Impact of Climate Change on Agriculture', posted on 21 march 2023.

-Climate Change and Agriculture in India- A thematic report of National Mission on Strategic Knowledge for Climate Change under National Action Plan on Climate Change, Ministry of Science and Tech. GOI, jan.,2016.

-IPCC (2001) Climate Change 2001: Impacts, Adaptation & Vulnerability: contribution of working group ii to the third Assessment Report of IPCC. Cambridge Univ. press, Cambridge, UK.

- Kothawale, DR. and Rupa Kumar, K., On the recent changes in surface temperature trends over India. *Geophys. Res. Lett.*, 2005, **32**, L18714.

- *Climate Change and Agriculture in India: A Thematic Report of National Mission on Strategic Knowledge for Climate Change under National Action Plan on Climate Change (2016). Ministry of Science and Technology, Govt.*

of India, New Delhi.

- .Kothawale,DR , Revadekar, JV and Kumar, KR (2010). Recent trends in Pre-Monsoon Daily Temperature Extremes over India. Journal of Earth System Science.119, 51-65.

- Agricultural Statistics of India, 2008.

- Dasgupta, p, Sirohi S, Indian Agricultural Scenario and Food Security Concerns In the context of climate change: A review, A study done at Institute of Economic Growth, Delhi funded by UNDP-GEF-MoEF.

Virender

UGC NET

Panipat

35

Ecocriticism: Nature In Literature

Reema Kumari

Abstract

Literature is an expression of human feelings ,thoughts, and ideas whose medium is language,oral or written. It usually refers to a works of poetry, theatre or narrative that are specially well written. A literature is a product of life. A raw material for any piece of literature - poetry , novel , essay , drama - is always furnished by life. As an expression of life , literature can not be untouched by nature. Many writers write about nature. Nature writing is non fiction or fiction prose or poetry about the natural environment.

Nature writing encompasses a wide variety of works , natural history essay, poetry, essay of solitude or escape as well as travel and adventure writing

Writers use nature to create a mood or provide a setting that provides some symbolic meaning to the action or the characters and for many other reasons.

When natural phenomena could not be explained by science , mythology that enables human harmony and relation with nature became a means of explaining obscurities .People were able to explain the events of nature by establishing similarities with their own actions.Nature is worshiped in mythology. Nature was used in mythical works to show god's anger and blessings through natural powers of drought , thunder , lightening etc. And poets also gave it an expression in their works to show man's relation with nature.

In Greek mythology nature and mankind have been intertwined since the first story was handed down in ancient Greece. Greeks believed that when humans were created , nature was devoid of hardships.The world became a hostile and difficult place only after their creator , the Titan Prometheus , deigned to steal fire from the Gods and give it to humans.

A literary movement Romantacism spanning roughly 1790-1850 was characterized by a celebration of nature and the common man was one of the leading themes of it.In romanticism, people and nature were objectified and reduced to commodity status.According to the romantics , the solution was seen as pure and spiritual source of renewal. Awe of nature which is a mix of fear and respect towards nature was one of the theme of romantic writers.

The Romantic poets felt that man's internal life and the external and the natural world had a lot in common.

William Wordsworth, William Butler Yeats, Robert Frost are some of the major poets who can be considered the writers of ecocentric studies.Specially Wordsworth's views towards nature and man's treatment of nature has supported his position as an important icon of eco centric studies

He believed that nature is capable of alleviating the tormented mind of man.In many of his poems we find an expression of connectivity with nature and environment.

Ecocentric study is a Philosophy which places value and importance on the entire environment and all life in it.Man is not superior or inferior to nature but equal and man has the power to control and make nature a suitable place for human life Ecocriticismis a study of the literature and environment from an inter-disciplinary point of view, where literary scholars analyze text that illustrates environmental concerns and examine the various ways , literature treats the subject of nature. Eco critics consider many relations between literature and the natural world.

Man lives in the lap of nature .we can not think of our existence without nature. It is for sure that nature finds expression in all activities of man, including literature.

Submitted by :

Refrences

http://www.quora.com
http://www.theclassroom.com
http://blog.prepscholar.com
http://thoughtco.com
http://sahdevluhar.blogspot.com
https://www.ipl.org

Reema Kumari
Assistant Professor
Govt Arya Degree College Nurpur Himachal Pradesh
Kangra Pin.176202
Mb. 9816239999

36

Cleanth Brooks and his Critical Creed

By

Dr. Sunita Yadav

Abstract

Cleanth Brooks, a pivotal figure in New Criticism, developed a critical approach emphasizing the intrinsic value of a literary work, advocating for close reading and the analysis of the text itself without recourse to external factors such as authorial intent or historical context. His critical creed centred on the ideas of paradox, ambiguity, and the organic unity of texts, which he believed were fundamental to understanding the complexity and richness of literature. Brooks's work challenged the dominance of biographical and historical criticism, urging a focus on the formal properties of the text, such as imagery, metaphor, and narrative structure. This research paper examines Brooks's contributions to literary theory, his influence on subsequent critical practices, and the enduring relevance of his ideas in contemporary literary studies.

Introduction

The new criticism rose in the early 30s in America as the most powerful movement of the 20th century in the history of art and criticism and Brooks whome Rane Wellek calls the 'Critic of Critics' is the central force . He did not relish the title of a new critic, perhaps for the reason that his approach to literature is anti-historical . With the publication of Brooks essay 'The Formalist Critic' in the Kenyon Review (1950) the movement of new criticism began to be identified with 'Formalism' . Its leading practitioners were known as the 'Fugitive Group' at the University of Vandarbilt for the reason that the published articles in the journal, 'The Fugitive' . They are John crowe, Ransom, Allen Tate and Robert Pann Warren. They were critical of the various prevalent modes of critical approaches such as historical, philosophical, moralistic, biographical, and psychoanalytical.

Cleanth Brooks

Cleanth Brooks had published articles and books which, if put together , will form his critical credo. There were a number of wrong notions about poetry and he fought against these fallacies in his articles and books to put things in right perspective.

The topic by its very nature has no doubt rather wide range, but the scope and the thrust of the present paper is restricted to two seminal critical formulations:

(1) The heresy of paraphrase

(2) The language of poetry

His book 'the well-wrought Urn' deals with a vital issue - can the meaning of a poem lie in paraphrasing ? One chapter in the book is entitled as 'The Heresy of Paraphrase' but the book as a whole examines certain other issues pertaining to approach to literature. No poem can yield full meaning through its paraphrase, the real meaning is wrung out by studying its structure made of irony, paradox, wit and ambiguity , which are not paraphrasable. Brooks demolishes this misunderstanding also that it is the metaphysical poetry alone, which is fraught with irony, wit and paradox. Instead all poetry - classical , romantic and symbolic have these figures of speech as their structural devices. In 'Understanding Poetry' (1938),which Brooks wrote with Robert Penn Warren as co-author , makes an attempt to show as to what is the right approach to teach poetry. When Brooks and Warren were together at Louisiana state University they were thinking upon the problem as how to read literature and how to read a poem which is different from an editorial piece. What prompted them to bring out the books was that the textbooks they had to deal in the class were full of biographical elements. It is not that they were against the study of biographical and historical background of the poem for making out the meaning of the poem, but what they were against was that these factors could not be used as 'ends but means' only.

W. K. Wimaatt is the theorist of new criticism and Brooks is the practical critic. The real function of literary criticism , Brooks holds, is to understand and analyse the organic nature of the poetry, which is a study of relationships of various elements which go into making of poetry.

The meaning of a poem lies in its structure, not in simple paraphrasing of words and lines. In 'The well Wrought Urn' Brooks explains the meaning of the structure , 'Structure means the structure of meanings, evaluations and interpretations and the principle of unity which informs ,it seems to be one of the balancing and harmonising, connotations , attitudes and meanings. It can be further explained by taking into account Brooks views on the language of poetry. Brooks has elsewhere said that irony and paradox make the language really poetic . Irony is a term of wide implications - a statement meaning something different from what it aims to convey . And thus the full meaning of a poem is wrung out by analysing the ironical implications of the language and not by simply paraphrasing words and phrases.

Brooks cites example from Chaucer's poetry to exemplify how irony being an integral part of the structure of

the poem can give out the full meaning which the author intends to convey. For example, when Chaucer says that the nun's forehead was full one span broad, does he admire her beauty? No, not at all. The bareness of forehead implies the violation of the Canonical rule of conventional life that constraints the nuns to wear the wimple right up to the eyebrows. the sense is worked out of multiple irony. The tragic irony is that a broad forehead of a woman is a mark of beauty and intellect, and the poor nun is commanded to hide the natures bounty.

Likewise, paradox also wrings out the full meaning and the language of poetry, Brooks points out , is full of paradox as it is full of ironies 'The Princeton Encyclopaedia of Poetry and Poetics' defines a paradox as 'a statement which seems untrue but proves valid on close examination' . Infect, paradox is a device for irony and most ironical statements are based on paradoxical poetic truth , critics such as Freiderich Schlegel and De Quincy recognise the importance of paradox in the language of poetry before Brooks seized upon it, taking it as the inevitable property of language of poetry. Every poem, whether classical, romantic or metaphysical must hinge upon irony and paradox.

A poem is an organism having a structure of its own, being constituted of many ingredients and the full meaning comes out by studying and analysing the relation between parts and aspects of the poem , between word and word ,between phrase and phrase , between line and line, between image and image. It is this relationship in which various parts of a poem or bound together which Brooks calls structure. It is the structure that holds the tissues of a poem together and makes it a unified organism.

And since every statement in the poem is paradoxical and ironical, the full meaning is yielded by recognising and identifying these ironies and paradoxes and finally bringing out the relationship in which these various parts of the poem stand.

Brooks has demonstrated how the meaning becomes clear by analysing the structure hinging upon paradox and irony and not by paraphrasing and therefore, besides the paraphrase - structure controversy, the second misconception which Brooks fought out is the language of poetry as I have earlier pointed out. Brooks made out his theory of language, keeping in mind Wordsworth's contention that poetry is 'spontaneous overflow of powerful emotions' that is the language of poetry is direct and simple and requires no conscious efforts. It is to demolish this wrong notion that Brooks gave the idea of ' the language of paradox' . 'The well Wrought Urn' includes an examination of poetry ranging from classical to modern . The opening chapter of the book is 'The Language of Paradox' which first appeared in 1942, as an independent essay . Brooks, here, differentiates between the language of poetry and language of science. The meaning of truth is different in science and in poetry. Truth for science is mathematical, objective , based on facts, but poetic truth is the truth of imagination and emotions and contains both the particular and the universal to make it a 'Concrete Universal'. Science explains terms in simple language, but a subtle state of emotions can be explained through metaphors which bring paradox. Wordsworth wrote poetry in accordance with his own idea that poetry is the 'Spontaneous overflow of Powerful Emotions', and the selection of the language is the language ' really spoken by men' . He had no idea that the language he thought was not simple at all. It was loaded with irony and paradox . Brooks has shown that even the simplest poem is replete with irony and paradox.

Conclusion

In classical , romantic, metaphysical and modern poetry, there are reasons for the language to be ironical and paradoxical. In the 16th century the truth itself became ironical and paradoxical under the impact of new knowledge of renaissance. The scepticism was injected with European sensibility by Montaigne as John Donne refers to in 'The Progress of Soul ' .Thus we can conclude with R.W. Stallmans summing up that “no one has done more towards revolutionising our readings of the poems than Brooks.

Reference:

-“The Well Wrought Urn: Studies in the Structure of Poetry" (1947)

-“The Formalist Critics" (1951)

-“Cleanth Brooks and the Rise of Modern Criticism" by Mark Jancovich (1993)

- “The Achievement of Cleanth Brooks" edited by W. K. Wimsatt and Ethan

Address:

Dr. Sunita Yadav

Associate Professor of English

R.D.S Public Girls College,

Kalaka Road, Rewari.

Ph no. - 9416407646

37

Responsible Factors for Crime Against Women in Rewari District of Haryana

Sangita Kumari , Dr. Pardeep Kumar Sharma

Abstract

Cleanth Brooks, a pivotal figure in New Criticism, developed a critical approach emphasizing the intrinsic value of a literary work, advocating for close reading and the analysis of the text itself without recourse to external factors such as authorial intent or historical context. His critical creed centred on the ideas of paradox, ambiguity, and the organic unity of texts, which he believed were fundamental to understanding the complexity and richness of literature. Brooks's work challenged the dominance of biographical and historical criticism, urging a focus on the formal properties of the text, such as imagery, metaphor, and narrative structure. This research paper examines Brooks's contributions to literary theory, his influence on subsequent critical practices, and the enduring relevance of his ideas in contemporary literary studies.

Introduction

The new criticism rose in the early 30s in America as the most powerful movement of the 20th century in the history of art and criticism and Brooks whome Rane Wellek calls the 'Critic of Critics' is the central force . He did not relish the title of a new critic, perhaps for the reason that his approach to literature is anti-historical . With the publication of Brooks essay 'The Formalist Critic' in the Kenyon Review (1950) the movement of new criticism began to be identified with 'Formalism' . Its leading practitioners were known as the 'Fugitive Group' at the University of Vandarbilt for the reason that the published articles in the journal, 'The Fugitive' . They are John crowe, Ransom, Allen Tate and Robert Pann Warren. They were critical of the various prevalent modes of critical approaches such as historical, philosophical, moralistic, biographical, and psychoanalytical.

Cleanth Brooks

Cleanth Brooks had published articles and books which, if put together , will form his critical credo. There were a number of wrong notions about poetry and he fought against these fallacies in his articles and books to put things in right perspective.

The topic by its very nature has no doubt rather wide range, but the scope and the thrust of the present paper is restricted to two seminal critical formulations:

(1) The heresy of paraphrase

(2) The language of poetry

His book 'the well-wrought Urn' deals with a vital issue - can the meaning of a poem lie in paraphrasing ? One chapter in the book is entitled as 'The Heresy of Paraphrase' but the book as a whole examines certain other issues pertaining to approach to literature. No poem can yield full meaning through its paraphrase, the real meaning is wrung out by studying its structure made of irony, paradox, wit and ambiguity , which are not paraphrasable. Brooks demolishes this misunderstanding also that it is the metaphysical poetry alone, which is fraught with irony, wit and paradox. Instead all poetry - classical , romantic and symbolic have these figures of speech as their structural devices. In 'Understanding Poetry' (1938),which Brooks wrote with Robert Penn Warren as co-author , makes an attempt to show as to what is the right approach to teach poetry. When Brooks and Warren were together at Louisiana state University they were thinking upon the problem as how to read literature and how to read a poem which is different from an editorial piece. What prompted them to bring out the books was that the textbooks they had to deal in the class were full of biographical elements. It is not that they were against the study of biographical and historical background of the poem for making out the meaning of the poem, but what they were against was that these factors could not be used as 'ends but means' only.

W. K. Wimaatt is the theorist of new criticism and Brooks is the practical critic. The real function of literary criticism , Brooks holds, is to understand and analyse the organic nature of the poetry, which is a study of relationships of various elements which go into making of poetry.

The meaning of a poem lies in its structure, not in simple paraphrasing of words and lines. In 'The well Wrought Urn' Brooks explains the meaning of the structure , 'Structure means the structure of meanings, evaluations and interpretations and the principle of unity which informs ,it seems to be one of the balancing and harmonising, connotations , attitudes and meanings. It can be further explained by taking into account Brooks views on the language of poetry. Brooks has elsewhere said that irony and paradox make the language really poetic . Irony is a term of wide implications - a statement meaning something different from what it aims to convey . And thus the full meaning of a poem is wrung out by analysing the ironical implications of the language and not by simply paraphrasing words and phrases.

Brooks cites example from Chaucer's poetry to

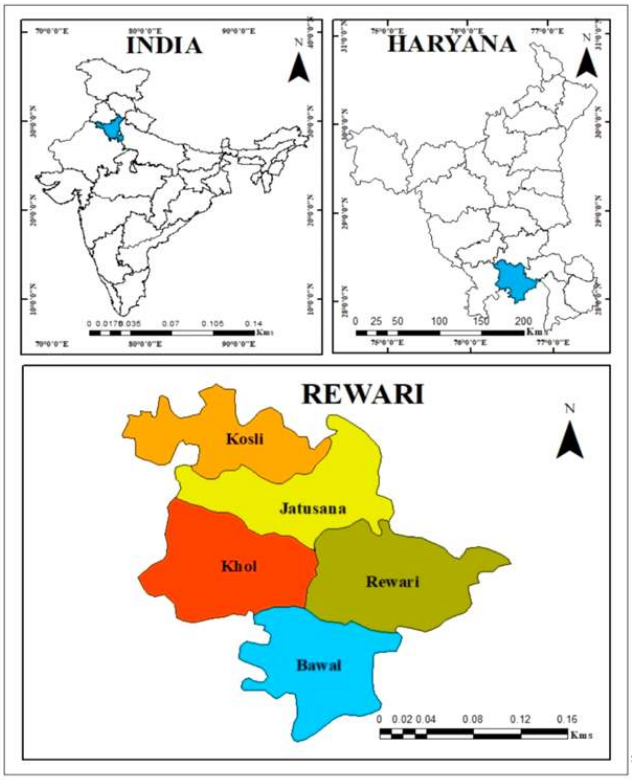

It is also part of the National Capital Region. It is located in Southem Haryana. It is bounded by Jhajjar district in the north, Gurgaon in its cast and north-east and the district Mahendergarh on the west and Alwar district in south. The district headquarter is situated in Rewari city. It covers an area of 1594 kms and Rewari district have been divided in to three tehsils- Rewari, Bawal and Kosli and five block Rewari, jatusana, kosli, khol, and bawal. It has 412 villages. Demographically Rewari has 900,332 populations as per 2011 census. In total population the Males population is 474,335 and Females population is 425,997. The sex ratio is 898 in 2011. Rewari has a standard literacy rate of 81.0% among male literacy 91.4% and female literacy is 69.6%. Rewari is well known for highly contribution in Indian army**.**

Major Crimes Against Women: Crimes against women start even before her birth and continue till his last breath. No matter in what stage of life she is, she fell prey to the male dominated society. Like when she's not even born, the crime of female feticide is being committed, when she's child she faces the gender discrimination ,inferior treatment, no free access to studies ,when she's young ,sexual harrasment, eve teasing rape is being committed ,when she's married crimes like dowry death, domestic violence are being committed ,which means that women is safe nowhere, and she nowhere gets due regard and respect.

Female foeticide: The concept of patriarchal families is there from the existence of human life in society, males are being given preferences over females on different grounds like they are considered as dominant, bread earners for family and support of old age for parents. Female feticide means a process where the foetus is being removed or aborted because of sex of foetus. Female feticide is being done despite having the regulatory laws.it does include various factors like that of preference to male children, girls being considered as burden upon parents etc.

Rape: One of the brutal crimes against women prevalent in our society is rape. Its most gruesome and barbaric act of violating bodily integrity and honor of women .Rape is one of the most growing crimes and is growing at an alarming rate. Rape is forced and unwanted. Rape means unlawful sexual activity and usually sexual intercourse carried out forcibly or under threat of injury against a persons will.

The comprehensive definition of rape is provided in Indian penal code 1860 which means that the crime of rape is not new and laws have been there to deal with this crime .section 375,376 of IPC deals with rape and rigorous punishment is there for rapists .There have been subsequent amendments and main issue of focus remained definition of rape. Rape of women by men has occurred throughout recorded history and across cultures and religions.

Sexual harassment: Sexual harassment of women is growing expeditiously .its very unfortunate that women are safe nowhere ,sexual harassment is being done at almost every place be it workplace, public transport ,public gatherings etc. sexual harassment is any unwanted sexual behavior that makes someone feel upset ,scared, offended or humiliated, or is meant to make them feel that way. There are different laws governing sexual harassment of women in public spaces in India. Section 354A of Indian penal code defines sexual harassment and punishment for sexual harassment .. Also prevention of women sexual harassment act of 2013, commonly known as POSH act has been passed to give protection to women from sexual harassment at workplace because its mostly done in workplaces and also In public transport, eve teasing has become a norm now and unfortunately victims of unware.

Acid attack: Acid attack ,one of the most inhuman, barbaric act done against women. Acid attack means throwing acid on girl usually on face to ruin her beauty, pride and confidence as beauty is always being connected to face. The cases of acid attack are rising day by day. The main cause of acid attack is male ego. In most of the cases its found that the reason of acid attack is rejection of male like rejection of proposals, any other favors and in order to take revenge girls are being attacked with acid that satisfies the male ego. Acid attack is penalized under section 326 A of IPC that provides for minimum 10 years imprisonment for this offence that is extendable to life with fine. Also the offender wants to

disrupt the socio-economic life of such a woman. This section was inserted by criminal law amendment act, 2013.

Domestic Violence: Domestic violence is any sort of violence committed by someone in victims domestic circle. It includes mental, physical and sexual abuse in a domestic setting .its also termed as domestic abuse or intimate partner violence . It's a serious threat that leaves life long effect on victim.in most of the cases women are victim of this crime. So, The protection of women from Domestic violence act 2005 has been passed to regulate this crime. This act provides protection to women from ,from men in domestic sphere.

Dowry death: Dowry one of the biggest menace in our society dowry Is an age old concept. Dowry is one of the main reasons of female foeticide as parents conceive girl child as burden upon them as they could not provide dowry. Dowry means giving of cash ,good, or any sort of property by brides family to groom's family at time of marriage. Its an social evil that has ruined the life of end number of women and has led to the tortures and crimes against women. Dowry also lead to late marriages that in fact is another major issue of current era. Dowry makes parents vulnerable to commit crimes as they go to any extent to get their daughters married and fulfil the demands of grooms family.

Factors responsible for these crimes: There are various factors responsible for these crimes. Some of the main reasons are quoted below:

Gender discrimination: All these crimes have their root in gender discrimination. Women folk is considered as inferior to that of men. Women from their childhood are being compared to men, they are restricted in every sense may it be education, freedom to go anywhere, freedom to make decisions ,freedom to choose life partner. The will of men are being thrusted upon women. This sense of superiority make men free to commit any crime against women and to treat them like anything they want.

Children are being raised in a set up from their childhood ,where they are taught that women are weak, dependent, meant to do household chores only, this ultimately gives male child a sense of superiority due to which they grew up with a mind set that women are dependent inferior to them and they hold a total control over them. This mind set of being superior ultimately lead to crimes.

No proper implementation of laws: Even though there are numerous laws to deal with the crimes against women happening in society but the crimes are still raising at an alarming rate and scale of crime continues to go up. Lack of proper implementation of laws is one of the main factors responsible for these crimes.

Lack of legal knowledge: People don't know about their rights ,laws, regulatory mechanisms that are provided by legal system. If people have been well versed with the legal knowledge ,these crimes wouldn't have gone so high like if a victim is aware of laws she uses approaches to competent authorities to get her rights and make every possible step to get victim punished.

No moral education: lack of moral education is the biggest factor responsible for the crimes in society .children are not being inculcated with ethical and moral values from their childhood that leads them to do these crimes and treat women with no respect at all.

Media and television: Women are being portrayed as a thing of attraction and lust that automatically develops a thinking in men that they are meant to be treated like a thing of pleasure .Also indecent things are being normalized by television and media like that of stalking ,drinking alcohol etc that automatically leaves an impact on peoples mind and is structuring minds of next generation.

Lack of awareness: Many individuals don't know about these crimes and their punishment, most of the victims are under fear of social stigma and under threat of criminals due to which many of the crimes go unreported that creates a room for criminals to commit these crimes again and again and crimes keep on rising .Also people of unaware of these crimes as they are being normalized and people have become used to them.

Substance abuse: Substance abuse has also became the factor responsible for crime's against women .substance abuse makes person intoxicated and a person couldn't differentiate between right and wrong .Most women fell prey to intoxication of men as they are being raped, beaten by men when they are intoxicated .substance abuse makes a person go to any extent like if we see a recent example in Kashmir,a boy killed her mother and stole her jewellery for drugs.

Stigmatization of victims: Victims are being stigmatized on reporting of crimes ,they get a social stigma that hinders them to report the cases or raise their voice against the crimes happening with them. This encourages criminals to repeat the crimes and scale of crimes keep raising and women keep on suffering.

Subservient role of women: Female submission has been endorsed as inborn/natural to women's nature. women are expected to obey men unquestioningly that deprive them of their rights .The men are raised to lead and take charge while women are taught to take responsibility of maintaining peace in home. This again leads to ill treatment of women. Women find safety in allowing the male to dominate the relationship and because the submissive role is

automatically expected women fear changing the situation.

Economic instability of women: Women are mostly economically dependent on women due to various factors ,they are not given free hand to education, job etc. less wages are paid to them as compared to men for same work .this dependence gave men a sense of superiority as they perceive women as helpless and subject them to different crimes.

Conclusion: Discrimination of girls in all its dimensions is common in all communities. Our traditions and customs and the feudal family value system project women as inferior to men justifying abuse and exploitation. The roots of this violence are buried deep into the social structure which is underpinned by the patriarchal male-dominant ideology the seeming pens ability of women is exhibited by socially sanctioned violence against them at all stages their lives starting with the foetal stage where they are vulnerable to death through sex selection; during childhood when they are often undernourished, uneducated, generally neglected, and burdened with household responsibilities; during early married life when they are vulnerable to harassment, injury, and even to murder in their marital homes but find no shelter in their parental home; and throughout their lives when they are subjected to physical battering and assault as well as emotional humiliation and degradation. It is clear that violence against women is endemic in India. The reason is women in the country are highly vulnerable because of poor quality of life indicated by rampant poverty, lack of education, high under five mortality, poor health status, high fertility rate and high maternal mortality rate. But our government takes many incentives to improve the present conditions of women. Many policies and schemes will come into existence which benefited to the women's in all the Indian states. But policies and schemes are not successful because we are not trying to change our mentality we need to change our mentality and think from the women's point of view, because women's are equal to man. If it will happen the rate of crimes against women will decreases at a very faster rate so we need to change our perceptions not policies or plans.

Reference

1. World Health Organization. Violence Against Women. (2021). Available at: https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/violence-against-women2. Kusuma Y.S, Babu BV. Elimination of violence against women and girls as a global action agenda. J Inj Violence Res. (2017) 9:117–21. doi: 10.5249/jivr.v9i2.9083. Lolayekar AP, Desouza S, Mukhopadhyay P. Crimes against women in India: a district-level analysis (1991–2011). J Interpers Violence. (2022) 37:NP7289-314. doi: 10.1177/08862605209671474.United Nations office on Drugs and crime. Gender-related killings of womenandgirls (femicide/feminicide).(2023).Availableat: https://www.unwomen.org/en/digitallibrary/publications/2023/11/gender-related-killings-of-women-and-girls-femicidefeminicide-global-estimates-20225. Ministry of Home Affairs. Measures taken by Government to prevent Crime against Women. (2019)Availableat:https://pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=1956706. NCRB. Crime in India-2022 snapshots (states & UTs). (2023). Available at:https://ncrb.gov.in/uploads/nationalcrimerecordsbureau/custom/ciiyearwise2022/17016097489aCII2022Snapshots-StateandUTs.pdf7. National Family Health Survey (NFHS). India Fact Sheet (2021). Available at: http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_FCTS/India.pdf8. Kumar S, Kuncharam SR. Determinants of women empowerment responsible for reducing crime against women in India. Violence Gend. (2020) 7:182–7. doi: 10.1089/ vio.2020.00239. Maity S, Roy S. Analysis of growth and identifications of the determinants of crime against women: insight from India. J Int Women's Stud. (2021) 22:293–311. Available at: https://vc.bridgew.edu/jiws/vol22/iss1/1710. Gogoi B. Determination of social and economic factors affecting IPC crime against women in Assam. International journal of early childhood. Spec Educ. (2022) 1411. Koenig MA, Stephenson R, Ahmed S, Jejeebhoy SJ, Campbell J. Individual and contextual determinants of domestic violence in North India. Am J Public Health. (2006) 96:132–8. doi: 10.2105/AJPH.2004.05087212. Dwivedi AP, Rohra CH, Vishen MS, Mangavade AG. India as an emerging world power: Past, present and future contexts (multidisciplinary approach–VOL-1). Faridabad (HR): BMP Publisher. (2023).

13. International institute for population sciences (IIPS) and ICF In: National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21. India: Volume I. Mumbai (2021)14. Chaudhuri K, Chowdhury P, Reilly K. A new perspective on violent crime burden index: evidence from Indian districts. Soc Indic Res. (2013) 110:771–89. doi: 10.1007/ s11205-011-9958-7.

15. Kabiraj P. Crime in India: a spatio-temporal analysis. Geo J. (2023) 88:1283–304. doi: 10.1007/s10708-022-10684-716.Raj P, Rahman MM. Revisiting the economic theory of crime a state-level analysis in India. Cogent Soc Sci. (2023) 9:2170021. doi: 10.1080/23311886.2023.217002117. Nautiyal T. Gender inequality and falling sex-ratio in India: an inter-state analysis. International journal of Indian. Psychology. (2023) 11:2369–78. doi: 10.25215/1102.23618. Barua R, Goel P, Sane R. The effect of age-specific sex ratios on crime: instrumental variable estimates from India. New Delhi:

National Institute of Public Finance and Policy. (2017)19. Diez-Roux AV. Multilevel analysis in public health research. Annu Rev Public Health. (2000) 21:171–92. doi: 10.1146/annurev.publhealth.21.1.171

Sangita Kumari
Associate Professor
Department of Geography
Baba Mastnath University
Asthal Bohar Rohtak

Dr. Pardeep Kumar Sharma
Associate Professor
Department of Geography
Baba Mastnath University
Asthal Bohar Rohtak

38

Teacher Preparation for 21st Century in Early Childhood Education: Policy and Challenges

Anjita Singh

Abstract

Abstract - *The early childhood education workforce plays a pivotal role in expanding and improving early childhood education. However, there are many challenges associated with teacher preparation and professional development of early childhood educators in the 21st century. This paper, begins by highlighting some of these challenges. In the 21st century with rapid technological and ideological advancements, a strong need for updated teachers has been generated, which has ultimately burdened the teacher education sector for fulfilling the demands of the society and teacher preparation at this juncture is a major challenge. This paper illustrates how policies and initiatives related to early childhood education have addressed these challenges and contributed to raise the standards of teaching profession. The National Education Policy 2020 placed a lot of emphasis on the early stages of learning and recognized how central teachers are to the realization of its goal. This paper is an attempt to address the emerging question in this context – does the NEP 2020 being currently introduced in India enable early childhood educators to access to this kind of required expertise and experience and prepare them adequately for the demands of this critical stage of children's development and education? With this aim in view, and with the objective of informing policy level reforms, the study reviewed NEP 2020 and other related policy documents for teacher preparation in ECE.*

Keywords- Teacher Education, Teacher Preparation, NEP 2020 , 21st century skills, ECE.

Introduction

Education plays a major role in growth and development of a country and also prepares future generations to meet the challenges of a fast-changing globalised world. A teacher plays a pivotal role in this process. Teachers' performance constitutes one of the most crucial inputs at all stages of education including pre-primary level to higher education level. Children should be given right start from the early childhood stage until the age of 8 years of age, which is the most critical period when the foundation is laid for lifelong development of young learners (Mohalik,2013, p.46).

The designation of quality ECCE for all as a global education target – Sustainable Development Goal (SDG) Target 4.2. The target reads "By 2030, ensure that all girls and boys have access to quality early childhood development, care and preprimary education so that they are ready for primary education" (UNESCO, 2016).To achieve the target, many countries are working to address the needs of the ECCE sector to ensure that every child is provided with the best support to start the process of lifelong learning and initial development. India being a signatory of the SDGs, has also taken positive steps in this direction and emphasized on 'foundational years' in its the newly launched National Education Policy 2020 (Siddiqui & Ahmad,2022). Expanding access and ensuring the quality of ECCE must go hand-in-hand to maximize the benefits of ECCE for children and the society(UNESCO,2020). In the 21st century, early childhood education has been the focus of many education systems worldwide. One key aspect of this is the preparation of teachers for this age group.

Historically, ECE in India has remained relatively neglected. In this backdrop, the NEP 2020 envisages a five-year foundational stage of education: Three years of ECE(Interchangeably used as Pre-school education and Pre-primary level) and the first two years of primary school (Grade 1 & 2). In other words, ECE is now supposed to extend from ages three to eight. According to NCF-FS (2022), the first eight years of a child's life are truly critical and lay the foundation for lifelong well-being, and overall growth and development across all dimensions - physical, cognitive, and socio-emotional.

The role of teacher in ECE is to expose child to different teaching learning materials in the form of play, music and other activities. The teacher should act as a facilitator for their physical and mental development (Mohalik,2013, p.47). The teacher preparation institutes in this sector differ in their admission procedure, qualifications, assessment, as well as strategy of training. According to Mohalik, (2013) because of non-standardization of ECE teacher education in one hand and lack of training institutes in government sector, ECE teacher education faces many varied problems. Realizing the importance of ECE different stakeholders such as Government bodies, private bodies and NGOs are contributing in the implementation of quality Early childhood education.

There are many agencies involved in designing of curriculum, providing instructional material, professional development and training of teachers at all levels. India developed a multi-tier infrastructure for Teacher education with two primary entities involved at the national level (Gupta, 2017). The The National Council of Educational Research and Training (NCERT) and The National Council of Teacher Education (NCTE). Other than these institutions there are SCERTs, DIETs , NIOS and NUEPA.

Teacher Preparation for Early Childhood Education

Several studies (UNESCO,2020; NCF,2022; Gupta,2017) suggest that a teacher plays the central role in the initial years

of a child's life. Therefore, the quality of early experiences of young children is highly shaped by the ECCE teacher's qualifications, beliefs, skills and competencies (Siddiqui & Ahmad,2022). Teaching is a profession and teacher education is a process of professional preparation of teachers (NCTE, 2009). As per National Council for Teacher Education (NCTE) teacher education is "A programs of education, research, and training of persons to teach from pre-primary to higher education level". Preparing teachers for a teaching profession is an arduous task and it involves action from multiple fronts and perspectives. The teacher education policy in India has evolved over a period of time and is based on recommendations contained in various reports of commissions and committees on education, the important ones being the National Policy on Education 1986, National Curriculum framework 2005, National Curriculum Framework for Teacher Education 2009. The latest development was made through the National Education Policy 2020 (NEP) which also has important implications for Teacher Education in the country. The other major development proposed in teacher education is related to National Professional Standards for Teachers (NPST) to address quality concerns in school education.

NCF (2005) acknowledges that the important goal of universalization of primary education to all children, along with content of primary education itself largely depends on the planning and expansion of Early childhood education. Therefore, for achieving the goal of primary education and ECE there is increasing urgency to improve quality of Teacher Education and their professional development. Teaching should not be seen as a onetime acquisition of specialized skills or training. A teacher needs to enrich his/her abilities, knowledge, skills and competency from time to time depending on the developments in the discipline and the changing requirements of students (Gargesh,2013, p.387). To evolve as a teacher and to create thirst for knowledge amongst his students, one must continue to learn and grow professionally according to the changing time and needs (Mishra,2013, p.3).

In the NCFTE (2009) document there is a section devoted specifically on preparing teachers and teacher educators for ECCE, recognizing that ECCE must aim for the development of the whole child in a learning environment that should be joyful, child-centered, play and activity-based. Teacher education programs must therefore prepare ECCE teachers to implement a pedagogy that is developmentally appropriate and based on child-centered, play and activity-based experiences(Gupta,2017). Teacher education is of two types : Pre-service and In- service education. All the functionaries such as Anganwadi teacher, Balwadi teacher are getting in-service training from DIETs, BRC and SCERTs. On the other hand, pre-service teacher education is mostly provided by private institutions in various forms such as : Certificate in ECCE, Diploma in pre-school education (DPSE) and post-graduate diploma in ECCE. Diploma in Early childhood education is offered by IGNOU, NIOS, Kota open university etc. The duration of these courses varies from six months to two years. The entry qualification for these courses is basically 10+2 with II division. These training institutes follow different curriculum and regulations relating to teacher preparation programmes and because of non- standardization of these institutes the quality of teacher training is severely affected in early childhood sector. Therefore, teacher education faces many varied problems from lack of rigor and professionalism to unsuitable curriculum and training strategy (Mohalik, 2013.p-51).

Teacher preparation in the 21st century

The foundation of the '21stcentury skills', elements and definitions stem from the framework presented by Partnership for 21st Century Skills (Dede, 2010), the term 21st century skills is generally used to refer to certain core competencies such as Creativity, Critical thinking, Communication, Collaboration, and Information, media, and technology skills. According to Darling- Hammond (2006), preparing teachers in the 21st century requires knowledge of learners and their development in social context, Knowledge of subject matter and curriculum goals and knowledge of teaching.

These three areas of knowledge in teacher education must align to prepare a generation of teachers who will be able to identify the needs and necessities of future learners. One of the fundamental shifts in teacher preparation for early childhood education in the 21st century should be strong emphasis on child-centred education. Early childhood teachers are encouraged to create nurturing, responsive, and stimulating environments that promote exploration, play based learning, and creativity among young learners. In the 21st century, educators must be encouraged to engage in continuous professional development and lifelong learning. This dynamic approach allows teachers to stay current with the latest research, teaching methods, and best practices. As early childhood education is a rapidly evolving field, educators must be adaptable and willing to embrace new ideas and approaches.

Major Issues and concerns

The preparation and professional development of early childhood educators in the 21st century face several significant challenges. These challenges are critical to address, as they impact the quality of early childhood education, the well-being of children, and the overall success of the education system. Research by Selvaraj, Alagukanna, and Suganya (2015) summarized three categories of problems that greatly overwhelm teacher professional development in India. These include (1)

psychological barriers including teachers lacking positive attitudes, teachers lacking motivation, teachers lacking interest, teacher lacking confidence, teacher having stress, teacher having frustration, teacher lacking awareness, and inability to learn new technology; (2) administrative barriers such as poor administration, government policy, lack of physical facilities, lack of financial facilities, inadequate time, inadequate funding; and (3) material barriers like time commitments, energy demands, working environment and family environment. Teacher education has received criticism due to the large-scale recruitment of unqualified and untrained persons in the formal school system which adversely affects students. Students are caught in a cycle of low achievement, teacher with inadequate cognitive skills, and then further low achievement of students.

According to Mishra (2013), the major issue pertaining to teacher preparation is that there is a gap between the curriculum taught to teacher trainees and the reality that exists in schools. Essentially, teacher preparation programmes are deemed excessively academic and distant from the real challenges existing in classrooms (Mishra,2013).

Some of the major challenges associated with teacher preparation and professional development in this field are:

- Low Compensation and Status of Early childhood educators.
- There is no linkage between training institutes within the country regarding qualifications, curriculum and hands on experience of teachers. A lack of uniformity in requirements can lead to disparities in teacher quality.
- Inadequate Training and Professional Development.
- Finding the right balance between structured curriculum and child-directed play is a perennial challenge in early childhood education.
- Inclusion of Diverse Learners.
- Evolving Technology Integration.
- Engaging with families and fostering strong home-school partnerships is vital for early childhood education. Teachers need training and support to establish effective communication and collaboration with parents and caregivers.
- Support for Social and Emotional Development.
- Early childhood educators face challenges in advocating for policies that support their profession and the young children they serve. They often lack the resources and support needed to influence policymakers, and their concerns may not always receive the attention they deserve in political arenas.
- Burnout and Stress due to large class sizes, challenging behaviours, and emotional intensity, can lead to high levels of burnout and stress among teachers. Therefore, teacher preparation and professional development for early childhood educators in the 21st century encounter numerous challenges. Policymakers, educational institutions, and society at large must work together to overcome these challenges and support the growth and development of early childhood education.

Analysis of National Education Policy 2020 with respect to Teacher Preparation in ECE

The National Education Policy (NEP) 2020 in India places a significant emphasis on early childhood education and recognizes the central role that teachers play in the realization of its goals. This comprehensive policy addresses many of the challenges associated with teacher preparation and professional development in the field of early childhood education. Here's how NEP 2020 tackles these issues: Focus on Early Childhood Education with emphasize on ECE teachers. NEP 2020 acknowledges the critical importance of early childhood education (ECE) for a child's holistic development. It sets the stage for a child's lifelong learning journey and recognizes that high-quality ECE can have a profound impact on a child's cognitive, social, and emotional development. The policy aims to ensure universal access to quality ECE for all children in the 3-6 age group by 2025.

In this new education policy, Anganwadi workers or teachers will be systematically provided training as per the curriculum and pedagogical framework developed by the NCERT to create a starting cadre of teachers. Anganwadi worker or teacher with 10+2 and above qualification will be given a certificate program of six months in ECCE. Those with lower educational qualifications will be offered a one-year diploma program covering Elementary Literacy, Numeracy and other relevant aspects of ECCE. The ECE training of Anganwadi workers or teachers will be mentored by cluster resource center of the education department and at least one monthly class will also be conducted for continuous evaluation. Apart from this focus will also be made on initial teacher preparation and continuous professional development of teachers.

Conclusion

Teacher preparation for early childhood education in the 21st century has to evolve in order to address the complex and diverse needs of children in an increasingly globalised world. Early childhood educators should not only be equipped with the knowledge and skills to nurture young minds but also advocate for the value of high-quality early childhood education. They are adaptable, inclusive, and techno-friendly professionals who play a critical role in shaping the future of our society by fostering the growth and

development of the youngest generation. The pre- service and in-service teacher preparation should be reformed comprehensively to meet the quality standards. The privatization of teacher education in ECE sector should be properly controlled by the NCTE for maintaining quality and standards. The government should make necessary steps to start teacher education in ECCE in existing teacher education institutions. At last, the most important point is bridging the policy and practice gap and also involvement of all the stakeholders to meets the goals.

References:

- Gargesh, R.(2013). Some aspects of pre-service and in-service teacher training in India. In V. Narang (Ed), *Issues in learning theories and pedagogical practices* (Volume I., pp. 387-420). Hyderabad: Orient Blackswan.
- Mishra, L.(2013). Teacher education issues in India. In L. Mishra (Ed), *Teacher Education: Issues and Innovation* (pp. 3-19). New Delhi: Atlantic.
- Selvaraj, N., Alagukanna, A.S., & Suganya, M. (2015). Professional development in education in India: A view. J Pol Sci Pub A ff 3: 173. https://doi:10.4172/2332-0761.1000173.
- NCTE. (2009). National curriculum framework for teacher education: Towards preparing professional and humane teachers. New Delhi: NCTE
- Gupta, A. (2017). Policy Trends in Teacher Professionalization and Professionalism in India. In: Li, M., Fox, J., Grieshaber, S. (eds) *Contemporary Issues and Challenge in Early Childhood Education in the Asia-Pacific Region* (pp. 221-239).Singapore : New Frontiers of Educational Research. Springer.
- Mohalik, R.(2013). Teacher preparation for ECCE: Issues and concerns. In L. Mishra (Ed), *Teacher Education: Issues and Innovation* (pp. 46-55). New Delhi: Atlantic.
- NCERT.(2022). National Curriculum Framework for foundation stage. New Delhi: NCERT
- NEP (2020) (1): Policy document released by Government of India Retrieved from https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English.pdf
- UNESCO.(2020). Survey of Teachers in Pre-primary Education (STEPP). France: UNESCO.
- Siddiqui, F., & Ahmad, S. (2022). Early Childhood Teacher Education Landscape in India : Issues and Concerns with Respect to NEP - 2020. Madhya Bharti, 82. 168-176.
- NCF. (2005). National curriculum framework 2005. New Delhi: NCERT.
- Varghese, J., & Musthafa, M. A,(2021). Preparing Teachers for 21st century: Reflections and Concerns, Vol. 1,pp 45-51.
- Darling-Hammond, L. (2006). Constructing 21st-century teacher education. *Journal of teacher education*, *57*(3), 300-314.
- Dede, C. (2010). Comparing frameworks for 21st century skills. In J. Bellanca & R. Brandt(Eds.), 21st century skills (pp. 51–76). Bloomington, IN: Solution Tree Press.
- Kundu, A., Bej, T., & Dey, K. N.(2020). Indian Trainee Teachers' Perceptions of 21st Century Skills. *Voices of Teachers and Teacher Educators*, pp. 36-49.

Anjita Singh
Ph. D Research Scholar
National Institute of Educational Planning and Administration
NIEPA, New Delhi
Mobile no- 8588952969
Email id- anjita999@gmail.com

Postal Address
House no-505, Daheli Sujanpur
Shyam Nagar, Kanpur Nagar
Uttar Pradesh
Pin code- 208013

39

Service Trade Synergies and Divergences: India and China in the Global Market

Jyoti

Abstract

This study explores the evolving trends and composition of trade in services between India and China, two of the world's largest and fastest-growing economies. Over the past two decades, both countries have seen significant changes in their services trade portfolios, driven by economic reforms, technological advancements, and globalization. India has emerged as a global leader in information technology (IT) and business process outsourcing (BPO) services, while China has expanded its presence in construction, transportation, and tourism services. The analysis reveals that while both countries have achieved substantial growth in service exports, the nature of their services trade reflects their distinct economic structures and development strategies. The study concludes by highlighting potential areas for cooperation and competition in the future, emphasizing the need for strategic policies to leverage the strengths of each country in the global services market.

Key Words: Service Trade, Exports, Imports, Information Technology, Business Services.

1.1Introduction- In the age of globalization, India has witnessed a gradual structural shift towards the servicessector comprising a rising share in Gross domestic Product (UNDP) and employment (Prabir de, 2013). It has been changing at an unprecedented pace and Services played an important and vital role in the overall transformation. It wouldn't have been possible to globalize the world without the development of information and Communication technologies. Services contribute as a base of each stage of production from research and development. Nowadays, services constitute the basis of all the developed economies (Magdalena Myszkowska, 2014).World services exports joined the path of recovery in 2011 after the decline of 17.7 percent in 2020 due to the aftermath of pandemic of Covid. Global services Exports were valued a US $ 6.1 trillion that was 6.3 percent of world GDP and 21.4 percent of total world trade of bothmerchandise and services. It has recovered in 2021 and also reached at the level of 2019 after the plunge of travel and transport services during the pandemic in 2020. The share of services experts in GDP exceeded 30 percent in twenty two economies of the world. There is a relative rise that measured in the developing Countries of America having a prominence of travel and transport services that made it easy to recover the economy after pandemic (UNCTAD Handbook of Statistics-2022). The Contribution of services trade is fabulous in the world economy as Contributing 15 percent of total trade, 45 percent of employment and 65 percent of total value added in developing economies for 2020. At the same time, it contributed 27 percent of total trade, 73 percent of employment and 81 percent of total value added in developed economies (UNCTAD/STAT/INF/2022/2).

1.2Database and Methodology:

Database-Data for Trade in Service obtained from international organizations such as the World Trade Organization (WTO) for the period of 2015 to 2021. As a assistance, the data also use from International Monetary Fund (IMF), World Bank, UNCTAD, and national statistical agencies. International classifications such as the Extended Balance of Payments Services (EBOPS) classification to break down services into categories like transport, travel, construction, financial services, etc.

Methodology-The CAGR formula assumes a constant growth rate over the specified period, while the simple and average annual growth rate formulas do not make this assumption. To assess longer-term trends Compound Annual Growth Rate.

Growth Rate:

The annual growth rate formula is used to calculate the percentage change in a value over a 12-month period. Here are a few common formulas:

- Simple Annual Growth Rate:
  ((Current Year's Value - Previous Year's Value) / Previous Year's Value) x 100
- Compound Annual Growth Rate (CAGR):

((Current Year's Value / Previous Year's Value)^(1/Number of Years) - 1) x 100

Index Construction:

The Index Number is a statistical measure that shows the changes in a dataset over time:

Index Number = (Current Year's Value / Base Year's Value) x 100

This approach will provide a solid framework for analyzing and understanding the dynamics of services trade.

1.3Review of Literature

Gordon, James and Gupta, Poonam (2004) assessed the contribution of the service sector to India's overall economic growth, emphasizing its role as a driver of GDP growth since the 1990 and identified the potential for

continued services-led growth in India, considering factors such as policy reforms, global demand, and domestic economic conditions. Banga, Rashmi (2005) provides a comprehensive analysis of the trends in India's services trade, focusing on the period from the 1990s to the early 2000s. It highlights the rapid growth of service exports, particularly in IT and IT-enabled services (ITES) and India's services trade noting a significant concentration in software services, followed by other business services, travel, and transport services. The study emphasized the importance of liberalization and policy reforms taken in the 1991, which facilitated the growth of the services sector and enhanced India's global competitiveness. Joseph, K. J., and Parayil, G. (2006) examined the growth of India's software and IT services exports, identifying key factors driving this trend. It highlights external demand, particularly from the US and Europe, as a major driver and explored the challenges faced by the sector, including issues related to infrastructure and the need for continuous skill development. Eichengreen, Barry and Gupta, Poonam (2010) traced the evolution of India's services sector from the 1980s to the 2000s, highlighting key trends in service exports and their contribution to economic growth and examined the composition of the services sector, identifying IT services, telecommunications, and financial services as major growth drivers. Rai, Shankar (2012) used a Computable General Equilibrium (CGE) model to analyze the impact of services trade liberalization on employment in India with a focus on the IT and ITES sectors, which experienced significant employment growth. Rupa Chanda (2017) put an eye to explore the composition of India's trade in services, breaking it down into major categories such as IT services, business services, travel, transport, and financial services and examined the factors influencing the composition of services trade, including domestic policies, global demand trends, and India's integration into global value chains.

1.4Trends and Composition

India's share of world trade in service India's share in the world export of services was quit small at 1.36 percent in 2005 which was 0.78 percent in 1980. During ninth-five year plan, there were sectoral level negotiations discussed in the area of financial services which reflected in the growth of India's share of exports of services in the world. The share of world trade in services was increasing constantly.

Table:1.1 Trends of India's Trade in Services & Balance of Trade in Services

(Value & Share ,Million US$, Percentage)

Year	Services Exports (India)	% Share	%Change	Indices	Services Imports (India)	% Share	%Change	Indices	Total services Trade (Exports + Imports) with the World	BOT
2005	36098	49.28	-	100	37138	50.71		100	73236	-1040
2006	46599	50.94	29.09	129	44874	49.06	20.83	121	91473	1725
2007	58671	51.65	25.90	163	54921	48.35	22.38	148	113592	3750
2008	71261	55.08	21.45	197	58105	44.92	5.79	156	129366	13156
2009	64824	54.15	9.032	180	54874	45.84	-5.56	148	119698	9950
2010	79438	52.42	22.54	220	72087	47.57	31.36	194	151525	7351
2011	93720	54.76	17.97	260	77403	45.23	7.37	208	171123	16317
2012	95980	54.71	2.41	266	79438	45.28	2.62	214	175418	16542
2013	100315	55.62	4.51	278	80021	44.37	0.73	215	180336	20294
2014	106125	55.82	5.79	294	83989	44.18	4.95	226	190114	22136
2015	106505	55.26	0.35	295	86224	44.74	2.66	232	192729	20281
2016	110622	54.61	3.86	306	91932	45.39	6.61	248	202554	18690
2017	125527	54.36	13.47	348	105370	45.64	14.61	284	230897	20157
2018	137911	53.73	9.86	382	118716	46.26	12.66	320	256627	19195
2019	145062	54.02	5.18	402	123435	45.97	3.97	332	268497	21627
2020	132787	56.66	-8.46	368	101590	43.34	-17.69	274	234377	31197
2021	158177	55.30	19.12	438	127877	44.70	25.87	344	286054	30300
CAGR										
Exports = 10%					Imports = 8%				Total = 9%	

Source: WTO statistic database, 2005-2021

As it can be seen in the table that the services exports were less than that of the imports but after that there was an increasing trend in the share of exports of services which was continuously higher than the share of imports of services. The share of trade in services of exports has become 2.63 percent in the year 2021 and share of imports has become 2.15 percent that is also less than that of the exports. On the other hand, the share of trade in services of China is more than that of china but the exports of services of china declined and have become less than thatgradually had Imports of trade in services of China. China's Share of Exports of trade in services was 3.26 per cent whereas imports were 3.02 percent. But China's exports had become less than the imports (3.54 percent) in the year 2009. After that the share of Exports, gradually declined and that is continued till now. The balance of trade in services is positive for India and negative for china.

As discussed previously, India's share in world trade in services has been increasing and more than the share of imports in world trade. Similarly, India's Exports in total services trade, which was 49.28 per cent in 2005 which was less than the imports (50.71) percent as shown in the **table-1.1**. But, later on India's share in its total services trade his gradually become more than the imports. The share of exports part in its total service trade has increased up to 55.30 percent and 44.70 percent for imports. The Annual growth rate of exports was 29.09 percent. But After that the impact of global financial crisis was felt by all the sector of the economy. But the contribution of services sector to the

total GDP had remained positive which was 63 percent in 2007-08 to 65 percent in 2008-09. Simultaneously the growth rate of exports had fallen because of the growing domestic demand accounted for around 77 percent of services sector growth (Sazzad,Parwez, 2013). At that time, the growth rate of services exports accounted 9.03 percent which was 21.45 percent in 2008, whereas the growth rate of imports of services accounted negative that was -5.6 percent. It accounted high growth rate of services exports in 2010 and 2011 and simultaneously the highest growth of imports in the time period of 2005-2021 which was 31:36 per cent and 22.54 percent for, exports. But after that it fall by suddenly in 2012 and 2013 because of the European Crisis. Again there was an improvement in the in growth of exports and imports of services but not as much as before. The Impact of aftermath of covid-19, the growth of every sector had taken back feet due to lockdown. There was negative growth both that was -8.46 percent for exports and - 17.69 percent for imports of services in 2020 and again escalated up to 19.12 percent and 25.87 percent in 2021. The volume of exports of services that was US$ 36098 million in 2005 reached at US$ 158177 million in 2021. On the other hand, the volume of imports was $37138 million in 2005 and $127877 millions in 2021. There was negative balance of trade in services only in the 2005 and later it shown positive till 2021. The year compound annual growth rate of services exports has 10 percent and 8 percent for imports for the time period from 2005 to 2021.

Table-1.2 showcases the trends of exports and imports of trade in services and the balance of trade in services during the period of 2005 to 2021. China's exports of services were US$86822 million in 2005 which escalated up to US $ 297396 million in 2021. The growth rate of China's services exports fall in 2009 which was 27.65 per cent in 2007 decreased up to -13.50 percent. Perhaps that happened because of the financial crisis but after that the growth rate of exports had grown and also more than the growth of exports. China had also negative growth rate in 2016 and 2020. But after the impact of financial crisis, the balance of payment of china showcases negative. The compound growth rate of china for exports was just 8 percent and for imports it was 9.87 per cent.As we compare the performance of India and china, it could be noted that the compound growth rate of India for exports of services. (10 per cent) greater that the growth rate of imports that is 8 percent. On the other hand, the china'sgrowth rate of services exports is 8 percent which is less than the growth rate of imports that is 9.87 percent. The indices analysis revealed to increase for the period for both the countries.

Table: 1.2Trends of China's Trade in Services & Balance of Trade in Services(Value & Share, Million US$, Percentage)

Year	Services Exports (China)	% Share	%Change	Indices	Services Imports (China)	% Share	%Change	Indices	Total services Trade (Exports + Imports) with the World	BOT
2005	86822	52.00		100	80136	48.00		100.00	166958	6686
2006	100762	51.80	16.06	116.06	93741	48.20	16.98	116.98	194503	7021
2007	128618	52.24	27.65	148.14	117592	47.76	25.44	146.74	246210	11026
2008	148735	51.20	15.64	171.31	141752	48.80	20.55	176.89	290487	6983
2009	128655	48.30	-13.50	148.18	137726	51.70	-2.84	171.87	266381	-9071
2010	153343	47.64	19.19	176.62	168508	52.36	22.35	210.28	321851	-15165
2011	172307	45.54	12.37	198.46	206045	54.46	22.28	257.12	378352	-33738
2012	176755	43.19	2.58	203.58	232461	56.81	12.82	290.08	409216	-55706
2013	182347	40.47	3.16	210.02	268192	59.53	15.37	334.67	450539	-85845
2014	194498	37.48	6.66	224.02	324435	62.52	20.97	404.86	518933	-129937
2015	196724	36.41	1.14	226.58	343651	63.59	5.92	428.83	540375	-146927
2016	194386	35.23	-1.19	223.89	357324	64.77	3.98	445.90	551710	-162938
2017	208667	36.08	7.35	240.34	369643	63.92	3.45	461.27	578310	-160976
2018	236612	36.11	13.39	272.53	418644	63.89	13.26	522.42	655256	-182032
2019	245071	37.19	3.58	282.27	413931	62.81	-1.13	516.54	659002	-168860
2020	224324	42.45	-8.47	258.37	304175	57.55	-26.52	379.57	528499	-79851
2021	297396	45.15	32.57	342.54	361325	54.85	18.79	450.89	658721	-63929
CAGR	Exports =8.00%				Imports =9.87%					Total=8.96%

Source: WTO statistic database, 2005-2021

1.5 Composition of Trade in Services of India & China

The top most service of exports and imports both are commercial services having US $ 1657924 million exports and us $ 80841 million of imports of services on an average. The top exporting services are commercial services, other commercial services (US $ 1204315) that are also a part of commercial services, other business services (US $ 568253), Telecommunication Computer and information services (US $ 514179), travel(US $ 224444), transport(US $ 216022), financial (US $ 41241) and construction(US $ 28915) and so on. On the other hand, the importing services on an average after commercial services are other commercial services (us $32576.65 million), travel (US $ 23905.12), transport (US $ 22779.53), other business services (US $13507.76), Telecommunication, Computer and informative services (US $ 6933.00), charges for the use of intellectual property right (US $ 4134.82), financial services (US $ 3266.94), Insurance and pension schemes (US $ 1870.00), Construction (US $ 1624.65) and So on.

Over the 45 years, the commercial services exports of India had reached at maximum value at 2019 and a minimum value in 1975 (indexmundi.com). Commercial

services are the topmost trading services of India. Commercial services have the composition of other commercial services, transport and travel. The other commercial services (US $ 22553 Million) had 63.83 percent share in 2005 in total commercial services which increased up to 82.89 percent (US $ 129290 million) in 2021as shown by the **table-1.3**. The compound growth rate of exports of other Commercial services is 10.82% for the period of seventeen years. Travel services had 19.42 percent share (US $ 6863 million) in 2005 which declined gradually that was 14.37 percent in the year 2019 that was pre-covid situation but aftermath of Covid it became 4.45 percent of the commercial services having the compound growth rate of 0.07 percent during the study period.Transport services have also revealed a major role in the services trade having 16.74 percent (US $ 5916 million) of commercial services exports in 2005. There are also many fluctuations in the share of transport services. During the financial crisis in 2008-09, there was a fall in the share that was 14.41 percent in 2009 and increased later upto 15.29 percent in 2011. But there is also a gradual fall in the share of transport services. The post-covid impact was positive and the share had increased 12.65 percent in 2021 that was 11.00 percent in previous year. The compound growth rate of transportation services is 7.34 percent for the study period.As it can be seen through the table that the share of India for other commercial services is more than 60 percent throughout the study period but it is for china, around 33 percent in 2005 in which India had 63.83 percent of commercial services export. The share has increased up to 82.89 percent in 2021 for India and 54.24 percent for china that was 45.46 percent in 2020 and declined due to pandemic. As we put an eye on the compound growth rate of India for the study period that is 10.82 percent which is less than that of China (13.18 percent).

Table: 1.3 Composition of India's& China's Commercial Services Export

Value & Share (Million US$, Percentage)

Year	Other commercial services (% Share)		Travel (% Share)		Transport (% Share)	
	India	China	India	China	India	China
2005	22553(63.83)	27844(35.65)	6863(19.42)	24027(30.76)	5916(16.74)	2623(33.59)
2006	29631(64.92)	33378(36.51)	8447(18.51)	27081(29.62)	7564(16.57)	30973(33.88)
2007	37968(65.92)	41967(36.56)	10429(18.11)	33702(29.36)	9196(15.97)	39121(34.08)
2008	47047(67.12)	52378(37.77)	11706(16.70)	39895(28.77)	11336(16.17)	46402(33.46)
2009	44328(69.52)	51471(38.24)	10243(16.07)	44494(33.06)	9187(14.41)	38633(28.70)
2010	54065(69.14)	57095(34.64)	12328(15.77)	56571(34.32)	11794(15.08)	51149(31.03)
2011	63852(69.17)	69334(34.37)	14346(15.53)	72806(36.09)	14116(15.29)	59609(29.55)
2012	66226(70.05)	72150(31.64)	14248(15.07)	92837(40.71)	14060(14.87)	63046(27.65)
2013	70481(71.36)	81108(30.77)	14673(14.86)	11474(43.53)	13607(13.78)	67717(25.69)
2014	74971(71.66)	88000(27.67)	15441(14.76)	15906(50.01)	14208(13.58)	71001(22.32)
2015	77112(73.39)	88836(26.34)	15339(14.60)	18041(53.49)	12607(12.00)	68020(20.17)
2016	80893(74.12)	94885(27.05)	15941(14.61)	190326(54.26)	12303(11.27)	65564(18.69)
2017	90795(73.37)	10220(28.13)	18928(15.30)	187902(51.72)	14016(11.33)	73201(20.15)
2018	100155(73.66)	11817(28.76)	19856(14.61)	209111(50.88)	15942(11.73)	83664(20.36)
2019	106538(74.41)	12430(30.61)	20579(14.37)	200025(49.26)	16046(11.21)	81770(20.14)
2020	108410(82.79)	13485(45.46)	8135(6.21)	86608(29.20)	14398(11.00)	75175(25.34)
2021	129290(82.89)	16033(35.65)	6948(4.45)	76432(21.66)	19726(12.65)	116034(32.89)
CAGR						
(India) OCS=10.82% Travel services=0.07 % Transport Services=7.34%				(China) OCS =13.18% Travel=-4.35% Transport Services =10.45%		

Source: WTO statistic database, 2005-2021

On the other hand, the share of exportstravel and transport services has declined during the study period for India and increased for china. The share of travel services in commercial service that was 19.42 percent in 2005 declined gradually. That was become 14.37 percent in 2019 that was pre-covid year But later, the aftermath effect of Covid-19 pull it down to 6.21 percent in 2020 and 4.45 percent in 2021. At the same time, China's share in travel services 29.20 percent in 2020 and 21.66 percent in 2021 relatively higher than that of India. Pre-Covid share of travel services of China was 49.26 percent which was the more than three times than that of India in that year. In the same tune, the transportation share also declined gradually in India. In 2005, the share of transport services in commercial services was 16.74 percent and it became 11percent in 2020. But there is a slight improvement in the share after covid that was 12.65 percent. And the same improvement was noticed for transport share of china in 2021 having 32.89 percent which was 25.34 percent in previous year. Similarly, the compound growth rate for both the services of India is less which is 0.07 percent for travel services and 1.34 percent for transportation relative to china having 4.35 percent for travel and 10.45 percent for transportation.

As we compare the share of other commercial services imports with the share of exports of these that is visible in the table: 1.4 showcasing 35.88 percent (US $ 12697 million) in 2005. After that, throughout the study period it felt a bumpy path having fluctuations in the growth of other commercial services. But the Aftermath of covid had put a positive impact on the growth of other commercial services imports but that showed more dependence on the imports for that during covid showing compound growth 9.54 percent for the period of seventeen years.The share of imports of other commercial services in Commercial services is less as compared to the share of exports which is a positive indicator for trade balance in this context. The imports share of other commercial services that was 35.88 percent in 2005 reached at 48.16 percent in 2021 having 50.91 percent in previous year which showed a slight decline due to the pandemic. Similarly, the imports share for OCS in commercial services was 35.13 percent in 2005. There were so many bumps during the period of seventeen years for china's imports. There was a continue downfall in imports share in commercial services till 2019 but the share had increase during the pandemic that had become approximately 45 percent of commercial services which was 30.26 percent in 2019. The Compound growth rate of India for other commercial services is 9.54 percent and of

china, it is 11.56 per cent which is also higher than that of India.

Table: 1.4 Composition of India's& China's Commercial Services ImportsValue &Share (Million US$, Percentage)

Year	Other Commercial Services (% Share)		Travel (% Share)		Transport (% Share)	
	India	China	India	China	India	China
2005	12697(35.88)	27844(35.13)	10084(28.50)	24027(30.31)	12607(35.63)	26238(33.10)
2006	15911(37.06)	33378(35.97)	12021(28.00)	27081(29.18)	14997(34.93)	30973(33.38)
2007	18691(35.62)	41967(36.09)	15188(28.95)	33702(28.98)	18591(35.43)	39121(33.64)
2008	20710(37.03)	52378(37.31)	16434(29.38)	39895(28.42)	18783(33.58)	46402(33.06)
2009	21765(41.13)	51471(37.74)	15979(30.20)	44494(32.62)	15173(28.67)	38635(28.33)
2010	27022(39.03)	57095(34.19)	20633(29.80)	56571(33.88)	21575(31.16)	51149(30.63)
2011	28104(37.61)	69334(33.93)	22339(29.89)	72806(35.63)	24282(32.50)	59609(29.17)
2012	29276(38.14)	72150(31.30)	22728(29.61)	92837(40.27)	24764(32.26)	63046(27.35)
2013	30328(39.45)	81108(30.45)	22846(29.72)	114745(43.08)	23709(30.84)	67717(25.42)
2014	31525(38.89)	88000(27.34)	25596(31.57)	159062(49.41)	23944(29.54)	71001(22.06)
2015	33468(40.37)	88836(26.06)	26901(32.45)	180416(52.92)	22532(27.18)	68020(19.95)
2016	37154(41.77)	94885(26.79)	30324(34.09)	190326(53.74)	21474(24.14)	65564(18.51)
2017	41728(40.99)	102208(27.88)	34526(33.92)	187902(51.25)	25546(25.09)	73201(19.96)
2018	47027(41.19)	118178(28.47)	38290(33.54)	209111(50.37)	28841(25.26)	83664(20.15)
2019	48748(40.88)	124302(30.26)	41454(34.77)	200025(48.70)	29030(24.35)	81770(19.91)
2020	49839(50.91)	134857(44.76)	24063(24.58)	86608(28.75)	24003(24.52)	75175(24.95)
2021	59810(48.16)	160330(44.75)	26981(21.73)	76432(21.33)	37401(30.12)	116034(32.38)
CAGR						
(India) OCS=9.54% Travel Services=5.96% Transport services= 6.61%			(China) OCS=11.56% Travel Services=7.50% Transport services=9.74%			

Source: WTO statistic database, 2005-2021

The import share of travel services is higher than the share of exports share of India. But China's share is higher in travel services as compared to India. India's travel imports share was 28.50 percent in 2005 and that was 30.31 percent for China at the same time. In 2019, it was higher 34.77 percent for India and 48.10 percent for china. Later on, the share had declined for both the countries that were around 21 percent for both of them. The compound growth rate is also less for India (5.96 percent) as compared to china (7.50 percent).The travel services had the growth rate of 5.96 percent during the study having a share of 28.50 percent in 2005 and a share of 21.73 percent in 2021 that was highest in the study period in 2019 having 34.77 percent of commercial services imports. Transport services imports having 35.63 percent of commercial services in 2005 also declined gradually and at its minimum in 2020 due to covidand increased later on 30.12 percent in 2021. The compound growth rate of transport services imports is 6.61 percent for the study period. It may be concluded that the composition of import for commercial services have shown a decline in the growth rate which can be a positive sign for the services trade. The growth rate of exports is higher than the growth rate of imports of commercial services except travel services exports.The share of transportation services is higher for India than that of china. But the compound growth rate of India for transportation services is less than the Compound growth rate of china which is 6.61 percent for India and 9.74 percent for china.

1.6Conclusion- India and China as major global economies exhibit distinct trends and compositions in their service trade sectors. India has experienced robust growth in its service trade, driven largely by the IT and software services sector. India's service exports have consistently grown, contributing significantly to its GDP. The country is recognized globally for its skilled workforce in IT, software development, and business process outsourcing (BPO), making these sectors the backbone of its service trade. China's service trade has grown rapidly, though it remains more modest compared to its manufacturing sector. China has been diversifying its economy by shifting focus from manufacturing to services. This shift is evident in sectors like finance, tourism, and transportation, where China is becoming increasingly competitive.

The composition of India's service trade is heavily skewed towards IT and IT-enabled services (ITES). These include software services, BPO, consulting, and telecommunications. India's dominance in the global IT services market is a defining characteristic of its service trade composition. China's service trade is more diversified but with a substantial focus on tourism, transportation, construction, and financial services. China is a leading exporter of construction services, reflecting its strengths in infrastructure and engineering. Additionally, China's financial services and e-commerce sectors are gaining traction internationally. India's competitive edge lies in its large pool of English-speaking professionals, cost-effectiveness, and expertise in IT services. However, challenges include the need to move up the value chain, enhance digital infrastructure, and address skill gaps in emerging technologies. China's competitiveness in service trade is supported by its massive domestic market, strong infrastructure, and government support. Nonetheless, China faces challenges in overcoming perceptions of quality in certain service sectors, improving regulatory transparency, and developing a more robust intellectual property regime.

Future Outlook

The future of India's service trade looks promising with the potential for expansion into new areas like fintech, AI, and digital services. Government initiatives like "Digital India" and "Skill India" are expected to further boost the service trade sector. China's service trade is expected to grow as the country continues to transition from manufacturing to a

more balanced economy with a stronger service sector. Investments in education, technology, and global partnerships will likely enhance China's service trade capabilities.

References

- Banga, R. (2005). India's Services Trade: Trends, Patterns, and Future Prospects. Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER).
- De, P. (2013). Assessing barriers to trade in services in India: An empirical investigation. Journal of Economic Integration, 108-143.
- Pillania, R. K. (2010). Indo-China Trade: trends, Composition and Future. Journal of Applied Economic Sciences (JAES), (12), 129-137.
- Shrivastava, A. K., Sharma, P., &Banik, A. (2021). Merchandise and Service Trade DeviationsDuring COVID-19: A Performance Comparison Between India and China. FIIB BusinessReview. https://doi.org/10.1177/23197145211020738.
- Kaur, HarSandeep (2016) "Services Exports and SAARC Countries: A Comparative Analysis of Growth, Performance and Competitive Advantage" Millennial Asia 7(1) 20–41 © 2016Association of Asia Scholars SAGE Publications.
- Joseph, K. J., & Parayil, G. (2006). India's Export of Software and IT Services: Role of External Demand and Factor Market Flexibility. Economic and Political Weekly. https://www.researchgate.net/publication/258190338.
- Chanda, R. (2017). Trade in services. In Handbook of Globalisation and Development (pp.36-58).Edward Elgar Publishing. https://doi.org/10.4337/9781783478651.00009
- Singh, N. (2006). Services-led industrialization in India: Assessment and lessons. Available at SSRN 951735. https://dx.doi.org/10.2139/ssrn.951735.
- Rai, S. (2012). India's Services Trade Liberalization and its Impact on Employment: A CGE Analysis. World Development.
- Eichengreen, B., & Gupta, P. (2010). The Evolution of India's Services Sector and Its Contribution to Economic Growth. National Bureau of Economic Research (NBER).
- Nordås, H. K., & Rouzet, D. (2016). Services trade policy and trade performance: the case of India. In Trade, Investment and Economic Development in Asia (pp. 127-146). Routledge.
- Myszkowska, M. (2014). The importance of services trade in global economy. Ekonomia XXI wieku, (04), 28-45.
- Gordon, J., & Gupta, P. (2004). Non-resident Deposits in India: in search of return?. Economic and Political Weekly, 4165-4174.
- Joseph, K. J., & Parayil, G. (2006). Trade Liberalization and Digital Divide an Analysis of the Information Technology Agreement of WTO.
- Chanda, R. (2017). Services for Indian manufacturing. Dev, S. Mahendra (ed., 2017), India Development Report.
- WTO statistic database
- https://unctad.org/system/files/official-document/tdstat47_en.pdf

Mrs. Jyoti, Research Scholar, Department of Economics, Baba Mastnath University, Asthal Bohar, Rohtak (jyoti.jangra2@gmail.com)

Dr.Madhu Ahlawat, (Guide) Professor, Department of Economics, Baba Mastnath University, AsthalBohar, Rohtak

Author Name Jyoti

Title research_paper_on_trends_31_august

Paper/Submission ID 2279260

Submitted by cl@bpswomenuniversity.ac.in

Submission Date 2024-09-02 15:32:51

Total Pages, Total Words 13, 4689

Document type Article

40

The National Education Policy (NEP) 2020: A Crossroad for Indian Education

Dr. Nazia Khan

Abstract

The National Education Policy (NEP) 2020 is a comprehensive and transformative blueprint for reforming the Indian education system. Introduced as a visionary document, NEP 2020 addresses the evolving needs of a dynamic society, aiming to create an inclusive, flexible, and globally competitive educational framework. NEP 2020 has received widespread acclaim for its forward-looking vision, challenges such as effective implementation, resource allocation, and stakeholder engagement remain. Nevertheless, the policy marks a significant stride towards redefining the educational landscape in India, with the potential to shape a generation of learners capable of meeting the demands of the 21st century.

The National Education Policy (NEP) 2020 in India was a comprehensive and ambitious initiative aimed at transforming the country's education system. The National Education Policy (NEP) 2020 stands as a landmark in the evolution of India's education system. Introduced to replace the outdated National Policy on Education of 1986, NEP 2020 reflects a holistic and forward-looking approach to address the diverse challenges in the realm of education. This paper explores the key features and potential implications of this policy on the educational landscape of the country.

National Education Policy 2020 has been announced on 29.07.2020. The National Education Policy 2020 proposes various reforms in school education as well as higher education including technical education. A number of action points/activities for implementation in school education as well as higher education are mentioned in the National Education Policy 2020.

Feature NEP 2020:

The NEP 2020 aimed to provide a more holistic and flexible education system, emphasizing the development of cognitive, socio-emotional, and practical skills alongside academic knowledge is insufficient for the overall development of an individual. The policy aims to nurture cognitive, socio-emotional, and practical skills, creating well-rounded citizens capable of contributing meaningfully to society. NEP 2020 emphasizes holistic education, aiming to foster the intellectual, social, emotional, and physical development of students. Ensuring Universal Access at All Levels of schooling from pre-primary school to Grade 12. Ensuring quality early childhood care and education for all children between 3-6 years.

The policy proposed structural changes, including the restructuring of the school system into a 5+3+3+4 format, covering early childhood care and education (ECCE) to secondary education. It also suggested the integration of vocational education from the school level. This shift intends to provide a strong foundation during the formative years and allows for a more flexible and comprehensive learning experience. No hard separations between arts and sciences, between curricular and extra-curricular activities, between vocational and academic streams.

NEP 2020 promotes a multidisciplinary approach in higher education, allowing students to choose subjects across disciplines for a more well-rounded education. Students to choose a diverse range of subjects and promoting flexibility in course structures. Recognizing the need for multidisciplinary knowledge, NEP 2020 advocates for a flexible curriculum in higher education. It encourages students to breaking down the traditional silos of disciplines. This move is expected to foster creativity, critical thinking, and a broader perspective among students.

NEP 2020 recommended a flexible language policy, suggesting that students be taught in their mother tongue or regional language up to at least Class 5 and preferably up to Class 8. The policy addresses the language of instruction, recommending that students be taught in their mother tongue or regional language up to at least Class 5. This is aimed at preserving linguistic diversity, promoting a deeper understanding of subjects, and fostering effective communication skills. Emphasis on promoting multilingualism and Indian languages; The medium of instruction until at least Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond, will be the home language/mother tongue/local language/regional language.

NEP 2020 recognizes the importance of technology in education and emphasizes its integration for effective teaching and learning. The policy emphasized the integration of technology in education, including the use of online resources, digital learning materials, and the development of digital infrastructure. In alignment with the digital age, NEP 2020 underscores the importance of integrating technology into education. The policy envisions a digital infrastructure that facilitates online resources, e-learning materials, and tech-enabled teaching methods. This not only enhances accessibility but also prepares students for a technology-driven future.

The policy recommends a shift from rote learning to competency-based assessments, encouraging continuous and comprehensive evaluation methods. The NEP 2020 proposed changes in assessment methods, advocating for a shift from rote memorization to a more competency-based evaluation system. It encouraged formative and continuous assessment rather than relying solely on summative exams. NEP 2020 advocates for a shift in the assessment paradigm, moving away from rote memorization towards competency-based evaluation. The policy emphasizes continuous and formative assessments, providing a more nuanced understanding of a student's capabilities and reducing the undue pressure associated with high-stakes examinations. Board Exams on up to two occasions during any given school year, one main examination and one for improvement, if desired.

NEP 2020 focuses on enhancing the quality of teacher education programs, emphasizing continuous professional development to keep educators abreast of evolving pedagogical practices. The policy highlighted the need for continuous professional development for teachers and aimed to enhance the quality of teacher education programs. The NEP 2020 had garnered both support and criticism. Supporters saw it as a progressive step towards addressing the evolving needs of the education system, while critics raised concerns about the feasibility of implementation, resource allocation, and potential challenges in translating the vision into practice. Recognizing the pivotal role of teachers in shaping the future, NEP 2020 stresses the need for continuous professional development. It aims to enhance the quality of teacher education programs, ensuring that educators are well-equipped to implement the innovative methodologies prescribed by the policy.

The policy integrates vocational education from the school level, aiming to provide students with practical skills and make them more employable.

NEP 2020 promotes flexibility in curriculum design, allowing students to choose subjects based on their interests and aptitudes.

The policy envisions a global approach, encouraging internationalization of education and promoting collaboration with global educational institutions.

Single overarching umbrella body for promotion of higher education sector including teacher education and excluding medical and legal education- the Higher Education Commission of India (HECI)-with independent bodies for standard setting- the General Education Council; funding-Higher Education Grants Council (HEGC); accreditation-National Accreditation Council (NAC); and regulation-National Higher Education Regulatory Council (NHERC).

Professional Education will be an integral part of the higher education system. Stand-alone technical universities, health science universities, legal and agricultural universities, or institutions in these or other fields, will aim to become multi-disciplinary institutions.

Major Initiatives Taken Under NEP 2020

- PM Schools for Rising India (SHRI): PM-SHRI schemeaims to provide high-quality education in an equitable, inclusive, and joyful school environment.
- It is a centrally sponsored scheme launched in September 2022 for upgradation and development of more than 14500 Schools across the country.
- Rs. 630 crore has been allocated to upgrade schools under the PM SHRI initiative.
- **NIPUN Bharat:** The vision of National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy(NIPUN) Bharat Mission is to create an enabling environment to ensure the universal acquisition of foundational literacy and numeracy, so that every child achieves the desired learning competencies in reading, writing, and numeracy by the end of Grade 3, by 2026-27.
- **PM e-VIDYA**: The initiative aimed to promote online education and digital learning by providing various e-learning platforms like DIKSHA and offering e-books and e-contents to students across the country.
- **NCF FS and Jadui Pitara**: Launch of National Curriculum Framework for Foundational Stage (NCF FS) and Jadui Pitara for play-based learning teaching material tailored for children between the age group of 3 to 8 years
- **NISHTHA**: The National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement (NISHTHA)is a capacity-building program for teachers and school principals in India.
- **NDEAR**: National Digital Education Architecture (NDEAR), an architectural blueprint, that lays down a set of guiding principles and building blocks to enable the creation of digital technology-based applications pertaining to education.
- **Academic Frameworks**: Introduction of National Credit Framework (NCrF) and National Higher Education Qualification Framework (NHEQF) to facilitate credit transfer and academic flexibility.
- **Increased Investment in Education**: The policy advocates for both the Central government and State Governments to allocate a combined 6% of GDP to education.
- In alignment with this vision, the Ministry of Education has witnessed a budget of Rs. 1,12,899 crore in 2023-24,

indicating a 13.68% increment from 2020-21.

- International Campuses and Partnerships: NEP 2020 supports Indian universities in establishing campuses abroad and inviting foreign institutions to operate in India.
- Memoranda of Understanding (MoUs) have been signed for the establishment of IIT campuses in Zanzibar and Abu Dhabi, reflecting India's global educational outreach.
- **Educational Innovation in GIFT City**: NEP 2020's innovative approach extends to Gujarat's GIFT City, where world-class foreign universities and institutions are permitted to offer specialized courses.

Other Related Initiatives

- **World-Class Institutions Scheme**: The World Class Institutions Scheme, initiated in 2017, aims to create affordable, top-notch academic and research facilities.
- The scheme designates "Institutions of Eminence" (IoEs) to promote academic excellence.
- To date, 12 institutions, including eight public and four private ones, have been identified as IoEs, a testament to India's commitment to providing world-class education.
- Global Initiative for Academic Network (GIAN) and SPARC: GIAN focuses on tapping the expertise of scientists and entrepreneurs, including those of Indian origin, to bolster India's academic resources.
- The Scheme for Promotion of Academic and Research Collaboration (SPARC) enhances research ecosystems by fostering collaborations between Indian and foreign institutions.
- These initiatives contribute to elevating research quality and promoting knowledge exchange.

While NEP 2020 has garnered widespread acclaim for its progressive vision, it is not without challenges. Critics have raised concerns about the feasibility of implementation, resource allocation, and the need for a robust monitoring mechanism to ensure effective execution.

NEP, 2020 aim to increase the GER to 100% in preschool to secondary level by 2030 whereas GER in Higher Education including vocational education from 26.3% (2018) to 50% by 2035.

Conclusion:

In conclusion, the National Education Policy 2020 represents a paradigm shift towards a more inclusive, flexible, and relevant education system in India. By addressing the multifaceted dimensions of education, from structural reforms to embracing technology, NEP 2020 lays the foundation for a transformative journey. The successful implementation of this policy holds the promise of nurturing a generation of learners equipped with the skills and knowledge necessary to navigate the complexities of the 21st century.

References:

1. Kumar, S. (2021). *Education Policy in India: Challenges and Prospects*. Academic Publishers.
2. Pal, Y., & Sadgopal, A. (2019). *Reforming Indian Education: NEP 2020 and Beyond*. Educational Insights.
3. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
4. https://www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP/Draft_NE_Policy_2019.pdf
5. Reddy, S. (2021). The impact of the National Education Policy 2020 on Indian higher education. *Journal of Educational Planning and Administration, 35*(2), 145-162. https://doi.org/10.1177/1234567890123456
6. Sharma, P. (2022). Policy shifts and pedagogical innovations: Analyzing the NEP 2020. *Indian Journal of Education, 48*(1), 78-90. https://doi.org/ 10. 1080/23456789. 2022.1234567
7. UNESCO. (2021). *Education Policy Review: India's National Education Policy 2020*. Retrieved from https://en.unesco.org/sites/default/files/india_nep2020_review.pdf
8. The Better India. (2020, September 15). *What NEP 2020 means for the future of Indian education*. Retrieved from https://www.thebetterindia.com/education/nep-2020
9. Education World. (2021, February 20). *NEP 2020: Insights from educational experts*. Retrieved from https://www.educationworld.in/nep-2020-insights

Dr. Nazia Khan
Department of Geography
Bareilly College, Bareilly (U.P.)

41

Study of Green Movement: Initiatives by Government and Influence on Consumers

Ms. Gargi Sharma

Abstract

Environmentalism has emerged as an important worldwide movement in the 21st century, when world is facing problem of global warming. Consumer awareness towards the Green movement is important in guiding them towards the purchase intention and further favours the buying behaviour. This study mainly focuses on awareness of green movement and buying behaviour of Indian consumers. The green movement is a social movement regarding concerns for environmental conservation and improvements to the current health of the environment. Consumers are well aware of benefits of green movement in developed nations but Indian consumers are still less aware of green movement benefits. Government of India has made certain efforts for promotion of green movement but still not able to create awareness properly in Indian consumers. Green movement has not been executed properly yet because of lack of awareness in people. This paper reviews the work of researchers and aims to define the impact consumer awareness have on the purchasing behaviour of the consumers. It also point out the actual and perceived barriers faced by consumers in adopting Green Movement. For improving the purchasing behaviour of Indian consumers it is very important to make them aware of various current and future benefits of green movement. Green movement is beneficial for health of both people and environment. Various factors that impact consumer awareness are level of consumers' safety, income, knowledge, gender, green marketing etc. This study has made use of secondary as well as primary data for presenting the history and latest picture of green movement and for assessing the impact of Green movement on Indian consumers' behaviour.

Keywords- Environmentalism, Green Movement, Indian Consumers, Purchasing Behaviour.

Introduction

Green Movement is a movement urging for production and use of environmentally harmless consumer goods. The Green movement also including conservation and green politics, is a diverse scientific, social and political movement for addressing environmental issues. It involves the sustainable development. Sustainable development involves development without depletion of natural resources. Green movement is a social movement. The success of this movement depends on contribution of both the Government and the people of India. The green movement has an impact on consumption pattern of consumers as well as production pattern of businesses. Green movement is an important movement of worldwide economy. As it is a movement for environmental protection, it has changed the definition of consumption and production. Green politics, green production, green consumption, green building, ecological balance management, conservation of natural resources and waste management are the main concerns for Green Movement. Ultimately it aims to cure the climate change impacts as well as it protects the environment from pollution. In India people are not aware about the benefits of Green movement. Due to lack of proper knowledge there is lower rate of production and consumption of green products in India. Knowledge and awareness about Green movement will make our country more healthy and strong. If each producer and consumer thinks about environmental protection before producing and consuming anything, it will ultimately lead to the protection of their health as well. Many people disagree with the green movement and its value because they don't see the immediate benefits from them. There are various organisations working for environmental movement in our country, some organizations are: **Central Pollution Control Board(CPCB), Ministry of Environment and Forests, Agency for Non- conventional Energy and Rural Technology(ANERT), Centre for Science and Environment, Centre for Environmental Research and Education(CERE), Kalpavriksha, Exnora, Foundation for Ecological security etc**. Development does not mean that we do not value our natural resources and keep on consuming them without concerning life of our future generations as well as environmental protection.

Purpose of Study

The main objective of this research paper is to present the history, benefits and current picture of Green movement in our country. This paper shows the impact of green movement on the people of India. This paper will present extent to which the people are contributing to this social movement in India. At last this research will explain how the Green movement affects the purchasing behaviour. It will also present the barriers faced by the Indian consumers while making their purchasing decision.

Research Methodology

For this paper i have referred to various research papers, journals and books to analyse the Green movement awareness in our country. Primary data is also used for this research paper. The interview method has been used for collecting primary

information. This information is used for assessing the impact of Green Movement on Indian consumers' consumption pattern. A sample of 30 people was selected randomly- both males and females. It includes job makers, businessmen, housemakers and students pursuing graduation.

History of Green movement in India

Green Movement has been a part of India since many decades- There are many movements which became part of history of Green Movement in India. Some of them are-

Bishnoi Movement:- It is a religious sect which is found in Western Thar Desert and Northern States of India. In the year 1700 AD, this movement was started by Sage Sombaji against deforestation.

Chipko Movement:- This movement was initiated in Chamoli district of Uttarakhand in 1973. The main objective of this movement was to prevent the cutting of trees illegally in Himalayan region. The main leaders were Sunderlal Bahuguna and Chandi Prasad Bhatt. Women were also a part of it.

Appiko Movement:- This movement was launched in 1983 in leadership of Pandurang Hedge in Karnataka. The main concerns were- Afforestation, development, conservation and proper utilization of forests.

Silent Valley Movement:- Silent Valley is an evergreen tropical forest, situated in the Palakkad district of Kerala. In 1976, the Kerala State Electricity Board announced plans for construction of hydroelectric power project over the Kunthipuzha river flowing through the Palakkad and Mallapuram districts of Kerala. The main motive of movement was to save the damage to biodiversity of that region. That dense forest gives lives to various species of plants and animals.

Narmada Bachao Andolan:- This movement was started in 1985. It was launched by Medha Patkar. This movement protested the construction of huge dam over the Narmada river. This river supports a large number of tribal and rural population. The fight was for the rehabilitation of these people after dam construction. It was also supported by celebrities- Amir Khan and others.

Project Tiger:- It is a tiger conservation project, launched by Indian Government in April 1973 during the tenure of Prime Minister India Gandhi. The main motto of this project was the conversation of wild tigers in designated tiger reserves.

Initiatives by Government for Environmental Protection in India

These five initiatives by the Modi government are a step towards a green India (*Report by SOCIALSTORY)* Climate change is real, and it is high time that nations and international organisations act on the ground. According to State of India's environment (SoE) report, India's position of Global Environment Performance Index fell from 141 in 2016 to 177 in 2018.

While every citizen should be responsible for safeguarding our environment, government initiatives have played a huge role in helping find solutions to the problem. From building toilets to ramping up cleanliness through the Swachh Bharat Mission, the Modi government has time and again gardened people's attention and support for the right cause.

And since 2014, Mahatma Gandhi's birth anniversary has also come to be associated with environmental initiatives in India. On 2nd October 2019, Modi Government has started the movement against plastic use.

Some existing environmental initiatives by the Modi government and their impact:-

Namami Gange Programme:- When Narendra Modi assumed office as Prime Minister of India in 2014, one of his early initiatives was the approval of the 'Namami Gange Programme' in June of that year. This program recognized the cultural and environmental significance of the Ganga River and saw the allocation of Rs 20,000 crore by the central government for its conservation and restoration. The initiative involved the communities living along the river, helping them achieve sustainable livelihoods while directly experiencing the benefits of the program. It also engaged grassroots institutions, including urban local bodies and Panchayati Raj institutions, to actively participate in these efforts.Key achievements of this programme include creating sewerage treatment capacity, river front development and surface cleaning. The programme is being implemented by the **National Mission for Clean Ganga (NMCG)** at the national level and **State Programme Management Groups (SPMGs)** at the state level. Moreover ,63 sewerage management projects are implemented in Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and West Bengal.

Green Skill Development Programme:- Moving away from technical or industrial skills, the **Green Skill Development Programme (GSDP)** was launched in **June 2017** by the Ministry of Environment, Forest, and Climate Change. **'Green skills'** refers to those skills that contribute to preserve and restore environment and **create a sustainable future**. As a result, the program emphasizes skill development for youth in the environmental and forestry sectors. In the pilot phase, the ministry offered three-month courses for biodiversity conservationists and para-taxonomists at ten different locations. During the launch of the GSDP mobile app in May 2018, Union Minister for Environment, Forest, and Climate Change,

Harsh Vardhan, announced that the GSDP would create 225,000 jobs by the following year and approximately 500,000 jobs by 2021.

Swachh Bharat Abhiyan:-The Swachh Bharat Abhiyan, a major environmental campaign initiated by the Modi government, stands out as one of its most well-known initiatives. Launched on October 2, 2014, to coincide with Mahatma Gandhi's birth anniversary, this national cleanliness drive saw widespread participation as people across India took to the streets to clean up their surroundings. Photographs of Modi himself sweeping the streets generated significant attention and symbolized the campaign's launch. Over time, various extensions of the campaign emerged, including the Gramin Swachh Bharat Mission and Bal Swachhata Abhiyan, aimed at raising awareness about cleanliness in rural areas.

In 2013, during his election campaign, Narendra Modi had expressed a desire to prioritize the construction of toilets over temples, a sentiment that led to the popular slogan "Pehle shauchalaya, phir Devalaya." This goal was incorporated into the Swachh Bharat Mission. Since its launch, the government reports that over nine crore household toilets have been built, and all 32 states and Union Territories have been declared open defecation-free as of October 2, 2014.

Compensatory Afforestation Fund (CAF) Act, 2016:- This act was introduced by Modi Government in 2016. National Compensatory Afforestation Fund and State Compensatory Afforestation Fund were also established in the same year by Modi Government. According to this act, any individual or organization attempts to use forest lands for non- forest purposes will be charged with a big amount. As per COMPETITION AFFAIRS, SEP 2019 Report, the Union Environment Ministry Transferred Rs. 47,436 crore to 27 States for afforestation. The amount to be paid by industry depends on the economic value of the goods and services that the razed forest would have provided. Industrialists pay the penalty and the amount is transferred to the States concerned to carry out afforestationIn August 2019, Environment Minister Prakash Javadekar announced while distributing cheques to senior officials in State forest administrations that the Centre would implement geographic tagging technology to monitor the proper utilization of allocated funds by the States.

Say No To Polythene Bags:- It is a latest movement by Government. Use of polythene bags has been banned from 2nd Oct 2019. Department for Promotion of Industry and Internal Trade (DPIIT) of Commerce Ministry will launch plastic waste management campaign under Swachhta Hi Sewa 2019.

Impact of Green Movement on Indian consumers

Are Indian consumers really contributing to the Green movement?

What are the factors determining the purchasing behaviour of Indian consumers?

Only awareness about Green movement and benefits of using green products is not sufficient for environmental protection. The concern for environmental protection and sustainability cannot be termed as **actual contribution to Green movement** by Indian consumers. Their **actual purchase** of green products is termed as their contribution to the Green movement.

Factors that can have an impact on purchasing power of consumers are:- (a) Consumer's income level (b) Consumer's education (c) Consumer's knowledge about Green product (d) Consumer's family and friends' purchasing behaviour (e) Products' availability in the market

Due to lack of time **the primary data is collected** from a small sample of Indian consumers. **To assess the impact of Green movement on purchasing behaviour of Indian consumers and to assess their awareness about green movement a sample of 30 people was selected** on random basis from Faridabad city.

Basic profile of respondents

	Category	Number
Gender	Male	16
	Female	14
Age	18-20	10
	28-40	20
Qualification	Postgraduate	9
	Graduate	7
	Undergraduate	10
	Secondary	4
Category	Job makers	10
	Business	4
	Students doing graduation	10
	Homemakers	6

The interview method was used to collect the primary data for this research paper. Some questions were asked from these 30 respondents and their responses were recorded accordingly.

During the interview the respondents were asked about the awareness of the term 'Green Movement' and it was found that out of 30 people only 5% people are aware of this term clearly and for rest of them it is a new term.

The respondents were asked about the benefits of Green movement and it was found that the 4% people actually know about the benefits of this movement.

They were asked about the latest programmes- Swachh Bharat Abhiyaan and Say No to Plastic polybag. Out of them 95% are aware of these programmes and 5% people are not aware of it clearly.

The respondents were asked about their awareness about eco-friendly or organic products and it was found that 90% people were aware of eco- friendly products and remaining 10% were unaware of these products.

At last they were asked about the barriers they faced while making their purchasing decisions for green products. And it was found that according to 43% people lack of proper education and knowledge about Green products was a barrier in making purchasing decision about green product. And according to 21% people their income level was a barrier for them for making their purchasing decision, as organic products are costlier than non- organic products. And according to 24% people, many times the non- availability of eco- friendly products in the market was a barrier faced by them while making their purchase of green products and remaining 12% said that they are confused about whether the green product is actually eco- friendly or not?

Awareness about Green Movement is important. Awareness is the starting point for any movement. But there is difference between the perceived behaviour and actual behaviour. Knowledge about Green movement is important but the question is whether Indian consumers actually contributing to this movement? Now the time has come to persuade the consumers in India to convert their awareness in to real action. Combination of many individual actions can have a drastic change in the Indian Environment. Joint action will make our country pollution less and our people more healthy. Healthy people will make a healthy economy. Alone Government cannot do everything. We have to do efforts for the success of Government's Green Movement programme.

Recommendations

Strategies should be designed in such a way that the Nations move from present, often destructive, processes of growth and development onto sustainable development paths. This will require policy changes in all countries, with respect both to their own development and to their impacts on other nations' development possibilities. Some the important strategies are as follows:-

Use of appropriate technology:- Using suitable technology which is locally adaptable, eco- friendly, uses less of resources and generates minimum waste, culturally adapted and designed keeping in mind the natural conditions of the region can help to achieve sustainability efficiently and at low cost.

4R Strategy (Reduce, Reuse, Recycle and Restore) :- It emphasizes on minimization of use of natural resources, using them again and again instead of passing them on to waste stream, recycling the material and finding the ways to return to the nature what has been taken. It not only reduces pressure on our resources but also reduces waste and pollution.

Environmental Education and Awareness:- Environmental education and awareness will greatly help to make people aware, committed and action- oriented on environmental and sustainable development issues, using the formal education system as well as range of non- formal learning opportunities at the national and community levels.

Maintaining Carrying Capacity:- The carrying capacity of a biological species in an environment or ecosystem is the maximum population size of the species that the environment can sustain indefinitely in terms of food, habitat, water and other necessities available in the environment.

Environment Impact Assessment:- Sustainable development requires that for any activity that brings about economic growth, the corresponding environment impact must be studied carefully by experts and negative aspects addressed. For example: the environmental impact of major projects like large dams, highways, mining and industries must be thoroughly studied as such projects cause tremendous environmental changes like deforestation, loss of biodiversity and displacement of native people.

Conclusion

Green movement is a very important movement in today's time when the whole world is facing problem of Global warming. The only awareness about Green movement is not the solution to the problem of environmental pollution. Now time has come to become part of this social movement

by actual contribution to it. As an Indian it is our responsibility to make this movement successful. Our joint participation is necessary. An individual can not make a tremendous change. We should adjust our consumption behaviour according to the environmental requirements. We should act as green consumer. By consuming and producing green we can make our environment healthy. The health of our future generations depends on our behaviour towards Green movement. By supporting and becoming a part of this movement we can make a heathy future for our coming generations. It is important for ecological balance also. Ecological balance is important for survival of all species. Use of natural resources should be managed properly eg:- water conservation is very important. It should be our responsibility to return to the nature we are taking from it. Waste management is also very important for environmental protection. Soil pollution and air pollution will be minimised with the waste management programmes. Proper knowledge and education is very important to understand the movements of Government, like Swachh Bharat Abhiyaan and Say No to use of Polythene Bags and many other programmes. Co- operation of people and our government with each other is the key to the success of Green Movement.

References:

1.Communicating Green Products to Consumers in India to Sustainable Consumption and Production- A Research Project Conducted by Green Purchasing Network of India, March 2014.

2.International Journal Of Management, IT and Engineering- http://www.ijmra.us

3. Rajendra Singh,2001. Social Movements Old and New: A Post Modernist Critique. New Delhi : Sage Publications.

4. Green Marketing: A Study of Consumers' Attitude towards Environment Friendly Products- www.ccsenet.org/ass

5. IOSR Journal of Business and Management- www.iosrjournals.org

6. Environmental Movement- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Environmental_movement

7. SOCIALSTORY by Tenzin Norzom, 29th Aug 2019

8. Creating environmental awareness- https://www.teriin.org/article/

9. A brief history of the Environmental Movements in India by Shakeel Anwar, Jagran josh magazine.

10. Indian Environmental Movements: Why they failed or succeeded, and the challenges ahead by Sagar Dhara, 24th Feb 2019-https://www.ecologise.in

11. Environmental Studies by UGC

12. https://www.indiatoday.in

13. www.ecoindia.com

Ms. Gargi Sharma
Assistant Professor
D.A.V Centenary College,
N.I.T Faridabad
(e-mail:- gargi.sharma1081@gmail.com)

42

Socio-Economic Impacts of Demography in India

VIRENDER

Abstract

This paper discusses impact of demography over society and economy. Demographic impacts are multifaceted .Demography of any country is reflection of socio- economic development of any region of country and vice versa. It is very dynamic and it changes with time and aspirations of human being. Even political foundations are also changed with transition in demography. Since the beginning of human life there are continuous changes in social and economic aspects of life. But of lately these changes are faster. In developed countries demography is different than developing and under developed ones. Consequently socio-economic pattern is different there.

Keywords: socio- economic impacts; Demography; Human Development.

Introduction

Human being is a social animal. Its social interaction depends upon needs, aspirations and safety reasons. With evolution of human life there has been changing needs and aspirations of human being. In order to fulfil needs some economic activities are essential and they are becoming all the more complex with changing time and demography. Therefore character of demography is designed by socio-economic level of the region and vice versa. Rajesh Shukla (2010) noted that there is now growing acceptance of the fact that a country's socio-economic growth majorly dependent upon its people. Our country experiences very high heterogeneity at state and national level. Since 1950s population is growing at slow pace than before, owing to reduced fertility at global level. In 2019 estimated population of the world is 7.7 billion and based upon its projections in 2030 it could reach around 8.5 billion, in 2050 around 9.7 billion and in 2100 approx. 10.9 billion (UN Department of Economics and Social Affairs: key findings from world population reports).

Materials and methods

In order to know the socio- economic impacts of demography in India secondary data is used taken from various sources like reports from UN, Department of Economic and Social Affairs; census of India, news papers data, UNDP reports and various socio-economic data.

As per provisional census of India of 2011, Indian population was stood at 121crores. India had recorded the growth rate of 1.6% during 2001-2011period. At this rate decadal addition of people in population was around 18.1crore. It means adding to population about equal to Brazil - 5th most populous country in the world - in the given decade. India had seen fast growth in population at the average rate of more than 2% during period of 1961-1991 **(T. Dyson, Econ. Polit. Wkly., (1994).**

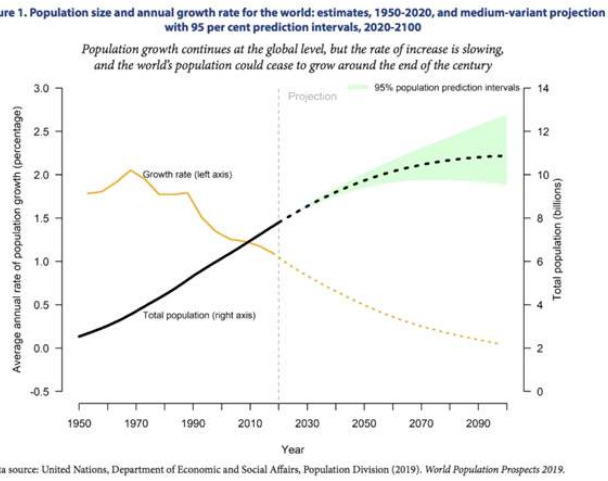

This high growth of population was the result of failure of family planning in India. Since 1991 population growth rate has declined (shown in fig. 2) but population addition remained more or less same. By 2060 India will have population around 1.76 billion and by 2050 India would have about 40crore more population than China (UNDP report). As per UNDP report, after peak in 2060 the size of population is projected to come down by 2100 to 1.5 billion and India will achieve replacement level fertility (TFR=2.1) by 2040.

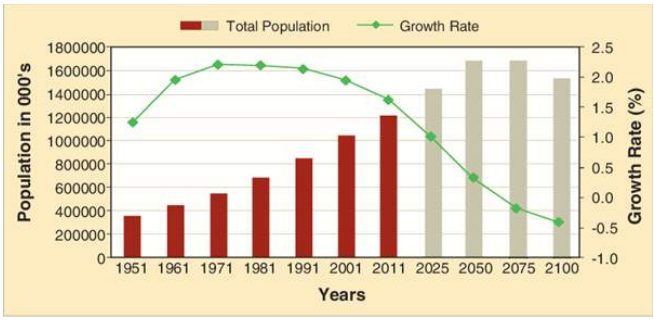

Fig. 2 showing total population during 1951-2011 based on census of India and projected population by UN for 2025-2100.

Source: http://undp.org

Social Impacts:

Thomas Malthus (1798): *An Essay on the Principle of population*suggested about demographic change and food production essential for survival of human. He says power of

population is indefinitely greater than the power of the Earth to produce subsistence for man. Population, when unchecked, increases in a geometrical ratio. Subsistence increases only in an arithmetical ratio (Malthus 1798: 4).

This mismatch in population and subsistence may cause distress like hunger, poverty, famines etc. in society.

Demographic Transition Theory of Thompson and Notestein (1929) suggested that demography changes with social change or industrialisation. This change is caused by progressive change in the society brought by technical development. According to theory this change is sequential.

Chart 1: Five Stages of Demographic Transition

Stage 1 High Stationary	Stage 2 Early Expanding	Stage 3 Late Expanding	Stage 4 Low Stationary	Stage 5 Declining
High birth and death rates leading to low growth rate of population	Decline in death rate and no change in birth rate leads to population explosion	Birth rate starts falling with death rates declining rapidly. Population grows at a diminishing rate	Birth rate declines tending to equal the death rate. Stationary growth rate of population	Death rates exceed birth rates and the population growth declines

Source: Blacker. 1947.

India's population is among youngest in the world. By 2022 India's median age would be 28 years which is 37, 45 and 49 in case of china and USA, western Europe and Japan respectively. India's working age population is more than non working suggesting about availability of more work force in the society in the form of demographic dividend. This demographic dividend is not homogenous across the states. Kerala's population is already aging while Bihar will have increasing working population till 2051. The Economic survey 2019 reports need of creation of additional jobs to keep pace with increasing work force. UNICEF 2019 focuses that by 2030 at least 47% of Indian youth will not have required education and skill required for employment. Therefore projected demographic dividend would turn into demographic disaster leading to social disharmony and retarded economic growth (MeenakshiDattaGhosh, The Hindu; Feb.24, 2020). UN agency states that countries can only get economic benefits from youth bulge (demographic dividend) if they are provided good health, quality education and employment to its entire population (Atul Thakur, Times of India, July 22,2019). It means to get the benefit of demographic dividend we have to bring some social change. Following chart is depicting some social change with time. Education rather than age structure brings demographic dividend (Lutz W. 2019).

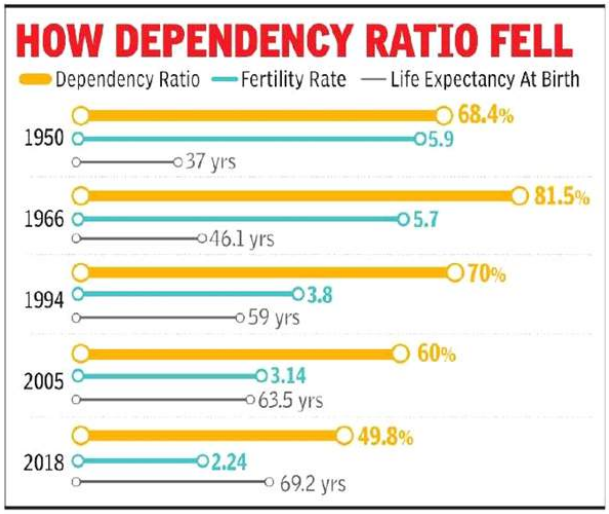

Source: Times of India.

As per the view of Samir KC, Wurzer M, Speringer M and Lutz W (2018): with improving education of younger women national level fertility rates of India declined to 2.2, which is around one third of that of 1960s. Over time the Entry of younger and more educated women in the reproductive age led to overall lower fertility. Fig. 3 shows the age and education pyramids for 1970 and 2015. As per the following figure in 1970 about ¾ of India's adult women had never gone to school. This lower education of women led to very young age structure in successive years causing an increase of India's population from 554 million in 1970 to 1.3 billion in 2015.

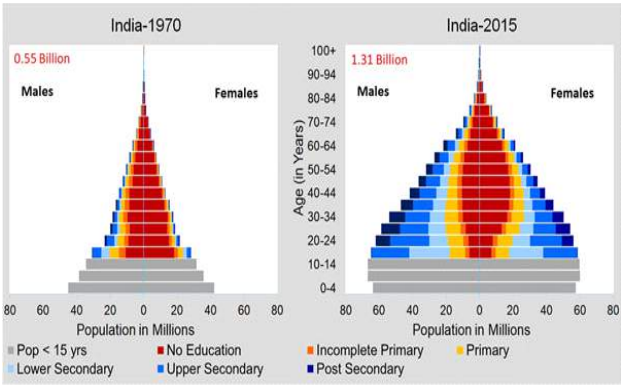

Fig. 3: Age and Education pyramid of India for 1970 and 2015.

Source: pnas.org (pnas-proceedings of national academy of sciences of United States of America).

India's HDI between 1990 and 2017 has increased from 0.427 to 0.640, a rise of almost 50 per cent, suggests that the country has pull millions out of poverty.

Francine Pickup, country director, UNDP India, has noted the steady progress India made on HDI. "The success of India's national development schemes like Beti Bachao Beti Padhao, Swachh Bharat, Make in India, and initiatives

aimed at universalising school education and health care, will be crucial in ensuring that the upward trend on human development accelerates and India achieves the key principles of the Sustainable Development Goals so no one is left behind," says Pickup. It means education, health care and industrialisation are key factors for increase of HDI values

Table A: India's HDI trends based on consistent time series data and new goalposts

	Life expectancy at birth	Expected years of schooling	Mean years of schooling	GNI per capita (2011 PPP$)	HDI value
1990	57.9	7.6	3.0	1,733	0.427
1995	60.4	8.2	3.5	2,015	0.460
2000	62.6	8.3	4.4	2,470	0.493
2005	64.6	9.7	4.8	3,157	0.535
2010	66.6	10.8	5.4	4,357	0.581
2015	68.3	12.0	6.3	5,691	0.627
2016	68.6	12.3	6.4	6,026	0.636
2017	68.8	12.3	6.4	6,353	0.640

Source:
http://hdr.undp.org/sites/all/themes/hdr_theme/country-notes/IND.pdf

Demographical changes in any region may lead to positive and negative effects over both society and economy. In areas having balanced sex ratio violence against woman is less causing healthy society. A research article-The association between uneven sex ratios and violence: Evidence from six Asian countries (**Diamond–Smith N and Rudolph K, 2018**) –has focused over social impact of demographical changes.

As per view of **Singh and Singh(1997: 4)**—"host of social evils , famines and wars, perpetuation of vicious circle of poverty and accordant problems are [more] often than not ascribed to inequilibrium in population-resource situation." However, this view is far from indisputable as there are many scholars on the other extreme – who believe that "it will always be possible for the world to absorb more people and reap the economic benefits of a larger labour force." **(Latimer and Kulkarni,2008)**.

D. Souza observed that overpopulation and rapid multiplication of people lead to rapid depletion of non renewable resources, deterioration of environment, ecological disaster, rising tensions and violence in the world(Singh and Singh, 1997: 4).

Economic Impacts:

Demography can influence the economy both positively and negatively.

Chandrasekhar C. P. (2006) has observed that progressive decline in fertility rate resulted into change in age structure .consequently working force increased and dependency ratio got improved. It led to imagination of accelerated growth. However of late employment data suggested that absorption of Indian youth into labour force is below expectations.

James K. S. (2011) talks about demographic dividend is outcome of transition in demography. Where this demographic dividend is high work force migrate to the area of labour shortage. The interstate migration is effect of demographic dividend difference.

As per **David E. Bloom and David canning** India's dependency ratio is on declining phase shown in fig. 3.It means demographic dividend is increasing which may accelerate economic growth. David E. Bloom has noted that demographic change in India is harbinger of economic opportunities.

Exhibit 2: **The Dependency Curve**

Every country goes through a cycle in which its dependency ratio — the proportion of the population that does not work — rises, and falls, and rises again. While it lasts, the fall in the curve provides a potential demographic dividend: an opportunity for accelerated economic growth. The location of each of the five countries along this generic curve shows how far that country has progressed in its own journey.

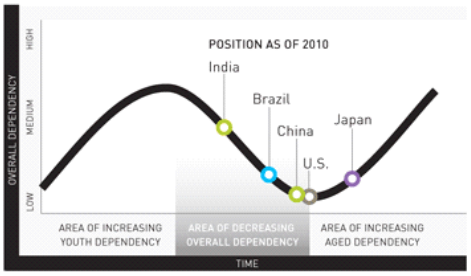

Source: David E. Bloom and David Canning, "Booms, Busts, and Echoes," *Finance and Development*, vol. 43, no. 3 (September 2006); U.N. Population Division, "World Population Prospects: The 2008 Revision" and "World Population Prospects: The 2010 Revision"; Booz & Company

Fig. 3.

Singh and Singh(1997: 2)suggested, Some scholars advocates population is a human capital if equipped with skill. Skilled population is an asset and investment over it brings good results. Mao-Tse-Tung describes population is a sort of blessing in the eras of nuclear war. Moreover it is significant wealth and boost up innovations and development. Thus, to him, country with small population is at disadvantage.

World Development Report (1990) identifies that population growth can reinforce poverty in various ways. It says that quality of life is improved in regions of less population in batter way while in high population regions economic benefits are offset by larger population. There less resources and social services are enjoyed by larger section of population. It is further suggested that fast population growth is the identity of poor nations, poor economies and poor people.

In the opinion of Coale and Hoover rapid population growth leads to increasing dependency ratio causing reduction in saving and investment in a country. The situation is worst in the countries where population growth have overpassed the country's ability to provide basic amenities (Singh and Singh, 1997: 4).

Conclusion:

Analysis of data related to demography and its impact over society and economy in India reveals that change in demography of any region leads to change in social and economic parameters. Mismatch between population and available resources may lead to hunger, unemployment, migration, social disturbance etc. With the help of development of skills and education of population any region or nation can become developed one. According to UNDP report on HDI index value between 1990 and 2018 it is observed that there has been continuous increase in HDI value, which is outcome of continuous effort for transformation in society and our all sectors of economy. Transformation in society and our economy in long run is not possible without change in our demography. TO bring positive effects of demography over our society and economy some political intervention is also essential. Demography itself is also affected by socio-economic activities. For instance, if in any society women literacy is higher fertility rate is lower and vice versa. Similarly,according to world development report (1990) faster population growth is seen in poor nations. Hence we can say that demography may be cause and effect of socio-economic conditions of any nation or region.

References and Notes

- Office of the Registrar General of India, *provisional population tools,* Paper 1 of 2011 (Office of the Registrar General and Census Commissioner of India, New Delhi, 2011); available at www.censusindia.gov.in/2011-prov-results/census2011_paper1_states.html.

- United Nations, *World Population Prospects: 2019 (*United Nations Population Division, Department of Economics and Social Affairs,New York 2019).

- T. Dyson, *Econ. Polit. Wkly*., Dec 17-24, p. 3235 (1994).

- Diamond-Smith N., Rudolph K. (2018): *The association between uneven sex ratios and violence: Evidence from six Asian countries;pp. 1-10.*

- James K. S. (2011): *India's Demographic Change: Opportunities and Challenges, Vol. 333, pp. 576-80.*

- Rajesh Shukla(2010): *Indian Youth Demographics and Readership. Pp. 1-26.*

- David E. Bloom (2011): *Population Dynamics in India and Implications for Economic Growth. Pp. 1-32.*

- Chandrasekhar C.P. (2006): *The 'Demographic Dividend' and Youth India's Economic Future. Pp. 1-10.*

- Singh D. and Singh S. (1997): *Population Growth Development Relationship: A Critique. In: Singh A, Rai V, Mishra A (eds.)*

Strategies in Development Planning.Deep and Deep. Pp.368-388.

-Thomas Malthus (1798): *An Essay on the Principle of population,pp. 1-134.*

-The Hindu newspaper (Feb. 24, 2020)

- Times of India newspaper (July 22, 2019)

https://timesofindia.indiatimes.com/india/india-enters-37-year-period-of-demographic-dividend/articleshow/70321930.cms.

-Sameer KC, Marcus Wurzer, MarkusSperinger and Wolfgang Lutz(2018): *Future Population and Human Capital in Heterogeneous India, Vol. 115, pp. 8328-8329.*

-http://hdr.undp.org/sites/all/themes/hdr_theme/country-notes/IND.pdf

Virender
UGC NET
Panipat

43

Spiritual Intelligence and Empathy among College Students

Anu Kumari, Dr. Shalini kumari

Abstract

The present study is aimed to see the difference of spiritual intelligence and empathy among college students. In total, 50 samples (25 girls and 25 boys) from Patna district . Samples were taken by the purposive sampling method. The Spiritual Intelligence Scale developed by G. Amrinder, R. N. K. Chadda, and S. S. Verma, and Empathy Scale developed by C. C. Venkatesh Murthy were used for obtaining data .Current study showed that there are significant differences between boys and girls on spiritual quotient scale. There are no significant differences between boys and girls on empathy scale. There is negative correlation between spiritual intelligence and empathy in boys.

Keywords: Spiritual Intelligence, Empathy, Integrity, Knowledge

Introduction

Spiritual Intelligence:

When we start to define what is spiritual intelligence, first we need thing comes on our mind is "What is intelligence." Many psychologists defined intelligence on the basis of their knowledge and ideas. They described intelligence as the mental ability to acquire knowledge, thinking, solve problems, adapt to new situations. Spiritual intelligence is the upper level of intelligence. Zohar (1997) coined the term "Spiritual Intelligence." It is the intelligence with which we heal ourselves and we make ourselves whole integrity. Em Emmons (2000) defined "Spiritual intelligence is a framework for identifying and organizing skills and abilities needed for the adaptive use of spirituality." Wolman (2001) defined "Spiritual Intelligence is the human capacity to ask ultimate questions about the meaning of life, and to simultaneously experience the seamless connection between each of us and the world in which we live." Cindy Wigglesworth (2012) defined Spiritual Intelligence as "the ability to act with wisdom and compassion, while maintaining inner and outer peace regardless of the circumstances." Zohar and Marshall (2004) have given 12 principal of Spiritual Intelligence. Richard A. Bowell (founder of Spiritual Intelligence training in his book) introduced the "7 steps of Spiritual Intelligence." Cindy Wigglesworth (2012) had discussed about 4 quadrants and 21 skills of Spiritual Intelligence.

So according these definitions, and Components Skills steps of Spiritual Intelligence we can say that Spiritual Intelligence is the mental ability which imparts personal growth and helps to understand the purpose of life in deep introspection and understanding of one's values and beliefs.

Empathy

In simple language we can say that empathy is the ability to understand other person's emotional experience, feelings, point of views, and problems. Fichtner (2003), Fichtner (2004) has given the term "Empathy" came from German word "Einfühlung" which means "feeling into." According to Lipps and Pramelt (2003) Einfühlung is the act of projecting oneself into the object of perception. In 1909 Titchner interpreted Lipps's notion of Einfühlung as empathy. In his book "A Beginner in Psychology (1915)" he wrote that "empathic ideas are psychologically interesting because they are converse of perception." According to Fesh (1993), empathy is the process of understanding a person's subjective experiences by vicariously sharing the experience while maintaining stance.

The American Psychiatric Association (APA) defines empathy as "awareness and understanding of others' feelings and thoughts." According to Halpern (2003) "Empathy is an acquired skill or an attitude of life, used to try to contact someone, to communicate and recognize other's experiences or feelings."

Daniel Goleman and Paul Ekman have identified three components of Empathy: Cognitive Empathy, which refers to the ability to understand other person's psychological state; Emotional Empathy, which refers to the ability to feel someone else's emotions; and Compassionate Empathy, which refers to the ability to understand and share someone else's emotions but without taking them on as your own emotions. Many psychologists have given theories of Empathy, Carl Rogers, Kohut's theory of Empathy, Hoffman's theory of Empathy, Batson's theory of Empathy. So overall we can say that empathy is the mental ability to understand other's emotions.

Objectives:

- To compare Spiritual Intelligence between female college students and male college students.
- To compare empathy between female college students and male college students.
- To study the relation between Spiritual Intelligence and Empathy

Hypothesis:

- There are no correlation between boys and girls on

the level of spiritual intelligence.

- There are no correlation between boys and girls on the level of Empathy.
- Spiritual intelligence and empathy will be positively correlated with each other.

Methods:

This study has been conducted on 50 college students (25 male students and 25 female students) from some colleges of Patna district of Bihar. The participants have been selected through a purposive sampling method. The obtained data has been analyzed by using different statistical techniques like Mean, SD, and t ratio.

Tools:

The following tools have been used in the present research:

- Spiritual Quotient Scale: This scale was developed and standardized by Gurvinder Ahluwalia, N.K. Chadha, and S.S. Vohra. This scale was administered to 1400 adults in the age group (18-85). This test is reliable and valid.
- Empathy Scale: This scale was developed and standardized by C.N. Venkatapathy and C.G. Venkatesh Murthy. There were five dimensions in this scale, with 35 items, and this scale is for adults.
- PDS (Personal Data Sheet): Prepared by the researcher and is used for collecting necessary information about the respondents.

Result and discussion:

Table – 1

Difference between boys and girls on the level of spiritual intelligence:

	N	Mean	SD	t
Boys	25	176.44	12.26	3.12
Girls	25	166.64	9.75	

Boys have scored (176.44) and girls have scored (166.64) at spiritual quotient scale. So there is a significant difference between boys and girls on the level of spiritual intelligence .Previous research Nazam (2014) also shows the significant difference between male and female adolescents on domains and composite score of spiritual intelligence.

Table – 2

Difference between boys and girls on the level of empathy:

	N	Mean	SD	t
Boys	**25**	**88.72**	**5.71**	**0.59**
Girls	**25**	**90.08**	**9.96**	

The girls have scored (90.08) and boys have scored (88.72) at empathy scale. The result revealed that there is no significant difference between boys and girls on the level of empathy.

Table – 3

Correlation between Spiritual Intelligence and Empathy

Variable	Spiritual Intelligence	Empathy
Boys	-0.244	
Girls	0.042	

According to table -3 there is negative correlation between spiritual intelligence and empathy in boys . But in girls there is positive correlation between spiritual intelligence and empathy.

conclusion

The following conclusions were drawn:

There is no significant difference between boys and girls on the level of spiritual intelligence.

There is no significant difference between boys and girls on the level of empathy.

There is negative correlation between spiritual intelligence and empathy in boys.

There is positive correlation between spiritual intelligence and empathy in girls.

Reference:

- Amrai, K. et all (2011). Relationship between personality and traits and spiritual intelligence among university students , Procedia – Social and Behavioral sciences , 15 , 609-612.
- Ahluwalia, G, Chadha, N. K., &Vohra, V .V, (2016). Spiritual Quotient Scale , National Psychological Corporation.
- Chandni, Kaur, A. (2019). A study of spiritual intelligence among adolescents in relation to gender, International Jornal of Research in Social sciences, 9 (6) , 963-969.
- Cindy Wigglesworth . Definition of spiritual intelligence .[https://en.wikipedia.org/wiki/spiritual intelligence]
- Components of spiritual students . Retrieved from [https://ccemohali.org/img/Ch%2018%20Dr%20Amrita%20Bhullar.pdf]
- Cindy , P, (2010). Spiritual intelligence among graduate students . The International Journal of Educational behavior , 3 (1),112-121.
- Emmons , R. A. (2000b). Spirituality and Intelligence : Problems and prospects. International journal for the

psychology of religion , 10(2), 57-64.
• Vaughan, F., (2002) , What is Spiritual Inelligence Journal of Humnastic Psychology , (42), 2,16-33
• Wolman , R. (2001). Thinking with your soul : Spiritual Intelligence and why it matters . New York : Harmony Bo
• Zohar , D. (1997). Connecting with our spiritual intelligence . Newyork : Bloomsberry Publishing House .
• Ahangar ,M, Maqbool , Khan Mahmood (2015) Gender difference on spiritual intelligence among University students , International Journal of Research in Management & Social sciences 3 (2), 117-20
• Atan, T, (2017) . Empathy levels of University students who do not and not to sports , Universal Journal of Education and research , 5 (3) , 500-503.
• Beadle J. N Vegar C . F (2019) Impact of ageing on Empathy , review of psychological and Neural mechanisms , Dpartment of Gerontology Omaha, vol-10.
• Cotton, K. (2001) . developing empathy in children and youth. School Improvement Research Series Close Up# 13 . Retrieved 12 December 2003
• Janelle. N. Beadlem Alexander , H . Sheehan , Brian D.el al. 2013 Ageing ,Empathy and prosociality.
• Janelle . N , Keady B, et.el 2012 Trait Empathy as a predictor of individul difference in perceived loneliness.
• Murthy , V. G. C., Empathy scale , National Psychological Corporation .

Anu Kumari
Research Scholar
Department of Psychology
Patliputra University
Patna

Dr. Shalini kumari
Assistant Professor (H.O.D),
Department of Psychology
Mahila College, Khagoul,
Patliputra University
Patna